# श्रीसम्यक्त्व मूल बार व्रतनी टीप.

हिंदुस्थानी भाषामां

पंडित श्री उद्योतसागरगणिविरचित.

द्वितीयावृत्ति

तेनुं

गुर्जरभाषामां भाषांतर करीने

समस्त सम्यक्दृष्टि शुद्ध श्रद्धायुक्त सुज्ञजनोने
भणवा वांचवाने योग्य जाणी.

शा० भीमसिंह माणकें

श्री मुंबाख्य पुरीमध्यें

निर्णयसागराभिध मुद्रायंत्रमां मुद्रित करावी छे.

संवत् १९५४. सने १८९७.

# अनुक्रमणिका.

---



---

॥ श्री गौतम गुरु भ्योनमः ॥

अथ

# श्री श्रावकना बार व्रतनी टीप प्रारभ्यते.

॥ दोहरा ॥

सदा सिद्ध जगवानके, चरण नमुं चित लाय;
श्रुतदेवीपुनी समरिये, पूजुं ताके पाय. ॥ १ ॥
करुं सुगम जाषा सही, बारह व्रत विस्तार;
जिन्न जिन्न जेदे करी, जव्य जीव उपगार. ॥ २ ॥
पंचाणु व्रत प्रथमते, तीन गुण व्रत जाण;
शिक्षा व्रत चारु मिली, बारह व्रत जु वखाण ॥३॥
शास्त्र सुगुरु उपदेश सुनि, धारे व्रत शुज चाल;
ता घरि जश सुख संपदा, होवे मंगल माल. ॥ ४ ॥
बुध उद्योत सागर गणी, अपनी मति अनुसार;
विधिश्रावकके व्रततणी, पीपलिखुं निरधार. ॥ ५ ॥

त्यां प्रथम सम्यक्त्वरूप लिखेछे. ते समकितना बे जेदछे. एक व्यवहार समकित अने बीजो निश्चय समकित. अंहींसम्यक्त्व शब्दनुं अर्थ लखेछे ( तत्वार्थ श्रद्धानं सम्यक्त्वं ) तत्व एटले जे यथार्थ स्वरूप विज्ञान पूर्वक श्रद्धा तेने सम्यक्त कहीए, ते तत्व त्रण प्रकारनुं छे. एक देव तत्व, बीजुं गुरु तत्व, त्रीजुं धर्म तत्व, अने वली ए त्रणे तत्वनी सद्दहणा एटले जे साची प्रतित तेना बे जेदछे. एक व्यवहारथी अने बीजी निश्चयथी तेमां प्रथम व्यवहारथी शुद्ध देव तत्वनी सद्दहणा देखाडे छे.

एमां देवतो श्री अरिहंतजी जेमना अढारे दोष क्षय पाम्या छे. ते अढार दोषना नाम नीचे प्रमाणे छे.

प्रथम अज्ञान दोष, बीजो क्रोध दोष, त्रीजो मान दोष, चोथो मा या दोष, पांचमो लोभ दोष, छठो अविरति दोष, सातमो हास्य दोष, आठमो रति दोष, नवमो अरति दोष, दशमो भय दोष, अगीआर मो शोक दोष, बारमो डुगछा दोष, तेरमो निंदा दोष, चउदमो काम दोष, पन्नरमो अंतराय दोष, सोलमो मोह दोष, सत्तरमो मि थ्यात्व दोष तथा अढारमो निद्रा दोष. ए अढार दोष जेना मटी ग या छे, अने ए अढार दोषनो नाश थवाथी अढार गुण प्रगट थ याछे, जेमने रत्नत्रयी जे ज्ञान दर्शन चारित्र ते क्षायक भावे थ ईछे, जेमने अनंत चतुष्टयी संपूर्ण प्रगटीछे, जेनाथी घनघाती कर्म नी सत्ता विघटी छे, जे जिन चारे निकायना देवताउने अने चो सठे देवेंद्र तथा नरेंद्र जे चक्रवर्त्यादिक तेने पूजनीक छे, तथा जे चोत्रीश अतिशयेकरी युक्तछे, अने पांत्रीश गुण युक्त वाणीवडे देश नादेछे, जेमना आठ महाप्रातीहार्य शोभायुक्त सदा विराजेछे, त था जेमनी एवी प्रभुता जगत्रयातिशयरूप, बल, ऐश्वर्य, ऋद्धि, सिद्धि, बुद्धि, जाति तथा कुलादि भावे उत्कृष्टछे. तो पण मददोष नो जेमने स्पर्श नथी वली जे अगिलाण पणे यथार्थ अने निर्दो ष एवी सकल जगत जीवने उपकारी देशना देछे, वली ज्यां श्री अरिहंतजी विचरे त्यां फरती सवासो योजनमां इति उपद्रव नि वर्त्ते, ते इति उपद्रव सात प्रकारनाछे. पहेलो वर्षानी अतिवृष्टि, बीजो अनावृष्टि, त्रीजो उंदर प्रमुख जीवादिकनी बहुज उत्पत्ती थाय, चोथो पतंग पक्षी तोता तीड प्रमुख घणा थाय, पांचमो मरकी जेनाथी वमनादिक विकारेकरी घणा मनुष्यादिक मरण पामे, छठो स्वचक्र ते पोताना देशसंबंधी राजाउनुं सैन्य विग्रह करे अने सातमो परचक्र एटले अन्यदेशनुं आवेलुं कटक युद्ध हेतुए परस्पर लढाइथी विग्रह उपद्रव करे. ए प्रमाणेनी साते इति जे मना आगमने करी नाश पामेछे एवा श्रीअरिहंतजीछे. वली कृत

कृत्य थयाथी जेमने कोइ साधननी न्यूनता रही नथी; जेमनी निर्विकारी शान्त मुद्रा जोवाथी काम, क्रोध, लोभ अने मोहादिक अनादिना दोष मटे, अंतरमां संवरनी शैली प्रगटे, जेना वचन सांभलतांज अनादिनी मिथ्या भ्रम भूल मटे जे श्रीअरिहंतजी चारे निक्षेपे सकल जीवने हितकारी छे.

चार निक्षेपा ते आ प्रमाणेछे.

प्रथम नाम निक्षेपो एटले श्रीअरिहंतजीनुं नाम जाणवुं. जेम नमो अरिहंताणं एटलुं नाम मात्र आराधवाथी अनंतजीव मुक्ति पाम्या.

बीजो स्थापना निक्षेपो एटले जे श्री अरिहंतजी सकल दोषना चिन्होए रहित, निरुपम, सहज सुभग, समचतुरस्त्र संस्थानीय एवुं जे पद्मासन काउस्सग मुद्राते जिन बिंबछे; तेने श्रीअरिहंतजीनो स्थापना निक्षेपो कहिए. ते निःकामी लोकोत्तर स्थापनारूप जिन मुद्रानां दर्शने करी सेवा अर्चाए करी अनंत जीव मुक्ति पाम्या.

त्रीजो द्रव्य निक्षेपो ते आवीरीते के, जेणे जिन पद निकाचत्त कर्युं, पण पाम्यानथी, अने आगल जिनेश्वर थशे एवो जे जीवछे तेने द्रव्य अरिहंत कहिए. एना भावी गुणनुं भूत काले उपचार करीने वंदन, नमन; स्मरण, पूजन अने स्तवन करतां पण अनेक जीव मुक्ति पाम्या.

चोथो भाव निक्षेपो एटले आप जगत उद्धरण समर्थ, चवन जन्मादि कल्याणक महोत्सव पूर्वक उत्तम कुलमां अवतार पामीने, भोग कर्म सीम उदय अव्यापक रीते भोग विघ्न मटाडीने लोकांतिक देवकृत संकेत अवसरे वरसीदान सवा पहोरसुधी नित्ये देइ करीने, संयम ग्रहीने सम्यक्ज्ञान क्रियावडे चारे घनघाती कर्म क्षय करीने केवल ज्ञान पामे. ए वखत चलीताशन, चोसठे इंद्र सपरिवार आवी करीने अष्ट महाप्रातिहार्य युक्त समवसरण बनावे अहींयां रत्नमय सिंहासन उपर बेसीने निरवद्य देशनावडे

भव्य जीवने प्रतिबोध करी चतुर्विध संघनी स्थापना करीने तीर्थप्र वर्त्तावे. सकल जीवने देशनावडे अनुग्रह करे. एवा जे समोसरणमां विराजमान श्री सीमंधरादि विहरमान परमेश्वर तेने भाव अरिहंत कहिए, एमना चर्णारविंदनी शेवाथी पण अनंत जीव मुक्ति पाम्या.

एवा जे श्री अरिहंत देवाधिदेव, महा गोप, महा माहण, महा निर्यामक, महा सार्थवाह, महावैद्य इत्यादि बिरूदधारी, सकल समकेति जीवना प्राणाधारक, सकल मुनि मनमोहन एवा जे श्री जिनेश्वर अरिहंत देव तेमने हुं देवकरी सरदहुं, एमनी सेवा करुं, एमनी आज्ञा शिरधरुं, इतिश्री व्यवहार शुद्ध देवतत्व समाप्त.

हवे निश्चय देव तत्व कहेछे.

शुद्धात्म स्वरूप वस्तुगते वस्तुरूप प्रतीतिवडे शुद्ध तत्व श्रद्धा प्रगटे, ते निश्चय देव तत्वछे. एटले वरण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द, रूप, क्रियादिथी रहित, शरीरथी भिन्न, योगथी भिन्न, अतिंद्रिय, अविनाशी, अनुपाधी, अबंधी, अक्लेशी, अमूर्ति, शुद्ध चैतन्य, ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि अनंतगुण भाजन, सच्चिदानंद स्वरूपी एवुं मारुं आत्मतत्वछे, एम जे जाणवुं तेने निश्चे देवतत्व कहेछे.

हवे बीजा गुरुतत्वमां प्रथम व्यवहारथी शुद्ध गुरु कहेछे.

जे पांच समिते समिता, त्रण गुप्तेकरी गुप्ता, समतात्मरमणे रमतां, पंचेंद्रिय दमता, अनेक दुःकर परीसह उपसर्ग सर्व क्षमाथी खमता, अनेक स्तुति निंदा सांभलवानुं तजीने समतारूप शुभ ध्यानाग्निवडे कर्मरूपी काष्टने बालता, अनादि परचित विभाव परिणतिने वमता, जेने नहिं माया नहिं ममता, प्रतिक्षणे गुरु चर्णाविंदे नमता, प्रतिक्षणे नव नव संयम स्थाने चढता, प्रतिक्षणे ज्ञान दर्शनादि गुण पर्याये वधता, पोतपोतानी शक्ति प्रमाणे नवीन नवीन तप क्रियां करतां, प्रतिदिन आत्मवीर्योल्लासयुक्त ज्ञान क्रियाभास वडे लब्धि प्रमुख गुणे वर्त्तता, पंचांगी प्रमाण शु

ऊस्याद्वादथी अनुसरीने शुद्ध चारित्राचार पालनरूप प्रवहणे क रीने संसार समुद्र तरता, सकल आशंसा दोष त्यागी एक मुक्ति पद साध्य मन धरता, त्रिकरण शुद्धे एक विध श्रीजिनाज्ञानां प्रति पालक, द्विविध धर्मना प्रकाशक, त्रिविध रत्न त्रयीना धारक, चतुर्वि ध कषायना जीपक, पंचविध शुभभावनाये युक्त थका पांच महाव्र तना धुरंधर धोरी, छविध छकायना परम रक्षक, सप्तविध भय स्थानथी रहित, अष्टविध मदस्थानकना जीपक, नवविध ब्रह्मगु प्तिना धारक, दशविध यतिधर्म प्रतिपालवामां सावधान, एकाद शांग सूत्रना अर्थ विस्तारे पठन करवामां रसिक, इत्यादि उत्तरो त्तर अगणित गुण गणालंकृत गात्र, परम पात्र, परमोपकारी. अ ष्टादश सहस्र शीलांगरथधारी,नव कोटी विशुद्ध प्रत्याख्यान चारी, अनियत नव कल्पविहारि, सडतालीश दोपरहित शुद्धाहार आ हारी, जेनी परीक्षा कसोटीए कस्या जात्यवंत सोनानी परे अ धिक अधिक गुणना रंगधारी, शत्रु मित्र समचित्तदृष्टि, जे कुक्षि पू रक संचलथी नहीं अधिक वित्त, परमगुणी, परमदयाल, जगतबंधु, जगहितकारी, भारंड पंखीनी पेरे अप्रमत्तचारी, पृथ्वीनी पेरे सर्व सहन करनारा. मधुकरी वृत्तिनीपेरे मुधा जीवी, आकाशनीपेरे निरा धार, गतप्रतिबंधी, अंतरमां अने बाह्यमां, सुता तेम जागतां, दिवश मां तेम रात्रीमां. एकाकीमां तेम महोटी परखदामां जेमने एकज प्र वृत्तिछे. एवा मुनिराज भविक जीवोने संसार समुद्र तारवाने जेमना चरण वडसफरी वहाण समान स्वपरोपकारी छे, एवा आजना वख तमां पण पंदर कर्म भूमिमां सर्व मलीने बे हजार कोडी साधु व र्त्तेछे. तेमने हुं गुरुतत्व करी सद्दहुं, एमनी आज्ञा मागुं, एमने पर मपात्र बुद्धिए पडिलाभुं. एमनी क्रियानी अनुमोदना करुं, एवा शुद्ध साधु मारा गुरुत्वछे. इति व्यवहार शुद्ध गुरुतत्व समाप्त.

हवे निश्चयथी गुरुतत्व कहेछे.

निश्चय गुरुतत्व ते शुद्धात्म विज्ञान पूर्वक छे. जे हेयोपादेय उपयोगयुक्त परिहार प्रवृत्तिज्ञान तेने निश्चें गुरुतत्व कहीए.

हवे त्रीजा धर्मतत्वमां प्रथम व्यवहार धर्म कहेछे.

श्रीअरिहंत देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरणमां वेसी करीने बार पर्षदानी वचमां श्रीगणधर पद धारीने त्रीपदी दान पूर्वक द्वादशांगीनी रचना करी, त्यां यथार्थ अर्थना कर्त्ता श्रीअरिहंतजी अने ते अर्थानुयायी सूत्रना कर्त्ता श्रीगणधर तेने आगम कहिए ते आगममां प्रकाश्या जे जाव सकल जीवोने हितकारी दुर्गति पडतां जीवने राखे तेने धर्म कहिए ते धर्म स्वरूपना वे जेद छे एक शुद्ध व्यवहार धर्म, बीजो शुद्ध निश्चय धर्म. त्यां प्रथम व्यवहार धर्म ते श्रीजिनागामोक्त शुद्ध दया स्वरूप विज्ञान पूर्वक जे धर्म प्रवृत्तिनु करवुं तेने कहिए छेए.

अहिंयां वली दयानु स्वरूप लखीए छेए.

दयाना आठ प्रकार छे. द्रव्यदया, जावदया, स्वदया, परदया, स्वरूपदया, अनुबंधदया, व्यवहारदया तथा निश्चयदया. हवे अनुक्रमे ए आठे प्रकारनी दयानुं संक्षेप वर्णन करीये छीये.

प्रथम द्रव्य दया एटले जयणा पूर्वक प्रवृत्तिए करी जे जीवरक्षा करवी ते जैनमार्गिनो कुलधर्मछे. एने द्रव्यदया कहिए.

बीजी जाव दया एटले बीजा जीवने गुण प्राप्तिनी बुद्धे तथा दुर्गतिनो पतनोद्धारण अंतर अनुकंपाबुद्धि सहित उपदेशादिक करवो तेने जाव दया कहिए.

त्रीजी स्वदया एटले आपणो आत्मा अनादि कालनो मिथ्यात्व अशुद्ध उपयोगथी अशुद्ध श्रद्धान पूर्वक अशुद्ध प्रवर्त्तिए करीने कषायादिक जाव शस्त्रथी प्रतिसमये ज्ञानादिक गुणघात रूप जाव प्राण हणायछे; एवुं श्री जिनवचनना उपकारे जाणी करीने

स्वसत्ता जे परसत्ता प्रवृत्ति परिहाररूप, शुद्धोपयोगधारी, विषय क पायथी दूर रहे. शुभाशुभ उदये अव्यापक रहे. अहींयां चेतना स्व रूप सन्मुखछे. तेने सुख दुःखनी प्राप्ति ते कर्मोदयिक छे, पण मन मां हर्ष विषाद नरहे, प्रतिक्षण कर्मबंधनी चिंता रहे ते स्वदया. ए स्वदया वालो जीव पोतानी चेतना समारवाने जिन पूजा, तीर्थ यात्रा, रथ यात्रा, प्रमुख शुभाश्रव प्रवृत्ति करीने जिनगुण गान व हुमान पूर्वक पोतानी चेतन तत्वावलंबी करे, पुद्गलावलंबी पणुं मटाडे, जोके ए शुभाश्रवमां बाहेरथी जोतां तो हिंसाछे,पण ए नि मित्तथी अनादिनी विभाव चाल मटे, गुणी जे श्री अरिहंतादिक तेना बहुमाने करीने आत्मा गुणग्राही थाय, अने ज्यारे गुण ग्राही थाय त्यारे ते ज्ञानी पण थाय, ते माटे सर्व साधकोने ए स्वदया ते परम साधन छे. साधु पण नवकल्पी विहार करे, उपदेशआपे, चर्चा करे, पूंजन प्रमार्जन करे ते स्वदयानी पुष्टिने वास्ते करे. अहींयां योगनी चपलताए करीने आश्रव थाय खरो, पण चेतना स्वरूपानुयायी रहे, जिनाज्ञापले, कषाय स्थान मंद पडे, उद्धकता मटे, यथा छंदी पणुं मटे, धर्म प्रवृत्ति चढे तेथी स्वदया निमित्त जे शुभाश्रव तेने साधु पण पोतानी दशा माफक आदरे.

चोथी परदया ते ए के, छए कायना जीवोनी रक्षा करवी जे का रणे सर्व जीव जीव्युं चहायछे, सुखना अर्थी सर्व छे, जेम आपणो जीव दुःखथी डरे छे तेम सर्व जीव दुःखथी भय पामेछे; एवुं जा णीने जीवनी दया करे तेने परदया कहीए. वली ज्यां स्वदयाछे त्यां परदया नियमा छे; अने ज्यां परदयाछे त्यां स्वदयानी भजना छे.

पांचमी स्वरूपदया ते ए के आ लोक तथा परलोकना पुद्गलीक सुखनी आशामां तथा देखा देखीयें करीने जीव रक्षा करे तेने स्व रूपदया कहीए. आ दयावडे करीने तरत तो पुद्गलीक सुख पामेछे

पण पछी फेडकाना चूर्णनी पेरे संसार वधे आ स्वरूप दया विषे देखवामां दयाछे पण जावथी हिंसाछे.

छट्ठी अनुबंध दया एटले श्रावक बहु आफंबर करीने मुनि वंदनने माटे जाय, उपकार बुद्धिवडे बीजा जीवोने आक्रोश ताडनादिक करीने शिक्षा आपे, सुमार्गे लावे कुमार्ग तजावे आमां उपरथी जोतां हिंसाछे पण आगल पोताना अने पारका जीवने लाज थाय तेथी अनुबंधनुं फल दयाने पामे. साधु तथा आचार्य पण पोताना शिष्य शिष्यणिने सारणा, वायणा, चोयणा तथा पडिचोयणादिक करे शासनना प्रत्यनीकने पोतानी लब्धिए करी शिक्षा आपे कदापि पंचेंद्रि जीवने पण शुद्ध मार्गे प्रवर्त्तावबाने अर्थे शिक्षा करे, शासन स्थिर करे, ते अनुबंध दया कहिए.

सातमी व्यवहार दया एटले विधि मार्गानुयायी जयणा पाले, कम वेस नकरे, जुवे नहिं ते व्यवहार दया कहिए.

आठमी निश्चय दया एटले शुद्ध साध्य उपयोगमां एकी जाव अजेदोपयोग होय, साध्य जावमां एकता ज्ञान तेने निश्चय दया कहीए ए दया गुण ठाणे चढावे तेणे करी उत्कृष्टछे.

इत्यादिक अनेक प्रकार दया स्वरूप विज्ञान पूर्वक सूत्र, निर्युक्ति जाष्य, चूर्णि अने वृत्ति ए पंचांगी संमत्त प्रत्यक्षादि प्रमाण पूर्वक नैगमादिक नय शैली पूर्वक नामादि निक्षेप रचना पूर्वक स्यादस्ति नास्तिप्रमुख सप्तजंगी स्वरूप रूप, यथार्थ विज्ञान पूर्वक ज्ञान क्रिया, तथा निश्चय व्यवहार, तथा द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक इत्यादिक उजय जावमां यथावसरे अर्पितानर्पित नय निपुणताथी मुख्य गौणजावे, उजय नय सम्मत एवी शुद्धस्याद्वाद शैली विज्ञान पूर्वक श्री सिद्धांतोक्त दान, शील, तप, जावना, रूप शुज प्रवर्त्ति प्रवर्त्तन तेने व्यवहारथी शुद्ध धर्म कहीए.

हवे शुद्ध निश्चय धर्म कहेछे.

शुद्ध निश्चय धर्म ते आत्मानी आत्मता जाणे, वस्तु स्वभाव उलखे, जे आत्म द्रव्यछे ते शुद्ध चैतन्यतारूप असंख्यात प्रदेशी अमूर्त लोक प्रमाण, सर्व पुद्गलथी भिन्न, अखंड, अलिप्त, अनंत ज्ञान दर्शन चारित्र सुख वीर्य अव्याबाधादि अनंत गुणमयी, स्व गुण भोगी, अविनाशी, अनुपाधी, अविकारी एवो मारो आत्म द्रव्य स्वभाव तेज उपादेयछे, एनाथी जे विलक्षण परपुद्गलादिक ते मारुं नथी, हुं तेनो नथी, ते पुद्गल जे वर्ण, गंध, रस फरसरूप ते ना पांच विकारछे. शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श, ए पांचेना उत्तर भेद अनेकछे ए शब्दादि एकेक भेद वर्णादि चार चार भेद लइ रह्या छे. आ लोकाकाशमां जे अजवालुं छे; तथा अंधारुछे, शब्द जे उ ठेछे, सर्व रूपी वस्तुनो परछायो पडेछे, रत्नादिकनी कांति पडेछे, शित पडेछे, छाया पडेछे, धूम्र पडेछे, ताप पडेछे, नानाप्रकारना रूप, रंग, संस्थानना घाटनो नमुनो दीठामां आवेछे तथा नाना प्रकारना रूप, रंग, संस्थाननी सुगंध तथा दुर्गंध आवेछे, नानाप्र कारना रसनी मजा छे, सर्व संसारी जीवोनी देह, भाषा, मननी कल्पना तथा प्राणना दश भेद छे, तथा पर्याप्तिना छ भेदछे, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा. खुशबख्ती, उदासी, कदाग्रह, हठ, लढाइ, कषाय, क्रोधादिक चार, साता, असाता, उंचपणुं, नीचपणुं, निद्रा, विकथा, सर्व पुन्य प्रकृति, सर्व पाप प्रकृति, रीझ, मोज; खीज, खेद छ, लेश्या; लाभालाभ, यश, अपयश, मूर्खपणुं, चतुरता, स्त्री, पुरुष, अने नपुंसक वेद, कामचेष्टा, गति, जाति इत्यादिक जे आठ कर्मना विपाकछे. ते सर्व जीवने अनुभव सिद्धछे.

बीजा पण सुक्ष्मपुद्गल जे इंद्रिओथी अगोचर परमाणु आदि लइने अनेक भेदना अग्रहित एवा छुटा पुद्गल छे. ए पुद्गलना संयोग थी चारे गतिमां जीव भटके छे, ए पुद्गलनो संग तेज संसारछे.

एना संयोगथी जीवना अनंत ज्ञान दर्शन चारित्रादिक अनंत गुण बगडे, एवी जे पुद्गल द्रव्यनी रचना छे ते मारो स्वज्ञाव नथी, ए पुद्गल मारीजाती नथी, ए पुद्गलथी मारो संबंध नथी ए पुद्गल मारे त्यागवा योग्यछे पण आदरवा योग्यनथी. तथा जे धर्मास्तिकाय द्रव्यछे ते पण जीवनें तथा पुद्गलने गति सहायकारीछे, अने अधर्मास्तिकाय द्रव्य ते जीव पुद्गलने स्थिति सहायकारीछे, आकाश द्रव्य सर्वतुं ज्ञाजन अवगाहना दाइछे; कालद्रव्य नवपुरातनकारी वर्त्तनालक्षण वंतछे; एम ए चारद्रव्य जे छे ते मारे ज्ञेयरूपछे; एनाथी पण मारुं स्वरूप न्यारुंछे. तथा बीजापण संसारी जीव जे छे, ते पण पोत पोताना स्वज्ञाव सत्ताना धणीछे. ए पण मारा ज्ञेयरूपछे. ए सर्वनाथी हुं न्यारोछुं. ए मारा संगी नहीं तेम हुं एमनो संगी नहीं. हुं मारी स्वज्ञावसत्तानो धणी छुं. मारो स्वज्ञाव सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्रादि रूप, अवन्ने अगंधे, अरसे, अफासे, चेयणगुणे, अनंत अव्याबाध, अनंत दान, अनंत लाज्ञ, अनंत ज्ञोग, उपज्ञोग, अनंत वीर्यादिक, अनंत गुण स्वरूपछे. तेमनी श्रद्धा ज्ञासन पूर्वक गुणास्वादिकरूप चिदानंदनघन मारो स्वज्ञावछे. एवो माहरो पूर्णानंद स्वज्ञावछे तेने प्रकट करवाने व्यवहार नयथी, सर्व शुद्ध व्यवहार जे छे ते निमित्त मात्रछे. पण मुख्य तो मारा स्वज्ञावमांज रमण करवुं तेज शुद्ध साधनछे. तेज धर्म छे. तथाचोक्तं श्रीउत्तराध्ययनसूत्रे ॥ वत्थुसहावो धम्मो ॥ इत्यादि विज्ञानपूर्वक चेतन प्रवृत्ति तेने निश्चय धर्म कहीए. ॥ इति धर्म तत्वं समासम्.

ए त्रणे तत्वनी जे श्रद्धानिश्चल परिणति रूप प्रतित तेने सम्यक्त्व कहीए. ॥ यदुक्तं सिद्धांते। निस्संकं पावयणं ॥ जंजिणेहिं पवेहियं। तंतहा मेवसच्चं। एसमठे सेसे अणठे ॥ इत्यादि ते कारणे तत्वार्थ सदहणा तेपण सम्यक्त कहीए. अने एनाथी विपरीत वासना एटले तत्वार्थ अश्रद्धान अप्रतीत, अतत्वार्थ श्रद्धान ते मिथ्यात्व कहीए.

ए मिथ्यात्वना मूल चार भेद छे. तेमां प्रथम परूपणा मिथ्यात्व एटले जिनवाणीथी विपरीत प्ररुपे. वीजुं प्रवर्त्तन मिथ्यात्व एटले मीथ्यात्वनीज करणी करे ते जाणवुं. त्रीजुं परिणाम मिथ्यात्व एटले मनमां, परिणाममां विपरीत कदाग्रह रहे, शुद्धार्थ सरदहे नहीं. चोथुं प्रदेश मिथ्यात्व एटले सत्तागत जे मिथ्यात्व मोहनीना कर्मदल छे, तेने प्रदेश मिथ्यात्व कहीए ए कर्म दल विपाकमां आवे त्यारे परिणाम मिथ्यात्व होय, अने ज्यां सुधी तेदलीक सत्तामां पड्यां रहे त्यारे तो जीवने समकेत पण थाय.

हवे ए चारे मिथ्यात्वना उत्तरभेद एकवीश छे ते लखे छे.

१ प्रथम तो जिनप्रणीत जे शुद्ध निरवद्य धर्म तेने अधर्म कहे.

२ वीजो हिंसाप्रवृत्तिप्रमुखआश्रवमयीअशुद्धअधर्मतेनेधर्मकहे.

३ त्रीजो संवरभाव सेवनरूप जे मार्ग तेने उन्मार्ग कहे.

४ चोथो विषयादि सेवनरूप जे उन्मार्ग तेने मार्ग कहे.

५ पांचमो सत्तावीश गुणेकरी विराजमान, काष्टना नावसमान, तरण तारण समर्थ एवा जे साधु तेने असाधु कहे.

६ छठो आरंभ परिग्रह, विषय कषाये भरेलो, लोभ मग्न, कुवासना दायी, लोढाना तथा पाषाणना नाव समान, एवो जे अन्य लिंगी तथा कुलिंगी असाधु होय तेने सुसाधु कहे. पण एम न विचारे के जे पोते दोश थकी भरेलोछे ते वीजाने केवीरीते निर्दोषि करशे ? जेम पोते दारिद्री छतां वीजाने धनपती क्यांथी करशे ?

७ सातमो एकेंद्रियादिक जे जीवोछे तेने अजीव करी माने.

८ आठमो काष्ठ सुवर्णादिक अजीव पदार्थछे तेने जीवकरी माने.

९ नवमो मूर्त्तिवंत एवा जे रूपी पदार्थछे तेने अरूपी कहे जेवी रीते स्पर्शवान वायुने अरूपी कहे, पण ते जो अरूपी छे तो तेमां स्पर्श केमछे ? एवुं विचार करे नहीं.

१० दशमो अरूपी पदार्थने रूपी कहे. जेवी रीते मुक्तिमां तेजनो

गोलो माने पण एम न विचारे के जे अरूपी चीज छे तेनुं तेज केम नजरमां आवे? एवो विचार न करे. ए दश भेद कह्या.

तथा पांच बीजां मूल भेदछे ते लखेछे.

१ जे पोतानी मतिमां आव्युं ते साचुं बीजुं सर्व जुठुं पण परीक्षा करवानी इछा राखे नही शुद्धा शुद्धनी खोल करे नही ते प्रथम अभिग्रहिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

२ सर्व धर्म साराछे सर्व दर्शन भलांछे सर्व कोइने वंदना करिए पण कोइनी निंदा करिए नही. एणे अमृत अने विष ए बन्ने समान गण्या ते बीजो अनभिग्रहिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

३ जे जाणी बुजीने जुठुं बोले, पहेला पोताना अज्ञानपणा थकी कांइ भूलपडे विपरीत प्ररुपणा करे तेवारे कोइ शुद्ध मार्गानुसारी जीव तेने कहे के आ तमे सिद्धांत विरोद्ध बोलोछो तमे भूलोछो एवुं सांभले तेवारे तेने हठ आवे तेथी कुमति कदाग्रह कुयुक्ति करीने पोतानुं वचन राखवानी अपेक्षा करे पोते जुठो पडे तोपण नमाने ए पुरुष विराधक बहु भव भ्रमण करनारो जाणवो ए त्रीजो अभिनिवेश नामे मिथ्यात्व जाणवो.

४ जे जिनवाणीमां संशय राखे एने पोताना अज्ञान दोष थकी सिद्धांतना गहनार्थमां खबर पडे नही त्यारे डगमगतो थको रहे जे ए केम हशे ए संशयिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

५ जे अजाण पणाने लीधे कांइ समजे नही ते अनाभोगिक मिथ्यात्व अथवा एकेंद्रियादिक जीवोने अनादि कालनो लागो रह्योछे ते पण अनाभोगिक मिथ्यात्व जाणवो. ए बद्धा मलीने पूर्वेला दश भेद साथे मेलवता पंदर भेद मिथ्यात्वना थया.

हवे बीजा छ भेद लखेछे. एक लौकीक देव, बीजो लौकीक गुरु, त्रीजो लौमीकपर्व, चोथो लोकोत्तरदेव, पांचमो लोकोत्तरगुरु, अने छठो लोकोत्तरपर्व. ए छ भेद ववरीने कहेछे.

१ जे देव राग द्वेष थकी भरेलाछे, एक उपर मेहेरबान थाय छे, एकनो विनाश करेछे तथा स्त्रीयादिकना विलाशमां मग्न रहेछे, अनेक जातना हथीयारो हाथमां धारण करेलांछे, पोतानी प्रभु तमां कांइ न्यूनता नथी, हाथमां माला धारण करेछे, सावद्यजोग पंचेंद्रिय वधादिकनी चाहना करेछे एवा देवोने माने, पूजे, अने तेमना कहेला मार्ग यज्ञ याग अनेक प्रवृत्ति हिंसामयी करे, तेने प्रथम लौकीक देवगत मिथ्यात्व कहिए. एना अनेक भेदछे ते मि थ्यात्व सत्तरी प्रमुख ग्रंथो थकी विस्तारे जाणवा.

२ जे अढार पापस्थानकथी भरेलांछे, नवविध परिग्रहधारी, गृहस्थाश्रमी, एवा छता गुरुनाम धरावे ते जाणवा. तथा बीजा कुलिंगी जे नव नव प्रकारना भेष बनावीने आडंबर करे, बाह्य प रिग्रह त्याग करे, पण अभ्यंतर ग्रंथी छोडी नथी, अनादिनी भूल मटी नथी, शुद्ध साध्यनी उलखाण थइनथी, एवाने गुरु करी मा ने, तेनो बहुमान करे, एवाने शुद्धदान आपे, तेमां परमपात्र बु द्धि धरे, ते बीजो लौकीक गुरुगत मिथ्यात्व जाणवो.

३ आ लोके पुद्गलिक सुखनी इछाथी अनेक मिथ्यात्व क ल्पित लौकीकपर्व दिवश जेवांके दिवासो, रक्षाबंधन, गणेशचोथ, नागपंचमी, सोमप्रदोष, सोमवती, बुद्धाष्टमी, होली, दशेरा, प्र मुख शतपर्वने लाभदायी जाणीने श्रद्धायेंकरी आराधे, द्रव्य व्यय करे, कुपात्रने दान आपे, ते त्रीजो लौकीक पर्वगत मिथ्यात्व जाणवो.

४ देव श्रीअरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकारसागर, परमेश्वर, परमपूज्य, सकलदोषरहित, शुद्ध निरंजन, तेनी स्थापना जे मूर्त्तिसा धिष्ठायक प्रतिमां तेने आ लौकिक पुद्गलिक सुखनी इछा धारणकरी माने के माहरुं कार्य थशे तो महोटी पूजा करीश, छत्रादिक चडा वीश, दीवाकरीश, रात्रि जागरण करीश, एवीरीते श्रीवीतरागनी मा नता करे अहीं चिंतामणीना दातार पासेथी काचना कटकानी

मांगणी करवी तेकांइ युक्त नथी पण जेने कर्मोदयनी प्रतीत न थी ते व्यर्थ ऋूला जटकेछे पुण्योदय विना कांइ पण थतु नथी व्यर्थ निरंजन देवने पुजलिक सुखनी आशा धारण करी माने ते चोथो लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व जाणवो.

५ जे साधु वेशधारी, निर्गुणी, जिनवचन उन्नापक, पोतानी मतिकल्पनायें करी अर्थनी देशनाना प्ररूपक, सूत्रार्थना संताडनार, एवा उत्सूत्र जाषण करनारां लिंगीउ तेमने गुरु बुद्धियें करी वहुमान करे तथा जे सुसाधु, सद्गुणी, तपस्वी, सदाचारी, वहुक्रियावंत होय तेने आलोकना सुखनी चाहनाधरीने वहुमान करे अने एम विचारेजे एवागुणीनी अत्यंत सेवा करीशुं तो एमनी मेहेरवानी थकी धन ऋद्धि पामीशुं एवी इंडिय सुखनी इछा धारण करीने तेमने माने ते पांचमो लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व.

६ कल्याणीकादिक पर्वदिवशें पुत्रादिकनी वांछनाए करीनें अरिहंत देवनुं आराधन करे ते छहो लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व.

एप्रमाणे सर्वमलीने मिथ्यात्वना एकवीश ज्ञेद थया तेने हुं परिहरुं परंतु एमां देवतत्वमां एटलो आगार के जे कुलनी परंपरा चाली आवीछे एवी जे गोत्रज कुलदेवतादिकनी पूजा, अने दीप पूजा प्रमुख विवाहादिक करणीने विषे जे करवी पडेछे तेनी जयणाछे परंतु तेने शुज्ञ करणी जाणु नही.

अने गुरुतत्वमां कुगुरु जे अन्यलिंगी ब्राह्मणादिकछे जे विवाहादिक जोडावे पराणावे तेना अधिकारीछे जेमनी परंपरानी वृत्ति लागेलीछे ते आवीने आसिरवाद आपे तेवारे तेमने लौकीक व्यवहारने अर्थे प्रणाम करवुं पडे, कांइ उचित्त आपवुं पडे. तथा कोइ मिथ्यात्वी राजवर्गीने घेर गया थकां त्यां तेमना गुरु आवे तेवारे ते राजवर्गी पोताना गुरुनुं वहुमान प्रणामादिक करे तेवारे तेनी आदवथी आपणने पण सलाम प्रमुख वहुमान करवुं पडे. तथा

जेणे नामा लेखादिक अंकविद्या प्रमुख आजीविका चलाववानो हु न्नर शिखाव्यो होय एवो उस्ताद ब्राह्मणादिक होय तेनुं बहुमान करवुं पडे, न्नक्ति करवी पडे, अन्न वस्त्रादिक आपवुं पडे,तेनुं आगार ढे. उचित्त व्यवहार जाणी ए सर्व करुं पण धर्म बुद्धियें नकरुं.

तथा मिथ्यात्वीना कोइक लौकीक वार तेवार आवे तेवारे ते ना उछवादिक कारणे ते कांइ द्रव्यादिक मांगवा आवे तथा ते मि थ्यात्वी कूप सरोवरादिकनुं खनन करवानी जे लौकीकरीतीढे तेने धर्म बुद्धि करी मानेढे तोतेवाकार्योंने अर्थें कांइ द्रव्यादिक मांगवा ने आवे तेवारें शासननी निंदा मटाडवानी बुद्धि धारण करीने द्रव्यादिक आपुं पण तेमां सुकृतनी बुद्धि धारण करुंनही.

बीजा पण कोइ कुलिंगीने कोइ लज्जा दाक्षिणता न्नय प्रमुख कारणने लीधे बहुमान करवुं पडे, अथवा दान आपवुं पडे, ते के वल लोक व्यवहार तथा शासननी हीलना मटाडवाने अर्थें त था द्वेष मटाडवाने अर्थें लोकचाल करुं पण तेमां धर्म बुद्धि ध रुं नही. अने ते खरच संसार खाते लखुं.

तथा स्वलिंगी हिनाचारी केवल वेषधारी न्नेखधारी होय तेने शा सननी निंदा मटाडवाने अर्थें तथा तेमनो खेद मटाडवाने अर्थें प्रणा मादिक बहुमान करुं तथा कुल परंपरागत वृत्ति जाणीने अन्न वस्त्रा दिक आपुं केमके जिनमार्गनो लिंगी तथा दर्शनी पण याचना करे नही ए पण एक गुणढे तो त्यां ए गुणं आगलकरीने आपवो.

तथा तेवा हीनाचारीमां पण जे शुद्ध प्ररुपकढे. अने जेणे आपणने न्नणवा सुणवानुं उपकार कीधुंढे, जेणे आपणने सुबुद्धि आपीढे, आपणी न्नूल मटाडीढे, तो तेवाने ए आपणुं उपकारीढे एवी बुद्धि धारण करीने वंदन नमन सन्मानसन्मुख गमन प्रमु ख मनमां हर्ष धारण करीने करुं, माहारी शक्ति प्रमाणे सेवा क रुं, मोहोटा उपकारी धर्माचार्य करी मानु, पण तेने सुसाधु शुद्ध

गुरु तत्व करी सर्द्दहुं नहि मात्र उपकारी सरद हुं. एरीते मिथ्या त्वनुं त्याग करुं शुद्ध समकेतने धारण करु. इति व्यवहारसम्यक्त्व.

हवे निश्चय सम्यक्त्व लिखेछे.

निश्चय सम्यक्त्वतेजे पूर्वे निश्चय देव, गुरु अने धर्म तत्वमां लखेलुंछे ते तत्वनी विचारणा करतां निष्पन्न स्वरूप संग्रह सत्ताग्राही नय गवेषतां, निश्चय देव ते ए आपणो आत्माजछे तथा निश्चय गुरुपण आपणो आत्माज छे जे कारण माटे स्वरूपोपयोगीजीव ते पोतानी आत्माने सन्मार्गी करे ज्ञावाश्रवनुं त्याग करावे एमाटे आत्मा एज गुरु तत्वछे.

तथा निश्चय धर्म पण आपणो आत्माजछे जे कारण माटे धर्म जे वस्तु स्वज्ञाव तेने जे पामे ते धर्मि कहेवाय. एटले धर्म जे तत्व रमणता पोताना स्वरूपमां लीनता नयमार्गे जे जेटली वखत जेमां अज्नेदोपयोगी होय तेने तेटली वखत तद्रूमयीज कहिए, जेम पुरुषने स्त्रीनी आशक्ते करी लीनता उपयोग स्त्रीनोज थाय, तेने शुद्धनय स्त्रीज कहेछे माटे स्वधर्मे अज्नेदोपयोगी आत्माज धर्मरूप कहिए. अने वस्तुगते शुद्ध स्वरूप रमणता ते स्व गुणछे अने स्वगुण तेधर्मछे तेमाटे धर्मपण आत्माज छे. एटले शुद्ध सम्यक्त्व श्रद्धागुण ते निश्चयथी देवदर्शनछे एटले निश्चय देवछे, तथा सम्यक् शुद्धात्म विज्ञान ते निश्चय गुरुछे, तथा तत्व रमणता, आत्मस्वरूपे मग्नता, ते निश्चय धर्मछे.

जे कारण माटे जेम देवदर्शन थकी अशुज्ञ मटेछे, मंगलीक थायछे, ग्रह पीडा मटेछे, मनकामना सिद्धि थायछे तेम अंहीं सम्यक्त्व पामवाथकी मिथ्यात्व अने अनंतानु बंधिरूप परम अशुज्ञ मटेछे अने अपुनर्बंधकरूप श्रद्धान प्राप्तिरूप मंगलीक थायछे तथा कुमति कदाग्रहरूप ग्रह पीडा टलेछे अने सकाम निर्जरारूपमन कामना सिद्धि थायछे माटे शुद्धसम्यक्त्वदर्शन प्राप्ति ते देवछे.

तथा जेम गुरु मलवा थकी भूल मटेछे, हितवतावे, रहस्या पामे. तेम अंहीं आत्मविज्ञाने करी पण विविध परभाव भ्रमण रूप भूल मटी जायछे, तथा तत्वरमण रूप परमहितने पामेछे, अने निश्चय समता सहेज उदाशीनतानो जे रहस्य तेने जाणवा ने अर्थे तो ज्ञान तेज गुरुछे.

तथा जेम धर्मनी संगत थकी दुर्गतिमां पडे नही, दिवसेंदिव सें अधिक सौभाग्यनी वृद्धि थाय, तेम तत्वरमणरूप धर्म थकी पण परभाव धसणरूप कुगतिमां पडेनही, दिवसेंदिवसें असंख्य गुण निर्जरा थाय तेथी अनेक गुण प्रगटरूप सौभाग्य पामे, माटे जे स्वरूपोपयोग तेज धर्म जाणवो इति निश्चयसम्यक्त्व संपूर्णम्.

हवे ए सम्यक्त्वनी जे करणी छे ते लिखेछे नित्यप्रत्ये छती जोगवाइयें अने छती शक्ते वाट घाटविना श्रीजिनप्रतिमां जुहारुं, परंतु जो प्रतिमांनुं योग नमले तो पूर्व दशा सन्मुख श्री वर्द्धमान प्रभुने सन्मुख उपयोग राखीने चैत्यवंदन करुं, रोगादिक कारणे नथाय तेनो आगारछे.

श्रीदेराशरनी दश आसातना मोहोटीछे ते नकरुं ते दश आसातनना नाम कहेछे. देरासरमां तंबोल पान फल प्रमुख नखावा, पाणी नपीवुं, भोजन न करवुं, पगरखा प्रमुख चैत्यनी अंदर न लइ जवा, मैथुन सेववुं नही, चैत्यमां शयन नकरवुं, थुकवुं नही, लघुनीत नकरवी, वडीनीत नकरवी, जुगटु रमवुं नही ए दश आसातना श्रीजिन मंदिरमां नकरुं. अने बीजीपण चोरासी आसातना जे छे तेने टालवानी मनमां चाहना राखुं के जे थकी मोहोटी चैत्यनी आसातना मने नलागे.

मासप्रत्यें अमुक सेर प्रमुख फूल चडावुं, मासप्रत्यें अमुक प्रमाण पूर्वक फलादिक चडावुं, मासप्रत्यें घृतादिक अमुक सेर प्रमुख चडावुं, वर्ष प्रत्यें अंगलुछणा पांच अथवा दश चडावुं.

वर्षमध्ये केसर, चंदन, बरास जीमसेनी प्रमुख प्रनु पूजानिमित्ते जाइए तेमां माहारी शक्ति प्रमाणे द्रव्य खरचुं, देरासर निमित्ते वर्षप्रत्यें धूप अगरबती कर्पूर प्रमुख अमुक रकमनुं चडावुं, वर्षे प्रत्यें अमुक अष्टप्रकारी पूजा तथा सत्तर प्रकारी पूजा करुं करावुं.

वर्षप्रत्यें साधारण द्रव्य अमुक रकम सुधी खरचुं, वर्षप्रत्यें ज्ञान हेतुए ज्ञान सामग्रीमां अमुक द्रव्य खरचुं, दिनप्रत्यें नवकरवाली दश अथवा पंदर आत्महिते गुणु, नगुणाएतो आगल पाछल गुणीने पूरण करुं, परंतु रोगादिक कारणे नगुणाए तो तेनी जयणाछे.

दिनप्रत्यें बत्ती समर्थाइए प्रनाते नवकारसी अने संध्याकाले डुविहार पच्चखाण करुं, परंतु वाटघाटमां अथवा रोगादिक कारणे नथाय तो तेनो आगारछे. वर्षप्रत्यें सामीवत्सल एटले अमुक संख्या साधर्मिकोनी जमाडुं. एवीरीते समकेतपालुं.

ए समकेतना पांच अतीचार जे छे ते टालुं ते लिखेछे.

१ पहेलुं संकाअतिचार तें श्रीजिनवचनना गंनीर गहनन्नाव सांनलीने पोताना मनमां संका संदेह धारण करे जे आ केमहशे मने बराबर बेसतो नथी एवो मनमां डगमगाट रहे.

२ बीजो आकांक्षातिचार ते जे कोइ अन्यमती पाखंडीनी कष्टक्रिया देखीने कांइ चमत्कार जुए तथा आलोकमां पण पूर्व जन्मना अज्ञान कष्टक्रियाना फल थकी अन्य मतिने घणोज सुखी दोलतवान देखीने मनमां विचार करे के अन्यमतिउंनो धर्म पण सारुंछे एमनु ज्ञान धर्म सहु सारुंछे एपण धर्म करेछे एवी चाहना धरे ते आकांक्षा नामे बीजो अतिचार जाणवो.

३ त्रीजो वितिगिछानामे अतिचार कहेछे जेकोइ पोताना पूर्वकृत पापोदय ने लीधे डुःख पामे तेवारे एवुं विचार करे के जे धर्म करिए छैए तेनुं फल शुं जाणीए क्यारे पामीशुं एटलुं फल थशे के न थाय तेकरतां तो जे धर्म नथी करता ते घणाज सुखी देखा

यछे अने अमे तो जेम जेम धर्म करणी करिए छैए तेम तेम दुःखी थैये छैए एधर्मतो शुं जाणीये क्यारे फलशे किंवा नहीज फलशे एवी विचारणाकरे तथा साधुना मलमलीन शरीर अने वस्त्र देखीने दुगंछा करे जे शुं आ कांइज नही आवा गंदा हालमां रहेवुं सारूं नथी ए बापडा शुं तरशे एजो फाशु पाणी थकी स्नान करे तो तेथी कयोव्रत भंग थायछे ? एवी दुगंछा करे ते त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो मिथ्यात्विनी प्रशंसानुं अतिचार कहेछे. एटले मिथ्यात्विउंना गुरु जे ब्राह्मण तापसादिकछे तेनी प्रशंसा करे ते आवीरीते के ए मोहोटा तपस्वीछे, महापुरुषछे, मोहोटा पंडितछे, एना बरोबरीउं कोइ नथी एमनी शुं वात करिए एवी एवी तेमनी प्रभुता वखाणे अने कहेजे एतो पोतानुं अवतार सफल करेछे, तथा कोइक मिथ्यात्वी व्रत याग यज्ञ करे त्यारे तेनी घणीज खुसामतीने खातर अत्यंत तारीफ करीने कहेके माहाराज तमे रुडुं कार्य किधुं तमे तो तमारो जन्म कृतार्थ करोछो इत्यादिक कहेवुं ए पण समकेतनो चोथो अतिचार जाणवो.

५ हवे पांचमो अतिपरिचयनामा अतिचार कहेछे जे मिथ्यात्विसाथे घणोज परिचय राखवो एकत्र भोजन संवास करवो, अत्यंत प्रीति वधारवी ते पांचमो अतिचारछे. केमके एवुं अत्यंत परिचय कस्या थकी पण कोइ दिवसे मन बिगडे, चित्त चलित थाय, पाप लागे तेमाटे परिचय न करवो ए पांचे अतिचार जाणवा पण आदरवा नही. एरीते छ छिंडी तथा चार आगार सहित सम्यक्त्व पालुं तेमां प्रथम छ छिंडीना नाम कहेछे.

१ प्रथम ( रायाभियोगेणं ) एटले कोइ राजा नगरादिकनो मालक होय अने ते बलात्कारे कांइ विरुद्ध कार्य करावे ते करवुं पडे तो तेथकी माहारो सम्यक्त्व भांगे नही.

२ बीजी ( गणाभियोगेणं ) एटले जाति ज्ञाति अथवा पंच

एटले लोकनो समुदाय तेमना हठने लीधे कांइ विरुद्धाचरण करवुं पडे तेथी माहारूं सम्यक्त्व भांगे नही.

३ त्रीजी ( बलाभियोगेणं ) एटले बलवंत चोर म्लेछादिक ने वश पड्ये थके ते लोको बलात्कारे कांइ विरुद्ध कार्य करावे ते करवुं पडे तेथी माहारूं सम्यक्त्व भांगे नही.

४ चोथी ( देवाभियोगेणं ) एटले क्षेत्रपाल माता व्यंतर विं भासणी अने पितरादिक प्रमुख तेमना आवेश थकी जीव परव श थइ जाय तेवारे कांइ विरुद्ध कार्य थइ जाय तेथी माहारूं स म्यक्त्व भांगे नही अथवा देवता मरणांत कष्टमां पाडे अत्यंत कष्ट आपे तेथी चेतना सिथिल पणे कायर थाय तेवारे दंड भरण न्याये कांइ विरुद्ध करवुं पडे तेथी माहारुं सम्यक्त्व भांगे नही.

५ पांचमी ( गुरुनिग्गहेणं ) गुरु एटले माता पिता उस्ताद प्रमुख तथा पूज्य इत्यादिक महोटाना केवा थकी कांइ विरुद्धवात कुचाल कार्य करवो पडे तो तेथी महारो सम्यक्त्व भांगे नहीं.

६ छठी ( वित्तिकंतारेणं ) वृत्ति एटले दुर्भिक्षमां आजीविका निमित्ते कोइरीते पेट भराइनो धंधो उद्यम नमले घणीज आपदा पडे तेवारे कांइ विरुद्धाचरण करवो पडे तेथी सम्यक्त्वने दूषण लागे परंतु तेमां अजीविका चलाववा निमित्ते दुर्भिक्षमां कांइ अ नाचार करूं तो तेथी माहारुं सम्यक्त्व नभांगे ए छछिंडी कही.

हवे चार आगार लिखेछे.

१ प्रथम ( अन्नछणाभोगेणं ) एटले कोइ कार्य अजाण पणे उपयोग दीधाविना कांइ एकनो बीजो थइ जाय परंतु जेवारे यादगरीमां उपयोग आवी जाय तेवारे तेज वखत आगारने पाले परंतु दूषण नलगाडे ते प्रथम आगार जाणवो.

२ बीजो ( सहस्सागारेणं ) एटले सहसात्प्रकारे एका एकी जाणेछे परंतु उपयोगनी चपलता थकी अथवा नित्य बहुल अ

भ्यास थकी जाणते जाणते पण कांइ विरुद्ध थइ जाय तो तेथी माहारी प्रतिज्ञा भंग नथाय. ए बीजो आगार जाणवो.

३ त्रीजो ( महत्तरागारेणं ) एटले कोइ कार्य विशेष थकी लाभालाभनी शैली थकी ( महत्तर के० ) महोटा गुणवंतनी आज्ञा थकी कांइ कमवेश करवो पडे ते त्रीजो आगार जाणवो.

४ चोथो ( सवसमाहिवत्तियागारेणं ) एटले सर्व समाधि व्यत्यय अंहीं कोइ महोटा सन्निपातादिक रोगनी विक्रिया थकी उत्पन्न थयुं जे ग्रथिल पणु तेने लीधे बेशुद्ध थइ जाय एवी अवस्था प्राप्त थयेथी कांइ विरुद्धता करवी पडे तेथी पण माहारी सम्यक्त्वनी प्रतिज्ञा भंग नथाय ए चोथो आगार जाणवो.

ए ठ छिंकी अने चार आगार सहित समकित पालुं अंहीं दिवसनो नियम दिवसमां नकरी शकुं तो बीजे दिवसे करी पोहोचाडुं अने महीनानु नियम बीजा महीनामां करी पोहोचाडुं तथा वर्षनुं नियम बीजा वर्षमां करी पोहोचाडुं एरीते जेवीरीते पोतामां पालवानी शक्ति होय तेवीरीते छूट राखवी.

ए ठ छिंकीने चार आगार जेम अहीं समकेत व्रतमां लख्याछे तेज नियमनी रीतें यथायोग्य शैली प्रमाणे अंहीं लखवा थकी आगल पण बीजा सर्व बारे व्रतोमां समजी लेवां फरी एकेका व्रतमां नहीं लखीशुं बधामां अंहींथीज धारणा करवी अंहीं सर्व प्रतिज्ञानुं रहस्य लिख्युंछे अंहीं सम्यक्त्व मार्गना कथननी गाथा नीचे लखियेंछेए गाथा ॥ अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवंमु साहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तंतत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥

इतिश्री स्याद्वाद शैली पूर्वक सम्यक्त्व अंगीकार करवानो विधि तेनी पीठिकासमाप्त थइ.

---

हवे आग्रंथमां केहेवाना बार व्रतोना नाम कहेछे.

प्रथम प्राणातिपातविरमणव्रत, बीजो मृषावाद विरमणव्रत, त्रीजो अदत्तादान विरमणव्रत, चोथो ब्रह्मचर्यव्रत, पांचमो स्थूल परिग्रह परिमाणव्रत, छठो दिग् परिमाणव्रत, सातमो भोगोपभोग परिमाणव्रत, आठमो अनर्थदंड विरमणव्रत, नवमो सामायकव्रत, दशमो देशावगासिकव्रत, अगीआरमो पौषधोपवाशरूप व्रत अने बारमो अतिथिसंविभागव्रत ए बार व्रतना नाम जाणवा.

॥ अथ प्रथम स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रत प्रारंभः ॥

ए प्रथम थूलप्राणातिपात विरमण व्रत तेना बे भेदछे. तेमां एक द्रव्य प्राणातिपात बीजो भाव प्राणातिपात त्यां द्रव्यप्राणातिपात विरमण व्रत ते एके परजीवने पोता सरखो जाणीने जयणा पाले. एना दश द्रव्य प्राणोनी रक्षा करे, उगारे. ए द्रव्य प्राणातिपात विरमण व्रत कहीए. एमां व्यवहार दयाछे. अने भावप्राणातिपात विरमण व्रतते आपणो जीव कर्मने वश पड्यो थको दुख पामेछे. आपणा भाव प्राण जे ज्ञान दर्शनादिक तेनुं मिथ्यात्व कषायादिक अशुद्ध प्रवर्तनरूप शस्त्रथी प्रतिक्षणे घात थायछे, प्रतिक्षणे हणायछे. ते आपणा जीवने कर्म रूप शत्रुथी छोडाववानी फिकर करीने तेनो उपाय जे आत्मगुण रमणता तेने धारण करे, परभाव रमणता वारे, शुद्धोपयोगे वर्त्ते, उदये अव्यापक रहे. एक स्वभाव मगनता तेज समस्त कर्म रिपुने उछेद वा अमोघ शस्त्रछे. एटले सर्व परभाव इष्टता निवारीने. स्वरूप सन्मुख उपयोगते भाव प्राणातिपात्त विरमण व्रत कहीए. अने निश्चय दयापण एजछे.

अंहींयां थूल प्राणातिपात विरमणव्रत ते थूल एटले जे मोटा नजरमां आवे, फरे, पडे, एटले त्रसजीव एमने संकल्प करी

ने नहणुं. ए हनन क्रियापण चार प्रकारनीछे. एक आकुट्टी करी ने हणवुं बीजुं दर्प्पे करीने हणवुं २ त्रीजुं प्रमादे करीने हणवुं अने चोथो कल्पे करीने हणवुं ए चारेना अर्थ लखेछे.

१. प्रथम अकुट्टी एटले जे निषेधिवस्तु तेनुंज फरी उत्साह थकी सेवन करे जेम आखो सराई वस्तुनो फल तेनो जडथो न करवो जे निलोत्री मोकली राखी होय तोपण तेनुं जडथो करीने खा वुं नहीं छतां तेनी चाहना धरीने जडथो करे ते आकुट्टि दोष.

२ दर्प्पआकुट्टि एटले उछक पणाथी उन्मत्तपणे मान अने गर्व धरीने दोड करे ने तेथी हिंसा थाय तेने दर्प्पआकुट्टि हिंसा कहीए, जेम गाडी, वहेल घोडा प्रमुखने परस्पर एकेकथी अ भिमान धरीने दोडावे ए आकुट्टी दर्प्प हननक्रिया जाणवी.

३ त्रीजी आकुट्टि प्रमाद एटले काम भोगने विषे तीव्र अभि लाषथी जे हिंसा करे, तेम कामो द्दीपन करवा माटे त्रसादिजी वनी हिंसा करीने पट्टी, गोली, माजम प्रमुख बनावे ते आकुट्टि प्रमाद हनन क्रिया जाणवी.

४ चोथी कल्पहिंसा एटले पोताना घरकामने सारुं रंधनादि क करे तेने जाणवी. अहींयां श्रावकने प्रथम हिंसा तो बीलकु ल नज करवी जोइए. जोरती करे तो पण जयणाथी करे ते माटे अंहींयां संकल्प करी आकुट्टी तथा दर्प्प करी त्रसजीवने न हणुं. ए चीटी जाती छे एने मारुं एवो संकल्प करीने जीवने हणे हणावे एने आकुट्टी संकल्प कहीए.

एवो संकल्प करीने निरापराधी जीवने कारण विना न हणुं, न ह णावुं कारणे, आरंभे, रंधनादि गृहस्थ करणी करतां तथा पुत्रादि कना शरीरे जीवोत्पत्ति थइ होय तेना औषधादि कारणे करवुं पडे तेनी जयणाछे. घोडा, बलद प्रमुखने चाबकादिक मारवापडे तेनो आगार. तथा पेटमां करमीया, गंडोल पगमां नारु अथवा हरस, श

रीरमां चम्म अने जुं प्रमुख उपजे, तथा मित्रादिक अथवा बीजा स्व जनादिकना शरीरने विषे उपजे तेनो उपचार करवानी जयणा. जे कारणे साधुने तो सूक्ष्म अने बादर ए बंने जातीना जीवनी, त्रस अने थावर बंने भेदना जीवनी नवकोटि विशुद्ध पच्चखाणथी हिंसानो त्यागछे. एकारणे साधुने वीश विश्वानी दयाछे, अने गृहस्थने सवा वश्वानी दयाछे. ते केवीरीते तेनो विवरो लखीए छैए.

॥ गाहा ॥ जीवा सुहुमाथूला । संकप्पारंभाभवेदुविहा । सावराह निरवराहा । साविक्खाचेवनिरविक्खा ॥ १ ॥ अर्थ—जगतमां जीवना बे भेद कह्याछे. एक थावर, बीजा त्रस, तेमां थावरना वली सूक्ष्म, बादर ए बे भेदछे, तेमां पण सूक्ष्मनी हिंसा नथी कारण अति सूक्ष्म जीवना शरीरने बाह्य शस्त्रनो घाव लागतो नथी, तेमने स्वकाय एटले पोतानी जातीना जीवोथी घात पातछे. पण बादर नथी एमाटे अहींयां सूक्ष्म शब्दथी पण जाणवुंके थावर जीव, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिरूप बादर ए पांचे थावर तेमने सूक्ष्म कहीए. अने थूल एटले बेंद्रि, त्रेंद्रि, चौरेंद्रि, पंचेंद्रिरूप जाणवा ए जीवना मूल भेद बे छे तेमां सर्वे जीव आव्या. तेछ सर्वेनी त्रिकरण शुद्ध साधु रक्षा करेछे. तेमाटे वीशविश्वानी दया, मुनिनेछे.

पण श्रावकथीतो पांच थावरनी दया पली शकाय नही. सचित्त आहारादि कारणथी अवश्य हिंसा थायछे. माटे दश विश्वागया अने दश रह्या. एटले एक त्रस जीवनी दया राखवाना दश विश्वा रह्या तेना पण वली बे भेदछे. एक संकल्प. बीजो आरंभ. तेमां आरंभे करीने जे त्रस जीवनी हिंसा थइ जाय ते छोडी न जाय तेमाटे बे हिंसामां एक संकल्प हिंसानो त्याग अने आरंभ हिंसानी तो जयणाछे, एम गणतां फरी दशमांथी अडधा गया एटले पांच विश्वा रह्या, एटले संकल्प करी त्रस जीव नहणुं. एमां पण जीवना बे भेदछे. एक सापराधी जीव अने बीजा निरपराधी जीव

छे. तेमां जे निरपराधी जीवछे तेमने न हणुं, अने सापराध जीवने हणवानी तो जयणा छे. जेथी करी सापराधीनी दया, श्रावकथी सदा सर्वरीतेंथी पले नहीं.

जेम के घरमां चोर पेठा छे. तेउ आपणी चीज लइ जा छे ते मास्या कूट्या विना छोडे नहीं. वली वीजुं दृष्टांत एके आपणी स्त्री साथें कोइ अन्य पुरुषने अनाचार सेवतां देखियें तो तेने तस्दी दीधा विना ते बूटे नहीं. ए प्रमाणे सापराधी कहीएं. बीजुं पण क्यारेंक राजानी आज्ञाथी युद्धमां गया थका संग्राम करवो पडे, त्यारें त्यां आगलथी शस्त्रादिक चलावियें नहीं. सामो शत्रु प्रथम शस्त्रनो मारो करे, त्यार पछी आपणे करीएं. ए माटे सापराधीनो संकल्प पण न बूटे. त्यारें वाकी रहेला पांच वशामांथी पण अडधा गया, बाकी अढी वशा रह्या. एटले संकल्पीने "निरपराधी जीवने न मारुं" एटलुंज फकत रह्युं. एमा पण वली बे भेद छे. एक सापेक्ष, अने बीजो निरपेक्ष, तेमां सापेक्ष निरपराधी जीवनी दया, श्रावकथी पले नहीं तेनुं कारण शुं? ते कहेछे. श्रावक पोतें घोडा, घोडी, वेल, बलद, रथमां, गाडीमां, के इत्यादि बीजा वाहनोपर बेसे छे. त्यारें घोडा प्रमुख बलद विगेरेने चावका के आर लगावे छे, पण विचारतो नथी के, घोडाएं के बलदें शो अपराध कस्योछे? एमनी पीठ उपर तो चढी बेठो छे. ए जीवना शरीरसामर्थ्यनी तो कांइ खबर छे नहीं. जे आजीव, बलवान् छे, के दुर्बल छे. पोतें उपर चढी बेठो छे, ने वली तेने गाल प्रमुख दइने मारे छे! पण एतो निरपराधीज छे. वली आपणा अंगमां तथा आपणां पुत्र, पुत्री, नाती, गोत्री, आदिकना मस्तकमां अथवा कानमां कीडा पड्या छे, अथवा आपणाज मोढामां के, दाढमां के दांतमां, के जडबामां कीडा पड्या छे, तेवारें तेमने मारवाना उपायें करीने कीडानी जग्याएं ओषध लगाडवुं पडे, पण एजीवोएं शो अपराध कस्यो छे? एतो पोतानी योनि उत्पत्ति

स्थान पामीने कर्मने आधीन आवीने अहीयां उपजे छे, पण त्यारें कशी दुष्टताथी उपजता नथी, तो ए अपराधी नथी. ते कारणमाटे निरपराधी जीवनी पण हिंसा, कारणे करीने श्रावकथी तजी जाय नहीं. वली बाग बगीचामां गया थका फूल, फल, पांदडां, गुछा प्रमुखने तोडवा सारु चोट देवी, अथवा फल, फूल, तोडी लेवां; ते माटे अढी वशामांथी अडधो गयो त्यारें सवा वशानी दया रही. एटली सवा वशानी दया शुद्ध श्रावक ने छे.एटले त्रसजीव संकल्पीने निरपराधीने कारणविना हणुं नहीं. एवी प्रतिज्ञा थइ. ए प्रतिज्ञा ज्यारें शुद्ध रहे. त्यारें ते श्रावक व्रती कहेवाय. ज्यां लगी पोतानी शक्ती पहोंचे त्यां लगी छगाइ न करे, अने निर्ध्वंसपणे न रहे. रखेने कोइ जीवनी विराधना थाय! एवो उपयोग न छांडे. तथा घरमां आरंभ कारणे लाकडानां गाडां प्रमुख लावे, ते सारां लाकडां होय, सडेलां होय नहीं, ते लाकडां घणा दिवस रहे तो पण तेमां जीव न पडे एवां पाकां, अने सुकां होय तेवां लावे. तेपण ज्यारें रसोइनुं काम पडे त्यारें पूंजी करी, अने झाटक झूटक करीने बाले. तथा घी, तेल, मीठुं, तथा अथाणा प्रमुख रसभरी चीजनां वाशण, जतनथी राखे, मोढुं बांधी करीने राखे, उघाडुं राखे नहीं. वली चुला उपर, अने पाणी राखवाना ठेकाणा उपर चंदरवा बांधे, तथा अनाज खावाने लावे ते पण शुद्ध, अने नवुं लावे. अथवा वर्षनी उपरनुं अनाज लावे, पण ते सडेलुं होय नहीं. कोइ त्रस जीव नजरमां न आवतो होय तेवुं लावे. पाणी गालवानुं गरणुं पण जाडुं मजबूत जोइने राखे. एक प्रहर वीत्यो के पाणी गाली नाखे. वली वर्षाऋतुमां बहुजीवनी उत्पत्ति थाय, तेथी ते ऋतुमां गाडी, रथ, घोडानी स्वारी न करे. कारणके, ज्यां रथनुं के गाडीनुं चक्र फरे, त्यां असंख्य जीवनी घात थाय. वली

हरिकाय बहुबीज त्रसकाययुक्त पूर्वक जेमां अति आरंभ होय, एवी हरिकाय प्रमुख लावे नहीं. खाटला प्रमुखमां जीव होय, ते माटे खाटला प्रमुखने तडकामां नाखे नहीं. सडेलो दाणो तडकामां नाखे नहीं. एवुं पाणी अनाजना संसर्गवालुं मोरीमां नाखे नहीं. काचुं दूध, मग तथा मठथी विदल खाय नहीं. फागण वदिथी आरंभिने आठ महिना पर्यंत शाक, पत्र, भाजी, प्रमुख खाय नहीं. मीठाइनो काल पूर्ण थया पछी मीठाइ पण खाय नहीं. मणशील चलितरस, तथा वाशी अन्न अभक्ष्य मधु प्रमुख, विषप्रमुख आदर करी खाय नहीं. घरमां बुहारणी पण शण प्रमुख घांसनी अने ते पण कोमल राखे, कारण के कठोर राखवाथी जीवनी हाणी थायछे. माटे कोमल राखे. बे चार जण मली, एक थालमां भेलां भोजन करे. स्नानादिक बहु पाणीथी न करे, जेटलुं प्रयोजन होय तेटलुंज पाणी वापरे. तडकामां, मेदानमां, अथवा मोरीनी जगायें चोकी उपर बेसिने नहाय. न्हावानुं पाणी वासणमां लइने थुडुं थुडुं ढोले. ज्यां सुधी निरारंभी व्यापार मले, त्यां सुधी खर कठोर कर्मादिक बहु आरंभी व्यापार न करे. कोइनो हक भांगे नहीं. घरमां एठा, अन्ननुं धोवण बे घडी उपरांत राखे नहीं. पूजन प्रमार्जन कर्या विना कशी पण क्रिया करे नहीं. मोठी मोरीमां पाणी चलावे नहीं. दीवाबत्ती प्रमुख लगाडे, ते पण यत्नवडे करी जीवरक्षा थाय तेवीरीतें करे. जे आ बखोरा प्रमुख वासणथी पाणी पीधुं होय, तेमां मोढानी लाल पडी होय, अथवा वलगी होय, ते कारणे ते पात्र पाणीमां बोलीने फरी भरे नहीं. पाणी भरवानुं पात्र दांडीवालुं होय, तेना वडे आबखोरो के लोटो भरे. इत्यादि व्यवहार शुद्ध उपयोगें प्रवर्त्ते. एवा श्रावकोने सवा वशानी दया पूरी कहीछे. ए प्रमाणे प्रथम व्रत शुद्धछे, तेना पांच अतिचारछे. ते हवे लखीयें छैयें.

१ प्रथम वधनामा अतिचारछे. ते एके,क्रोध करीने पोताना बल वडे निर्दयपणे गाय,घोडा,प्रमुखने मारे,चलावे,ते पहेलो अतिचार.

२ बीजो बंध अतिचार.ते ए के, गाय बलद, वाछरडां प्रमुख जीवोने गाढ बंधनथी बांधे,ते आकरा बंधनथी जीव अतिदुःख पामे, नीचुं माथुं राखे. बिचारां, अबोलानी जेम मनमां कल्पे. कदापि ए जानवरोने गाढबंधने करी बांध्यां छे; एटलामां अग्नि नय थयो, त्यारें तेउ उतावले छूटी शके नहीं. तेथी ए जीवनी विराधना थइ जाय. ते वास्ते गाढबंधन पण अतिचारछे. वास्ते जानवरने ढीला बंधनथी बांधे. अने कोइ गुन्हेगार मनुष्यने पण निर्दय तथा निपट गाढ बंधथी बांधे तो त्यांपण बीजा बंधअतिचारनुं दूषण लागे.

३ त्रीजो छविछेद अतिचार, ते ए के,बलद प्रमुखना कान छेदावे नाथ घाले, खासी करे, पुरुषत्वपणुं मटाडे. बीजुं पण छेदन भेदन करे, करावे. ते त्रीजो छविछेद अतिचार जाणवो.

४ चोथो अतिभारारोपण अतिचार छे. ते ए के, जे बलद प्रमुख उपर जेटलो बोजो अनुमान प्रमाणे नरवानी रीती होय, तेना करतां वधारे नरे तो, अतिभारारोपण अतिचारनो दोष लागे. श्रावकने तो छकडा बलद प्रमुख जे नारथी नरे,ते हमेशां नरवानी जेटली चाल होय, तेना करतां पण पांच शेर दश शेर उंडो नार नरवो, तो व्रत शुद्ध रहे. एमां पण जानवरनी चालवानी शक्ति एटली नथी तो विवेकथी चलावे. नार उंडो करे, जानवर निर्बल होय तो तेना खावा पीवानी तथा घांस, दाणा, पाणीनी खबर ले, तथा लेवरावे,परंतु एवुं न विचारे के,लोक सर्व जे प्रमाणे नार नाखे छे तो आपणे पण तेटलो नार एना पर नाखीयें. ते व्यवहार शुद्धछे, एमां कांइ हरकत नथी. एवुं न विचारे. व्रती होय तो ते बीजो बलद करे ए व्यवहारछे. ए प्रमाणे चोथो अतिभारारोपण अतिचार जाणवो.

५ पांचमो अतिचार नात पाणीनो विछेद करे. ते ए के,बल

द, घोडानी मरजी माफक खाणुं बंध करे, हमेशना खाणामांथी कांइ उंबुं, करे,अथवा असूर करीने आपे, वखत वटावीने आपे. त्यारें ते अतिचार लागे. वली कोइ मनुष्यनी वृत्ति तथा आजीविका बंध करवी, ते पण एमां आवी गयुं. अने श्रावक तो दास, दासी, चाकर, ढोर प्रमुख पोतानी पाछल जेमनी आजीविका बांधी हो य, तेमनी खबर लइने पछी पोतें जोजनादिक करे. तो व्रत शुद्ध र हे. ए पांचमो जातपाणी विछेदनो अतिचार जाणवो. ए पांचे अ तिचार श्रावकने जाणवा, पण आदरवा नहीं ॥

इति द्वादशव्रतविवरणे प्रथमस्थूलप्राणातिपातविरमणव्रते पं डित श्री उद्योतसागरगणिनाकृतजाषा संपूर्णा ॥ १ ॥

---

॥ अथ ॥

## ॥ द्वितीयस्थूलमृषावादविरमणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अरिहंतादिक समरिके, त्रिकरण शुध चित्त लाय;
डुतिय व्रत विवरण लिखुं, मृषावाद जिम जाय ॥ १ ॥

हवे स्थूल मृषावाद व्रत एटले, स्थूल कहीयें मोटुं, अने मृषा वाद एटले जुटुं बोलवुं,तेनुं विरमण कहेतां त्याग करवुं, तेने स्थू लमृषावाद विरमण व्रत कहियें. एटले घणुं जुटुं बोलवाथी जगत् मां अप्रीति वधे,अपयश थाय, धर्मनी निंदा थाय. माटे कोइ जीवने डुःख थाय,हानी पहोंचे, एवुं जुटुं न बोले. पोताना मतलबनी वात अनेक तरेहथी बनावी बनावीने अनेक गुणी वधती कहे,अने गेर मतलबनी वात होय ते अनेक गुणी उछी करीने कहे; पण जेवुं होय तेवुंज न कहे. एवा डुर्गुणनो जे त्याग करवो,तेने स्थूल मृषा वाद विरमणव्रत कहियें. एना बे जेदछे. एकद्रव्य मृषावाद, अने बी

जो ज्ञाव मृषावाद. तेमां द्रव्यमृषावाद एटले जाणतां अजाणतां विपरीत कहे, जुठुं कहे, ते द्रव्य मृषावाद. बीजो ज्ञावमृषावाद ए टले सर्व परज्ञाव पुद्गलादिकने आत्मत्वबुद्धियें करीने पोतानां जाणे, पोतानां कहे, रागद्वेषयुक्त कृष्णादिक अशुद्धलेश्याथी आगम विरुद्ध बोले, आगमार्थ बुपावे. उत्सूत्र प्ररुपे, कुयुक्ति लगाडे, ते ज्ञाव मृषावाद कहियें. ए मृषावाद जाणतां बतांज थाय. आ व्रत सर्वव्र तमां मोटुं बे. जो पालवामां अतिशुद्ध उपयोगी थाय, त्यारें ज शुद्ध रहे, अने व्रत पले. जे कारणे बीजां व्रत द्रव्यलेश विषयीबे ते देखाडेबे. एक मात्र जीवनीज शुद्ध उलखाणथी जीवदया पलेबे. त था परनिष्ठागत पुद्गल पर्याय, एटले पोतानी निष्ठानी वस्तुथी बीजी कोइ जे त्रणमात्र प्रमुख चीजबे ते परनिष्ठा कहेवाय बे. ते तेना मालेकना दीधा विना न लहे, एटले अदत्तव्रत पले. तथा मात्र स्त्रीना संयोगनो त्याग, मन वचन कायाथी करे, एटले ब्रह्मचर्य व्रत पले. त था धन धान्यादिक नवविध परिग्रह त्याग करे, मूर्छा न धरे, एटले परिग्रह विरमण व्रत पले. एम एक एक द्रव्य देशथकी उलखाण थ वाथी चारें व्रत पलेबे. अने जे मृषावाद विरमण व्रतबे तेतो ज्यारें षटद्रव्यनी द्रव्यगुण पर्यायथी, द्रव्य क्षेत्र काल ज्ञावथी, ओलखा ण थाय. एवो तीव्र केहतां जोरावर उपयोगी थाय. त्यारें शुद्ध पाले, तो तो ठीक, नहीं तो एकपर्याय मात्र विरुद्ध बोलवाथीव्रत ज्ञंग थाय. ए माटे साधु पण प्रायें बहु ज्ञाषा बोले नहीं. तथा साधु पण प्राणातिपातव्रतादिक चार महाव्रतमां अन्यतर ज्ञांगे, त्यारें एक चारित्र गुणनो ज्ञंग थाय, पण ज्ञानदर्शननी ज्जना, अने तेथी आगली गति बगडे. अने ज्यारें मृषावाद व्रत ज्ञांगे त्यारें रत्नत्रयी समूलीज जाय, डुर्गतिमां रोले अने अनंत संसारी थाय डुर्लज्ञबोधी थाय. ए माटे ए व्रतने शुद्धरीतें पालवाने अर्थें बए द्रव्यनी समज बराबर जोइयें, सावधानपणुं राखवुं जोइयें.

तथा आ जगत्मां द्रव्य असत्यना त्यागी तो घणा दर्शनमां जोइएं छैयें. पण भाव असत्यनो त्याग तो एक श्रीजिनागमरुचि शुद्ध श्रद्धावंत पुरुषनेज थाय. बीजाने नहीं थाय. त्यां स्थूलमृषावाद त्याग व्रतनां पांच मोटां जुठ छे. ते व्रती श्रावकें अवश्य टांळवां जोइएं. ते पांच जुठ हवे लखियें छैयें.

१ प्रथम कन्यालीक एटले आपणा मेलापीनी कन्या छे. तेनी सगाइ थती होय, त्यारें कन्याना ग्राहक पूछे के कन्या केवीछे? तो पोताना मेलापीनी प्रीतिएं करीने ते कन्यामां जे दोष होय, ते छुपावे. गुण होय, न होय,तोपण जुठुं वधारीने कहे के, ए कन्या निर्दोष छे.एवी सारा कुलनी अने सारां लक्षणनी मलवी मुश्केल छे. आ तो साक्षात् पार्वती छे. एवुं रागथी कहे. अने जो कांइ परस्पर द्वेषभाव होय तो, जोके ते कन्या निर्दोष अने सुलक्षणवंती होय तोपण कहे के, ए कन्या कुलक्षणी छे. नठारां पगलांनी छे. बहु बोलकणी ने वढकणी छे. एवा एना दुर्गुण, ए छोडीना पाडोशी लोक कहेछे ते अमे सांभल्या छे. एनाथी जे संबंध करशे, ते पस्ताशे. एवी रीतें अछता दोष कहे, पण श्रावक जे व्रतधारी छे तेने तो कोइनी सगाइ सादी आरंभना जुठकामने माटे जुठुं बोलवुं पण युक्त नथी. जे कारण माटे स्त्री भरतारनो संबंध कराववो ते संसारभ्रमण बीज, वाववानुं छे. एम करतांय आपणो संबंधी छे, घरनी वात छे, दाक्षिण्यताथी पण छुटाइ शकाय नहीं, एवुं होय तो पण अति जुठुं अशुद्ध न बोले. अने गुण होय ते कहे. वली कहे के, भाइ! तमे तमारी मेलें पोतानी खातर जमा करी ल्यो. कारणके जन्म सुधीनो संबंध छे. एम केहेवुं, ए व्यवहारछे. वली कोइ चाकर राखतो होय, तथा जे कोइ भाग, पांती के, व्यापारनुं खातुं नामुं कोइनी साथें जोडाववा मेलववानुं चाहा,त्यारें ते पण कोइ एक आवीने पुछे के, ए केवोछे? सारो छे के नठारो छे. त्यारें व्रती श्रावक होय, ते तो राग

द्वेषनी वात न करे. तेथी त्यां पण कन्यालीकनी परें कम वेश न वोले, पण गुण होय ते कहे अने वली कहे के, नाइ! मनुष्यना मनोगत नावमां कोण माहितगारछे? तमे शाहाणाछो. पोतें पोतानी तजवीज करी ल्यो. ए प्रमाणे कन्यालीक जुठ जाणवुं.

२ वीजुं मोटुं जुठ गवालीक छे. ते केहेछे. जेम कोइ रीतें कोइ एक मलतीया दोसदार स्नेही माणसनी गाय वेचाती होय, त्यारें तेनो स्नेही पुरुष लेनार धणीने कहे के, आ गायने खुशीथी ल्यो. आ गाय घणुं दूध देनारीछे, सुलक्षणी छे, लात प्रमुख दूजती वखतें चलावती नथी, आ गायनी मानी पण अमने खवर छे. ते पण वहु दूध देती हती. एवी वातो कहीने ते मित्रनी गायने वेचावी आपे. अने ते गाय तो घणा अपलक्षणवाली छे, तथा थोडा दूधनी देवा वाली छे, अने दोहोती वखत लात प्रमुखनी मारनारी, इत्यादिक दोषनी नरेली छे. पण त्यां जे व्रती श्रावक होय, ते तो राग द्वेषथी ते दोषने निर्दोष छे एम कहे नहीं, परंतु यथार्थ नाषा वोले. एमां सहु चोपगां जानवर हाथी, घोडा, सूतर, वलद, गाय, नैंषनो एवो विवरो जाणी लेवो. प्रथम तो ए हाड विक्रय कराववोज योग्य नथी. तेम करतां कदापि स्नेह संवंध होय ने तेने लीधे वोलवुं पडे, तो आपणा व्रतने दोष न लागे एवुं वचन वोलवुं. ए रीतें ए गवालीक जुठ त्याग करवुं जोइएं.

३ त्रीजो मृषावाद, नूम्यालिकछे. ते एके, जमीनने लगतुं जुवुं वोलवुं ते एवी रीतें के जमीन कोइनी होय ने आपस आपसमां कहे के आ जमीन मारीछे, एवो वुद्धिप्रपंच करीने ते जमीन आपणी ठरावे अथवा वीजा कोइ वे जण जमीन वास्ते लडता होय, त्यां राग द्वेषनी परणतिथी युक्ति कुयुक्ति करीने ते जमीन पोताना रागी मलतीयानी ठरावे, अने द्वेषीने जुठो ठरावे. एम होय कोइनी, ने अपावे कोइने. जन्याती कोइ वी

जानीज होय तो कहे के,आतो अमुक धणीनी जग्या छे ए पण महोटो मृषावाद छे. प्रथम तो व्रती श्रावकने जमीनना कजीयानी वातमां पडवुंज नहीं. केम के, जमीननो कजीउं महोटा उत्पात आरंजनी खाण छे. तोपण कदापि आपणो तेनाथी कांइ संबंध छे, ने तेथी ए वातमां पड्या विना छुटको न थतो होय तो जेवुं होय तेवुं यथार्थ कहीएं. पण जूठुं कहीएं नहीं. पेहेलांथीज एकांतमां आपणा मलतीया संबंधीने समजावीएं के, जाइ! ए वातमां हुं नहीं वोलुं, माटे मने ए वातमां वच्चें नाखशो नहीं. एवी रीतें करतां पण कोइ पंच मलीने आपणी पर ए कजीयाना ठरावनी वात नाखे, तो ते वखतें चतुराइथी पहेलां तो नज वोले; अने एवुं कहेके, माराथी तो वीजा महोटा महोटा पंच छे. ते पंच मली जे ठराव करशे ते खरो. वली वीजा पण माह्या घणाछे. इत्यादिकविनय वचन कही छानो मानो वेसे,पोताना व्रतनो जय राखे अने कदाचित् ए वातनो ठराव करवा वधा मली तेने वहुज आग्रह करे त्यारें कहे के, मने वारें वारें शुं कहोछो? हुं तो ए जमीननी वातमां पूरो माहितगार पण नथी, एवुं कहे, पण जूमिसंवंधी जूठुं कदापि न वोले. एमां घर, हवेली, वाग, वगीचा विगेरे सर्व जमीन संवंधीनी वात आवी गइ. कोइ एमानुं कांइ खरीदतुं होय, त्यारें ते सारुं छे के नठारुंछे. ते न कहे. धन धान्यादिक परिग्रहनो मृषावाद पण एमांज आवी गयो. ए त्रीजुं जूठुं जूम्यालिक छे. तेनो व्रती श्रावक होय, तेणे त्याग करवो.

४ चोथो थापण मोसो,व्रतधारी श्रावकें न करवो. जे कोइ अनामत द्रव्य, जूषणादिक वस्तु, जलो गृहस्थ जाणी साक्षी राख्या विना मूकी गयो होय, ते केटलाएक दिवस वीत्या पछी ते धणी मागवाने आवशे त्यारें हुं नहीं आपुं. एवो कांइ वुद्धिप्रपंच करी तेने पंचमां जूठो ठेरावीश! ए ज्यारें मागशे त्यारें हुं एवुं कहीश के, अ

मारी पासें तमो थापण मूकी गया ते संबंधीनो कोइ अमारा हाथ नो लखेलो दस्तावेज छे? अथवा कोइ साक्षी छे? बीजा जे कोइ थापण कोइने घेर मूके छे, तेनी पासेंथी लखावी करीने राखे छे. एवुं कही तेने दबावी पाडवानी युक्ति रचे, ने विचारे के हुं नगरमां मातवर छुं. ने एतो आव्यो गयो परदेशी छे. एनी कोण पक्ष खेंचशे! मारी मरजी तोडीने एनी तरफ कोण बोलशे! एवी द्रव्यनी चीज शा वास्ते छोडीएं!! अने हुं मारी अकलथी वधाने जवाब आपीश. कोइना पण दाव पेचमां हुं नहीं आवीश. एवा कुविचारमां पडे. एटलमां पेलो थापण मूकनार आवीने मागे के न्नाइ! मारो माल आपो. ते वखतें तेने गुस्सो करीने कहे के न्नाइ! माल केवो? अने तमे कोने सोंप्योछे? आते शुं बोलोछो वारु आते कांइ ठीक कहेवाय? अमें तम ने उलखता पण नथी, के तमे कोणछो? न्नोलपणमां कोइने त्यां मूक्यो होय तो त्यां तेनी तजवीज करो. अमे तो परिचय उलखाण विना कोइनी थापण राखता पण नथी. तेमां तमे तो वली परदेशी छो, तो तमारी चीज शा वास्ते राखियें? एटली तेनी वात सांन्नलीने थापण मूकवा वालो कहे के, अरे साहेब! हुं देवावालो, ने तमे लेवावाला. आपण बंने जीवता छैएं. कांइ घणां वरस पण थयां नथी. चार पांच मास थयां तमारा पासें चीज मूकीछे. तो एटली थोडी मुदतमां तमे आवा शाहुकार थइने, आम जीवती माखी गलवा जेवी वात करोछो ते वात सारी नथी. जूठा ऊगडामां सारुं नथी. एम करतां बन्नेने कजीउं थयो, ने वढवा लाग्या. शाहुकार, पोताना न्नाइवं धोने कहेके, आ दगाखोर गले पडुने कोइ समजावो. पछी कहेशे कह्युं नहीं. नहिंतो बहु दिवस याद करशे, एवी तस्दी पामशे. त्यार पछी समजशे, आज पछी कोइ साथें जूठो ऊगडो न करे, ते माटे एने समजावो. नहीं तो पछी फोजदारीमां मोकली दीयो. अमारी पासें थी सहु द्रव्य के चीज गणीने लेवा करतां एटलुं कहेवाथी जो समजी

ने पोताने घेर जाय तो सारुं; अमाराथी जूठो कजीओ नहीं करो!एवा जोरावरीनां वचन तेने संजलावे. हवे बापडो थापण मूकवावालो विचारे के, हवे हुं शुं करुं! अरे हुं क्यां! ने क्यां आ सहु लोक !!! व धाए एनी मरजी प्रमाणे बोलेठे. हुं एकलो परदेशी माटे एनाथी पहो ची शकीश नहीं. एम विचारी ते अबोलो थइ रहे. एवी डुर्बुद्धि करी ने पोतें साचो थाय, अने आगला साचाने जूठो ठेरावे; अने पारको माल हजम करी जाय. ए थापण उलवी राखवानुं महा पाप ठे. आ लोकमां कदापि पापना उदयथी कोइ दिवस वेचतां, के कोइ ठेकाणे मूकतां जाहेर थाय तो राजा तरफथी महोटो दंम पडे, लोको मां अपयश थाय, अप्रतीति वधे, साख जाय, अने परजवे, कूडां कलंक चढे, डुर्गतिमां पडे, दारिद्र्जाव कदी पण न मटे. जिनेश्वर जाषित धर्म पण उदय न आवे. ए माटे व्रती श्रावक होय, ते पर नी थापण अथवा हरकोइ अनामत वस्तु कोइ मूकी जाय, ते सर्वथा उलवे नहीं. शास्त्रमां तो कोइनी अनामत चीज राखवीज नहिं. एवी आज्ञाठे. तेम ठतां कदापि मूलजांगे दाक्षिण संबंधी जोगजोगें रा खवी पडे तो जाइबंधनी के कोइ बीजानी साक्षी लखावीने तथा तोल, मुल्य करावीने राखवी. कदापि घणा दिवस ते चीज आपणे घेर रहे, तो तेने ठंठी वधती न कहेवाय. अथवा आपणी चेतना पण बगडे नहीं. कदाचित् पोताना मरण पठी पुत्रादिकनी पण बुद्धि बगडे नहीं. ते माटे लखत साक्षी करावीने खत करीने राखे; के तेथी तेउने पाठी आपवानी जरूर पडे, अने मनमां बीक रहे. धणी मागे त्यारें खुशी थइने थापण मूकेली चीज हो य ते पाठी आपे. एमां सहु वातनांछिद्रो जाणी लेवां. कपट वृत्ति, विश्वासघात, ए सहु व्रतीश्रावकें थापण मोसो न करवो.

५ पांचमो मृषवाद जूठी साक्षी. ए व्रती श्रावक होय, ते क दी न पूरे. तेनो विस्तार लखीएं ठैयें. कूडी साक्षी तेने कहीएं के,

बे जणा कजीउं करवा लाग्या, तेमां कोण साचो ने कोण जूठो ! तथा कोनो वांक छे ! हवे जे साचो छे ने जेनो वांक नथी, तेना पर नगरवासी लोकोनो द्वेष छे. ते पुरुषोयें पोताना दिलमां धारी रा ख्युं होय के क्यारें पण अमे अवसर पामीने एने उपर जबरज स्ती करशुं. ए वातनो अवसर जोइने साचाने रुगाववानुं बल बांधे, ते एम के द्वेषपोषणने माटे पोते कजीयानी अंदर तत्पर थाय अने मातबर थइ लोकोने कहे के, ए वातथी हुं माहित गार छुं. एनी साक्षी हुं पूरीश. कदापि राजद्वारमां कोइ काम पडशे, अने मारी साक्षीनी जरूर हशे तो त्यां पण हुं साक्षी पूरीश. एनी खातरदारी साक्षी सर्वरीतेंथी मारी पासेथी लेजो. एवी रीतें जूठानो पक्ष करे. उपर प्रमाणेनी वात करीने जूठी साक्षी पूरे. प ण कूडी साक्षीनुं महापाप छे. आ जवमां पण जूठो पडे तो आ बरु जाय, राजदरबारमां खबर पडे के, आ जूठो माणस छे. शेहेरमां जेनी तेनी साथें झगडो कर्या करे छे. एवुं जाण थतां नी साथें धन धान्य सर्व राजा लूंटी जाय. जूठी साक्षीवालो मार खाय. अने परजवमां तो एवां पापें करी ए दुःखथी पण वली बहुज दुःख जोगवे, दुर्गतिनो साथी थाय, पगले पगले अणचिंतवी आप दा आवीने प्राप्त थाय, ए माटे श्रावकने सर्वथा जूठी साक्षी कोइनी पूरवी योग्य नथी. ए पांच तो महोटां जूठ छे. जे श्रावक नाम धरावे तेणे ए पांचे जूठ त्याग करवां. तथा बीजुं पण जे बोलवाथी राज जय उपजे, दंरु जरवो पडे. जीज, कान, नाक, हाथ आदिक अंग जे बोलवाथी छेदाय. एवी जाषा बोलवी नहीं. एवी रीतें बीजुं मृषावाद विरमण व्रत लीधुं छे.एमां आजीविका निमित्तें पोता ना परिणामनी कचाइथी कोइ रीतें जूठं बोलवुं पडे, तो तेनो आ गार छे. अहीयां क्रोध, मान, माया, लोज, राग, द्वेष, रति, अरति, क्रीडा, लज्जा, विकथा, जय, हास्य इत्यादिक जूठुं, बोलवानां का

रणो छे. अहीं हास्यादि वात विनोदमां तथा कोइ निमित्तें कषायादिकने परिणम्यो, आत्मा मूढ चेतनामां रह्यो थको कांइ आलपंपाल बोलाय. तेनी जयणा, तथा कोइ चाडीयो प्रमुख दुष्ट मनुष्य, निष्कारण बहु दुःख देतो होय, कोइ रीतें दुःख देतो रहे नहीं, त्यारें ते सापराधीने शिक्षा देवरावबानेसारु कांइ उंधुं वत्तुं बोलवुं पडे; तेनो आगार छे. एटले संकल्प करीने विना प्रयोजन निरपराधें हास्यादि कारण विना निरपेक्ष जूठुं न बोलुं. वली पांच महोटां जूठमां पण स्वसंबंधी कन्यालीक, गवालीक, भूम्यालीकमां न चालतां जूठं बोलवुं पडे, तेनो आगार छे. एना पांच अतिचार छे. ते जाणवाने लखेछे.

१ प्रथम सहसात्कार अतिचार छे. ते एके, कोइने एका एक अण विचार्युं कहे, अयुक्त कलंक चढावे. जेमके, तुं चोर छे, व्यभिचारी छे, जूठो छे, इत्यादि विना तपास कर्ये कहे, ते पहेलो अतिचार छे. श्रावकने तो साक्षात् कांइ विरुद्धवात जोइ होय तो पण प्राणांत सुधी ते जाहेर न करवी. वली न कहे तो जूठुं बोलवानो दोष लागे, त्यारें विचारे जे ए वात कहेवाथी महोटुं पाप लागशे. एम विरुद्ध वातने जाहेर करतां कांइ दोषादिक उपजे, अने तेथी श्रावकने अतिचार लागे. माटे ए विरुद्ध वात छे. तेथी पोतानी मेलें जाहेरमां आवशे पण पोतें कहे नहीं.

२ बीजो रहस्यभाषण अतिचार. ते एके, कोइ बे जण पोताना घरनी सुख दुःखनी वात करेछे, ते जोइने तेमने कहे के, खबरदार रहेजो! तमे बन्ने मलीने राजद्वार विरुद्धनी वात करोछो पण तमे महोटो तमासो देखशो, आगल विचार करवो पडशे, माटें आज पछी एवी वात न करशो. एवुं कहीने ते बन्नेने दुःख उपजावे. बीजुं पण स्त्रीजननी, मित्रनी, पोताना मेलापीनी तथा बीजा पण कोइनी छानी वात अथवा कांइ एबनी वात, आपणे जाणीने ते वात

लोकोनी आगल प्रकाशे, ने तेनी चरचा चलाव्या करे. पछी रहेते रहेते ते वात, राजद्वार जइ पहोचे. त्यारें राजदंडनो जय उपजे, कांइनुं कांइ थइ जाय. ते रहस्यजाषण अतिचार जाणवो.

३ त्रीजो दारमंत्रजेद अतिचार. ते एके, आपणी स्त्री तथा जाइ प्रमुख घरनां माणस तथा आपणो मित्र के कोइ हितेछु ते मनार्थी कोइ जूलचूकथी अथवा नादानबुद्धिथी कांइ छानी विरुद्ध वात थइ गइ अने पछी पस्तावो करी ते दोष तेणे छां डी दीधो होय, ते बहु दिवस वित्या पछी कोइ प्रसंगोपात ते गइ गुजरी वातने फरी प्रकाश करीने केहे; त्यारें ते लाजनो मास्यो आपघात करी जीव काढे. ने तेथी आपणने पण मोटी एब लागें, बहु वेदना तथा डुःख थाय, लौकीकमां अपयशनी वृद्धि थाय, ए दारमंत्रजेद त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो मृषाउपदेश अतिचार छे. तें एके, पोतें जापणवालो थवानेसारु पापोपदेश जे मंत्र, यंत्र, जडी, बुट्टी, बतावे. ने कहे के, फलाणी बुट्टीनुं मूल कहाढो. ते असुक बुट्टीना रसमां मेलवीने आटली चीज वाटो. तेनी गोली करीने खाउं. तेथी बहु जोगशक्ति थशे. वली आ मंत्रनो जाप करो, मद्य मांसनी आहुति आपो, जे थी करी देवता प्रसन्न थाय, वली जेनी चाहना करो तेनी प्राप्ति थ शे.वली कहे के,सांजलो! असुक जानवरना लोहीथी असुक औषधि नां पांदडा पर यंत्र लखीएं, घुअडना पग साथें बांधीएं तो शत्रु जा गी जाय अथवा मरण पामे. बीजुं कहे के, जनावरना इंडाना रस थी पारा प्रमुखनो खरल करो.अने पछी ते पाराने अग्निमां राखशुं. शोल प्रहरनी अग्निएं करी पारो सिद्ध थशे.एवा उपदेशनो देनारो थाय. वली कहे के, हुं कामशास्त्रमां महा निपुण छुं, तमोने चोरा शी जोगासननो विधि शिखवाडुं,ते तमे शीखो. एथी करी विविध प्रकारनी रतीविलास क्रिया ने बहुवार वीर्य वृद्धि रहेशे. काम जा

गशे, कामदेवना वासानुं स्थानक जाणशो.तो तमारो जीव बहु खुशी मां रहेशे. अंधारा पक्षमां तथा अजवालीया पक्षमां स्त्रीने कामनो वासो जूदे जूदे ठेकाणे रहेछे.तिथि तिथिनो विवरोछे.ते बधुं तमने बतावीश, इत्यादि बहु पापोपदेश करे. बीजां पण औषधादिकनां शास्त्र बतावे, जणावे अथवा कोइने दुःखमां नाखवाना उपाय बतावे. एना प्रतिपक्षी होय तेने पण कुबुद्धि बतावे, शीखवाडे, तथा विषयकषाय जागे, एवी नवी वात उठावे, ते पापोपदेशकथन चोथो अतिचार जाणवो.

५ हवे पांचमो कूटलेखन अतिचारछे. ते एके, कोइनो जूठो लेख लखे, नामामां जूठुं लखे, ओछो वधारे अक्षर लखे, प्रथम लिखित अक्षर छरी प्रमुखना प्रयोगें करी छेकी नाखे, पर वाना उपर जूठी मोहोरकरे, खोटुं खत बनावे, तेमां रुशनाइना भेद पण सहु आव्या. ए पांचमो कूटलेखन अतिचार जाणवो.

अहींयां आजीविका निमित्तें चित्तछढताना योगथी आडतिया प्रमुख व्यापारमां अधिक लाजनी प्राप्तिथी कांइ धारणा प्रमाणे ओछुं वत्तु लखवानो आगारछे पण एने मूलमां तोटो आवे, एवुं न करवुं. वली बीजुं पण आजीविका निमित्तें ओछुं वत्तु मर्यादाधिक धारणा प्रमाणे लखवानो आगार. ए पांचे अतिचार मृषावाद उपदेशनाछे. आ पांचे अतिचार महादुर्गतिना सहायकछे. ते माटे ए अतिचारने जाणवा पण आदरवा नहीं.

॥ इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे द्वितीयस्थूलमृषावादविरमणव्रते पंक्तिश्रीउद्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्णा ॥ २ ॥

॥ अथ ॥

## ॥ तृतीयस्थूलअदत्तादानविरमणव्रत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

सद्गुरु पदपंकज नमी, कहिशुं विवरण शुद्ध ;
तृतीय अदत्तादान व्रत, न कहुं शास्त्र विरुद्ध ॥ १ ॥

हवे स्थूल अदत्तादानविरमण लखीएं ठैयें.प्रथमस्थूल जे महोटी चोरी जे संकल्प करीने देवाल फोडी खातर पाडे, अथवा मार्गा दिकें मुसाफरना द्रव्यने लूटवानी इछा थइ. ते एम के, आ ए काकी ठे. वीजो कोइ एनी साथें ठे नहीं. त्यारें जाणी जोइने को इ नवो प्रपंच करी,एनुं द्रव्य होय ते लइ लेइएं अथवा वलात्का रें करीने पारकी चीज लेवी तथा नजर चूकावीने कोइनी चीज उ ठावी लेवी तथा आपणे घेर कोइ अनामत चीज मूकी गयो हो य ने ते ज्यारें पाठी मागे त्यारें नासुकर जवुं तथा खरुं जवाही र प्रमुख लइने घरमां मूकवुं. अने पाठुं ते मागे त्यारें खोटुं आप वुं, तथा वीजा कोइएं हीरा मोती वेचवाने आप्यां होय, तेमांथी नंगनो फेरफार करी सारुं नंग होय,ते पोतें लइ लिये,अने उंठी कि म्मतनुं नंग होय,ते तेमां मेलवी आपे.ए सहु अद्त्तादाननो दोष क हीएं. जे कारणे क्यारें पण तेनी जाण पडे,प्रगट थाय,त्यारें राज दंरू देवो पडे, अपयश थाय, अप्रतीति उपजे, ए माटे स्थूलअद त्तादानने जे त्यागे, ते अदत्तविरमणव्रत ठे. ते अदत्तव्रतना वे ने द ठे. ते कहेठे. एक द्रव्यअदत्तव्रत, वीजुं नावअदत्तव्रत.

१ द्रव्यअदत्तविरमण एटले पारकी चीज पूर्वोक्त प्रकारें गएली पडेली,विसरी गएली लीये नहीं. ते द्रव्यअदत्तविरमणव्रत जाणवुं.

२ तथा जे पर पुज्ञलद्रव्य,तेनी चीज वर्ण गंध रसादिक रचना रूप त्रेवीशविषय तथा आठे कर्मनी वर्गणा ते पण पराइ चीज

छे. ते वस्तुगतें जीवने अग्राह्य छे. एनी जे वांछा उदयिक जा वमां धसए, ते जावअदत्त ग्रहण जाणवुं. तेने श्रीजिनागमोक्त तत्व सांजलीने, पुजलानंदी पणुं मटाडे, शुद्ध उपयोगें दिलथी उदय अव्यापक रहे. निर्जराना बहुल परिणाम ते जावअदत्तवि रमणव्रत कहीयें. जेटली जेटली कर्म प्रकृति छे तेनो बंध मट्यो. ए टलुं जावअदत्तविरमणव्रत कहीयें. त्यां सामान्य अदत्तना चार जे दछे; ते कहेछे. १ प्रथम स्वामिअदत्त, २ बीजो जीवअदत्त, ३ त्री जो तीर्थंकरअदत्त, अने ४ चोथो गुरुअदत्त.

१ तेमां प्रथम कोइनी चीज आप्या विना लिये, ते स्वामिअदत्त.

२ बीजुं जे सचित्त बीज फलादि गुछा प्रमुख तोडे, अथवा छे दे, जेदे, ते जीवअदत्त कहीएं. जे कारणे फलना जीवोएं एवी कांइ आज्ञा दीधी नथी के; अमोने तमे छेदन जेदन करो. ते हे तुएं ए जीवअदत्तनो बीजो जेद जाणवो.

३ त्रीजो श्रीतीर्थंकर देवें जे चीजनो निषेध कह्योछे. ते चीज ने ग्रहण करे. जेम के, साधुने आधाकर्मी आहार निषेध कह्यो छे. श्रावकने अजक्ष्य वस्तु निषेध कही छे; तेने आचरे त्यारें ते तीर्थंकर अदत्त केहेवाय. ए त्रीजो जेद तीर्थंकरअदत्तनो जाणवो.

४ चोथो गुरुअदत्त. ते एके, कोइ साधु, आगमोक्त शुद्ध व्य वहारपूर्वक निर्दूषण आहार लावीने पछी तेने गुरुनी आज्ञा वि ना खाय, ते गुरुअदत्त कहिएं.

ए चारे अदत्त, संपूर्ण रीतें तो साधुथी तज्या जाय, अने गृह स्थथी तो कांइ अंशें तज्या जाय. अहींयां श्रावकने चारे अदत्त मां स्वामिअदत्तना त्यागनी मुख्यता छे. ए माटे पराइ चीज पू र्वोक्त उपाय करीने न लेउं. जे चीज लेवाथी चोर नाम ठरे, रा जदंम उपजे, एव लागे, माटे एवी चीज न लेउं पण सूक्ष्म तृ ण काष्ठ प्रमुख, जेनी कोइ बहु मनाइ न करे, ते चीज लेउं ते

नी जयणा छे. कोइनी चीज पडेली पामुं तो ज्यां सुधी परिणाम टके, त्यां सुधी लेउं नहीं. कदापि बहु मूल्यवान् चीज जोइने परिणाम शिथिल थाय, त्यारें ते चीज लेउं. पछी लेइने केटला एक दिवस, पोता पासें राखुं. एटलामां जो ते चीजनो धणी छतो थाय, तो तेने आपुं अने धणी छतो न थाय, तो धर्मस्थानकमां तथा धर्मना काममां खरचुं. एम पण परिणाम न रहे, तो तेमांथी अर्ध भाग धर्म स्थानकमां खरचुं, अने अर्ध हुं पोतें राखुं.

वली पोतानी जमीन खोदतां द्रव्यनो भंडार निकल्यो, तो तेने लेवानो आगार छे. एमांथी पण अर्ध अथवा चोथो हिस्सो धर्म करुं. पछी पण जेवी धारणा ?

तथा पारकी जमीनमांथी द्रव्य निकले, त्यारें पण ज्यां सुधी परिणाम टके, त्यां सुधी ते द्रव्य लेउं नहीं. अने परिणाम शिथिल होय तो, अर्धुं हुं राखुं ने अर्धुं धर्ममां खरचुं.

तथा कोइ वारस विनानो माणस कोइ चीज अनामत मूकी गयो होय, पछी ते देशांतर गयो त्यां मरण पाम्यो त्यारें तेनी चीज पंचमां, भला अने सारा रुचिवाला मनुष्य आगल जाहेर करीने जे पंच कहे, ते करुं; कदापि देश कालनी विषमताथी जाहेर करतां उलटुं लफरुं लागे. ते एम के, दुष्टराजादिक होय तो ते लोभना मास्या थका कहे के तारे घेर, मरनारें घणुं द्रव्य मूक्युंछे ? तुंतो पोतानी शाहुकारी जाहेर करवाने थोडुं देखाडे छे. एवी उपाधि जागे, ते माटे कोइने न कहुं तो पण ते द्रव्य, धर्मस्थानकें खरचुं. ते खरचतां ते धन आपणुं पोतानुं केहेवुं पडे, तेनी जयणा.

तथा घरचोरी एटले घरमांनी सर्व चीजना मालिक तो पोताना पिताछे, अथवा माताछे. एमने पुछ्या विना वस्त्र द्रव्यादिक लेवुं, तेनी जयणाछे. वली जेनी साथें महोबत होय, जे संबंधी होय, जेने घेर जवा आववानो, खावा खवराववानो व्यवहार होय, ते

ने घेर गये थके कशुं पुछया विना फल पान प्रमुख लेवुं; तेनो आगारछे. परंतु तेनो जीव कचवातो होय तो न लेवुं.

तथा कोइनी चाकरी करतां व्यापारमां कांइ कसुर करीने द्रव्य मेलववानी जयणा. ए रीतें त्रीजुं व्रत पाले, ते व्यवहार शुद्ध अदत्तादान विरमणव्रत जाणवुं. अने निश्चयथी तो जेटलो आत्मानो अवंधक परिणाम थयो, गुणस्थानननी वृद्धि थइ, अने वंधविछेद थयो, ते निश्चय अदत्तविरमणव्रत कहीएं. एना पांच अति चार छे, ते कहे छे.

१ प्रथम "तेनाहड" अतिचार कहेछे. स्तेनाहृत् त्यां स्तेन एटले चोर, तेणे आहृत् एटले हरण करी लीधेली एवी जे चोरीने कांइ चीज,तेने स्तेनाहृत् कहियें. एटले चोरें चोरेली चीजने खरीद करवी. कारण के, चोरीनी चीज सोंघी मले, ते जोइ आत्मा लोभमां पड्यो थको ते वखतें विचारे के मोरे तो पारकी चीज हाथमां लेवी नहीं. पण आतो चोर पोतें चोरी लाव्यो छे. ते लेवामां मने शो दोषछे ? एवी मूढ विचारणाथी ले, पण एम न विचारे के, आ अ शुद्ध द्रव्यें करीने मारी चेतना वगडशे. वली कदाचित् कोइ वख तें जाहेरमां आवे. त्यारें ते पकडाय. त्यारें राजवाला पूछे के, शेहे रमां जेमनी चीज गइ होय ते सर्व लोक, चबुतरें आवी बतावो. ते वखतें चोरने तस्दी आपे. त्यारें ते चोर जेनुं तेनुं नाम तथा पत्तो बतावे के, अमुक जग्याएं चीज राखीछे, किंवा अमुक जग्याएं वेचीछे. एम करवाथी सर्व जग्याएंथी चीज जाहेरमां आवी. शाहुकारोएं पण सोंघी जोइने लीधी हती, ते पण सहु पकडवामां आव्या. त्यारें तेमने पण उलटो दंड पडे, ने वली जे चीज चोरपा सेंथी लीधी हती, ते पण जाय, पोतें खराब थाय, लोको वात करे के आ लोक, चोरोने पैशा प्रथम देछे ने चोरी करावेछे. एवी वात भला गृहस्थने सांभलवी पडे. माटे ए धंधो केम करीएं ? वली लो

किकमां अपयश वधे, ते तो आ नवनुं दुःख, अने परनवनुं दुःख जोइएं तो चोरीनो माल संगरनाराउं दुर्गतिने नोगववा वालाछे ज. परंतु अहीं कदापि अजाण पणे एटले चोरीनो माल छे. एम न जाण्युं होय ने लीधो होय, तो तेनो आगार. परीक्षा विना बहु मूली वस्तु थोडामां मले, तो तेनो आगार छे. तथा परंपरायें आवी तेनो आगार. पण एने जूठी साची कल्पना दे खाडीने तेनी पासेंथी लेवी. ए पेहेलो अतिचार जाणवो.

२ बीजो तस्कर प्रयोग अतिचार. एटले जे चोरने चोरी कर वानी प्रेरणा करे के, तमे आज काल नकामां वेशी रह्याछो प ण उद्यम कस्या विना शुं खाशो ? आ पेटने तो रोज नरवुं जोइ एं ? ते माटे घरमां बेठे तो कांइ नहीं थशे. अमे तमारा मोहोब तीया छैएं. ते माटे कहीए छैएं. बीजो पण अमुक, फलाणे ठेका णे गयो हतो, ते थोडा दिवसमां चार पैशा सारी रीतें लाव्यो; माटे तमे पण रोजगार सर थाउं. तेथी माथा परनुं करज पण उ तरशे. नहीं तो आगल तमने फरी करजें कोण रूपैया देशे ? दी धा लीधाथी सहुनुं काम चालेछे, माटे नाइ ! धंधो करो. अमारुं पण तमारी उपर लेणुं छे; ते पण आपो. कारण के बहु दिवस थया छे. नहीं तो पांच सात बीजा पण आपीयें, परंतु शुं करीएं ? जे तमने आवा हाले देखीए छैएं. तेथी बहुज खीज आवेछे. आ वा बलदार छो, पण सर्वदा कमाया विना एमज निनाव केम थ शे ? ते माटे व्यापार रोजगारमां तमने नफो न होय तो, कोइनी नोकरी करो. हथीयार लइ शीपाइगीरी करो. तमारी पासें हथी यार हाजर न होय तो जेटला जोइयें तेटला अमारी पासेंथी लइ जाउं, पण रोजगारसर थाउं. एवी एवी खोटी प्रेरणा करे. ते प्रयोग कहीएं. चोरने प्रेरणा करे, संबल आपे, लोढानां शस्त्रादि क अधिकरण आपे, तेने तत्त्वदृष्टिएं देखतां चोर तुल्य कहीएं.

जे कारणे नीतिशास्त्रादिकमां चोरना सात प्रकार कह्या छे. ते एके, प्रथम चोर जे आप चोरी करे १, बीजो चोरनी पासें रहे २, त्रीजो चोरनी साथें आलोच करे ३, चोथो चोरना भेदमां माहितगार थाय ४, पांचमो चोर साथें व्यापार सहीयारो राखे ५, छठो चोरने अन्नपाणी आपे ६, सातमो चोरने घरमां राखे ७, ए सातेने चोर कहेवा. हवे अहींयां अदत्तनो त्यागी होय, ते विचारे के मारे पोताने तो पराइ चीज लेवानुं पच्चखाण छे, पण बीजो कोइ लइ आवे, तो ते चीज लेवामां मने शो दोष छे ? ए माटे प्रयोगअतिचारव्रत पण श्रावक न धरे. कारण के ते सापेक्षछे. ए माटे ए प्रयोगअतिचार बीजो जाणवो. २

३ त्रीजो "तप्पडिरूव" अतिचार. ते एके, कोइ सारी वस्तुमां तेना सरखी मलती बीजी हलकी चीज मेलवीने वेचे, ते तत्प्रति रूप कहियें. जेम केशरमां केशरना जेवो तार, अने एवाज रंगने मलतुं एवुं कोइ द्रव्य लावीने कर्त्रिम करी वेचे, वली मठा प्रमुख ने मथीने घृतमां मेलवी वेचे. एटले जे चीजछे तेना सरखी बीजी चीज वनावीने मूलद्रव्य शुद्ध होय तेमां मेलवीने वेचे तथा बना वटनी कस्तुरी करीने वेचे. गुंदर प्रमुखनो बांधो करी तेने हींगमां मेलवीने वेचे. तथा जे यवादि सुगंधिक द्रव्य थायछे, ते कर्पूरसाथें मेलवीने वेचे. अफीणनो जोडो करी वेचे, तथा जूनां वस्त्रने रंगावीने नवाने ठेकाणे नवाने भावे वेचे. रुने पाणीमां भींजवी वजनदार करीने वेचे. सूतली प्रमुखनी पिं डिमां अंदर महोटा गाभा घालीने उपरथी सुतलीने भीजवी करी लपेटीने वेचे. लोकमां सारी जोइने वधारे मूल आवे, तो य पण विचारे नहीं के, हुं खोटो व्यापार करुंछुं. पाणीमां दुध ए कठुं करीने दुधना भावें वेचे. गहुं प्रमुख दाणामां भुसो, कांकरी, अने चूनो प्रमुख मेलवीने वेचे. ए सहु प्रतिरूप कहीएं. अहीं

यां आपणी चीज व्यापारनी होय, तेने परिकर्म करी वेचवानो आगारछे. ए त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो विरुद्धगमन अतिचार. लखीए छेएं. ते एके, आ पणा गामना राजाएं फरमाव्युं के, फलाणे गाम जशो नहीं. ते गामनी चीज लेवी नहीं. तेमनी साथें व्यापार,खातुं,लेणुं,देणुं,कांइ पण करवुं नहीं. एवो सरकारनो हुकमछे. केमके, सरकारना कोइ मुद्दाइ गुनेगारछे, ते त्यां जइ कोइनुं शरण लइने रह्याछे. माटे त्यां थी तेमने कोइ दिवस पकडी मंगाववानोछे.त्यां सुधी ते गामवाला कोइ सरकारनी चीज वेचवा आवे, ते लेशो नहीं. ए प्रमाणे राजा एं हुकम कर्योछे. हवे आ माणस तो लोजने वश पड्यो, ते गाम मां जइने सोंघी वस्तु जाणीने छानो मानोजइ त्यांथी लइ आवे अने पोताना गाममां छानी मानी लावी वेचे. एवामां कोइ चुग लीखोर ते वात जाणे अने राजाने जाहेर करे के अमुक माणस, आपणा गाममां परराज्यनी चीज, त्यहांथी लावेछे. ने अहीं वेचे छे. अथवा राजसंबंधी कांइ छानी वात विगत होय, ते करे. त्यारें ते कष्टमां पडे. दाणचोरी पण एमां अवी गइ. ए माटे एविरुद्धग मनअतिचार थाय. अहीयां दाणचोरी तो सर्वथा तजवी. कदा पि लोजने वश पड्यो थको न रही शके, तो वर्ष प्रत्यें प्रमाण करी राखे. तथा श्रावक होय, ते चोथा विरुद्धगमन व्रतनो आगार राखे.

५ पांचमो कूडां तोल तथा कूडां माप करण अतिचार कहेछे. ते एके, लेवानां तोल माप जूदां राखे. अने देवानां तोल माप पण जूदा राखे. एवी रीतें गज पण लेवानो जूदो राखे अने देवानो प ण जूदो राखे. कोइ देशमां अनाज जरवानुं पण मापछे त्यां पाली माणुं प्रमुख, लेवानुं जूडुं राखे अने देवानुं माप जेढुं, ते पण जूडुं राखे. वली त्राजवानी डांडीमां अंतरकोण राखे. मापमां पण एवी दगलबाजी करे. जरती वखत पालीने दगावीने आपे.

लेवानी वखतें माथा सुधी संपूर्ण दाणो नरीने लिये. वली वस्त्र ले, त्यारें पण गज अथवा हाथ सरकावीने ले, तथा आपे. तेवारें अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार, जे विरति श्रावक होय, ते जाणे, पण ते अतिचार लागेछे. एम जाणी आदरे नहीं.

अहीं आजीविकाने माटें वर्त्तमान लोक व्यवहारनी रीतिएं ठेवूं वधतुं देवा लेवानी मने जयणाछे. अजाण पणे कोइ खोटां तोल माप थइ जाय, तेनो अतिचार नहीं. विरति व्रतनीछे. ते प्र माणे पालीश. अधिक लोनने वश पडीने नहीं करीश. आ पांचे अतिचार, अदत्तादानविरमणव्रतना जाणवा.

इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे पंमितश्री उद्योतसागरगणिना कृत तृतीयस्थूल अदत्तादानविरमणव्रतनाषा समाप्ता ॥ ३ ॥

---

॥ अथ ॥

## ॥ चतुर्थस्थूलब्रह्मचर्यव्रत प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

आद्यक्षर उँकारकूं, मंगलरूप मनाय;
चोथे व्रतके नेद सब, नाषा करुं बनाय ॥ १ ॥

चोथू ब्रह्मचर्यव्रत. एटले मैथुननो त्याग करवो. त्यां मैथुनत्या गना बे नेदछे. एक द्रव्यमैथुन त्याग, अने बीजो नावमैथुन त्याग.

१ द्रव्यमैथुन एटले परस्त्रीनो तथा परपुरुषनो परस्पर संगम जाणवो. त्यां पुरुषें परस्त्रीनो त्याग करवो. अने स्त्रीएं पण परपुरुष नो त्याग करवो. रतिक्रीडा तथा कामसेवन करे, ते द्रव्यमैथुन क हियें. तेने जे पुरुष, तथा स्त्री, त्याग करे. तेने द्रव्यब्रह्मचारी तथा व्यवहारब्रह्मचारी कहीएं.

२ बीजो नावमैथुनरूप. ते एके, चेतनरूप पुरुषने विषया निलाष परपरणति रूप, तथा तृष्णा ममतारूप इत्यादि निश्चय

परस्त्रीछे तेनी साथें जे मलवुं, तेने रीझ मोज आपवी, तेनी साथें वांछित विलास करवो, ते भावमैथुन जाणवो. एने जिनवाणी ना उपदेशें तथा जे सद्गुरु हितशिक्षानो उपदेश करे. त्यारें पोतें परपुद्गलादिकने उलखी, जातिहीन जाणी, आगामिक कालें एने महादुःखदायी जाणी, पूर्वें गतकालें अनेक मरणांत दुःख परंपरा एनाथी पाम्यो, ए माटे मने ए विजाति स्त्रीउं तजवानुं कछुंछे, माहारे तो मारी स्वजाति, परमभक्त, उत्तम, सुकुलीन शमता रूप सुंदरीनो संग करवो सारोछे. विभावपरणतिरूप परस्त्रीएं मारी सर्व विभूति खेंची लीधी. हवे सद्गुरुनी सहायताथी ए दुष्ट परिणाम स्त्रीसाथें हुं लाग्यो छुं. तेने थोडे थोडे निग्रह करुं. त्यजवानो भाव आदरुं, के जे थकी म्हारी शमता सुंदरी, शुद्धस्वभाव घटरूप घरमां आवी रहे, तो घरनुं तेज वधे. एवी समजण पामीने परपरणतिमांथी ममता छोडे. उदयें कर्म व्यापे नहीं. शुद्ध चेतनानो संगी थइ रहे. शुद्ध परिणामथी दूर न रहे. ते भाव मैथुनत्यागी कहीएं.

अहींयां द्रव्यमैथुन त्यागी तो षट् दर्शन मांहे मले पण भावमैथुन त्यागीतो श्री जिनदर्शनमेंत्यांज श्री जिनवाणी सांभलतां ज्ञानभेद, जेना हृदयमां प्रवर्त्तायोछे, ते सहज उदास उपायथी भावमैथुननो त्याग करे. ते बीजा दर्शनोमां न मले.

अहींयां स्थूल परस्त्रीगमनव्रत. ते एके परस्त्रीनो त्याग कर्यो. परपुरुषनी परणेली तथा पारकानी राखेली जे स्त्री होय, तेनी साथें अनाचार सेवन न करुं. एवो पच्चक्खाण करे, तेने परदार गमनविरमणव्रत कहीएं. बीजुं जे स्वदार केहेतां पोतानी स्त्री, तेनाथी संतोष धरुं. एवुं जे व्रत धरे, तेने स्वदारसंतोषव्रत कहीएं. त्यां देवसंबंधी देवांगना, तथा तिर्यंच संबंधी स्त्रीजाति, तथा मनुष्य संबंधी स्त्रीजाति, एनाथी मैथुनसेवा निषेध. एकेकी

विधिना त्याग करीने, एटले कायायें करी परस्त्री साथें सोइमां दोरो परोववो, ए न्यायें संयोग करवानो निषेध अने मने, तथा वचनें अने स्वप्नमां जोग थाय, तेनी जयणा. सहज स्पर्श करवानी जयणा. वर्त्तमान स्त्री टालिने बीजी स्त्रीसाथें विवाह न करवो, तथा दिवसें ब्रह्मचर्य पालुं, न पलेतो प्रमाण राखुं, नववाड पालवानो खप करुं. स्त्रीजनने पण एवी रीतें परपुरुषनो त्याग जाणवो. हवे ए व्रतना पांच अतिचारछे, ते लखीयें छेएं.

१ प्रथम अपरिग्रहीतागमनअतिचार. ते एके, नहीं परणेली स्त्री, जे कुमारी तथा विधवा स्त्री, तेने अपरिग्रहीता स्त्री कहीएं. जे कारणे कोइ एनो स्वामी केहेवातो नथी. ए कोइनी स्त्री केहेवाती नथी. तेने जोइ, कोइ मूढमति विषयाभिलाषी थइ. भद्रक भावथी विचारे के, में तो परस्त्रीनो त्याग कर्योछे अने आ तो कोइनी स्त्री कहेवाती नथी माटे एनी साथें मेलाप करवाथी मने शुं दोष छे? एवुं विचारीने ते कुमारीनी साथें के विधवानी साथें जोग विलास करे. एज प्रमाणे व्रतधारी स्त्रीने पण परपुरुषनो त्यागछे. ते पण अपरिग्रहीत पुरुष कुंवारो होय अथवा जेनी स्त्री परलोक पहोंची होय तेनी साथें पूर्वोक्त न्याय मनमां धरीने संग करे, तो ते स्त्रीने पण प्रथम अतिचारनो दोष लागे.

२ बीजो इत्वरपरिग्रहीतागमन अतिचार. ते इत्वर केहेतां थोडो काल जाणवो. एटले मास, छमासनी मर्यादा करीने वेश्यादिकने खरची आपी पोतानी आस्नाव स्त्री करीने राखे. अहींयां कोइ अज्ञान पणाथी एम विचारे के, मारे तो पर स्त्रीनो त्यागछे. पण आने तो में महारी करीने राखीछे, तो एमां मने शुं दूषण छे ? एम जाणी करीने अज्ञान पणे ते वेश्याने सेवे, तो तेने बीजो अतिचार लागे. एवी रीतें श्राविकाने पण बीजो अतिचार लागेछे. ते एम के, बे शोक्यो होय तेमां शोक्यनो वा

रो धणी पासे जवानो होय ते दिवसें जरतार ने पोतें सेवे, ने मनमां विचारे के, पोताना स्वामीने सेवतां शुं दूषणछे ? मारे तो परपुरुषनो त्याग छे. पण एम न विचारे के, आ दिवसें तो ए शोक्य नो जरतार छे. मारो तो आ दिवस धणी पासे जवानो वारो नथी. तेम छतां पण छल करीने स्वामीने सेवे, तो ते स्त्रीने बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अनंगक्रीडा अतिचार. एटले अनंग कहेता कंदर्प्प, तेने जाग्रत करवासारु आलिंगन, चुंबन, नख प्रमुख अथवा नेत्रना हाव, जाव, कटाक्षादिक हास्य प्रमुख ठठ्ठामिश्करी विगेरे पर स्त्री साथें करे. दिलमां एम विचारे के मेंतो सोइमां दोरो परोववा नो जोग त्याग कर्यो छे. परस्पर एक शय्यामां सुइने जोग कर वानो मारे त्यागछे बीजानुं तो में व्रत लीधुं नथी पण ते, कामांध थवाथी एम न विचारे के, चेतना तो बन्नेमां वगडेछे एनाथी पण व्रत वेहेलुंज जांगेछे, मन चलेछे. तथा पोतानी स्त्री साथें चोराशी आसने करी काम जाग्रत करे. जोगविलास करे. तिथि प्रमाणे कामनिवासनी जग्यायें हाथनो स्पर्श करे. अंगमर्दनादि करीने काम प्रगट करे. अथवा परम अजिलाष थये थके, पोतानी स्त्री हाजर न होय तो न चालते कार्य हस्तकर्म करे. स्त्री पण कामव्याकुल थये थके पोताना अंगुठाथी सुखवासीया प्रमुख करे, अथवा स्त्री स्त्री मलीने, अधिकरणथी गुह्य स्थाने संचारण करे. अनें पोतानी इछा संतुष्ट करे, त्यारें पण तेने अतिचार ला गे. ते माटें श्रावकने ज्यां त्यां कामसंज्ञा घटाडवानी चाहना क रवी जोइएं. जेम लोजी माणस पोताना व्यापार धंधामां मग्न हो य एटलामां जूख लागे, तोपण सह्या करे. धंधाना वचमां जूख ने गणकारे नहीं. एम करतां पण ज्यारें जूखथी रह्युं न जाय,त्यारें त्यांथी उठी करीने उतावलें उतावलें रसोइनी जग्यामां जे रसोइ हाजर होय, ते खाइ लिये, पण सुस्वादनीके कुस्वादनी कांइ पण

तजवीज न करे, फरी पण त्यांथी उठीने पोताना धंधामां वलगे. तेवी रीतें समकेती, देशव्रत धारी पुरुष, परलोकना सापेक्ष धंधामां मग्न रहेछे. एवामां कामसंज्ञा उदय थइ, त्यारें अंतरभाव लाज मर्यादा डुगंछादिकने अनुसरतां ते कामसंज्ञाने गणतीमां न गणे. एम करतां अतिवेदोदय थाय, त्यारें व्याकुल थाय तो तत्काल उतावलथी कंदर्प्परोग निवारण करीने, फरी पोताना स्वकार्यमां प्रवर्ते तो ते व्रती, कामसंज्ञा वधारवानी इछा शा माटें राखे? शुद्ध श्रद्धावंत श्रावक तो मैथुनसेवानी जग्याने जेवु झांझरुखानुं होय, तेवुं करी जाणे. अने कहे के ए मलीन जग्याछे, तेनी इछा ते वडिनीतिनी वेलाशिवाय वीजे वखतें न रहे. तेवी रीतें मैथुन पण निषेध छे. दोषनुं स्थानक छे. आ प्रमाणे त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो परविवाहकरण अतिचार. ते ए के, जे पोताना संताननो अथवा परजातिनो अथवा अपणी नात जातमां पोतानुं डाह्यापण जणाववाने अर्थे आगल थइने विवाह करी आपे. कोइ वस्तु वातुं अथवा द्रव्यादिकनी सहायता करे, अथवा प्रेरणादिक करीने कोइनी पासेंथी अपावे. तेणे करी ते विषयी प्राणीने स्त्रीनो लाभ थयो त्यारें ते पुरुषतो तेनुं सारुं कहे. बीजाउने कहे के फलाणाने त्यां फलाणे मारुं घर वसाव्युं. जो एवा हता, तो आ विवाह थयो. नहीं तो मारा शा हाल थात? एवी रीतनी अर्थीजनना मोढाथी पोतानी प्रशंसा सांभलीने बहुज खुशी थइ जाय. तेने जोइने बीजा पण जेउ विवाहना अर्थी होय, तेउ आवीने तेनी खुशामद करे, स्तुति करे, ने कहेके, आप साहेब जेवा परोपकारी थोडाज नजरे आवेछे? एवां वखाणनां वचन सांभलीने तेने कहेके, कांइ काम काज होय, तो मने कहेजो. सज्जन सम्मत करजो. अमारो तमारो एक वास्तो छे. एवी रीतें विवाहादिकनो सज्जनसंबंध, संसारमां जग्याए जग्याएं कराववो, ए अनर्थनुं बी

ज वाववा जेवुं बे. तेवुं करवाथी व्रत शुद्ध न रहे. अने काम अधिकरण वधारतां संसार वधे. श्रावकने तो पोताना घरमां पण कोइ एवुं कार्य करवुं होय,तो ते बीजाने चलावीने पोतें न्यारो ने न्यारो रहे. तो जे व्रती थइने परायो विवाह जोडावे, तेने चोथो अतिचार लागे. अहींयां पोताना घरसंबंधी तथा जेनाथी बूटाय एम नथी, एवा संबंधीनो विवाह करवानी जयणा, ते पण परिमाण राखी लेवुं. एमज स्त्री पण पारका विवाहमां मोड प्रमुख बांधे, ने आगल थइने कुलधर्म बजावे. त्यारें अतिचार दोष लागे.

५ पांचमो तीव्रानुरागअतिचार. ते एके जे कोइ, स्त्रीउपर तीव्र अभिलाष धरे. पारकी स्त्रीने जोइने मनमां बहुज चाहना करे. ते स्त्री विना क्षणमात्र पण रही शके नहीं. हरतां, फरतां, जीव, तेनासांज वलग्यो रहे. तथा देहमां काम वधारवाने तथा संभोग सामर्थ्य करवाने माटे अफीण, माजम, भांग, अने बीजी पण धातु हरताल, पारा प्रमुख पट्टी, बंधेजनी गोली शोधे. इत्यादि तीव्रकाम रागथी करे; त्यारें ते पांचमो अतिचार लागे. अने स्त्री पण काम वृद्धि करवानी अनेक योजना करे.जेम के योनिसंकोचन औषध,मांयां फलक,शीश,त्रिफलां,लोदर इत्यादिक अंगमां गोली करीने संचरावे अत्यंत उद्भट वेष जोवे.बहु हावभावादिक विषय लालसा करे,त्यारें तेने पांचमो अतिचार लागे.ए पांचे अतिचार जाणुं,पण आदरुं नहीं. अहीं स्वदारसंतोषव्रत वालाने छेवटना त्रण अतिचार छे.अने आगलना बे अतिचार ते तेने अनाचार छे. तथा परदारविरमणव्रतवालाने तो ए पांचे अतिचार छे.स्त्रीने पण एज प्रमाणे अतिचार लागे.

॥ इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे चतुर्थ स्थूलब्रह्मचर्यव्रत पंडित श्री उद्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा ॥ ४ ॥

॥ अथ ॥

## ॥ पंचमस्थूल परिग्रहपरिमाणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

सुमति दइ श्रीशारदा, ताके पद पणमेव ;
पंचम परिग्रह व्रत तणी, भाषा करुं शुभेव ॥ १ ॥

हवे पंचम स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रत, विगतवार सहित करीने लखीएं छेएं. परिग्रह एटले जे समस्त पणे बीजां द्रव्य नाना प्रकारनां ग्रहण करवां, ते परिग्रह जाणवो. तेना बे भेदछे. एक बाह्यद्रव्य परिग्रह अधिकरणरूप. ते नवविध परिग्रह छे. बीजो भाव परिग्रह. ते एके, चौद अभ्यंतर ग्रंथिरूप जे परभावनुं ग्रहण, समस्त आत्मप्रदेशथी सकषाय पणे बंध, ते भावपरिग्रह जाणवो. शास्त्रमां मूर्छा मुख्यवृत्ति तेने भाव परिग्रह केहेछे. तेमां चौद ग्रंथिनां नाम. ते कहीयें छैयें. १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ दुगंछा, ७ क्रोध, ८ मान, ९ माया, १० लोभ, ११ स्त्रीवेद, १२ पुरुषवेद, १३ नपुंसकवेद, १४ मिथ्यात्व, ए प्रमाणे चौद अभ्यंतर ग्रंथिछे.

अहींयां संसारी जीवने केवल अविरतिनां बलथी इछा आकाश समान अनंत अपरिमितछे. ए अविरतिना उदयथी इछा, अने इछाथी कर्म बंधमां पड्यो थको जीव, चारे गतिमां भटकेछे. एमां कोइ अविराधक जीव, पुण्य प्रकृतिना उदयथी मनुष्य भवादिक सर्व सामग्री जोग पाम्यो, अने सद्गुरुनी संगति पाम्यो. जेथी करी श्रीजिनवाणी सांभली त्यारें चेतना जागृत थइ, चेतना सुधरी. त्यारें ते जीव, विचार करे के अहो! हुं समस्त परभावथी न्यारो, अबंधी, अछेद्य, अभेद्य, अदाह्यधर्मी एवो छतो इछावश पड्यो. समस्त छेदन, भेदन, परिभ्रमणादि दुःखनो भोगी, परधर्मी थयो; तो ह

ज वाववा जेवुं छे. तेवुं करवाथी व्रत शुद्ध न रहे. अने काम अधिकरण वधारतां संसार वधे. श्रावकने तो पोताना घरमां पण कोइ एवुं कार्य करवुं होय, तो ते बीजाने जलावीने पोतें न्यारो ने न्यारो रहे. तो जे व्रती थइने परायो विवाह जोडावे, तेने चोथो अतिचार लागे. अहींयां पोताना घरसंबंधी तथा जेनाथी छूटा य एम नथी, एवा संबंधीनो विवाह करवानी जयणा, ते पण परिमाण राखी लेवुं. एमज स्त्री पण पारका विवाहमां मोड प्रमुख बांधे, ने आगल थइने कुलधर्म बजावे. त्यारें अतिचार दोष लागे.

५ पांचमो तीव्रानुरागअतिचार. ते एके जे कोइ, स्त्रीउपर तीव्र अभिलाष धरे. पारकी स्त्रीने जोइने मनमां बहुज चाहना करे. ते स्त्री विना क्षणमात्र पण रही शके नहीं. हरतां, फरतां, जीव, तेनामांज वलग्यो रहे. तथा देहमां काम वधारवाने तथा संजोग सामर्थ्य करवाने माटे अफीण, माजम, भांग, अने बीजी पण धातु हरताल, पारा प्रमुख पट्टी, बंधेजनी गोली शोधे. इत्यादि तीव्रकाम रागथी करे; त्यारें ते पांचमो अतिचार लागे. अने स्त्री पण काम वृद्धि करवानी अनेक योजना करे. जेम के योनिसंकोचन औषध, मांयांफलक, शीश, त्रिफलां, लोदर इत्यादिक अंगमां गोली करीने संचरावे अत्यंत उद्भट वेष जोवे. बहु हावभावादिक विषय लालसा करे, त्यारें तेने पांचमो अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार जाणवुं, पण आदरवुं नहीं. अहीं स्वदारसंतोषव्रत वालाने छेवटना त्रण अतिचार छे. अने आगलना बे अतिचार ते तेने अनाचार छे. तथा परदारविरमणव्रतवालाने तो ए पांचे अतिचार छे. स्त्रीने पण एज प्रमाणे अतिचार लागे.

॥ इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे चतुर्थ स्थूलब्रह्मचर्यव्रत पंडित श्री उद्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा ॥ ४ ॥

---

॥ अथ ॥

## ॥ पंचमस्थूल परिग्रहपरिमाणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

सुमति दइ श्रीशारदा, ताके पद पणमेव ;
पंचम परिग्रह व्रत तणी, भाषा करुं शुभेव ॥ १ ॥

हवे पंचम स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रत, विगतवार सहित करीने लखीएं छेएं. परिग्रह एटले जे समस्त पणे बीजां द्रव्य नाना प्रकारनां ग्रहण करवां, ते परिग्रह जाणवो. तेना बे भेदछे. एक बाह्यद्रव्य परिग्रह अधिकरणरूप. ते नवविध परिग्रह छे. बीजो भाव परिग्रह. ते एके, चौद अभ्यंतर ग्रंथिरूप जे परभावनुं ग्रहण, समस्त आत्मप्रदेशथी सकषाय पणे बंध, ते भावपरिग्रह जाणवो. शास्त्रमां मूर्छा मुख्यवृत्ति तेने भाव परिग्रह केहेछे.तेमां चौद ग्रंथिनां नाम. ते कहीयें छेयें. १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ दुगंछा, ७ क्रोध, ८ मान, ९ माया, १० लोभ, ११ स्त्रीवेद, १२ पुरुषवेद, १३ नपुंसकवेद, १४ मिथ्यात्व, ए प्रमाणे चौद अभ्यंतर ग्रंथिछे.

अहींयां संसारी जीवने केवल अविरतिनां बलथी इछा आकाश समान अनंत अपरिमितछे. ए अविरतिना उदयथी इछा, अने इछाथी कर्म बंधमां पड्यो थको जीव, चारे गतिमां भटकेछे. एमां कोइ अविराधक जीव, पुण्य प्रकृतिना उदयथी मनुष्य भवादिक सर्व सामग्री जोग पाम्यो, अने सद्गुरुनी संगति पाम्यो. जेथी करी श्रीजिनवाणी सांभली त्यारें चेतना जागृत थइ, चेतना सुधरी. त्यारें ते जीव, विचार करे के अहो ! हुं समस्त परभावथी न्यारो, अबंधी, अछेद्य, अभेद्य, अदाह्यधर्मी एवो छतो इछावश पड्यो. समस्त छेदन, भेदन, परिभ्रमणादि दुःखनो भोगी, परधर्मी थयो; तो ह

वे हुंसमस्त परभावनुं मूल जे इछा, तेने दूर करुं, एवी चेतना थइ त्यारें समस्त परभाव त्यागरूप चारित्र आदरे अने जेने वहुज रसिक अविरतिपणाना बलथी समस्त परिग्रह मूर्छा एका एक बूटे नहीं. तथा दोषथी पण भरे, त्यारें ते लघुमार्ग जे देशविरति पणुं ते आदरे. इछा परिमाण व्रत धरे. ते इछा परिमाण व्रत नव प्रकारेछे.

१ तेमां प्रथम धनइछापरिमाण. ते धन, चार प्रकारनुं जाणवुं. तेमां प्रथम गणिम धन कहीएं. ते एके जे वस्तु नंग गणीने वेचाय. ए श्रीफल प्रमुख जाणवां. २ बीजुं धरिम धन. ते ए के जे वस्तु, तोलथी वेचाय. ए गोल, साकर, करियाणा प्रमुख. ३ त्रीजुं मविधन. ते एके जे मापथी वेचाय. जेम दूध घृतादिक. ४ चोथुं परिछेद्य धन. ते एके, जे परिक्षायें वेचाय जेम सोनुं, रूपुं, जवाहीर अने वस्त्रादिक, नाणांप्रमुख परीक्षायें वेचायछे. ए चारे धन कहीयें. तेनुं जे परिमाण करवुं, ते धन परिमाण व्रत जाणवुं.

२ बीजुं धान्य परिग्रह, ते चोवीश जातिनुंछे, ते लखीएं छेएं, १ शालि, २ गहुं, ३ जुवार, ४ बाजरी, ५ जव, ६ मग, ७ मठ, ८ अडद, ९ बूट, १० बोडा, ११ मटर, जवनी साथें थायछे ते. १२ अरहड एटले तुवर, १३ किसारी, १४ कोद्रा, १५ कांग, १६ चणी, १७ वाल, १८ मेथी, १९ कलथी, २० मसूर, २१ तल, २२ मंरुवो, २३ कूरी, २४ बंटी. ए चोवीश धान्यनी जाति व्यवहारमां सदा खावा लायकछे ते लेवां. बीजां पण १ धाणा, २ जींडी, ३ सुवा, ४ अजमो, ५ जीरुं, एपण धान्यनी जातिमां छे ते औषधादिकमां कोइ प्रकारें काम आवेछे, वली बीजां पण धान्य. जे वांके, १ सामो, २ मणकी, ३ भूरट, ४ चेकरिया, आ धान्य मारवाड देशमां प्रसिद्ध छे. बीजुं पण चिरिया, मोठ, अडकधान, खडधान, जे वाव्या विना उगे अने जे काल दुःकालमां खावा लायकछे. ए सर्वं जातिनां अनाजनुं जे परिमाण, ते धान्यपरिमाणव्रत कहीएं.

३ त्रीजुं क्षेत्रपरिग्रह व्रत. क्षेत्र एटले खुल्ली भूमी, अथवा वा ववानी तथा वगीचो करवाती जग्या. तेना त्रण भेद छे. एक एवी जातिनी के, जेमां वरसादना पाणीथी धान्य नीपजे. एक जमीन एवीके, जेमां कुवाना पाणीथी धान्य नीपजे अने एक जमीन एवी के, जेमां वरसादना पाणीथी पण धान्य नीपजे. अने कुआना पा णीथी पण धान्य नीपजे, तेनुं परिमाण ते क्षेत्र परिमाण व्रत.

४ चौथुं वास्तुपरिमाणव्रत. एटले जे घर, हवेली. डुकान प्रमु ख. तेना त्रण भेदछे. तेमां ए खातवास्तुक ते भोयरां प्रमुख. बीजो उच्छ्रित वास्तुक ते ए के भोयरुं, तहखानुं, ए विना ऊंची एक मालनी, बे मालनी, त्रण मालनी. एम यावत् सात मालनी हवेली जाणवी. एनुं जे परिमाण राखे, ते त्रीजो भेद खातोच्छ्रित वास्तुक. ते ए के, भोयरां, तहखाना, कूवा, टांकां, ए सौ हवेलीनी अंदर होय, तेने खातोच्छ्रित कहिएं. तेनुं जे प्रमाण राखे, ते वास्तुकपरिमाणव्रत.

५ पांचमुं रूप्यपरिग्रहपरिमाण व्रत. ते ए के, शिक्का विना काचा रूपानो तोल, तेनुं परिमाण करी राखे, ते रूप्यपरिमाण व्रत.

६ छठुं सुवर्णपरिग्रह परिमाण व्रत. ते एके रूपानी जेम अघड, शीका विनाना सोनाना तोलनुं परिमाण करी राखे, ते सुवर्ण परिमाण व्रत.

७ सातमुं कुपदपरिग्रह परिमाणव्रत. ते ए के, कुपद केहेतां त्रांबु, पीतल, रांग कांसुं सीसुं, भरत लोढुं, ए सौ धातुना वास णनां परिमाणनो तोल करीने राखे, ते कुपद परिमाण व्रत जाणवुं.

८ आठमुं डुपदपरिमाण व्रत. ते ए एके, मूल्य आपीने वेचातां लीधे लां, दास, दासी, ते डुपद कहिएं. पण चाकर गुमास्ता प्रमुख ए वर्गमां गणाय नहीं. एनुं जे परिमाण करी राखे, ते डुपदपरिमाण व्रत.

९ नवमुं चोपद परिग्रह परिमाण व्रत. ते ए के गाय, भेंष, घो डा, बलद, सूतर, बकरी, गाडरी प्रमुख चोपगा जीव तेमने केट लां राखवां तेनी गणतीनुं परिमाण करी राखे, ते चोपद परिग्रह

परिमाणव्रत जाणवुं. हवे पोतानी इछा प्रमाणे केटलो परिग्रह राखवो, तेनो विवरो लखीयें छैएं.

१ प्रथम धन परिमाणमां रूपुं,सोनुं, अण घड्युं, तथा घड्युं, अटलुं राखुं त्यार पछी रोकडा रूपैया असरफी तथा जवाहीर प्रमुख अटला अमुक हद्द पर्यंत राखवानी तो जयणा छे परंतु प्रमाण उपरांत पुण्ययोगथी वधे तो धर्म प्रीतिएं करीने धर्मस्थानकमां खरचुं.

२ धान्य प्रमाणमां एम के, वर्षमां आटला मण धान्य राखवानी जयणा. तेनो विवरो कहेछे. आटला मण घर आश्रित खरचसारु तथा आटला मण बाहार बीजा कोइ प्रकारना खरच माटें वापरवामां आवे, तेनी जयणाछे. उपरांत नहीं. अने व्यापारनी विगत तो सातमां गुण व्रतमां लखवामा आवशे.

३ क्षेत्रपरिमाणमां आटला विघा जमीन राखवानी मने जयणा. उपरांत नहीं. क्षेत्र, वाडी, वाग, बगीचा प्रमुखनी जमीन संबंधी पण सर्व एमांज आव्युं.

४ वास्तु परिमाणमां खडकीबंधघर अमुक हद्द सुधी राखवां. तेनी जयणा. तथा छूटी दुकान, तथा तबेला, आटला गोखानां, तथा आटली वखार. वली जो पुण्यना उदयथी लक्ष्मी वधे तो हाथी प्रमुख बांधवानां स्थल राखवानी जयणा. तथा परदेश संबंधी व्यापारनी दुकानो अमुक हद्द सुधी राखवानी जयणा. तथा आटलां घर भाडे देवानी जयणा. आटला भाडे राखेला घरने समरावनवानी जयणा. तथा कुटुंबसंबंधिना घरोना आदेश उपदेशनी जयणा. तथा पोताना संबंधी परदेश गया होय; तो तेना घर प्रमुख समरावनवानी जयणा. कोइ स्नेही गुमास्तो अथवा चाकर परदेशगयो होय, त्यारें तेना घरने समारवानी जयणा. तथा आजीविका हेतुयें कोइनी चाकरी करवी पडे,त्यारें ते धणी घर अथवा हवेली करावनवानुं काम सोपें त्यारें ते काम करवा तथा करावनवानो आगार छे.

५ रूप्प परिमाणमां रूपुं आटला शेर अथवा आटला मण पर्यंत राखवानी जयणा. अने जवाहिरने तो धनपरिमाणमां गणेलुंछे. ए सहु पोतानी निश्राना घरमां घरनी अजनाशछे.

६ सुवर्ण परिमाणमां सोनुं, आटला तोल सुधी प्रमाण करी राखवुं. अने ए सोनुं, रूपुं, जवाहिर प्रमुखना व्यापार आश्रि तो सातमा व्रतमां लखीशुं.

७ कुपद परिमाणमां त्रांबु, पितल, रांग, लोढुं, कांसु तथा जरत. ए सर्व मलीने धातुनां वासण आटला शेर अथवा आटला मण पर्यंत राखवानी जयणा अथवा बीजा कोई जातना घडेला घाट आटला तोल प्रमाणें राखवानी जयणा, उपरांत निषेधछे.

८ द्विपद परिमाणमां दास, दासी वेचातां लेवां, ते व्रत माफक राखवानी जयणा. उपरांत राखवानो निषेधछे. तथा गुमास्ता के चाकर प्रमुख राखवानी तो जयणा.

९ चोपद परिमाणमां गाय, भेंष, वत्स सहित, तथा सांढ सहित अमुक संख्या प्रमाणे करी राखवानी यजणा. वली तेमनी जे ओलाद वधे, ते राखवानी जयणा, घोडा, घोडी, ओलाद सहित एटलां राखवानी जयणा. बलद एटला राखवानी जयणा. बकरी ओलाद सहित एटली राखवानी जयणा. सूतरी एटली राखवानी जयणा. हाथी एक, चार, दश अथवा अमुक संख्या सुधी राखवा, तेनी जयणा. ए शिवाय बीजा पण कोइ जातनां चोपद जनावरो पोताना जोग निमित्तें अमुक संख्या सुधी घरमां राखवानी जयणा. उपरांत कोइ लेणामां अथवा कोइ बीजी रीतीएं शिरपाव, नजराणा प्रमुख बक्षीश दाखल आव्या होय, तेने राखवांनो आगार. बीजानो निषेध. एम बीजां पण घरवखरीनां एटले घरमां वपरातां राछ पीछ मोटां अथवा छोटां तथा वस्त्र प्रमुख ए सहु अधिकरण सर्व मलीने आटला शेंकडा रूपैयानां अथवा आटला हजार रूपैयानां राखवानी

जयणा, उपरांत निषेध. वर्षमां आटला मण घृतनी जयणा. वर्ष प्रत्यें तेल मण आटलानी जयणा. वर्ष प्रत्यें परचुरण करियाणां मण आटलां घरखरच सारु राखवानी जयणा, एटले घरमां आटलुं राखीश तेनुं प्रमाण करी राखे, तेनी जयणा, उपरांत निषेध. वर्ष प्रत्यें आटला मण लूण एटले मीठुं राखवानी जयणा. उपरांत निषेध. वर्ष प्रत्यें गोल, मिशरी, खांड, चीनी साकर विगेरे आटला मण घरखरच सारु राखवानी जयणा, उपरांत निषेध.

एवी रीतें बीजी पण कोइ चीज, घरसंबंधी वापरवा सारु आटली हद पर्यंत राखवानी जयणा. ए सहु एवी रीतें पांचमा व्रतमां घर संबंधी इछाछे अने व्यापार संबधी तो सातमा व्रतमां कहेवीछे. हवे ए इछापरिमाण व्रतना पांच अतिचारछे, ते लखेछे.

१ तेमां प्रथम धनपरिमाणातिक्रम अतिचारछे. ते ज्यारें धन, इछापरिमाणथी वधारे थाय त्यारें लोभ संज्ञाथी मनमां मनसुबा करे के आ पांच हजार तो छोकराना जमे करीएं, केमके छोकरो पण महोटो थयोछे एने पण जोइशे, अने एने आपवुं, ते पण मने योग्यछे. एवा कुविकल्प करीने दीकराना पांच हजार रूपैया जूदा करी राखे; अने वली अनाज चावल प्रमुख इछा प्रमाणे तो घरमां तैय्यार पड्युंछे तो पण फरी बीजुं अधिक, भरी राखवामां लाभ जाणे, त्यारें धान्यनो शोदो करी राखे, अने जेनी साथें ते धान्यनो शोदो कर्यो होय, तेने कहे के ए अनाज अमे लीधुंछे, ते तमे तमारा घरमां हमणां राखो, अमारे जेम जोइशे तेम अमे लेता जइशुं. एवी रीतें ठराव करीने जेम जेम घरमां धान्य जोइएं, तेम तेम ते धान्य तेनी पासेंथी लावे अने पोताना अज्ञानथी मनमां एम जाणे जे मारे तो इछापरिमाथी अधिक धान्य, घरमां राखवानो त्याग छे, अने ए धान्यतो बीजाना घरमां रह्युंछे ; एमां मने शुं दूषण छे? एवा मनमां कुविचार करे. अथवा पूर्वे नियम लेवा वखतनो

काचो मण मरिमाण करी राख्योछे अने देशांतर गये थके त्यां पाका मणनी चाल होय, तो पण ते मणने काचा मण परमाणे गणी राखे. एवा जे कुविचार करे, ते प्रथम अतिचारछे.

२ बीजो क्षेत्रप्रमाणातिक्रम अतिचार. ते ए के जे, वास्तु परिमाण राख्युं होय, तेनाथी वधारे वास्तु थाय, त्यारें बेहु घर नी वच्चेनी दिवाल होय ते तोडी पाडे; अने ते बे घरनुं एक महोटुं घर करे. क्षेत्र, बगीचा, वाडी प्रमुख तोडी नाखीने महोटो बगीचो करे. तेमज क्षेत्र पण महोटुं करे; अने मनमां एम विचारे के में जे परिमाण राख्युं छे, ते तो अखंड छे. जे कारण माटे गणती तो एक अथवा बेनी राखी हती, ते गणती प्रमाणे तो बराबर राख्युं छे अने महोटुं करवामां शो दोषछे? गणती तो तेटलीने तेटलीज छे. एम जे करे, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो रूपुं अने सुवर्णप्रमाणातिक्रम अतिचार. ते एम के, इछा परिमाणथी ज्यारें वधारे थाय, त्यारें पोतानी स्त्रीनां घरेणां प्रमुख भारे तोलनां बनावे, अथवा तेउनी निष्ठायें करीने राखे. कोइ भाजन एटले वासण प्रमुख सोना रूपानां होय, ते पण तोलमां भारे घडावीने राखे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो कुपदपरिमाणातिक्रम अतिचार. ते एमके, त्रांबु, पीतल अने कांसा प्रमुखनां भाजन, अथवा बीजां राछ रचीलां जे गणतीमां प्रथम राख्यां होय अने ज्यारें संपदा मली, त्यारें यद्यपि ते भाजन, गणतीमां तो प्रतिज्ञापरिमाणनी संख्यानांज राखे, पण तोलमां बमणा त्रमणा शेरनां बनावे. अने मनमां एम धारणा धारे के, मारुं व्रत तो अखंड छे. भाजननी गणती तो में भांगी नथी!! अथवा व्रत लेती वखतें काचो तोल राख्यो छे, अने कोइ पर देशांतर गये थके त्यां पाका तोलनो व्यवहार छे. हवे पोताना अज्ञानदोषथी विचारे के, काचा पाकानी शी चर्चा छे? अमारे तो सर्व जणशनो संम

त, शेर अथवा मणना प्रमाणथी छे. अमे कांइ शेर वधार्यो नथी. अथवा अमारी खातरदारीने माटे पण कोइएं वनाव्यो नथी. अमारे तो शेरथी प्रतिज्ञाछे. काचा पाकानो अमे कांइ हिशाव राखता नथी, एवुं करे. ते चोथो अतिचार जाणवो.

५ पांचमो द्विपद चतुष्पदपरिमाणातिक्रम अतिचार. ते एम के दास, दासी, घोडा, गायो, वलद अने वीजां पण चोपद प्रमुख जनावरो पोताना प्रमाणथी अधिक थयां जाणे, त्यारें तेउने वेची नाखे अथवा गर्जग्रहण विलंबथी करावे, गणतीमां छे तेमांना वेचे, त्यारें गर्जग्रहण करावे अथवा जाइ के पुत्रनी निश्रायें करीने राखे. एटले पोताना परिमाण माफक कहेवामां राखे. एवी कुटिलता पोतानी अज्ञानताएं करे, ते प्राणीने पांचमो अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं. पण अहींयां क्षेत्र, वास्तु, चतुष्पदादिक, कोइ मागणा लेणामां आवे, ते ज्यां सुधी वेचाय नहीं त्यां सुधी अधिक राखवां पडे, तेनो आगार.

॥ इति श्री द्वादशव्रतविवरणे पंचम स्थूलपरिग्रहपरिमाणव्रते पंडित श्री उद्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्णा ॥ ५ ॥

---

एटले पांच अणुव्रत थयां ; हवे त्रण गुणव्रत लखेछे

॥ अथ ॥

## ॥ षष्ठदिशिपरिमाणव्रत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

प्रणमुं गणधर पदकमल, गौतम लब्धिनिधान ;
अब गुणव्रत विवरण कहुं, षष्ठम दिशिपरिमान ॥ १ ॥

हवे त्रण, गुणव्रत कहेछे, ते छठुं. सातमुं अने आठमुं. ए त्रणने गुणव्रत कहीयें. तेमां छहा व्रतमध्यें दिशिनो विचार कहीशुं, ए माटें ए व्रतनुं नाम दिक्परिमाण व्रतछे, ते लखेछे. जे कारण

माटे पूर्वें जे पंचाणुं व्रत कह्यां, तेने ए गुणकारीछे. ए त्रण व्रत थी पंचाणुं व्रतनी पुष्टि थायछे एमाटे गुणव्रत कहेवाय छे. ते केवी रीतें? तोके ज्यारें दिशिपरिमाण कर्खुं, त्यारें दिशिनियम क्षेत्रथी बाहेर जे जीव रहे, तेमने अज्ञयदान दीधुं तो पहेलुं प्रा णातिपात व्रत, तेनी पुष्टि थइ. तथा ए क्षेत्रगत जीवोथी जूठुं बोलवानो त्याग थयो, एटले बीजुं मृषावाद व्रत, तेनी पण पुष्टि थइ. तथा ते क्षेत्रनी चीज, दीधा विना लेवानो त्याग थयो, एट ले त्रीजुं व्रत जे अदत्तादान, तेनी पुष्टि थइ. तथा ते क्षेत्रगत स्त्री थी काम जोगाज्ञिलाष मट्यो, एटले चोथा ब्रह्मचर्य व्रतनी पुष्टि थइ, तथा ते क्षेत्रगत वस्तुना क्रयविक्रयना निषेधथी परिग्रह मूर्छा कमी थइ, एमाटे पाचमा परिग्रहपरिमाण व्रत्तनी पुष्टि थइ. तथा ते क्षेत्रना व्यापार संबंधी अढार पापस्थानकनो त्याग थयो. ते माटे ए व्रत, पांचे व्रतने गुणकारी छे. तेकारणमाटे एने गुण व्रत कहेछे. त्यां दिक्परिमाण ते चारे दिशि, तथा चार विदिशि अने ऊर्ध्व तथा अधोदिक्परिमाण व्रत छे. ते दिक्परिमाणव्रतना बे जेद छे. एक व्यवहारथी, अने बीजो निश्चयथी.

१ तेमां एक व्यवहारथी दिक्परिमाण. ते स्वकायाएं दिशिएं तथा विदिशियें जावानो अने माणस मोकलवानो तथा व्या पार प्रमुख करवानी इच्छा तेनुं परिमाण करीने राखे, ते व्यवहार दिक्परिमाण व्रतछे.

२ तथा बीजुं निश्चयथी दिक्परिमाणव्रत. ते जे गतिगम नछे ते सर्वकर्मनो धर्म छे. कर्मवशें पड्यो जीव, चारे गतिमांहे जटके छे. परानुयायी चेतना थइ त्यारें जीव, परस्वजावने अनुसर तो थयो, तेथी गतिज्रमण करेछे, पण जीव तो शुद्ध चैतन्यरूप अ गतिस्वजाववान् छे तथा स्थिर निश्चल स्वजाववान्छे; एवुं श्री जिन वाणीना उपकारथी जाण्युं त्यारें चेतना, शुद्धस्वरूपानुयायी थ

३ त्यारें पोतानुं अगति स्वरूप जाणीने सर्वक्षेत्रथी उदास रहे, एटले सर्वक्षेत्रसाथें अप्रतिबंधक भावें वरते; ते निश्चयदिशिव्रतछे.

१ अहींयां दश दिशिपरिमाणना बे भेद छे. एक जलवटनो, अने बीजो स्थलवटनो. त्यां प्रथम जलमार्ग एटले वहाणमां बेशी जवुं अने स्थलमार्ग एटले खुशकीने मार्गें जवुं ते. तेमां जल मार्गें अमुक दिशियें फलाणाबंदर सुधी जवुं, एम राखे. कारण के जलमार्गनी कोशगणती संख्यामां न आवे, तेथी बंदरनो नियम करी राखे. तेमां पण पवन तथा मेघ आंधी प्रमुखना तोफानमां वहाण क्यहांनुं क्यहां लेइ जइ नाखे, अने वली अजाण पणे भूल चूकथी अधिकवतासथी गणती, जे बंदरनी हती तेथी दूर बीजा बंदरमां लइ जइने नाखे. तो तेनो आगार छे.

२ तथा बीजो स्थलमार्ग. ते स्थलमार्गें आपणे पोतें जे क्षेत्रें व्रत उचार्यां होय त्यहांथी चारे दिशि, चारे विदिशि सुधी योजन, गाउ, कोश प्रमुख. एम जेटलुं जवानुं परिमाण कर्युंछे, तेटली हद्द सुधी अमने जवानी जयणा छे. तेमां पण चोर अथवा कोइ म्लेछादिकना बंधनमां पडवाथी ते धारेला नियमथी अधिकगाउ, कोश उपर लेइ जाय तो, तेनी पण जयणा. कारण के परवश पडयाथी नियम उपरांत जवानुं थइ जाय, तो तेनो दोष नथी. तथा ऊर्ध्व दिशिएं बार कोश जवानी जयणा. अधोदिशिएं आठ कोश सुधी जावानी जयणा. तेमां पण उंचुं चढीने नीचें उतरवानुं थाय, ते गणतीमां नहीं. तथा नियमक्षेत्रथी बाहेरनुं कोइक उलखाणवालानुं पत्र आवे, ते वांचवानो तथा फरी तेनो उत्तर लखवानो आगार. पण पोतानी तरफथी विना कारणे पत्रादिक न लखुं. परदेशनी विकथा सांभलवानो आगार. कोइ लेहेणादिक महोटा प्रयोजने आजीविकाना भयथी हक्क लेवाने अर्थे आदमी प्रमुख तगादो करवा माटे मोकलवो पडे, तेनोमने आगार. वली दिशि तथा विदिशिनुं

परिमाण, पांचशे पांचशे कोश प्रमुख जेटलुं राख्युंछे. हवे आगल कोइ पापना उदयथी तथा राजजयथी अथवा आजीविकाना जयथी जे गाम अथवा नगरमां वसता हता, ते नगरथी शो बशें कोश दूर जइ रहेवुं पडे; तो पण पूर्वक्षेत्र परिमाण जे राख्युं हतुं, तेज राखे, अने तेटलीज हद्दमां जइ रहे, पण ते परिमाणथी दूर जवुं नहीं. आगलथी जे पोताना निवासना गामथी आगार, राखी लीधो होयछे, त्यांथी शो अथवा बशो कोश दूर जइ पोतानो निवास नवो कर्योछे, तो पण पूर्वे जे पांचशें कोशनी गणती जे गामथी राखी हती तेज राखे पण छोडे नहीं. जे पूर्वे प्रतिज्ञा करी होय तेज पाले. एवी विगतें करी छठ्ठुं व्रत छे. ए छठ्ठा व्रतना पांच अतिचार छे, ते लखियें छेयें.

१ तेमा प्रथम, ऊर्ध्वदिक्प्रमाणातिक्रम अतिचार. ते एम के, अनाजोगथी वेसुरतिने लीधे तथा कोइ पण बीजा कारणथी प्रमाण करतां विशेष गमन करे, त्यारें तेने प्रथम अतिचार लागे.

२ एवीज रीतें बीजो अधो दिशिप्रमाण पूर्वरीतें अतिक्रमे, त्यारें तेने बीजो अतिचार लागे.

३ तेमज तिर्छि चारे दिशिविदिशिप्रमाणातिक्रम अतिचार छे. ते ज्यारें अनाजोगादिकें करी एना प्रमाणने अतिक्रमे, त्यारें ते त्रीजो अतिचार जाणवो. अहींयां अनाजोगें पोतें दिशिप्रमाणातिक्रम करे अथवा नियमनो जंग थशे, एवा जयथी गुमास्ता प्रमुखने मोकले, त्यारें त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ हवे चोथो अतिचार. ते एमके, जे एक दिशियें शो योजन परिमाण राख्युंछे, अने एक दिशिएं पचाश योजन परिमाण राख्युंछे. तेमां कदाचित् कोइ दिशियें दोढशो योजन जवानुं काम पडे, त्यारें पचाश योजन बीजी दिशिएं जवाना परिमाणना हता, ते जे दिशिएं जवुं पडे, ते दिशिना योजन, परिमाणमां जेल

वी ले अने अज्ञाने करी एवुं विचारे के, शो योजन पूर्व दिशिना मोकला राख्या हता, तेमां पचाश कोश दक्षिणदिशिना हता ते, आमां आज गणी लेउं. एटले दोढशोनी गणती थइ. अने आज ने दिवसें दक्षिण दिशि तरफ नहीं जाउं, मात्र एकज दिशे जइश. एमां मारुं व्रत पण नहीं भांगशे. एवा कुविकल्प करे, पण एक दिशिएं जवानुं काम पडवाथी त्यहांनुं त्यहां काम करे नहीं. जेटलो जे दिशिएं जवा आववनो नियम राख्यो होय, तेवीज प्रतिज्ञा न पाले, पण पोताना कार्यनी गरज पड्याथी उलट पालट करे अने एवी कुविकल्पना करे, ते वारें तेने चोथो अतिचार लागे.

५ पांचमो स्मृतिअंतर्ध्यानातिचारछे. ते एमके, दिक्परिमाण करीने केटला एक दिवस वीत्या पछी ते विसरी जायके, में तो अमुक दिशिएं जवानुं शो योजन परिमाण राख्युं हतुं, अथवा ए अमुक दिशिनुं आटलुं राख्युं हतुं. एवा विस्मयमां जीव पडे अने तेणे करी दिशिपरिमाणमां ते कमवेश करे, अधिक न्यून करे अथवा नियम लइने कागल प्रमुखमां लखी राख्युं न होय अथवा बुद्धि विलास मंद पणे थयो, तेणे करी घणा दिवस वीत्या पछी चित्तनी भ्रमत्ववृत्ति थइ जाय, त्यारें परिमाणनी वधारे के थोडी गणती करे. तेथी पांचमो अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं.

॥ इतिश्री द्वादशव्रतविवरणे शष्ठदिशिपरिमाणगुणव्रते पंडित श्रीउद्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा ॥ ६ ॥

---

॥ अथ ॥

## ॥ सप्तम भोगोपभोगविरमणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अब सप्तमकी विधि रचौं, पाले भविजन लोग ;
यह है गुणव्रत दूसरा, नामे भोगोपभोग ॥ १ ॥

हवे भोगोपभोग गुणव्रत बीजुंछे, जे कारणे, ए व्रत आदरवा थकी सचित्त चीजनुं खावानुं छोडे, अथवा परिमाण करी राखे. तथा जेमां घणोज आरंभ होय तेवो व्यापार न करे, एटले जेमां बहु हिंसादिक अवश्य करवां पडे, एवा व्यापारनो त्याग करे, अने अभक्ष्यनो परित्याग करे. एटला नियम, आ व्रतमा लीधा जाय छे. ते माटे ए व्रत, पहेलां पांचे व्रतने सफल करनारुंछे अने ए माटे एने गुणव्रत कहीयें. हवे ए व्रतनी शैली सर्व लखेछे, तेमां भोगोपभोगव्रतना बे भेदछे. एक व्यवहारथी, अने बीजो निश्चयथी,

१ तेमां प्रथम व्यवहारथी ते भक्ष्य अभक्ष्यनी समजण पामीने तथा बीजी आश्रव संवरनी समजण पामीने, खानपानादिक जे इंद्रियसुखनां कारणछे, तेमां शक्ति प्रमाणे बहु आरंभ त्यागीने अल्पारंभी थाय. ते व्यवहारभोगोपभोग विरमण व्रत कहीयें.

२ तथा बीजो निश्चयथी. ते एमके, जे श्रीजिनवाणी सांभली वस्तुतत्वनुं स्वरूप पामीने विचारे, जे जगत्‌मां परवस्तु लेइने खावी, ते हराम कहीएं. जे पारकी चीज खाय, ते हरामखोर कहेवाय. ते माटे जे नेकीवाला लोको छे, ते पोताना हकने ओलखे अने ते रीतें चाले. पण पारकी चीज ग्रहण करवा माटे स्वप्नमां पण इच्छा न राखे. एम हुं पण शुद्धचैतन्य भाव धारी, अने परम सत्पुरुषनी जाति थइने, जे वस्तु सडे, पडे, अने जती पण रहे; एवा पर पुद्गलना पर्याय छे, जगत्‌नी जे जूठ छे तेवा पदार्थोनो भोग मने हरामछे. परवस्तुनो भोग करवाथी यश नथी, अने सामर्थ्य पण नथी, एवुं विचारी परभावनो परित्याग करुं, तेणे करी स्वगुणवृद्धि थाय, एवी समजण पामीने पोताना आत्माने जगाडीने स्वरूपानंदी करे, चेतनविलास अनुभवे. ते निश्चय भोगोपभोगविरमणव्रत कहीयें. अथवा भोग शब्दनो अर्थ वली लखेछे.

सातमा व्रतना बे भेदछे. एक भोग, अने बीजो उपभोग,

ते कर्म व्यापारादि क्रियारूप एम छे, त्यां भोगना वली बे भेद छे. एक उपभोग, अने बीजो परिभोग, तेमां जे चीज एकज वार भोगमां आवे. जेम आहार, पुष्प अने विलेपनादिक, ते उप भोग. अने परिभोग एटले जे वारंवार भोगमां आवे ते, जेम भवन, वस्त्र, स्त्रीप्रमुख तथा कर्मथी एमछे एना भेद घणाछे, ते आगल ल खशुं, हवे एक, ए भोगोपभोग ते भोजन वस्त्र स्त्रीयादिकथी तथा बीजो, कर्म व्यापार क्रियाथी. तेमां प्रथम भोजनादिकथी कहेछे.

त्यहां श्रावकने उत्सर्गमार्गे निरवद्य आहार लेवो, तेनी शक्ति न होय तो सचित्त वस्तुनुं परिहारी थवुं, कदापि ते पण न थाय तो स चित्त वस्तुनुं परिमाण करी लेवुं. अने बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनं तकाय प्रमुख दुर्गतिना हेतु जाणी, अवश्य त्याग करवा. एमां पण पूरी शक्ति न होय तो, पोताना मंदवीर्यनो पश्चात्ताप करीने परि माण करी लेवुं. तेमां प्रथम बावीश अभक्ष्यनां नाम लखेछे.

१ वडनी पीपु, २ पींपलानी पीपु, पारस पींपलीनी पीपु, तथा ३ प्लक्ष ए पण पींपलनी जातिविशेषछे, ४ उंबरनी, पीपु, ५ अने कालुंबरनी पीपु, ए पांचे वृक्षनां फल अभक्ष्य छे, ए पांचे फलमां मरकी सरखा मरकी जीव छे. आकारथी ते जीव, सर्व सरखा थाय छे. ए माटे ए पांचे फल अभक्ष्य छे. वली ६ मध, ७ मदिरा, ८ मांस अने ए माखण, ए चार वस्तुउ जेवो ए वस्तुउनो रंगछे तेवाज रंगना तेमां निरंतर असंख्य जीवो उपजे छे. वली ए चारे वस्तुउ महा विगयछे. ए भक्षण करवाथी घणोज बिगाड करे, का मादिक दोषोने वधारे. प्रथम तो ए वस्तुउ हिंसा कस्या विना थती नथी, अने पछी पण चेतनाने बगाडे, ए माटे ए वस्तुउ अभक्ष्यछे. वली पुराणादिक वैष्णवमार्गमां तथा कुराणादिक म्लेछशास्त्रमां पण मदिरा, मधु, मांसना घणा दोष कह्याछे, ए माटे ए चीजो तो, स्वपरदर्शनमां पण त्याग करवानी कहीछे. वली भांग प्रमुख ले

वाथी ते चेतनाने बिगाडे, माटे एने पण अभक्ष्य वस्तुमां गणवी. एमां पण शरदी रहेछे, ते कारणे एनाथी त्रसकाय जीवोनी घणी उत्पत्ति थाय, माटे एनो पण त्याग करवो.

१० तथा हिमना कांकरा एटले बरफ, ते पण अभक्ष्यछे. कारण के, एमां अप्कायना असंख्य जीवछे. खाधाथी ते चेतनाने मंद करे. शरदी करे. वली ए चीज खावानी कांइ जरुर पण नथी. ए बहु आरंभिक छतां स्वादिष्ट पण नथी. ए बलादिकनी वृद्धिकारक पण नथी, अने वली श्री सर्वज्ञ परमेश्वरें पण प्रतिषेध कर्योछे. एमां प्रसंगदोष तथा संगदोष घणाछे, ए माटे ए पण अभक्ष्यछे.

११ तथा विष जे अफीण प्रमुख चीज. ते अभक्ष्यछे. जे कारणे अफीणादिक विषवस्तु खावाथी पेटना जे कृमि गंडोलादिक जीवछे ते सहु मरी जाय. वली चेतना मुंजाय, अने ए चीजनी खावानी टेव पडी, ते छूटे नहीं. महोताद एटले मिजाज वधे. वखतें वखत जो ए विषवस्तु, खावा माटे न मले तो घणो क्रोध उपजे; शरीर शिथिल थाय. वली अमली माणसने व्रत करवानुं दुष्कर थाय, अने सारो स्वभाव होय ते बदलाइने नठारो थाय. ज्यारें अमल करे, त्यारे एक रंग होय, अने फरी उतरे त्यारें वली कांइ ओर तरहेनो मिजाज थाय. अने स्ववशपणुं छोडीने, परवश पडवुं थाय. वली ए चीज खावामां पण बहुज बेस्वादछे. तथा अफीणादिक विषवस्तुने खावावालो, ज्यहां वडीनीति अने लघुनीति करे, ते क्षेत्रमां त्रस तथा स्थावर जीवनी हिंसा थाय. ज्यां सुधी पेशाबनी शरदी जाय, त्यां सुधी पृथ्वीकाय प्रमुखना जीव एना गंधथी मरी जाय. ए माटें ए पण अभक्ष्यमां गणायछे. सोमल, वछनाग, हरताल प्रमुख जे विषचीज ते पण एमांज गणवामां आवे.

१२ वली जे मेघना करा एटले रोयडा, ते काचो गर्भ मेघनो गले, तेना कराना कटका पृथ्वी उपर गलेछे, तेपण अशुद्ध द्रव्यछे,

एमां पण बरफना जेवो महा दोषछे. जिनआज्ञा विरुद्धछे. ए माटे ए करा पण अभक्ष्यछे.

१३ तथा खडी माटी, पृथ्वीमां बहुजातिनी थायछे, ते अभक्ष्यछे. कारण ए माटीमां पण असंख्य जीवछे. वली ए चीज खावाथी पेटमां घणा जीवोनी उत्पत्ति थाय, तेमज पांडुरोग, आमवात, कबजीयत, पित्त, पथरि प्रमुख घणा रोग थाय, घणी माटी खाय, तेना मुखनो चेहेरो पीलो थइ जाय, मुखनी सुरखी एटले तेजी जती रहे, कोइ जातनी माटीमां मिंडक प्रमुख जीवनी योनिछे, त्यां शरदी पामीने जीव सूक्ष्म उपजता होय एवामां ते माटी भक्षण करे तो पंचेंद्रिय जीवनी पण हिंसा थइ जाय. माटी खावानुं जिनाज्ञा विरुद्धछे, ए माटे ए अभक्ष्यछे.

१४ तथा रात्रिभोजन तो प्रत्यक्ष दोषनिधानछे, अने आलोक तथा परलोकने विषे ए दुःख हेतुछे रात्रीना चारे आहार अभक्ष्यछे, जे कारण माटे रात्रीभोजनमां जेवो आहार होय, तेवा रंगना तेमां तमस्काय जीवो उपजे. वली आश्रित जीव संपातिम तेमां घणा आवी मले. रात्रीभोजन करवाथी तेमां कांइ भेलसेल होय, तेनी खबर न पडे तथा प्रसंगदोष पण घणा लागे केमके जो रात्रीयें भोजन करवानी टेव होय तो, नित्य रात्रें रसोइ करवी पडे, त्यहां अग्निना योगें जीवोनो संहार थाय, श्रावकना कुलनो आचार पले नहीं, सूक्ष्म त्रस जीवो नजरें न आवे अने जो नजरें आवे तो पण यत्न न थाय. वली रसोइ करतां जे अग्नि बले त्यहां पासेंनी छत तथा दीवाल प्रमुखमां आश्रित जीवो रात्रीने विषे जे बहु बेठा होय, ते सर्व तापना योगें व्याकुल थवाथी अग्निमां जइ पडे तथा पतंग प्रमुख जीवो चक्षु इंद्रियना विषयें व्याकुल थइने अग्निमां झंपापात करी बली मरे. छत के उपरमां रात्रीने विषे सर्प, घरोली करोलीया, मछर प्रमुख घणा जीव वसता हो

य, एवामां ताप लागे तेणे करी ते सर्पादिक जीवो व्याकुल थइ मुखमांथी गरल नाखे, ते गरल कदापि ज्ञोजनमां पडे अने ते ज्ञोजन अजाणतां खाधामां आवे एटले आत्मानो घात थाय. वली जे ज्ञोजन, दिवसें रांधी करीने राखी मूक्युं होय, ते पण रात्रे न खावुं, कारण एमां पण चीटी प्रमुख जीव चढे; तेनी खबर रात्रीमां न पडे. ते जीववालुं ज्ञोजन खावामां आवे त्यारें बुद्धिनो नाश थाय, एवुं शास्त्र मध्यें पण कह्युंछे "मेधां पिपीलिका हंति" ए माटे रात्रीयें ज्ञोजन करवुं निषेध कह्युं छे. वली वासण मेलतां पण रात्रीयें कोइ जीवनी रक्षा पले नहीं. वली रात्रीयें ज्ञोजन करवावाला, परज्ञवें उलूक, मंजार, मूषक, सर्प, वागुल, चामाचेडीया प्रमुखनो ज्ञव पामे. धर्म डुर्ल्लज्ञ पामे, अने पोतें रात्रीज्ञोजन करे तो तेना पुत्र पौत्रादिक पण एज ढंगें पडे. ते पण तेवीज कुचालचालें चाले. एथी अशुद्ध परंपरा चाली जाय. अने जो पोतें प्रथमथीज सारी चालें चाले तो, एटले रात्रीज्ञोजन न करे तो, पाछला पण सुचालें चाले. रात्रीज्ञोजनमां प्रत्यक्ष जीवहिंसाछे ते जोइने अन्यदर्शनीना जल वीजल आगल धर्म पाम्या हता, ए जिनाज्ञा विरुद्ध रात्रीज्ञोजन छे. ने मुनि पण पंचमहाव्रततुल्य छहुं रात्रीज्ञोजन त्याग व्रत उचरावे छे. ए माटे रात्रीज्ञोजन सर्वथा त्याज्य छे अने अज्ञक्ष्यछे.

१५ तथा बहुबीज ते जेमां गर्ज थोडो अने बीज घणां होय ते तुछफल कहीयें. रींगणु, वनस्पतिजातिविशेष, पटोल, खसखस, पंपोटा प्रमुख ए फलोमां जेटलां बीज तेटला जीवो छे. जेम नवटांक ज्ञर तिलमां, तेरशें जीवोछे तो खसखसमां तो एनाथी केटलाएक गुणा वत्ता होयछें ए माटे खावुं थोडुं ने जीवघात घणोज थाय, एनाथी कांइ उदरवृत्ति तो थाय नहीं, तेमज रींगणा प्रमुख बहु बीजवाली चीज, खाय तो ते पित्तादिक रोगनी हेतुछे.

वली एवी चीजो खावी ते जिनाज्ञा विरुद्ध ठे. एमाटे अज्ञक्ष्यठे.

१६ तेमज आचार एटले बोलानुं अथाणुं जे ज्ञातज्ञातनुं थाय ठे जेमके, आंबवेलीनुं, पारूलनुं, लींबुनुं, केरीनुं, केरडानुं, किरमदानुं, आंबलीनुं, काकडी प्रमुखनुं अने आडुं नीली हलदर, जमी कंद, ग रमर इत्यादिनुं अथाणुं अथवा राइतुं त्रण दिवस उपरांत अज्ञक्ष्य ठे. ए सर्व अथाणां तुछठे, त्रस जीवोनी खाणठे. वीलां प्रमुख तो प्रथमथीज अज्ञक्ष्य ठे, तो तेनुं फरी अथाणुं तो थायज केम? वि ष तो हतुं ने पठी वली तेमां जेर मेलवीने तेने वधार्युं एटले तेनुं केवुंज शुं? चोथे दिवसे एमां नियमा बेंद्रिय जीव उपजे, अने जो एठे हाथे स्पर्श करे तो पंचेंद्रिय जीव पण उपजे. अ न्यदर्शनीउना शास्त्रमां पण अथाणुं, नरकद्वारतुल्य गण्युंठे. ए माटे ए पण सर्वथा अज्ञक्ष्यठे.

१७ तथा विदल जे घोलवडां ते अज्ञक्ष्यठे, जे कारणे ते वडां दालनां थाय. ते विदल धान्य जे कलाइ, वूट, चोडा, मग, मठ, तु वर प्रमुखनां थाय. ए वडां ज्यारें काचुं गोरस जे दहिं मठो, एमां नाखे त्यारें ते खावां अज्ञक्ष्यठे. जे कारण माटे विदलमां दहिं म ठाना संयोग मात्रें तत्काल बेंद्रिय जीव उपजे. माटे जे कोइ चीज वि दलनी होय, ते मठानी साथें मले तो ते अज्ञक्ष्यठे. जे अनाजनी नीरस दाल होय, अने जेमां चीकणास न होय ते विदल जाणवुं. पण राइ अने शरशव प्रमुख तेमांनी जे दाल होय तेमां विदल दोष नथी. कारण, तेमां चीकणाशठे. अहींयां ठाश प्रमुख गर म करी विदलमां मेलवे, तो दोष नथी. तथा डुध पण जो उनुं न कर्युं होय तो विदलनी चीज साथें खावुं अयुक्तठे. कारण, तेमां बेंद्रिय जीवनी उत्पत्ति थाय. ए माटे विदलने काचा गो रसनी साथें खावुं ते अज्ञक्ष्यठे.

१८ तथा वेंगण जाति अज्ञक्ष्यठे. कारणके, वेंगणमां बहु बी

जछे. तथा एना बीजमां सूक्ष्म त्रस जीव रहेछे. वली ए वेंगण काम संज्ञाने वधारे. निद्राने वधारे. मति धीठी करे. ए द्रव्य,अति अशु रूछे. ए वेंगणनी जाति सर्व पण एवीज अभक्ष्य जाणवी, बीजी लीलोतरी प्रमुख तो सुकी करीने पण खावानी आज्ञाछे. अने ए ने तो सुकां करी खावानो पण निषेधछे. ए माटे ए अभक्ष्यछे.

१ए तथा अजाण्युं फल, ते पण अभक्ष्यछे. जे कारण माटे अजाण्युं फलछे. तेनी तरेह, गुण, दोषनी मालम नथी. तो ते केम खाधुं जाय ? कदाचित् विषफल होय, तो आत्मघात थाय. व्यग्र चेतना थाय, ए माटे अजाण्युं फल अभक्ष्यछे.

२० तथा तुछफल एटले वनबोर, जेने चणीबोर कहेछे. ते तथा पीलूडां, पीचू प्रमुख तथा अत्यंत कोमल फल, फली, ते पण अभक्ष्यछे. जे कारणे एवी जीज घणी खाए तो पण तेणें करी तृप्ति थाय नहीं. वली पछीथी घणा दोषो लागे अने जे फल खाइने तेनी गोटली ज्यां नाखे, ते जग्यायें ते गोटलीमां संमूर्छिम पंचेंद्रिय जीव असंख्य उपजे. वली घणां तुछफल जे खाय, तेने सद्य एटले थोडाज वखतमां रोगोत्पत्ति थाय ए मा टे एवा तुछ फलफलादि अभक्ष्यछे.

२१ तथा चलितरस पण अभक्ष्यछे. जे चीजनो काल पूरो थ यो, स्वाद बदल्यो,तेनी मर्यादा पूर्ण थइ ते चलितरस कहीयें. कोह्युं, सड्युं अन्न, बीजुं वासी रोटली, सीरो, कचोरी, तरकारी, खिचडी, वडां, नरम पूरी इत्यादिक अनेक रसोइ, जेमां पाणीनी सरसाइ र ही होयछे, ते चीज वच्चें एकरात व्यतीत थये वाशी थइ एटले ते अभक्ष्यछे. तथा मिठाइ वर्षाकालमां सारी उत्तम प्रकारनी बेश ब नी होय तो, उत्कृष्ट पंदर दिवस सुधी भक्ष्यछे, पछी अभक्ष्यछे. अने जो तेनो वर्ण, गंध, सीतावी बदलाइ गइ तो काल परि माण पहेलां पण अभक्ष्यछे. तथा उष्णकालमां मिठाइनो का

ल वीश दिवसनोछे उपरांत अन्नक्ष्यछे. तथा शीतकालमां एक मास काल उपरांत अन्नक्ष्यछे. तथा दहिं, शोल पहोर पछी अन्न क्ष्यछे. पण एकरात वीतेली न्नक्ष्य जाणवी. तेमज मठानो काल पण ए प्रमाणेज जाणवो.ए रीतें जेटलो जेटलो जे जे वस्तुनो काल शास्त्रमां कह्योछे, तेटलो तेटलो काल पूरो थया पछी, ते चीज चलितरस थाय; ए माटे अन्नक्ष्यछे, जे माटे चलित थायं, त्यारें असंख्य बेंड्रिय जीव तेमां उपजेछे.ए माटे ए चलितरसनो त्याग कह्योछे.

तथा बत्रीश अनंतकाय पण अन्नक्ष्यछे. जे कारणे, सोइनी अणी उपर जेटलुं कंद मूल रहे, एटलामां पण अनंत जीवो छे. ते सहु सूक्ष्म, बादर, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, ए सूक्ष्म वादरना न्नेदें करी आठ प्रकार थया अने नवमुं प्रत्येक वनस्पति ए नव जातिना सर्व जीवोथी पण अनंत गुणा जीव, सोइना अग्रमागमां कंदनी जेटली जग्याछे तेटली जग्यामां एटलां जीवोछे.ए माटे सर्व अनंतकाय अन्नक्ष्यछे ॥ २२ ॥ इति वावीश अन्नक्ष्य विवरणं॥

हवे बत्रीश अनंतकायनी जाति लखेछे. १ जे न्नूमिमध्यें कंद थाय, एवी सहु कंदजाति, अनंतकाय जाणवी. २ सूरण कंद ते जमीकंद केवायछे, ३ वज्रकंद, ४ लीली हलदर, ५ नीलु आडुं कंद, ६ लीलो कचूरो, ७ सतावरी वेली औषधि, ८ विराली लता विशेष सोफाली, ए कुआंर, १० थोहरी कंद जे सीज तथा लंका सीजनी जाति ११ गिलो एटले गुलवेल, १२ लसण, १३ वंस करेला एटले वंस संबंधीनी कारेली, १४ गाजर, १५ लूणी एटले साजी वृक्ष, १६ लोढीपद्मनीकंद, १७ गरमर कछदेशमां प्रसिद्ध, १८ किसलय कोमल पांदडां जे नवां उगतां सर्व गुछानां पांदडां, तथा सर्व वनस्पतिना जे उगती वखतना अंकूर होय. ए सहु अनंत कायछे. एटले सर्व वनस्पतिनां उगतां पांदडां, अने उगता अंकूर, प्रथम अनंतकाय होय, पछी ज्यारें महोटां थाय,त्यारें कोइ

प्रत्येक वनस्पति थाय अने कोइ अनंत कायपणे पण रहे, १ए खीरसूआकंद कसेरु अनंतकाय, २० थेग ते थेगीनी जाजी, मोथनी जाति, २१ हरिमोथ, एटले लीली मोथ, २२ लूंणवृक्षनी ढाल, २३ खिलोडा कंद विशेष, जेने टींमोरुं कहेछे, २४ अमृतवेली, २५ मूलानी पाड प्रसिद्धछे, २६ जूमिरुहा ते जूमिफोडा कहीएं, छत्राकार देशजाषाएं सापनुं बेसवुं, २७ वत्थूलानी जाजी, २८ वरुहार प्रसिद्ध विदल धान्य, जेने अंकूर आव्या होय ते, २ए सुअरवल्ली जे रोहिमां महोटी सीम जेवी थायछे, ३० पल्लंकानी जाजी शाक विशेष, ३१ कोमल आंबली ज्यां सुधी मांहे बीज संक्रमे नहीं, त्यां सुधी अनंतकाय जाणवी, ३२ आलुकंद ते रतालु, पिंमालुविशेष ए प्रमाणे बत्रीश अनंत काय जातिनां सामान्य नामछे ते कह्यां अने विशेष नाम तो अनेकछे. ते एम जे, कोइ वनस्पति तो पंचांग अनंत कायछे, कोई वनस्पतिनां मूल अनंत कायछे, कोइ वनस्पतिनां पत्र अनंत कायछे, कोइनां फूल अनंत कायछे, कोइनी छाल अनंत कायछे, कोइनुं काष्ठ अनंत कायछे, एम कोइनुं एक अंग अनंत कायछे, कोइनां बे अंग अनंत कायछे, कोइनां त्रण अंग अनंत कायछे, कोइनां चार अंग अनंत कायछे, कोइनां पांचे अंग अनंत कायछे.

हवे अनंतकायनां लक्षण लखेछे. जेणे करी अनंत काय उंलखाइ जाय, ते लखेछे. जे वनस्पतिनां पत्र, फल, फूल प्रमुखनी शिरा एटले नस ते मालम न पडे गुप्त होय, जेना संधिनी मालम न पडे, जेनी गांठ पण गुप्त होय, जे जांगी थकी बरोबर जांगे, जे छेद्या पछी फरी उगे, जेमां पांदडां महोटां गुज सरखां होय, सचिक्कण होय अने जेमां घणां फल, पांदडां प्रमुख कोमल होय, ते सर्व लक्षण, अनंत कायनांछे. ए बत्रीश अनंत कायनां नाम कह्यां.

अहींयां अजक्ष्यवस्तुउमां अफीण, जांग प्रमुखनो जो प्रथमथी

खावानो चाल होय, जेना विना चाले नहीं, ते खावा बूट राखे, तेनी जयणा. रात्रीजोजन. मासमध्यें चार अथवा पांच अथवा दश, तिथिना दिवस टाले. अथवा जेवी शक्ति होय, ते प्रमाणे राखे के एटला दिवसें रात्रीयें आहार करवानी जयणा. उपरांत निषेध. बीजा दिवसोएं त्रिविहार, डुविहार करुं अथवा चोविहार करुं अने बीजी पण अजक्ष्य वस्तु, जे ढंशड वेशडमां कोइ दिवसें खावामां आवे, तेनी जयणा. अने बत्रीश अनंतकाय निषेध करे, परंतु रोगादिक कारणें औषधमां लेवानी जयणा तथा अजाण पणे कोइ डव्यमां जल्यां थकां आवे तेनी जयणा ठे.

हवे चउद नियमनुं विवरण लखे ठे ॥ गाथा ॥ सचित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वब कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, वं जं दिसि न्हाण जत्तेसु ॥ १ ॥

अर्थः–श्रावकें यावत् जीव, पंचाणुं व्रतमां इछा परिमाणमां को इ आगली अनेक तरेहनी कर्म परिणतिनी संजावनायें करीने, पोताना निर्वाह समर्थनो उदय अति डुस्तर विचारीने घणी वस्तुउंनुं परिमाण राख्युं होय, तेमांथी फरी नित्यनो आश्रव निवारणने माटे संक्षेप करवाने अर्थें चौद नियमनी दिनप्रत्यें धारणा राखे, ते कहे ठे.

१ त्यहां प्रथम सचित्त परिमाणमां मुख्यवृत्तिथी तो श्रावकने सचित्तनो त्याग करवो जोइएं, जे कारण माटे अचित्त वस्तुना आहारमां चार गुणठे. प्रथम तो प्रासुक जलादिक पीधाथी बीजा सर्व सचित्तनो त्याग थयो. ज्यां सुधी अचित्त थयो नथी, त्यां सुधी मुखमां प्रक्षेप न करे. बीजो गुण ए के रसनेंड्रियनुं जीतवुं थयुं. गमे तेवो स्वाद सचित्त वस्तुमां होय, तो पण खाय नहीं. केटलीक चीज तो रांध्या विनानी पण स्वादिष्ट लागेठे. परंतु सचित्तत्यागें करी, ते सर्वनो त्याग थयो. त्रीजो गुण ए के अचित्त जलादिक पीधे थके कामचेष्टानी शांति थाय. घडी घडी उपयोगमां जीव

रहे के, रखे सचित्त वस्तु खावामां आवी जाय. चोथो गुण ए के, जेटलुं जलादि द्रव्य अचित्त कर्युं होय, तेनाथी जेटला जीवोनी विराधना थइ, तेटली बंधकजावें चेतना थइ एटलामांज चेतना रही, पण वली प्रतिक्षणे ते वस्तुउमां असंख्य अनंत जीवोनी उत्पत्ति थाय, तेउनाथी विरोधिजाव मट्यो. इत्यादिक बीजा पण घणा गुणछे; माटे ते केटला लखियें?

जे अचित्त करवामां छकायनी विराधना थायछे, ए माटे एकज कायनी विराधना सारी. एम कही ने जे सचित्तनो त्याग नहीं करे, ते जिनशासननुं रहस्य नथी पाम्यो. जे सचित्त परिहारमां आत्मदमनता, उत्सुक्यनिवारणता अने मंदविषयकषायपरिणति प्रमुख अनेक गुण थाय छे, ते नथी जाण्या एटलुंज नहीं, परंतु जेणे करी स्वदया घणी थायछे ते गुण तेणे न जाण्या; ए माटे सचित्तत्यागमां घणो लाज छे. एवुं आगममां घणुं सूक्ष्म रहस्य छे. ते कोइ पण छद्मस्थ जीवथी आगमनो पार पामवो बहु मुश्केल छे. जो हठ छोडी करीने बहु बुद्धिनो खरच करे, तो कांइक रहस्य पामे, ए माटे वाहेर अल्पमतिनी कुयुक्ति सांजलीने मुंजावुं नहीं. जैनशैली अति गंजीरछे; ए माटे मुख्यपणे सर्व सचित्तपरिहारीज थवुं; अने तेम नहीं बनी शके तो सचित्तनुं परिमाण करी लेवुं.के, आटला सचित्तनी मने छूटछे. इति सचित्त नियम प्रथमः

२ बीजो द्रव्यनियम. तेमां धातुमय शिलाकापात्र प्रमुख तथा पोतानी अंगुलि प्रमुख विना जे मुखमां खाए, तेने द्रव्य कहीएं. "परिणामांतरापन्नं द्रव्यमुच्यते" ए लक्षण द्रव्यनुंछे. त्यहां खीचडी, मोदक, वडां अने पापड प्रमुख वस्तु, घणां द्रव्य निष्पन्नछे तो पण परिणामांतरथी एक द्रव्य कहीयें. घणां द्रव्य विना एक द्रव्य निष्पन्नछे. तो पण घउंनी रोटली, तथा बाटी, घुघरी, पोली, ढोकलां प्रमुख ए सर्व, जिन्न द्रव्य कहीएं. जे कारण

माटे नामांतर, स्वादांतर अने रूपांतर तथा परिणामांतरथी द्र व्यांतर थायछे. अथवा अहींयां कोइ आचार्य, वीजी रीतें पण द्रव्यविवक्षा कहेछे; परंतु वहु वृद्धपरंपरासंमत एहज छे ए मा टे द्रव्यपरिमाण राखे के, आटलां द्रव्य, आजना दिवसमां हुं खाइश. ए द्रव्य नियम वीजो जाणवो.

३ त्रीजो विगयनियम. तेमां दश विगयछे, तेमां चार महा विगय छे, एक मधु, १ मांस, २ मांखण, ३ मदिरा, ४ ए चारनो तो वावीश अजक्ष्यमां त्याग कस्योज छे वाकी छ विगय छे; ते जक्ष्यछे. दूध, १ दहीं, २ घृत, ३ तेल, ४ गोल, ५ अने सर्व मि ष्ट पकवान, ६ ए छए विगयमांथी एक, वे, त्रण छोडे, वीजानी जयणा राखे. एना निविआता, पांच पांच जातिना एक एक विगयना कह्याछे. ज्यारें विगय त्याग कस्या, त्यारें ते नीविआता पण त्याग करवा जोइयें. अने जो न छोडया जाय तो, तेज व खत धारी ले के मने विगयनोज त्यागछे पण नीविआतानी जयणा छे. इति विगयनियम तृतीयः

४ चोथो उपानह नियम, एटले जोडानो नियम. पगरखांनी जाति एटले जूती, खडाउ, मोंजा, बूट प्रमुख, ए जीवहिंसानां महो टां अधिकरणछे. त्यां श्रावकने जिनपूजादिक कारणविना खडा उ पहेरवां नहीं अने जोडा विना तो चालवाने समर्थ नथी; ए माटे एनुं परिमाण करी लेवुं के, आजन दिवसमां आटला जूती ना जोडा पहेरीश, वीजानी जूती पगमां पहेरुं नहीं. अ ने जूले चूक्ये बीजानी जूती पगमां पडे, तो तेनी जयणा. ए उपानह नियम चोथो.

५ हवे पांचमो तंवोलनियम. ते चोथो जे स्वादिम नामें आ हारछे ते जाणवो. पान, सोपारी, लविंग, एलची, तज, तमा लपत्र, सीतल, चिणिकबाव, जायफल, जावंत्री, पींपलीमूल.

अने पींपर प्रमुख करियाणुं जेनाथी मुखशुद्धि थाय, पण उदर पूर्ण न थाय. ते चीज खादिम आहारविशेष तंबोल कहीयें. ए नुं परिमाण करी लेवुं के, आजना दिवसमां आटलां तंबोल, मुखवास, ते शेर अथवा अर्द्धशेर, मारे खावां. एवी रीतें परिमाण राखे, अथवा संख्यायें राखे जे, आटली चीज तंबोलमां खावी, ए पांचमो तंबोल नियम.

६ ठठो वस्त्रनियम. ते स्त्री पुरुषना पांचे अंगोनां जे वस्त्र, ते वेष कहेवाय. एउंनी संख्या राखे जे आजना दिवसमां एटला वेष मारे पहेरवा अने आटनां बूटां वस्त्र वापरवां. जे कारण माटे रात्रीएं पहेरवानुं तथा स्नानादिक करती वखत पहेरवानुं वस्त्र वेषमां गणवुं जाय नहीं. ए माटे ते वस्त्रने जूदां राखे, अथवा वेष न गणे तो समुच्चय वस्त्रनी संख्या राखे के, आजना दिवसमां आटली संख्यायें मारे वस्त्र वापरवांछे. वीजां नहीं अने जेल संजेल पणे अजाणथी वदलाइने पहेरवामां आवे, तेनी जयणा. ए ठठो वस्त्र नियम.

७ हवे सातमो पुष्पजोगनियम कहेछे. ते एमके, मस्तकमां राखवा लायक, गलामां पहेरवा लायक फूल तथा फूलनी शय्या, फूलना तकीआ, फूलना पंखा, फूलना चंदरवा, अने जाली प्रमुख जे जे चीज जोगमां आवे. फूलनी ठडी, फूलना सेहेरा, फूलनी कलंगी, फूलना तोरा इत्यादिक. अने फूलनी जातिमां जे सुगंधि फूल जोगमां आवे, तेनी आटली द्रव्यगणतिमां इछापरिमाणे बूट राखे, तथा एटलां फूल, नाकें करी वास लेवानी धारणा प्रमाणे बूट राखे. तथा आटली जातिनां देहना जोगमां लेवां मोकलां राखे, तेना तोलनी गणती राखे. एवो नियम, उपयोग राखीने करे. जेटलुं पले, तेटलुं तोल, वजन, गणती, जाति,व्यापार प्रमुख जेवी पोतानी शक्ति होय, तेवी रीतें राखे. ए पुष्पनियम सातमो.

८ हवे आठमो वाहननियम. ते रथ, गाडी, गज, घोडा, पालखी, ऊंट, बलद, नावप्रमुख. जे उपर बेशीने ज्यां जवुं होय त्यां जवाय, ते वाहन कहेवाय. ते वाहन सर्व त्रण जातनां छे, एक तरतां, बीजां फरतां अने त्रीजां वरतां. एनी संख्या परिमाण करी राखी ले. ए नियममां कोश खेडवो, क्षेत्र समारवुं, चकझोल तथा हिंमोले चढवुं, शेरडी प्रमुखना चक्रमां बेसवुं, ए सहु आवे. ए माटे तेउनी संख्यापरिमाण राखी लेवुं के, आटली संख्यानां वाहन उपर आजना दिवसमां म्हारे चढवुं. ए वाहन नियम आठमो.

ए नवमो शयननियम. ते एम के, शय्यानो नियम राखे. शेज, खाट, ते न्हानी मोटी तखत, इत्यादि लाकडाना तथा तखता, चोकी तथा भूमिउपर तूलनी तथा रूनी भरेली सुखशय्या, एटलानुं परिमाण राखे. जे आजना दिवसमां मने आटलानो भोग करवो. एवो नियम राखे,आटला आज दिवसें म्हारे बिछानां, उपरनां अने पलंग पोस प्रमुख अने आसन खुरशी उपर बीछाववानां, चोकीनां, पट्टा प्रमुखना. ए सर्व न्हाना महोटानो सर्व उपयोग धारीने परिमाण करी राखवुं अने भूला चूक्यानी जयणा राखे. एवी रीतें शक्ति प्रमाणे परिमाण राखी ले. ए शयन नियम नवमो.

१० हवे दशमो विलेपननियम. ते एमके, भोगने अर्थें आटलो केसर, आटलुं चंदन, आटलो चूवो,अत्तर, जवादिक, तेल फुलेल, कमरी, कस्तूरी, अबीर, अरगजा प्रमुख जे जे अंगने लगाववानुं तेल के अत्तर,ए सर्वनां नाम धारीने गुलाबनुं अत्तर अथवा अंबरनुं, फितननुं खसखसनुं इत्यादिकना अत्तरनी संख्या करीने परिमाण राखे. अथवा उवटणा पण सहु एमांज आवे. ते सहु आजना दिवसमां आटला तोलनुं मारे जोइशे एटलुं राखी ले. एथी वधारेनो नियमछे. बीजा पण विलेपननो सहु तोल परि

माण राखे. अहींयां पूजादिक धर्मकरणी करतां हाथ प्रमुखने विषे धूपधाणुं के अगरवत्ती लेवी पडे ते. तथा पोतानां अंग के मस्तकें तिलक करवुं पडे तथा परमेश्वरना अंगें तिलक प्रमुख करवां पडे, तेनाथी म्हारो नियम न भांगे, एम नियममां करेली धारणाथी धर्मने माटे जे कांइ विशेष अधिकरण जोइयें तेथी नियमभंग थाय नहीं. ए विलेपननियम दशमो.

११ अगीआरमो ब्रह्मचर्यनियम. ते एमके, श्रावकनें दिवसें अब्रह्मसेवा तो प्रायें निषेधछे. अने रात्रीनी जयणाछे. अथवा परिमाण करे के, आजनी रात्रीमां आटली वार अब्रह्मचर्यनी जयणा. अहींयां स्त्री साथें हास्य, विनोद अने आलिंगनादिक, ते सर्वमांहे मैथुनक्रिया लागेछे, ए माटे जेवी शक्ति तेवा भांगा राखे. कोइ श्रावकनें रात्रीयें चतुर्विधआहार करवानो त्याग होय अथवा रात्रीएं एकांतध्यान करवानो चाल होय, जप जापनी रुचि तेने घणी होय. ते मनमां एम जाणे के, रात्रीयें विषयसेवा करी अशुद्ध थइने जप केम करुं? वली विषयरूप रोगनी लगन लागीछे, ते पण परिणामने बगाडेछे, ए माटे दिवसने विषे विषय विकल्प मटाडीने पछी शुद्ध थइने रात्रीयें निश्चिंत पणे स्वस्थचित्ते जप करुं. एवी बुद्धिथी दिवसने विषे विषय सेवे, रात्रीयें न सेवे ए माटे कोइनें दिवसमां निषेध अने रात्रीनी जयणा, कोइने दिवसनी जयणा अने रात्रीयें निषेध, अने कोइने रात्री तथा दिवस ए बंनेनी जयणा. पण गणती राखे के, रात्री दिवस मलीने आटली वार स्त्रीसंगें भोगसेवा करवी, ते पण पोतानी जेवी शक्ति होय, ते प्रमाणे नियम राखे. इति ब्रह्मचर्य नियम एकादश.

१२ बारमो दिसि के० दिशिनो नियम. ते दशे दिशियें जवा आववानुं परिमाण. ते जेवी शक्ति अने जेवुं प्रयोजन, ते प्रमाणे राखे. अहींयां आदेश, उपदेश, आदमी मोकलवानुं, कागलनुं वा

चवुं, लखवुं. ए सर्व एमां आवे. माटे जेवुं पळे, तेवुं राखे. इति दिशि नियम द्वादश.

१३ तेरमो स्नाननियम. ते एमके दिवसमां तैलादिक अज्यंग पूर्वक स्नान करवुं तथा अज्यंग कस्या विना स्नान करवुं, तेनुं परिमाण राखे जे दिवसमां आटली वार स्नान करीश. अहिंया देवपूजा निमित्ते अधिक स्नान करवुं पडे, तो पण नियमज्ञंग थतो नथी. एवी रीतें सर्वव्रतमध्यें धर्महेतुयें जे कमवेश करवुं पडे, तो तेनाथी नियमज्ञंग नथी. इति त्रयोदश स्नाननियमः

१४ चौदामो ज्ञात पाणीनो नियम. ते एमके, चारे आहारमां स्वादिमनुं तो तंबोलना नियममां परिमाण राख्युंछे अने बाकी त्रण आहार रह्या, तेमां प्रथम खादिममां मीगाइ मिष्ट मेवा अथवा मिष्टान्न, पान, मोदकादिक. अशनमां ज्ञात, रोटली, कचोरी, शीरो, तेनुं परिमाण प्रमुख राखे के, दिवसमां आटला शेरनी जयणा. अहींयां घरमां घणो परिवार होय, तेउने माटे अशनादिक घणुं करवुं करवावुं पडे, तेनो गृहस्थने छूटको नथी ए माटे एनी जयणा राखे तथा पारके घेर, जाति प्रमुख संबंधें जमवा माटे जवुं पके, त्यहां तो केटलाक मण ज्ञात प्रमुखनी रसोइ बनावी होय, पण नियम धारीने एनो दोष नथी, जे कारण माटे नियम धारीएं तो स्वनिष्ठाएं खावानुं परिमाण कखुंछे; अने घरसंबंधी ज्ञाति संबंधीथी छूटातुं नथी; ए माटे पोतें खावानुं परिमाण करी राखे के, आटला तोलथी वधारे खावुं नहीं. एटलुं पळे. अने जो परिणाम दृढ करीने सर्व संबंध छोमीने स्वनिष्ठा परिमाणथी अधिक पचन पाचनमां न जमे, तो ते बहुज सारुं; पण सर्व गृहस्थथी एवुं पळे नहीं. ए माटे यथाशक्तिएं परिमाण राखे तथा त्रीजुं पानआहारनुं परिमाण राखे के, दिवसमां आटला कलश, पाणीना वावरुं. अहींयां पण घणा परिवार वा

लाने पाणीनुं प्रमाण ते स्वनिष्ठभोगनिमित्त जूडुं राखवुं, समुदा यना भेल संभेलनी बूट नथी, एमाटे ते जूडुं राखे तो बहु सारुं. इति भात पाणी नियम चतुर्दश.

अहींया जे कोइ अधिक भाववंत साधक होय ते सचित्तादि परिमाणमां तथा द्रव्यपरिमाणमां जूदां जूदां नाम लेइ लेइने राखे तेने महोटी निर्जरा थाय, अने अशक्तने तो सामान्य कखुंछे. ॥ इति चतुर्दश नियमाः समाप्ताः ॥

हवे पंदर कर्मादाननुं स्वरूप लखे छे. कर्मादान एटले जे व्यापार करतां गाढां पापकर्मोनुं बंधन थाय, एवुं व्यापारकर्म ते पापकर्म, तेनुं आदान एटले ग्रहणछे जे व्यापारमां तेने कर्मादान कहीएं. अहींयां संसारमां पाप तो सर्वे व्यापारमां थायछे, तोपण बीजा सर्वे व्यापारथी ए पंदरे कर्मादान व्यापारमां घणुं पाप अने मलिन परिणाम पणुंछे. ए व्यापारें करी पापनी परंपरा बहु चाले, ए माटे श्रावकने ए अवश्य त्याज्यछे. कदापि ए कर्मादान व्यापारमांज पोतानी आजीविका लागी होय ने तेथी करी ते न बूटे तो परिमाण करी लेवुं ॥ हवे ए पंदर कर्मादाननुं जूडुं जूडुं विवरण कहे छे ॥

१ प्रथम इंगालकर्म. ते लाकडां बाली कोयला करीने वेचे अने तेणे करी पोतानी आजीविका उपजावे, ते इंगालकर्म. तथा कोइ तरेहनी भठी करे, इंट नीपजावे, कुंभार कर्म, लोहार कर्म, सोनार कर्म, अंगारा कर्म, बंगडीकार, सीसकार, कलाल, भठियारो, भाडभुंजो, हलवाइ, धातुगालक प्रमुख जेटला अग्नि वडे व्यापार थायछे, ते इंगालकर्म. ए व्यापारमां घणा दोषछे, जे कारणे अग्नि, सर्वशस्त्रमां मुख्य शस्त्रछे. चार दिशि, विदिशि, ऊर्ध्व, अधो, ए सर्व स्थलें छकायना जीवने अवश्य हणे ए माटे ए कर्म, अनाचरणीय छे. इति इंगालकर्म प्रथमं.

२ बीजुं वनकर्म. ते एमके, छेद्यां अणछेद्यां वन वेचे, बगिचा

नां फल, पत्र वेचे. पत्र, फूल, फल, कंद, मूल, तृण, काष्ठ, लक डी, वांसादिक व्यापार तथा लीली वनस्पति हरिबीज वस्तुनो जे व्यापार, ते पण सर्व वनकर्म जाणवुं तथा खेती कृषीनो व्यापार करवो, ए सर्व वनकर्म आजीविका निमित्तें करवुं तथा खेकुतने आगलथी पैशा आपीने पछी धान्य नीपजे तेवारें ते धान्यमां वधतुं ले, ते पण वनकर्म तथा धान्य दलावे, खंमावे, भरडावे, ए पण एनाज व्यापारछे, ए वनकर्म व्यापारथी, ते वनस्पतिना जीव अने वनस्पति आश्रित वनना त्रसजीवनी अवश्य विराधना थाय, ए माटे वनकर्म अनाचरणीय छे. इति वनकर्म.

३ त्रीजुं शाडीकर्म. ते शकट एटले महोटां गाडां, वहेल तथा असवारीनो रथ, इक्का गाडी एटले छोटी गाडी तथा नाव जाति अथवा वजरा, पलवार, महिलगिरी, ठलाक, भमलीआ प्रमुख. तथा हलदंताल, चरखा, घाणी प्रमुख. एनां नानां महोटां अंग धोंस रां चक्की एटले घंटी प्रमुख. उखली, मुशली ए सर्व नवां बनावी ने वेचे तथा उपर रही वेचावे, ते सर्व शकटकर्म. ए महा हिंसा नुं कारणछे, अनाचरणीयछे. इति शाडीकर्म.

४ चोथुं भाडीकर्म. ते गाडी, बेल, पोठीयो, उंट, पाडो, गधो, वेसर, घोडो, नाव, रथ, सुखपाल, झोली प्रमुख पोतें राखे अने बीजाने भाडे आपे, बीजानो भार बोज, ते कहे त्यां पहोचाडी आपे तथा घर, डुकान, वस्त्र, वखार प्रमुख पोतानी होय, ते पार काने भाडे आपे तथा सार्थवाहनो व्यापार, हुंडा भाडानो व्या पार, ए सर्व भाडीकर्ममां आव्युं. जे पोतानी चीजनुं भाडुं लइने पोतानी चीज बीजाने सोंपे, ते पण भाडीकर्म जाणवुं. एमां बल द, घोडा प्रमुख जीवने ताडनादिक महा डुःख उपजे अने चलाव तां थकां मार्गमां त्रसादि जीवोनी हिंसा अवश्य थाय, ए माटे ए भाडीकर्म अनाचरणीयछे. इति भाडीकर्म.

५ पांचमुं फोडीकर्म. ते कूप खोदाववो तथा तलाव खोदाववुं, होद वावडी खोदाववी तथा नीक खोदाववी इत्यादिक. तथा हल खेडन करवुं, संगत्रास पासें पथ्थर फोडाववा, हीरा रत्ननी खाण खोदाववी तथा तेने रगडाववां, ठीकरू पडाववां परव करावववी, घाट कढाववा,तरसाववुं,जोयरां तहखानानुं वनाववुं,तथा जव धान्य बुंट प्रमुखनी दाल करावववी. शालिमांथी चावल कढाववा इत्यादि व्यापार सर्व फोडीकर्ममां आवे तथा इंगालकर्ममां पण आवे. ए पृथ्वी विदारवामां पृथ्वीकाय अने त्रसकायना जीवोनी हिंसा थाय छे. अने बीजा जीवोनो पण अंगघात थाय छे. किलामणादि वहु उपजे तेथी पाप लागे ए माटे ए कर्म त्याज्यछे, ए पांचे कुकर्म छे, महा हिंसामय छे, ए माटे छोडवां. हवे पांच कुवाणिज्य लखेछे.

१ तेमां प्रथम दंतकुवाणिज्य. ते हाथीना दांत, उल्लूना नख, जीज, कलेजुं तथा पंखीनां रोम तथा पंखालिंगि प्रमुखनां अने गायना पुछनां चमर तथा हरणनां शिंगडां तथा गेंडाप्रमुखनां शिंगडां, तथा शंख, कोडा, कोडी, कस्तुरी, जबादि, मोती, वाघनुं चामडुं, वाघनी मूछना केश, सावरनां शिंगडां, कचकडुं, किरमजदाणा, रेशम, उन, तांत, नमूंम प्रमुख जे त्रस जीवनां अंग तथा उपांग, ए सर्वनो व्यापार दंतवाणिज्यमां आवे. ए वाणिज्यमां ज्यारें अंग लेवाने आगरमां जाय, त्यारें ते क्षुद्र जिह्वादिक लोक, तत्काल हस्ती, गेंडा, मृग प्रमुख जीवोनी हिंसा करवामां प्रवर्त्ते अने महा पाप अनर्थ करे. वली पोतानो परिणाम पण त्यां गये थके मलिन प्रवर्त्ते. लोजना हेतुयें व्याध लोकोने कदापि एवुं कहेवुं पडेके, अमारे वास्ते घणा सारा जारे अने मोहोटा दांत जो तमे आणी आपशो तो वली वधारे मूल्य पामशो. त्यारें ते व्याध लोको एना कहेवा उपरथी वधारे हिंसा कर्म करे. एवी रीतें सर्व द्रव्यमां जाणी

लेवुं. ए माटे ए सर्वे चीज, व्यापारी पासेंथी लेवी पण आग रमां जइ न लेवी. ते माटे आजीविका करवा सारु तो ए कुवा णिज्य तजवुं. एक हस्ती मरे, त्यारें मात्र बे दांत मले, एक गाय मरे, त्यारें मात्र एक पुछ मले. ए प्रमाणे सर्वे चीजमां विचारी लेवुं. इति दंतकुवाणिज्यं प्रथमं.

२ बीजुं लाखकुवाणिज्य. ते लाख, धाउडी, गली महुडां, साजी खार, साबू, मनशील, लोह, सोहागो, पडवास, कसुंबो, कपिला, तूरी. ए सर्वे खारनी जाति, एउंनो जे व्यापार, ते लाखवाणिज्य कहेवाय. ते लाखमां प्रथम त्रस जीवोना समूह विना काली उ पजे नहीं. पछी पण ज्यारें रंग काढे, त्यारें अन्न देइने सडावे छे, त्यां पण तेमां त्रस जीवो उपजे छे. महादुर्गंध रुधिरना जेवो त्रस उपजे. धाउडीमां पण त्रस जीवोनो आश्रय छे. एमां कुंथुआ घणा रहेछे. वली ए मदिरानुं अंगछे. गली पण प्रथम सडावे, त्यहां त्रस जीव उपजे, तेउंनी ज्यारें हिंसा करे, त्यारें गली उप जे. पछी पण गलीना कुंकमां त्रस जीवोनी घणी हिंसा थाय. केव ल गलीनां वस्त्र पहेरे तेमां पण त्रस जीवो जू, लीख प्रमुख उपजे. एमाटे ए ज्यहां त्यहां हिंसानां हेतुछे. तथा हरताल मनशिला दिकनी वासनाथी घणाज माखी प्रमुख त्रसजीव मरे. हरताल, मनशिलने वाटतां जो जतन राखे नहीं तो तेनी वासनाथी त्रस जीवो मरे. तूरी, उंस, पडवास प्रमुख पण ज्यहां ज्यहां जे जे काममां आवे, त्यां त्यां पण घणा जीवोनो घात थायछे. एमां आगल पाछल त्रस जीवोनी हिंसा थायछे. एमाटे ए वस्तुउं त्या ज्यछे. इति लाखकुवाणिज्यं.

३ त्रीजुं रसकुवाणिज्य. ते मद्य, मदिरा, मांखण, मांस, ए चारे महाविगयनो जे व्यापार, तथा दुध, दहीं, घी, तेल, गोल, खां ड प्रमुख रसवाली जे नरम चीजो तेउंनो जे व्यापार, ते रस

वाणिज्य कहेवाय. अहींयां रसवाणिज्यमां चार महाविगयछे. ते तो सदा अशुद्धछे. जे माटे सदा ते वस्तुउं त्रसजीवोयें करी संयुक्त थायछे. आगल पाछल हिंसा घणीछे. तथा दहीं, दुध, घृतादिक स चिक्कण रसवाली चीजो मध्यें ज्यहां ए चीजोथी भरेलां पात्रो पण खुल्लां रहे, तो त्यां पण नहाना मोटा जीवो आवी पडे ; ते जीव, कोइ पण जीवे नहीं. बे दिवस उपरांत दहींमां असंख्यात जीवो त्पत्ति थायछे. तैल घृतादिकना गंधथी घणाज कीडी प्रमुख जीव आवे अने जे आवे ते तरतज तेमां लपटाइ जाय, ते बचे नहीं वली ज्यां घृत तैलादिकनां भाजन एटले पात्र रहेतां होय, ते जमीन ची कणी अने मलिन थइ रहे. त्यां फरनारा त्रस जीवो होय, ते लप टाइ रहे. तिलनो व्यापार ज्यां होय अथवा ज्यां तल, टीसी, काब रा प्रमुखनुं सदा पीलाववुं थातुं होय, त्यां ज्यारें फागण मास उप रांत मास थाय त्यारें अवश्य तिलादिकमां त्रस जीवो घणाज उ पजे. त्यारें ते जीवसंयुक्त तल पील्या जाय. ते वारें ते जीवो प ण ते तलनी साथेंज पीलाइ जाय. तेलनो दीवो करे, त्यां पण अनेक त्रस जीवोनो घात थाय. एम आगल पाछल घणी जीव हिंसा थाय. तथा गोल, चीनी मिश्री प्रमुखमां पण मिष्टताना योगें करी मांखी, कीडी, मंकोडा प्रमुख घणा जीव आवे ते माटे तेनो संहार थइ जाय तथा सादी चीनी चोमासामां अभक्ष्य थाय. जे कारण माटे आर्द्रा नक्षत्र लागे, त्यारथी सादी चीनीमां असंख्य जीवोनी उत्पत्ति थायछे. ए माटे चार मासतो अशुद्धछे. अने ज्या रें व्यापार थाय, त्यारें तो एथी बहु त्रसजीवोनी हिंसा थाय. ते मज मीण पण घणा जीवोनो घात थया विना नीपजे नहीं. अ ने पछी पण बहु हिंसानुं कारणछे. ए वस्तुनो मीणबती तथा रं गारा प्रमुखना काममां अधिकार होयछे माटे तेनुं अधिकरण कार्यछे. तथा मुरब्बो, पाक, रोगान, अत्तर अने अर्क प्रमुखनो

व्यापार पण सर्व एमां आवे. केटला एक रसवाणिज्यमां इंगोल कर्म, यंत्रपीलनकर्म, विषकर्म अने रसवाणिज्य. एटलानो दोष, ए कर्ममां लागे. ए माटे रसवाणिज्य निषिद्धछे. इति रसकुवाणिज्यं.

४ हवे चोथुं केशकुवाणिज्य. ते द्विपद मनुष्य दास, दासी, गुलाम, ए आजीविकाने कारणे लेइने स्वदेश परदेशमां वेचे, तथा गाय, जेंष, घोडा, उंट, हाथी, बलद, बकरी, पाडा, गद्धा. तथा पंखीमां बाज, कुकडा, कुंही, बहिरि, सिकरा, लालमेनां, मरघां, तोता, मोर, सारस, सुरख, तेतर, ए पंचेंद्रिय पंखी जीवोने आ जीविका निमित्तें ले अथवा वेचे ; ते केशवाणिज्य कहेवाय. ए केशवाणिज्यमां दास, दासी, तिर्यंच प्रमुख जीवने तो प्रथम स्थानकुटुंबनो वियोग पडे अने जे लेइ करीने बीजाने आपे, त्यां तेने नित्य परवश रहेवुं पडे, पोताना मननी इछा कांइ सरे नहीं. वली तिर्यंच जीवतो कांइ मुखथी बोले पण नहीं, के अमने छुःखछे किंवा सुखछे. ते कोने कहे ? जन्मपर्यंत बीचारां बंधनमां रहे, मनमां घणां कल्पे, घणी जूख, तृषा सहन करे, ते उपरांत वली जे माणस वेचातुं ले, ते निरपराधें मारे, जार जरे, ए रीतें बहु बंधनादिक अनेक छुःख पामे, पंखी पण पांजरामां पडे, अने मनमां घणुं छुःख माने. वली शकरा, बाज, शिवरी, ए तो महा हिंसानां हेतुछे. एउंथीतो नित्य परमांस विना रह्युं जाय नहीं. ए माटे केशवाणिज्य पण, जे धर्मरुचि श्रावकछे ते श्रावकने तो त्याज्यछे. इति केशकुवाणिज्यं.

५ पांचमुं विषकुवाणिज्य. ते सोमल, वछनाग, अफीण, मनशिल, हरताल, गांजो, जांग. चडस, तंबाकु प्रमुख. तथा हथीयार ते धनुष, तरवार, कटारी, बरछी, तोमर, फरशी, कुहाडा, कोदाली, छुरी, पेस, कवज, वंडुक, ढाल, गोली, दारु, बक्तर, पाखर, फिलम, टोप प्रमुख.जेना बलथी संग्राममां मनुष्य, मजबूत.था

य, तथा हल,मुशल,उखल,कोश, कोदाली,दंताली,करवत,दावडा, दात्रा, डीनी, नाल, गोला, हवाइ, कुहुक, शतघ्नी प्रमुख सर्व हिं सानां अधिकरणछे. एउनो जे व्यापार, ते विषवाणिज्य कहेवाय. अहींयां शिष्य प्रश्न करेछे के, अमल प्रमुख विषने तो विष क ह्युं पण धनुष्यादिक हथीयारने विष केम कहोछो? ते वारें गुरु क हेछे के सांजल,तुं तत्व नथी पाम्यो.जे विषथी काम थायछे, ते एनाथी पण थायछे. विषें करी मरता प्राणीने तो कोइ माणस, तेनुं विष उतारी पण शके, परंतु शस्त्रनो मार्यो तो कोइ बचे प ण नहीं. तथा ज्यारें हथीयार ले, त्यारें तेना विषरूप परिणाम थाय. जेम जेम जलद शस्त्र होय, तेम तेम खुश थइने तारीफ करी मूल्य लइने वेचे, तेथी आगलानो परिणाम पण बगडे.ए मा टे हथीयारने पण विषरूप कहीएं.ए विषवाणिज्यमां वछनागछे, ते तो एकेंड्रियादिकथी मांकीने पंचेंड्रिय पर्यंत जीवोनो घात करेछे. सोमल तो वली एथी पण वधारे घात करनारोछे.जे सोमल खाय, ते घणुं कष्ट पामे,मरीने डुर्गतिमां जाय. विष खाइने जे गतिमां उपजे, त्यां पण विषरूप थाय.जो क्रोधथी विष खाय, तो मरीने सर्प थाय, कां वींछी थाय, अथवा झेरी जीवोमां उपजे. ए माटे तेनुं फल पण विषरूप थाय छे. तथा विषवस्तुना गंधथी जीवनो नाश थाय. हरताल अने मनशिल ए पाणीमां वाट्यां होय, ते उपर आवीने माखी बेसे,तो ते संताप पामीने तत्काल मरे.अफीण पण ज्यारें खाय,त्यारें आत्मघात करे.अमलीना शरीरनुं मल मूत्र पडे, त्यां त्रस अने स्थावर जीवो हणाय.खानारनी चेतना मुंजाय, तेथी डु र्ध्यान थयो थको मरीने डुर्गतिमां जाय तथा जांग प्रमुख पण चे तनाने मुंजावे. रात्रीजोजनादिकअविरति पणुं वधारे,अब्रह्मचर्य घ णुं करे,तेथी ते असत्यपणुं वधारे,व्रतनी दृढता जति रहे, कषायनी वृद्धि करे,तुछ पणुं आवे, निड्रा वधारे, मतिनी अज्ञानता करे, सा

री तबीयतने बदलावे, निरुद्यमी थाय, परनिंदा अने वाचालपणुं वधारे, मुखथी गमे तेम वचन बोलतो आघुं पाछुं न जुए, चित्त भ्रम थयेलानी पेठें अवस्था थाय, तेना आश्रित बहु जीवने हणावे. इत्यादि अफीण खाधाथी आलोकें दुःख अने परलोकने विषे गह न दुर्गतिमां पडे, ए माटे विष कहीएं. तथा सर्वे हथीयार तो प्र गट पापना हेतुछे. ए माटे विषवाणिज्य निषिद्धछे. इति विषकुवाणि ज्यत्याज्यस्वरूपं ॥ एटले पांच कुवाणिज्य थयां. ए सर्वे मली दश थयां. हवे पांच सामान्य कर्म कहेछे.

१ तेमां प्रथम यंत्रपीलनकर्म. ते घाणी, शेरडी पीलवानो शीं चूडो, चरखा, चरखी, लीसा, उखल, मुशल, कंगइ, सावरणी, बेगडीयंत्र, सराण, जलयंत्र, पातालयंत्र आकाशयंत्र, कोलिकायं त्र प्रमुख यंत्रजाति, शतघ्नीयंत्र प्रमुख जे जे काष्ठ, पाषाण, लो ह, वस्त्रादि अनेक अनेक अंगमेलापथी जे जीवघातकारक प दार्थ होय ते यंत्रपीलनकर्म कहियें. ए यंत्रपीलनकर्ममां घ णो आरंजछे. घाणीयंत्रमां तिलादिमिश्रित जे त्रस जीवो होय, तेनो घात थाय. एवीज रीतें रकपीलनकर्मयंत्रमां पण अनेक जीवघात छे. एम जे जे यंत्रछे, ते मुकरर करीने जीवघातना हेतु छे, एमाटे आजीविकाहेतुयें यंत्रपीलनकर्म निषिद्धछे.

२ बीजुं निलंछन कर्म छे. ते एमके, बलदनुं नाक विंधावे, घोडाने डाग देवरावे, गाय, बलदना कान कपावे, शिंगडां छेदावे, पुछ छेदावे, उंटनी पीठ उपर लदावे, गाल नासिका प्रमुखने विं धन करावे, बलद घोडाने खासी करावे, डाम देवरावे, खोज क रे, करावे तथा कोटवाली खिजमत लेइने नवो कर बेसाडे. इजा रो लेइने आकरो कर बेसाडे, चोरधाडमांवासीनी पेरें दोडा दोडी करे, मनमा एम जाणे के मारुं नाम जगत्मां प्रसिद्ध थाय; ए माटे निर्दय शस्त्र चलावे. इत्यादिकनो रसिक थइ जे नरसां कार्य

होय, ते, करे तेने निलंछन कर्म कहीयें. ए निलंछन कर्ममां घणा पंचेंद्रियोने कदर्थना थाय; घात थाय. आपणा परिणाममध्यें अतिनिर्दय पणुं थाय. अने एथी करी, दुर्गति प्राप्त थाय. ए माटे ए निलंछन कर्म अति निषिद्धछे.

३ त्रीजुं दावाग्निदान कर्म. ते केटलाएक जीव मिथ्यात्व अने अज्ञानना जोरथी विपर्यास कहेछे के, आ वन घणुं मोहोटुं थइ गयुंछे, भिल्लादिक लोको दुःख पामता हशे; ए माटे ए वनने दव लगाडी दइयें तो बधुं वन बलीने साफ थइ जाय,अने एथी महा धर्म थशे. फरी नवी कुंपल निकलशे, ते वृक्षो ज्यारें फलशे त्यारें लोको तेनां फल फूल खाशे, एथी धर्म थशे. एवो उपदेश दे तथा देवरावे. वली वनमां दव लगाडवाथी धरती माताने बोजो उतरशे, ते जग्या खाली थशे, त्यारें तेमां धान्य निपजशे, खेती नवी निपजशे अने लोको सुखी थशे. वली जूनांतृण, काष्ठ, बली जशे अने नवां तृण रस भर्यां थशे, तो एने गाय,वाछरडां सहु सुखथी चरशे. वली बलेली भूमिमध्यें धान्य पण सारुं नीपजशे. एवी रीतें मूढ पुरुष, पोतानी मातबरी देखाडे. लोभनी लगनथी पापकर्म करतो शंका पामे नहीं. वली चोर चखार भिल्लनो एमां वासछे,ए सौनो भय मटी जशे. एवी न्यायरीतीथी वनमां दव लगावे, वनकटी करावे तथा आजीविका निमित्तें महोटां महोटां गहन वन, जेमां आववुं जवुं दुष्कर पडे; ते माटे पण वनने अग्निसंस्कार करे, त्यारें त्रसजीवो वाघ, रींछ, चित्ता, गेंडा ए सर्व भागी जाय. पोताना स्थानथी छूटे. सर्प्पादिक भुजपरिसर्प्प, वली कीडी, मंकोडी प्रमुख तो सर्व हणाय. एवुं मनमां न आवे के, वनने अग्निसंस्कार करतां, ए जीवो हंणायानुं पातक आपणने चढशे? तेम तो कहेज नहीं पण कहे के, वनमां दव दीधाथी सुखें हरवुं, फरवुं तथा आववुं जवुं थशे. रस्तो सारो थशे. पण एवी हिंसा निश्चयें

नरक गतिमां पहोचाडे. एमा संदेह न करवो. अहींयां केटली एक पालसो, गुलाब, बालो, लकडी, इत्यादिक वनस्पति नवी नीपजे. परंतु ज्यारें पहेली जमीनमां अग्नि दिये ने जमीन बलीने साफ थाय, त्यारें प्रबल योनि थाय तेथी वनस्पति सारी उत्पन्न थाय, ते पण दवदान कर्म एमांज आवे, ए माटे व्रती थइने धर्मरुचि पुरुष एवो उपदेश, पोतें कोइने दिये नहीं, अने बीजा पासें को इने पण एवो उपदेश देवरावे नहीं. इति दवदान कर्म.

४ चोथुं शोषणकर्म कहेछे. ते सरोवर, तलाव, अने द्रह प्रमु ख जलाशयोने शोषावे. पाणीने बहार कढावे; त्यारें मिथ्यामति, अज्ञानी, लोभांध थइ विपर्यास बुद्धिथी धर्म बतावे, त्यहां लो भी, पोताना क्षेत्रमां धान्य थवानानिमित्तें जलने वहेवरावे. अने कहे के, शेरडी बहु तरशीछे ते माटे आ तलाव, क्षेत्रनी साथें मे लवीएं एथी करी धान्य नीपजे. एवी रीतें पाणी लइ जाय. पछी कादव रहे. तेमां जलजीव मछादिक अनेक त्रस जीवो भूखथी अ ने तापथी अवश्य मरी जाय. तथा त्यां मांसार्थी दुष्ट लोक आवी मछादिक जीवोनो घात करे. तेम छतां ते मूढ पुरुष, धर्मबुद्धिथी एम कहे जे ए पाणी गंधाइ गयुंछे तेथी ए पाणी पीनारने रोग थायछे. ए माटे आगलुं पाणी घणा दिवसनुं छे, ए हाल कहाढी नाखीयें. अने नवुं सारुं जल आवशे, त्यारें ते पाणीयें जलाशय भराशे. एम कुतर्क करे पण एम न जाणे के, आ कोटानूकोटी जीवनो संहार थशे. तथा कूपनी सेर बंध थइ गइ. तेने खुलावीने पाणी कहाढी नाखो के जेणे करी बीजुं सारुं पाणी आवशे, त्यारें पीशुं. आगलथी एवी अधर्मबुद्धि करे, अने पछी कहे के एमां पुण्य छे. एवुं शोषणकर्म पण समजु पुरुष, न करे. अने करावे पण नहीं ॥ इति चोथुं शोषणकर्म.

५ पांचमुं असतीपोषणकर्म. ते कौतुक अर्थें असती जानवर

कुतरां, बीलाडां, मरघां ने सूडा, मोरने पाले, बीजा पण केटला एक ज़ीवो कौतुकने अर्थें बंधनमां राखे, पंखी जीव जे दुष्ट होय, अने बीजां पंखीनी हिंसा करे, तेवा पंखीने पाले, तथा दुष्ट भार्या अने दुष्ट पुत्रादिकने मोहें करीने गाढ पोषे, साच जूठ न गणे अने जेम तेम करी तेउने खुशी राखे तथा वेचवाने माटे दास दासीनुं पोषण करे, ते पण असतीकर्मछे. तथा माछी, कसाइ, वाघरी, चमार प्रमुख बहु आरंभी जीवनी साथें व्यापार करवो, एउने द्रव्य खरची प्रमुख आपवी, ते पण दुष्ट जीवनुं पालण थयुं. अहींयां थोडाने माटे घणुं पाप माथा पर लीए ए माटे ए कर्म निषिद्धछे. अहींयां अनुकंपायें श्वान प्रमुख अथवा काक प्रमुख जीवने देवुं, ते पुण्य हेतुयें देवुं; तेनो दोष नथी, अने पोताना महोल्लामां जे जीव थया, तेउनी खबर लेवी तथा लोक रीतियें तथा नीति माफक पोताना पाप कुटुंबनुं भरण पोषण करे. एमां कोइ दोष नथी. ॥ इति असतीपोषणकर्म पांचमुं ॥ इति पंदर कर्मादान कथनं.

॥ हवे कर्मादान राखवानी विगत लखेछे.

१ अहींयां अंगारकर्मनी आजीविका निषिद्धछे, ए माटे अंगारकर्म न करे तो पण गृहस्थ छे तेनाथी निरवशेष छोड्युं जाय नहीं ए माटे एनी समज करी ले. पोतानी शक्ति प्रमाणे विचारीने रूपुं सोनुं गलावबुं, तेना घाट करावबा, सिक्का पडावबा तथा तपावबुं प्रमुख वर्ष प्रत्यें आटलुं करवुं, तेनो नियम राखे तथा वस्त्र जे अग्निपक्क रंगमां रंगाववुं, तेनुं मान राखे. तथा इंट, चूनो, विगेरे घर कामने माटे लेवानो आगार. व्यापारने अर्थें लेवानो निषेध. एमा पण पोताने माटे इंट प्रमुख लेवामां आवी होय, एवामां कोइ संबंधी तथा मित्रादिक महोबतवालो तेमाथी मागे ने देवुं पडे ने तेनी किम्मत प्रमाणे पैशा लेवा पडे तेनो आगार. तथा भाडभुंजानुं कर्म, घर कुटुंब संबंधी करावबुं पडे, तेनुं वर्षप्रत्यें परिमाण राखे.

केशेर, पांच शेर, अधमण अथवा मण पर्यंत सर्व धान्य शेकाववुं प डे, तेंटलुं बूट राखे. अग्निकर्मनी चीज लेवा देवामां आवे, तेने अ ग्निकर्म करावववुं पडे, तेनो आगार. तेने वेचवानो आगार. बीजुं सर्व निषिद्धछे. कंसारा, ठंगारा तथा लोहार प्रमुख पासेंथी घर संबंधी वाशण कुशण प्रमुख करावे, तेनो आगार. लज्जा, दाक्षि ण्य, कुटुंबादि कार्यें सहाय आपवानी, आदेशादिक देवानी जयणा.

२ तथा वनकर्ममां घरसंबंधी बलद, घोडा, गौ, उंट प्र मुखने वास्ते घांस प्रमुख राखवां तथा मंगाववानी जयणा. पो ताना बगीचाने माटे उत्तर प्रत्युत्तर देवानो आगार.

३ शाडीकर्म मध्यें नाव, गाडी, ठकडा, वेल, रथ, बलद जे घरना होय तेने सुधारवा पडे, तेनो अगार. निकामां शकटादि क होय, तेने वेचवानो आगार, लहेणामां आव्यां होय तेने राखे अथवा वेचे, तेनो आगार.

४ चोथुं नाडीकर्म. तेमां पोतानां घर, हाट, नाव, गाडी, हरेक वाहन प्रमुखने नाडे देवानी जयणा. तेनो पण आगार.

५ फोमीकर्ममां पोताना घरसंबंधी कूर्ड, नोंयरुं, टांकुं, ताजखा तुं प्रमुख करावनानो आगार. घरनी खाल करावववानो आगार तथा घर करावववानो आगार तथा जवाहीरनो व्यापार, घरसंबंधी नंग, घाट घूटने माटें तोडाववुं, फोडाववुं तथा मोती विंधाववां, तथा घरने माटे पत्नरनी खाण कढाववी, ते पत्नरनो घाट घडाववो पडे, तेनी जयणा. लज्जा, दाक्षिण्यें, साहाय्य करवुं पडे तेनी जयणा. घर खरचमां फोडीकर्म जे जे आवे, तेनो आगार.

६ छहा दंतवाणिज्यमां घरखरचने विषे पोताना नोगना अधि करणमां लेवा मंगाववानो आगार. आगल व्यापारनी विगतमां जे परिमाण करी बूट राख्युं होय, तेनी जयणा. लेणा देणामां आवे, तेनी सरन्नरा करवानो आगार.

जयणा तथा घरखरचमां जे जंत्रपीलन आवे, तेनी जयणा. तथा पोताना अंगना भोगादिक निमित्तें अत्तर चूआ प्रमुखना यंत्र, तथा रोगादिक कारणे कोइ औषध करवानो यंत्र करवो, कराववो पडे, तेनी जयणा. लज्जा दाक्षिण्यें तथा फरमाशें नहीं छूटतां जे करवो पडे, तेनो आगार. इति यंत्रपीलनकर्म.

१२ बारमुं निलंछनकर्म. तेनो व्यापार करवो निषिद्धछे. पण कोइ राजादि, आग्रह करीने अधिकार आपे, तेमां जे निलंछन कर्म आवे, तेनो आगार. तथा घरसंबंधी पशु बालकादिकने करवुं पडे, तेनो आगार. लहेणामां आवे तेनी तजवीज करवी पडे, तेनी जयणा.

१३ तेरमुं दवदानकर्म. तेनो निषेधजछे, पण रस्ता वच्चें एटले मार्गें जतां कोइ ठेकाणे रहेवुं थाय, त्यां रसोइ प्रमुख करतां वायुना प्रयोगें करी यत्न करतां पण अग्नि, वनमां पसरी जाय, तेने ठलववानी शक्ति नथी तो मारुं व्रत एथी न भांगे. ए अग्नि ठलववानी शक्ति होय, तो हुं ते अग्निने शांत करवामां आलस करीश नहीं. वली घरखरचमां कोइ रीतें दवदान कार्य करवुं पडे, तेनी जयणा. इति दवदानकर्म.

१४ चौदमुं शोषणकर्म. तेमां सरोवर, द्रह, तलाव प्रमुख जलाशयोने शोषाववानो निषेध, परंतु घरप्रमुखना कूवाने सुधार वा गलाववानो आगार, टांकुं धोवानो आगार. नदीमां वीरडो करवो पडे, तेनो आगार. बीजा पण घरसंबंधी कार्यमां जे महोल्लामां रहेता होइएं, तेमांना उचित पंचनी सरासरीयें कूवाने निमित्तें कांइ खरच देवो पडे, पाणी सारुं पीवा माटे आगलना कूवाने शोषावीने नवो करवो पडे, तेमां तेना खरच निमित्तें पंचनी सरासरीएं कांइ खरच आपवुं पडे, तेनो आगार. इति चौदमुं शोषणकर्म.

१५ पंदरमुं असतीपोषणकर्म. तेमां घर परिवार संबंधी न छूटे, तेनी जयणा. पण चाह धरीने, तेउनुं पोषणकर्म न करुं. प

७ सातमुं लाखवाणिज्यकर्म तेमां पण दंतवाणिज्यनी परें जाणवुं. घरखरचने माटे कोइ कार्य पडवाथी लेवुं वेचवुं पडे, तेनो आगार. इति सातमुं लाखवाणिज्यकर्म.

८ आठमा रसकुवाणिज्यमां घरखरच संबंधी जे परिमाण करी राख्युं होय, तेनो आगार. व्यापार संबंधी जे राख्युं होय,तेनी जयणा. लहेणामां आवे तेने वेचवानी जयणा. लज्जा दाक्षिण्यथी केफरमासथी सरभरा करवी पडे, तेनी जयणा तथा आपणी तैय्यार चीज कोइ सारा माणसें मागी तो यथायोग्य ते वस्तुनुं मूल्य लेइने देवी पडे, तेनो आगार. इति रसवाणिज्य आठमुं.

ए नवमुं केशवाणिज्यकर्म. मूल आजीविका हेतुयें आदर करी व्यापार करवानो निषेध. घरसंबंधी पशु वेचवानो आगार. लहेणामां आवे, तेने राखवा वेचवानो आगार. घरमां पुत्रादिकना उपरोधें करी तोता, मेनां प्रमुखने लेवां पडे तेनो आगार. पोताना भोगनिमित्तें घोडा प्रमुख वेचीने, बीजां लेवां पडे, तेनो आगार. कोइ संसारीने स्नेहथी उचित घोडा प्रमुख खरीद करी देवानो आगार. राजादिकने प्रसन्न करवा माटे कोइ जातिनां चतुष्पद वेचातां लेइने नजराणो करवानो आगार. फरमासें करी केशवाणिज्यनी न चालतां सरभरा करवी पडे, तेनो आगार. ए केशवाणिज्य.

१० दशमुं विषवाणिज्य. ते ए के, जे जे आगल व्यापारमां राख्यां होय, तेनो आगार. तथा घर खरचमां जे विषचीज ओषधमां आवे तेनो आगार. तथा पोतानी मोजने माटे घरवखरीमां जे जे शस्त्र लेवामां आवे, तेने राखवानो आगार. वली ते करावां, समरावां तथा मंगाववां पडे, तेनो आगार. लहेणामां आवे, तेनी जयणा. इति दशमुं विषवाणिज्य.

११ अग्यारमुं यंत्रपीलनकर्म. तेमां आगल जे जे व्यापारने अर्थे राख्याछे ते व्यापारमां जे जे यंत्रपीलन क्रिया आवे, तेनी

रिग्रहपरिमाणमां पशु राख्यांछे, तेउने पोषण करवानो आगार. तथा म्लेछादिक राजानी साथैं व्यापार आजीविका अर्थें, पोतानी गरजने माटें आहारादिकें पोषण करवुं पडे, तेनो आगार, पण पोतानी इछाथी छूट नथी, तथा पोताना उदयिक भावथी मळ्युं जे पाप कुटुंब, तेउनुं भरण पोषण करवानो आगार; पण एणी करी हुं म्हारो अवतार सफल थयो, एम जाणुं नहीं. तथा लहेणामां आवे तेनुं प्रतिपालन पोषण करवुं पडे, तेनो आगार. दया बुद्धियें श्वानादिकने पोषवानो आगार. एवी रीतें पंदरे कर्मादान दोष तजुं. ए पंदर कर्मादानमां जे जे चीज घरसबंधें, दाक्षिण्यता संबंधें, इत्यादि न चालतां लहेणा प्रमुखमां आवे, ते कारणें तेमां जे कर्मादान क्रिया करवी पडे तेनी जयणा. अहींयां जे कर्मादान राख्यांछे, एमां एकेक कर्मादानमां बीजां बे, त्रण, चार, कर्मादान भलतां आवे, तेनी जयणा. इति पंदर कर्मादान राखवानी विगत.

हवे ए सातमा व्रतना पांच अतिचार लखेछे. सचित्तेति—

१ त्यां प्रथम सचित्त आहारनामा अतिचार छे. ते मूल भांगे तो श्रावकने सचित्तत्याग नियम होय. कदापि तेम नहीं तो, सचित्तनी संख्या करी राखे. त्यहां सर्व सचित्तनो परिहार करे अथवा सचित्तपरिमाणवंत थाय. वळी कोइ अनाभोग दोषथी सचित्त आहार करे, तथा अपरिणतोदक तो त्रण उकाला पाणी उपर आवे, त्यारें शुद्ध पाणी थयुं. तेमां एक, बे उकालानुं पाणी अपरिणतोदक कहेवाय. ते पाणी अचित्त थयुं, एवुं जाणीने पीए तथा सचित्तने फासु करतां कहीं काचुं रही जाय, एने पण अचित्तबुद्धिथी खाए. श्रावकने तो सचित्त चीज अचित करवाने अछी तरेहथी शस्त्र लागे, त्यार पछी अंतर्मुहूर्त वीत्या केडें खाए. त्यां अचित्तबुद्धिथी सचित्तने खाय, अथवा अनाभोगादिकें खाय, तो ते प्रथमातिचार, सचित्ताहारनामा जाणवो.

२ बीजो सचित्तप्रतिबंध अतिचार. ते जेने सचित्त नियम छे, ते तरतनो उखाडेलो एवो जे खेरनी गांठनो गुंदर प्रमुख ते ने खाय. ते त्यहां गुंदर तो अचित्त छे पण सचित्तनो स्पर्श ला ग्यो हतो, ते दूषणछे. तथा पाकी केरीना समुदायने चूसे, रायण बोर, समुच्चय सहित मुखमां मेहेले, अने मनमां उपयोग एवो आणे के में तो ए फल पाकुं चूशुंछे. ए अचित्त थयुं एमां शो दोष छे ? पण एवो उपयोग न जाणेके ए फलनी अंदर, गोटली स चित्तछे. ए माटें सचित्त त्यागी होय, ते एवी चीज अचित्त बुद्धि एं खाय; त्यारें तेने बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अपक्काहारातिचार ते अचालित आटो प्रमुख तेणे अग्निसंस्कार न कस्यो होय ने काचो आटो फाके. जे कारण माटे श्री सिद्धांतमां आटो, दख्या पछी केटला एक दिवस, सचि त्तमिश्र रहेछे, पछी अचित्त थाय, एवुं लख्युंछे. श्रावण भाद्रवा मां आटो, दख्या पछी पांच चिवस सुधी अण छाण्यो सचित्त मिश्र रहे, आश्विन मासमां चार दिवस सचित्त मिश्र रहे. कार्त्तिक, मा गेशीर्ष अने पौष महीनामां त्रण दिवस, सचित्त मिश्र रहे. मा हा अने फागण महीनामां पांच प्रहर, सचित्त मिश्र रहे. चैत्र वैशाखमां चार पहोर सुधी, सचित्त मिश्र रहे; पछी अचित्त थाय. ज्येष्ट आषाढमां आटो, त्रण पहोर सचित्त मिश्र रहे; प छी अचित्त थाय. ए माटे काचो आटो अण छाण्यो अचित्तनी बुद्धिएं खाय, तो तेने त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथो दुष्पकाहारातिचार. ते कांइ काचो, काइ पाको ए वो, जेम सर्व जातिना छंला, पोंक छंबी, जुवारनो पोंक इत्यादिक सर्वजातिना लीला पोंक बीजथी भरेला ते अग्नि संस्कारमां केट ला एक दाणा अचित्त थाय, केटला एक दाणा सचित्त रहे अने ते

ने अचित्त बुद्धिथी जाणे, केमके अग्निसंस्कार थयो त्यारें अचित्त थया; एवुं जाणी खाय, तो तेने चोथो दुष्पकाहारातिचार लागे.

५ पांचमो तुच्छोपधिनक्षणातिचारछे, ते तुच्छ एटले असार, जेना खावाथी कांइ तृप्ति न थाय अने आरंभ तो घणोज थाय. जेम वोडा प्रमुखनी अति घणी असार ठीमी, जे वोडानी अंदर थायछे, एना खावाथी कांइ आत्मानी क्षुधा प्रबल भांगे नहीं अने प्रसंगदोष लागे. वली कोमल वनस्पतिमां कोइ रीतेंथी अनंतकायनी शंका रहेछे. रसगृद्धिपणुं वधे. कोमल फल फली प्रमुखने अचित्त करीने खावानो व्यवहार पण नथी. ए माटे वोडा प्रमुखनी कोमल फली खाय अने मनमां जाणे के, वोडानी फली तो मारे खावी योग्यछे. एवुं जाणी करीने खाय; पण एम न जाणे के तुच्छौपधिनक्षण दोष लागेछे. इति पांचमो अतिचार. ए पांच अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे सप्तम भोगोपभोगविरमणनामा द्वितीयगुणव्रते पंडित श्रीउद्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा ॥ ७ ॥

---

॥ अथ ॥

## ॥ अष्टम अनर्थदंड विरमणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

द्वादश व्रतकी दीपमें, कहे सात निरधार;
अष्टम अनर्थ दंडका, भेद लिखुं सुविचार ॥ १ ॥

१ प्रथम अर्थदंड. एटले जे सप्रयोजन धन धान्य क्षेत्रादिक नवविध परिग्रह संबंधि हानि वृद्धिरूप. जे कारण माटे धनवृद्धि निमित्त, संसारी जीवनें घणां पापनां कारण सेववां पडे, तेवारें साचुं जूठुं बोल्या विना रहेवातुं नथी. पापोपकरण मेलववां पडेछे, मनसुवा करवा जोइयें अनेक विकल्परूप आर्त्तध्यान करवुं

पडे; जे कारणे धनादि परिग्रह, आजीविका हेतुयेंछे. ए माटे धनवृद्धि निमित्तें जे जे आश्रवसेवन करवुं पडे, ते सप्रयोजन छे, ते कारण माटे ए अर्थदंडछे.

२ बीजुं एमज ज्यारें धनहानि थाय, त्यारें पण एवुं कारण पामीने गृहस्थने ते धनहानि निवारवाने अर्थें अनेक निकल्प करवा पडे, पापनां स्थानक सेववां पडे, ते पण अर्थदंडछे, जे कारण माटे संसार संबंधी सुखनुं मूलकारण व्यवहारें तो धनजछे; ए माटे एने वास्ते आत्मा दंडाय, ते अर्थदंडछे.

३ तथा त्रीजुं पोतानां स्वजन कुटुंब परिवारादिकने वास्ते तथा आबरुना योगें जे जे अवश्य, पापस्थानक सेववां पडे, ते पण अर्थ दंडछे, जे माटे ज्यांसुधी प्रबल कषाय निवार्युं नथी, त्यांसुधी स्वजनादि पाश छूटे नहीं. संसारमां इंद्रियसुखनां पुष्टहेतु ए स्व जनजछे, व्यवहारमां हेतु कहेवायछे. आपणा सुखें सुखी, अने आपणा डुःखें डुःखी. एमाटे एउने सारु पापस्थानक सेवे, ते पण एक अर्थदंडछे. जे माटे संसारी जीव, पुजलविलासी, पुजला नं दीछे. ते प्रबल अविरतिकषायोदयथी एउने छोडी शकतो नथी.

४ अने चोथुं पंचजोगना आसेवनथी केटली एक वेला इंद्रि यो तृप्त रहेछे. आत्मा प्रमुदित रहेछे, ते पण अर्थदंडछे. ए चार प्रयोजनमां कोइ पण प्रयोजन होय नहीं, अने जे पापवृत्ति करे, ते अनर्थदंड कहेवाय. कारणविना फोकट ज्यहां ज्यहां आत्मा दंडाय, तेथी जे जे डुष्कर्मनी वृद्धि थाय, ते अनर्थदंड कहेवा य. एना चार जेदछे, ते लखेछे.

१ प्रथम अपध्यान अनर्थदंड. २ बीजो पापोपदेश अनर्थदंड. ३ त्रीजो हिंसाप्रदान अनर्थदंड. ४ अने चोथो प्रमादाचरित अन र्थदंड. तेमां अपध्यान अनर्थदंडना बे जेद छे. १ एक आर्त्तध्या न. २ बीजो रौद्रध्यान. त्यां वली प्रथम आर्त्तध्यानना चार जेदछे.

तेमां १ प्रथम अनिष्टसंयोगार्त्तध्यान. २ बीजो इष्टवियोगार्त्तध्यान. ३ त्रीजो रोगनिदानार्त्तध्यान. ४ अने चोथो अग्रशोचनार्त्तध्यान.

१ तेमां इंद्रियसुखने विघ्नकारि अनिष्टशब्दादिक तेउना संयोगनी त्रणे काल चिंता रहे के, रखे मने ए अनिष्ट शब्दादिक मले ? आ मने नवविध परिग्रह जे मल्याछे, तेउनो रखे वियोग पडे ? अथ वा इष्ट एटले वाहालां माता, पिता, स्त्री, पुत्र अने मित्र प्रमुख नुं विदेशगमन अथवा मरण थाय, तेणे करी घणी चिंता करे, खाय पीए नहीं. वियोगनां दुःखें करी आत्मघातकरवानी चिंतव ना करे, आदरे, आखो दिवस गुस्सामां रहे, तथा घरमां आ कपुत छे, ए जाइ, बे दिलछे, ए बापनुं दिल मारा पर नथी, आ स्त्री न ठारी मली छे, ए स्त्री माराथी बेदिली करे छे, एनो कशो उपा य पामुं तो ठीकछे. एमज स्त्री विचारे के, मारी शोक्य मने भूंडी मलीछे, भर्त्तारने जोलवे छे, कोइ दिवस भर्त्तारने माराथी जूदाइ करावशे, ए माटे एनो कांइ उपाय पामुं तो सारुं थइ जाय. सेव क होय ते एवुं विचारे के स्वामिना महोढा आगल फलाणो महा रो दुश्मन चढ्यो छे, ते मारो नाश करशे, मारी राह रीति छे ते गमावी देशे, स्वामिने कांइ मारुं साचुं जूठुं कहेतो हशे, मारी चा करी छोडावशे, त्यारें हुं शुं करीश? एनो कांइ उपाय पामु तो सारुं छे. एना निग्रहने माटे कोइ यंत्र, मंत्र, कामण, मोहन, वशीकरण शोधे. कोइ साचुं अथवा जूठुं तेनुं छिद्र ताके, तेने अछतुं आल दे, लोकोना मुख आगल तेनुं बुरुं बोले. वली ते पूछतो फरे के, एनो निग्रह करवावालो कोइ छे? तेवामां कोइ धूर्त्त जटिल प्रमुख बो ली उठे के, फलाणा त्रस जीवनो घात करीने बलिदान कर, तो श त्रुनिग्रह होय. ते सांजली ते मूढ, ते जीवघात पण करे अने ते पुरुषनुं मरण वांछे; पण मूढ एम न विचारे के, जे पोताना शुद्धमार्गें अने साचे दिलें सेवा करशे, तो तेने कोण काढी मे

लशे ? पुण्योदय ज्यां सुधीछे, त्यां सुधी कोइ बुरुं करी शके नहीं. ए प्रमाणे जूठी आर्त्ति विचारे. इत्यादिक सर्व संबंधें संसारी जीव, अनर्थें दंडायछे. तथा आगलथी पोतानी आतुरतायें अशुभ कारण मल्या विना प्रथमज मनमां कुविकल्प करे, जे दुश्मनना कुलमध्यें फलाणो सामर्थ्यवान् पेदा थयोछे, ते मने दुःख देशे; एमाटे राज्य द्वारादिकें एनी आबरु जाय, अने दंड पामे तो सारुं थाय. जो ए घणी तस्दी पामे, तो ए गाम छोडी करीने भागी जाय; एनुं जो कोइ छिद्र पामुं तो फलाणाने कहुं; अने ते राजदरबारमां जाहेर करे, एटले पोतानी मेले दुःख पामशे. एवी विचारणा ते मूढ करे, अने ते जेने वेरी गणतो होय, तेना दिलमां तो कांइ पण होय नहीं; परंतु ए अज्ञानी एवा अनर्थमां पडे.

वली बीजुं पण ते मूढ विचारे के, ए क्षेत्रमां चोर घणा थया छे. एउने हाकेम, छानी फोज राखीने ए चोरो ज्यारें एना दावमां आवे त्यारें सर्वनो निग्रह करे, तो सारुं थाय. पण ते चोरोनो तो ज्यां लगी पूर्वपुण्योदय प्रबलछे, त्यांसुधी एउनुं कांइ पण बगडे नहीं; परंतु ते कुविकल्पवालो जे चिंतवेछे तो तेने चोर मारवानी आर्त्तध्याननी हिंसाक्रिया बेठी. वली कोइ अमुक मातबर थयोछे ते, ए आपणी बरोबरी करशे, अमाराथी आगल पग धरशे, ए माटे ए हरामजादानो एवो उपाय करवो के, एने फरी उपर आववाने दाद फरियाद लागे नहीं. इत्यादिक अनर्थोंने बेठो बेठो विचारे, पण ते मूर्ख मनमां एवी विचारणा न विचारे के, मारे कह्ये शुं थवानुंछे ? एनो पापोदय थशे, त्यारें पोतानी मेलें होण हार हशे, ते मटवालुं नथी; तो शा माटे ए विचारवुं ? इत्यादिक अपध्यानार्त्त अनर्थदंड छे. विना मतलब एवी रीतें पापजाल पोतें बांधे, ए अनिष्टसंयोग अने इष्टवियोग बे आर्त्तध्यानना भेद कह्या.

३ तथा त्रीजो रोगनिदानार्त्तध्यान. जे रखे मारा शरीरमां कदा

पि कोइ वखत रोग थाय ? सर्वरोग माराथी दूर रहे तो सारुं? एवुं विचारीने कोइने पूछे के फलाणो रोग केम करी थायछे ? त्यारें ते कहेके, फलाणी चीज खाय तो उतावलें रोग थायछे, अने फलाणी अन्नक्ष्य वस्तु खाय, तो कदापि पण रोग थाय नहीं. त्यारें ते अन्नक्ष्यादिक खाए, वली ते बीजाने बतावे. तथा ज्यारें शरीर मां रोग उत्पन्न थाय, त्यारें घणी हाय हाय करे, घणो आरंन्न करे. घणुं द्रव्य खरचे, अने विलाप करे के हाय हाय, आमारो रोग क्यारें जशे !!! वली ते पलें पलें अने घडीयें घडीयें ज्योतिषीने पूछे के, मारी दिनदशा केवीछे ? आ रोगनी व्यथा क्यारें मटशे? वली वैद्यने पूछेके, हे महाराज ! मारा दिलमां महोटी शंकाछे. तमाराथी कांइ कर्त्तव्य ठानुं नथी. मारा उपर कोइयें जाडु कर्युं ह शे ? फलाणो माणस मारा उपर खुनस राखेछे. तेणे मारा उपर को इ पासें कांइ जाडु कराव्युं हशे, ते केवी रीतें जशे. कराव्युं होय तो हवे तमे साजो करो. एवी रीतें नवी नवी शंका धरे अने रोग जवा माटे कुलविरुद्ध धर्म आचरे, अन्नक्ष्य खावाने तैय्यार थाय अने अकरणीय करवाने पण लागे. एना मनसुबामां सदाय एम रहे. ने जे जे रोगछेदननी चीज जडी, बुटी, औषधि, यंत्र, मंत्र, उतारो, फाडो, हजराय. ए सर्वनी चाहना राखे के ए चीज कोइ वखत मारा काममां आवशे. नजरमां राखे के ए सर्व मारा काम नीछे. एने आपणी पासें अमलमां राखी होय तो सारुं, फरी एवी चीज हाथ नहीं चढशे. एवुं जाणीने ते जडी बुट्टी सर्व एकठी करवा लागे, ए सर्व रोगनिदानार्त्तध्यानछे.

४ तथा चोथो अग्रशोच आर्त्तध्यान. जे आगला कालनी चिंता करे के, आगली शालमां आ विवाहनुं काम करीशुं, एवी तरेहथी विवाहना उछव सरनजाम करीशुं, तथा फलाणा साथें कजियो थाशे त्यारें आवी वातोथी अने आवा जुबापथी एने हरावीशुं.

एवी रीतें काम करीशुं तथा ए मेहेल, हवेली एवी तो बनावी शुंके, तेने देखी करीने सर्व अचंबो पामे, तथा फलाणा पुरुषें क्षेत्र बगीचो बनाव्योछे, तेवो हुं पण बनावीश. अने ते एवो बनावीश के, बीजा सर्वना बगीचा एना आगल नाकार थइ जाय, अने सर्व दुश्मननी छाती बले एवो बनावीश.

तथा वली आ शोदो जे आपणे कस्योछे, ते आगल जतां ज्यारें घणो मोंघो जाव थशे, त्यारें अमें पोताने मोढे माग्युं मूल्य लेइशुं, बीजा कोइनी पासें ए माल नहीं मलशे, तो पो तेंज गरजना मास्या लइ जशे, एवां वचन, आर्त्तध्यानथी बोले, अने विचारे के, एटला पैशानो हाथ मारी लेइशुं. हवे शी फि कर छे ! एवी रीतें दिलमां आगलथी मलकाय.

तथा आ चीज नवी छे, कोइनी पासें नथी. माटे कोइ सारा शि रदार, राजा, पादशाहने ठेकाणे देखाडीशुं तो तेउं पण एने देखी, चा हना करीने लेशे, मने पण मान आपशे, प्यार करशे, उपर शिरपाव मलशे, आपणुं पण काम थइ आवशे, पैशा मोढे माग्या लेइशुं, अने तेणें करी सारी सारी मोज मारिशुं, अने लोको सर्व जोइ रहेशे. एवा एना मनोरथ प्रमाणे कांइ थयुं तो छे नहीं, अने ते पहेलांज मनमां महामग्न थइ रहे, खोटां कर्म, आगलथी बांधे. आगलथी शुं जाणी यें के शुं थशे ? चीजमां नफो मलशे के नहीं मले ? अथवा ते चीज, कांइ खोवाइ जशे के रेहेशे ? एवी तो खबर रहेती पण नथी, अने वातो करवा थकी कर्म तो साचां बांधेछे. ए पण आर्त्तध्यान.

अथवा महारा घरमां अनाज संग्रह घणो छे, अने आगला व र्षनां चिन्ह माठां देखाय छे. अने ज्योतिषवाला पण एम कहेछे के आगलुं वर्ष बहु निषिद्धछे, ए माटे जो चार दाणा कोइ राखशे तो चार पैशा सारी पेठें मलशे, माटें अवश्य दुष्काल पडशे, तो पण वेचीश नहीं, तो धान्यमां त्रगणो चोगणो नफो मलशे, तो पण नहीं

वेचुं. एम जतां जतां धान्यनो जाव अमारा मनमानतो थशे, त्यां रें आठ गणो नफो, अने ते उपर वली व्याज खाइशुं, त्यारें वेच वानी वात काढशुं. ते वखत पैशा घणा मलशे, त्यारें फरी वली दूर देशांतरथी वीजुं अनाज मगावशुं, तेमां बीजा घणा पैशा मल शे. ए प्रमाणे द्रव्य वधशे, लाखो रुपैय्यानी मोज करशुं, पढी वली कोइ अनेक तरेहना व्यापार करशुं, आपणी नजरमां सर्व व्यापार ढे, सर्व व्यापारनी आपणने माहिती ढे, कोइ व्यापारमां ठगाइयें नहीं, कोइ शेहेरमां शाहुकार सार्थे साटुं शोदो लगावशुं, कोइ जग्या यें आपणो गुमास्तो रहेशे, त्यांनी हुंमी अमारा उपर लखी मोक लशे, अने वली त्यहांथी हुंमी विगेरे अमो मगावी लेशुं. अथवा कोइ बंदरथी आपणने गम पडे तेवी चीज मंगावी लेइशुं, तेमां पण चार पैशा मलता जशे. अने कोइ वर्षमां चार पांच रकमो सारी आ वशे तो लक्षाधिपति, कोटिध्वज नाम काढीने उजा रहीशुं. तेवारें आपणुं पण नाम सर्वोपरि सर्वशिरोमणि थशे. सर्वरीतें आपण ने आसान थइ जशे, आपण कोइने पण खातरमां नहीं लावशुं. एवामां कोइ ठेकाणे सगाइ सादीनो पण जोग बनी जाय, तो घणुंज सारुं. पढी घर, बार, हवेलीउं, अहीयांज फरी बनावशुं, अने ढोकरां, ढैय्यां सर्वनो योग मली जाय, मनना मनोरथ सर्वे फले. त्यारें दुश्मननी ढाती उपर साहेबी करी मग दलीशुं, त्यारें हैडुं ठरशे. ए शत्रुउ पण दीन थइ रहेशे, एम वली राज्यदरबारमां पण प्रख्यात थइशुं. त्यारें आपणा प्रिय मित्रोने उंचे अधिकारें चढा वशुं, मुद्दइउने काढी मेलावशुं. एटले जेम जेम आपणो जापतो थशे, एम एम मननी इच्छा प्रमाणे सर्व करीशुं. जोग विलास सर्व करशुं. अने जो अहीयां अमारी सादी थइ तो घणीज खु शवखती करीने कोइ समयें स्त्रीयादिक पोताना जीवथी गुस्सो करी बेसशे, तो ते समयें तेने मनावशुं, सारी सारी रीतें वस्त्र

जरीयान विगेरे सारी सारी वस्तु आपशुं, त्यारें ते राजी थशे, इत्यादिक मन कल्पना जूठी साची बांधे, अने घणां कर्म उपार्जे. ते माटे ए आर्त्तध्यान छोडीने जो धर्मनी करणी करे तो सारी छे. अने आगले कालें आ नवने विषे धन, समृद्धि, यश, प्रतिष्ठा, मान, मरतबो चाहे, परनवने विषे देवत्व, इंद्रत्व पदवी चाहे, ते अप्रशोच आर्त्तध्यान कहीयें.

हवे रौद्रध्यानना चार नेद लखे छे. तेमां पहेलो हिंसानंदरौद्र, बीजो मृषानंदरौद्र, त्रीजो चौर्यानंदरौद्र अने चोथो संरक्षणानंदरौद्र.

१ तेमां प्रथम हिंसानंदरौद्र. ते त्रस, स्थावरजीवोनी हिंसा करीने पोताना दिलमां हर्ष करे, घणा आरंननी चीज जे घर, हवेली, बगीचा प्रमुख, ते बनावे. पछी तेनी तारिफ, लोकोना मुखेंथी सांनले, अने मनमां बहुज खुशी थायके, जूउ ! में पोतानी खबरदारीथी केवुं काम कहीने कराव्युं छे ! के जे कामनी सर्व लोको तारिफ करे छे. अमरा जेवी अक्कलनो फेलावो थोडाज जणोनो हशे. मारा पैशा जे खरचाया, ते सर्व सफल थया. तथा रसोइ, खावा प्रमुखनी चीज बनावे, तेमां बहुजातिनो मशालो, तथा नह्य वस्तु साथें अनन्दय वस्तु मेलवी अनेक अग्निसंस्कार देइने स्वादिष्ट वस्तु बनावे. पछी सर्वने बोलावी करीने नात, जात, मिजमान प्रमुखने जमाडे, त्यारें ते रसिया लोक, नोजन करी करीने रसोइनी तारिफ करे, अने अहेके आवी बनेली वस्तु घणी वार खाधी हशे, पण नाइजी ! आजनी मजा तो उरजछे. आजनी मजानी शुं तारीफ करियें ? जेटला मशाला दीधाछे, तेनी खुशबोइ घणी प्यारी लागे छे. एवी एवी बहु तारीफ सांनले, तेथी मनमां खुशी थाय. अने विचारेके फलाणे माणसें, मिजमानी करी हती, तेनी निंदा थायछे अने अमे केवुं नोजन कराव्युं ? जेणे करी, सर्व आमारी तारीफ करेछे. फरी वली आवो अवसर पामी

शुं तो वली एनाथी पण घणी सारी रसोइ बनावीशुं, तथा राजभोज न अभक्ष्य चीजनी नकल बनावीने, तेनो आशय धरीने खाय, खवरा वे, ज्यारें रसिया लोको जमणने वखाणे, त्यारें जाणेके सर्व सफल थयुं अने पोताना मनमां खुशी थाय. जुवो ! हुं केवी चीज बनावुं हुं ? मारा जेवो कोइ होंशवालो तथा भोगी जन नथी. अथवा राज विग्रह युद्धादिकनी वात सांभलीने खुशी थाय, अने विचारे के ए राजायें सारुं कर्युं, राजा महोटो शमसेर बाहादूरछे. आगल पण एना बाप, दादा, पादशाहीमां महोटा प्रख्यात हता अने शिपाइ गीरीमां घणा मजबूत हता, तेना वंशनो एछे. एना वडवाउयें. आ जग्यायें फतेह मेलवी, किल्लो पण खाली कराव्यो, वडा अक्कल व हादूर हता. महोटा मोहोटा संग्रामोमां डुश्मनोने जेर कर्या हता, सर्वनां पोताने चरणे शिर नमावी करी, चोतरफ पोताना अमलनो डंको वगडाव्यो हतो, हमणां पण सर्व जुवान एवाजछे, एउंनी ज्यहां ज्यहां चोकीछे, त्यहां त्यहांरस्तामां पडी चीजने कोइ पण उपाडतो न थी; तो बीजुं शुं कहीयें? फलाणो सुभट, एकज चोटमां सिंहने मारी ने पोतें एकलो निर्भय थइ तेने उभो चीरी नाखेछे, बीजाथी एवुं शुं थशे? एम कहीने शाबाश, शाबाश कहे, तथा डुश्मनने आप दा अथवा मूवो सांभलीने बहुज खुशी थाए, सीरणी वांटे, मुख म रोडे, मूछें हाथ फेरवे, हाथना पोंहोचा मसले, अने महोढेथी कहेके, ए हरामखोर अमारा पुण्यथी मरी गयो, एवां एवां कूडां कर्म बांधे; पण एवी खबर न राखेके, तुं कोण मारवा वा लो ? एनी भवस्थिति आवीने पूरी थइ, एना उदयमां हती ते भोगवी, एक दिवस, तमे पण एज रस्तो पकडशो, एनो जूठो गर्व करवो तेमां कांइ सारुं नथी, अने तुं मारनारो हतो, तो आटला दिवस शुं काम ढील करी? माटे एवी जे व्यर्थ विचारणा करवी, ते हिंसानंदरौद्रध्यान कहीएं. ए सर्व मतलब विना कर्म बांधवुंछे;

२ बीजुं मृषानंदरौद्रध्यान कहेछे. ते एमके, जूठुं बोलीने हर्ष पामे, अने मनमा विचारेके में केवी केवी वात बनावीने कही के जे वात, सर्व लोकोयें कबूल करी? मारुं कपट कोइएं पण न जाण्युं. बीजा कोइने एवी कला आवडे नहीं. एटला महोटा महोटा अक्कल वाला सर्वे मळ्या हता पण कोइ बोली शक्या नहीं. में सर्व सवाल जूवाब कस्या. बोलवामां तो घणी करामतछे. बोलवुं ए तो कांइ कामज आवेछे. आ वखतें अमें नहीं होत, तो खबर पडत? ए सर्वेनीशी गति थात? एवी रीतें मनमां फूलाय. वली पोताना डुश्मनने माथे जूठुं तहोमत मेले, अने ते डुःख पामे, त्यारें पोतें हरखायके में एने केवो जेर कस्यो छे? तथा पोताना फरजंदसंबंधी प्रमुखनी आगल वातो बनावी बनावीने कहेके, अरे मूर्खाउ! तमे शुं करशो? अमे केवां केवा फेल कस्यांछे? पण ते कोइने मालमज नथी. पोतानुं फेल कोइ जाणे, त्यारें अक्कल शानी? तथा दरबारमां जइने, चुगली करतां राजानो स्वार्थ करे अने मनमां हरखेके, में राजाने केवो वश कस्योछे? एवा एवा मनमां कुविकल्प करे. इत्यादिक मृषानंदरौद्रध्यान कहीयें.

३ त्रीजुं चौर्यानंदरौद्रध्यान. ते एमके, भद्रक जीवोनी साथें कूड कपटनी वातो बनावीने घणा मूल्यनी चीज छेक थोडामूल्यमां ले, तथा पारकुं द्रव्य, व्यवहारथी अधिक ले, तथा चोरी करीने कोइनी गुमास्तीमां जूठुं साचुं नामुं मांडी दे, अने पैशा खाइ जाय. कपट कला बनावीने शेठने प्रसन्न करी, पछी मनमा हर्ष पामे के, अमारी केवी कलाछे आटलुं द्रव्य पण खाधुं अने शेठने पण राजी राख्या. मारुं केवुं डहापणछे?

तथा व्यापार करे, तेमां जूठा जूठा सोगन खाइने अने मीठुं बोली करीने बीजाने प्रतीति करावीने अधिक मूल्यनी वस्तु, थोडा मूल्यमां ले अने थोडा मूल्यनी वस्तु अधिक मूल्यमां वेचे, तोलमां

ठेवुं आपे,अने वधारे छे, तेथी पोताना घरनां संबंधीथी वधारे क
माय त्यारें मनमां हर्ष पामे अने घरमां फूलाय के, मारा घरमां
ए जाइ प्रमुखछे, ते सर्व नकाराछे. कोइमां कोइ वातनी सलुकाइ
नथी, तो व्यापारनी कला क्यांथी आवशे ? व्यापार करवो तो
बहु मुश्केलछे, अने मोहोटी अक्कलनुं कामछे. अमे न होत तो ए
सर्वनीशी गति थात ? जूउ ! आ चीजना शोदामां तमें केटलो न
फो लीधो ? अने तेज चीज अमे वेची, तो सर्वनी हजूर आट
लो नफो लीधो. ए अक्कलनुं कामछे. हमारी कलाने तमे नहीं
पामो, एम पोताना जीव साथें फूले.

वली राजद्वारमां पोतें जातो होय तो त्यहां साचां जूठां
फेल बनावीने लोकोने भर देखाडीने राज्यमां पैशा लेवरावे, अने
पोतें पण वच्चेथी कांई लइने सुखेंथी खाई जाय. चार वातो सारी
तरेहथी बनावे. कोइने त्यां विद्यानुं फेल बनावीने, इंद्रजाल
प्रमुख चमत्कार बतावीने विश्वासघात करी, तेनी पासेंथी पैशा
ले, अने मुखथी कहेके, अमे तमारुं द्रव्य फोकट गमावनार
नथी. तमे अमारी तरफनी खातर जमा राखजो. एवी रीतें कही
ने पारकुं द्रव्य, खाइ जाय अने वली खरचावे, अने लोकोमां
महोटो विद्वान् कहेवाय, अने मनमां जाणेके जुउ ! मारा जे
वो कोण अक्कलवान् बीजो हशे, के आवी रीतें पारकुं द्रव्य खा
य ? लोकमां पण हुं सर्व ठेकाणें विख्यातछुं,महाराज जेवा प्रख्यात
तो मारा पिता पण न हता. हुं बालपणामांथीज कमाइ करीने
लावुंछुं. एवी खोटी कुगतिनी सहायता बांधे, अने फेल करे.

क्यारेंक औषध, जडी, बुट्टी प्रमुख यद्वा तद्वा कंइकथी लावीने
तेनी लोकोना मुख आगल घणी तारीफ करे, के हुं आजे औषध
बनावुं छुं, ते रसायनछे. ए औषध, खानारने बहु गुण करवा वा
लुं छे. में ए औषध उपर घणो पैशो खरच्योछे.. एना उपर रात

दिवस घणीज मेहेनत थइछे. ए औषध, हुं तमनेज आपुं छुं, तमे अमारा छो माटे आपुंछुं. वली तमने दररोज खरच पडे छे, तो जे औषधनी तमे तारीफ करता हता तेज औषधि आज हुं तमने आपुंछुं. तेनी तमारे अमोने एक दमडी पण आपवी पडशे नहीं, मात्र मोबतने खातर आपुंछुं तमोने गरमी रहेछे, ते माटे ते गरमीने मटाडवाने आज, मने यादगिरी आवी. तेथी में तमने औषध आप्युंछे. ते सांजलीने ते औषध लेनार कहे के, मारीउपर आप साहेबें महोटी महेरबानी करी. तमे अमारी खबर न ल्यो, तो बीजुं कोण लेशे ? एवी तजवी जथी वातो बनावीने पैशा लीए, महोटी लायकी बतावीने, आगलानी पासेंथी पैशा लेइने खुशी थवुं. इत्यादिक खराब वि कल्पना करवी, ते पण चौर्यानंदरौड कहीएं.

४ हवे चोथो संरक्षणानंदरौद्र कहेछे. संरक्षणानंदरौद्र, एटले परिग्रह, धन, धान्य, घणुंज वधारे. वली अधिक वधारवानी इ छा करे, पाप कुटुंबनुं पोषण करवाने माटे परिग्रह वधारवानी वे हद कुबुद्धि विचारे. अने तेवां कर्म पण आदरे. लोकविरुद्धादि कनी अपेक्षा न करे. एम करतां बली कोइ प्राचीन पुण्यें करी पाप परिग्रह पामे, अने घणुं द्रव्य मले, त्यारें मनमां घणो हर्ष पामे अने कहे के, जुर्ज ! आ सर्व में एक जीवें पेदा कर्युंछे. एवो मारा जेवो कोण हुशीआर थशे ? अने मारा जेटली दोलत कोण मे लवशे ? एवा अहंकारें करी, मग्न रहे. अने तेज परिग्रहमां पो ताना मननी वृत्ति लागी रहे. रखे ए परिग्रहने कांइ नुकशान थाय ? एवी रात दिवस चिंता करे, अने द्रव्यने घणा यत्नथी जा लवी राखे, ताला प्रमुखनी खबरदारी राखे, रात्रे सुखें करीने सू ए नहीं. सगा पुत्रनो पण विश्वास करे नहीं. अने पुत्रादिकने क हेके, तमारामां शुं अक्कलछे ? तमारी बुद्धि जती रहीछे कारण

के, तमे निरुद्यमी ठो, माटे अक्कलवाला थाउ. अमारी परें शुं तमे क्यारें पण कमाशो? तमे तो धनने बगाडवा वालाठो. अमे ज्यारें नहीं होइशुं, त्यारें कोण जाणे पाठल तमारा शा हाल थशे ? तमारां लक्षण तो हमणांथीज जाहेर दीठामां आवेठे, जे तमोने आगल जतां मोहोटी आपदा पडशे. कमाववानी युक्तितो कोइमां पण नथी, तो आ पेट, केम जरशो ? अरे मूर्खाओ !!! धन कमा ववुं तो महा मुश्केलठे. कमाइ करीने सलुकाइथी एकवुं राखवुं. ते तो वली घणुंज मुश्केल ठे. हमणां तमे सारी रीतें जूउके, हुं धन कमायो अने कमाउं पणठुं. आज सुधी लोकोमां प्रतीत, आवरु अने व्यवहार राखता आव्या ठैयें, ते अमारी खबरदा री जाणवी. अने उश्मनोने पण जेर करीने पग नीचें राख्या ठे. मारा ठतां कोइ दावो मुद्दो पण काढनार नथी. तमारा जेवा होत, तो धन कमाववुं तो दूर रहुं, परंतु ते उश्मनो तमने खावा पण देत नहीं, एवा उश्मनो लागी रह्याठे, ए माटे अमारी अक्कल शीखो, के जेणे करी तमारुं जलुं थाय, ए प्रमाणे परिग्र हमां चेतना लागी रहे, तेने संरक्षणानुवंधिरौद्रध्यान कहेठे. ए सर्व अपध्यानाचरित अनर्थदंड कहेवायठे.

एटले प्रथम अपध्यान अनर्थ दंड. तेना पूर्वें बे नेद कह्या, ते मां एक अर्त्तध्यान, अने वीजो रौद्रध्यान. ए बेउ ध्यानना नेद, विस्तारथी कह्या. हवे वीजो पापकर्मोपदेश अनर्थ दंड लखेठे.

२ वीजो पापकर्मोपदेश अनर्थदंड. ते हरेक वखतें कोइने घर संवंधीने लज्जा दाक्षिण्यता विना पापोपदेश करे,ते एम के तमारा घरमां वाठरडां महोटां थयांठे ते अमारे देखवामां आज आव्यां, ते माटे तमने कहीयें ठैयें के,तेउने हवे समारो के जेम ए वाठरडां सुध रे. तो पठी गाडी, हल विगेरे सर्वस्थानमां सारी रीतें जोतरी शकशो, नहीं तो तेउना शरीरनुं वल वधशे. तेथी गायने जो

इने उन्मत्त थशे, ने लोकोने मारशे, ए माटे एने पलोटो, अने उतावलथी खासी करावो, पोताना मालने शा माटे बगाडो छो ? हमणां एने नहीं पलोटो तो, पछी ए जूतमां जूपशे नहीं. अने फेरवशो तो चमक मटी जशे. नाथ्या विना तो चालेज नहीं, ते माटे नाथवो तो पहेलोज जोइयें. एवो पापोपदेश करे. वली कहे के, आ घोडीनो वछेरो महोटो थइ जायछे. हवे एने फेरणीथी एटले दोरीथी फेरववो जोइयें जेथी करी ए वछेरो,सारी चाल शीखे एने चोकडुं, लगाम चढावो. हवे एना उपर काठडो विगेरे साज मांड्या करो.बांध्युंने बांध्युं राखवाथी जानवर खराब थइ जायछे.

तथा वली एम कहे के, वरसादना दिवस आव्याछे माटे आपणा खेत्रमांथी गांठ, गुठ, घांस, खाडा विगेरे होय, ते कपावी नाखीने सुधारोके जेथी करी जमीन साफ थाय, अने वरसादनुं पाणी खेत्रमांज जरी जाय. पाणीएं पचीने जमीन तर थाय तो तेमां धान्य सारुं नीपजे. वली वरसाद पण आव्यो, माटे घरनी मरामत करावो. ए घर जाजरुं थइ गयुंछे, माटे फरी बंधावो. आ वखतछे. अने हमणां मशालो मजुरी सो शस्ता थयांछे. हवे मूलथी नवी हवेली बनावो. ए बाबत तमोने खबर न होय, तो मने पूछी लेजो. अमें जे मनसुबाथी कछु एवी तजवीजथी तमे पण बनावशो तो सर्व कोइ जोइने आश्चर्य पामशे. एवो उपदेश देइने खोटां कर्म बांधे; तथा फरी वली एवुं कहेके, भाइजी ! त मारी दीकरी तो घणी महोटी थइछे. एनी फिकरमां तमे छो के नहीं ? हवे विवाह करवा योग्य थइछे. ए माटे तमारी पासें कोइ न होयतो, मारी पासेंथी लियो, पण बीजा कोइनुं करज करशो नहीं. जो करजें काढवा होय तो मने कहेजो, एटले मारी मात वरीथी तमोने कोइनी पासेंथी अपावीश; परंतु तमारे आ काम

करवुं जोइएं. ए धर्मनुं कामछे, माटे एमां ढील करो नहीं. एवी रीतें संसारने वधारनारो उपदेश करे.

वली कहे के, हे भाइजी! बगीचो समरावो. कोइ ठेकाणे जमीन सखत होय, तो त्यां आग लगाडो. एमां जंगलनी पतें घांस कुशनो घणो वधारो थयोछे, ते कपावी नाखीने ए जग्यायेंज बाली नाखो एटले ते जमीन साफ थशे. एवी रीतें कहे.

वली बीजी प्रेरणा करे के, फलाणो माणस, तमारी साथें दुश्मनाइ करेछे. तेने जेर करवानो हमणा तमारो वखतछे. राजदरबारमां तमारे तो वग छे. ए माटे कोइ ठेकाणे कोइ पेचमां लेइने फसावी नखावो. आपणुं चालतुं होय, त्यारें तो दुश्मनने जेर करवानो उपाय कर्या विना रहीएं नहीं; मारी तो एवी अक्कलछे. आवो अवसर तमें फरी क्यारें पामशो? पोताना चालता चलणमां सारुं नठारुं करवामां न आव्युं, तो जींदगीनुं फलशुं? ते माटे दुश्मननो नाश करी, तेने नाबुद करवो, तेज सारुं. ए तो तमारी बदगोइ लोकोनी आगल घणीज करेछे, एक बे वखत तो में पण सांभली हती. ते माटे तमे मूर्ख लेखाउछो, ते दुश्मन शीर उपर चढतो जायछे. एटली पण तमोने कालजी नथी. दुश्मनने तो उगतोज जड मूलथी कापी नाखवो, लोकोनी एवी कहेवतछे के, " करतेसेंती कीजीयें, अथवा हणताने हणियें, एमां पाप दोष न गणीयें " एवो एवो उपदेश आपे.

वली बीजाने एवी रीतें कहेके आटलो वधो दिवस चढ्योछे तो पण हजी रसोइनी तो कांइ वातज नथी. उठो जइने रसोइनी कांइ तजवीज करो! चोको प्रमुख देवरावो, स्नान करी रसोइ कर्या पछी, सर्व काम थायछे. अमे तो उठतां वेत, महोटा परोढीयामां रसोइ करी खाइयें तो पछी अमने कांइ काम काज सुजे. इत्यादिक उपदेश आपे, प्रयोजन विना जूठुं साचुं कहेवुं, तेमां

शुं फायदो ? उलटुं एवुं करीने पोताना आत्माने बंधन करवुं. ए बीजो पापोपदेश अनर्थदंड कह्यो.

३ हवे त्रीजो हिंसाप्रदान अनर्थदंड कहेछे. पोताना संबंधी ने दाक्षिण्यताथी तथा कोइ पण गरज विना हरकोइने कहेवुं के, केम रसोइ करता नथी ? अग्नि न होयतो अमारे घेरथी अग्नि लेइ जाउ. वली ज्यारें जोइयें, त्यारें घेरथी सुखें अग्नि लइ जजो. अमारे त्यां तो ज्यारें जोइयें त्यारें अग्नि रहेज छे, माटें सुखेंथी लइ जाउ. वली एवो उपदेश करेके, अग्नि देवानुं तो महोटुं पुण्यछे. वली कहे के, आज बजारमां तरकारी एटले शाक भाजी घणुंज आव्युंछे, ते जलदी लेइ आवो, एक बे दिवस चाले एटलुं लेइ आवो, पछी फलाणी तरकारीने तो चाकुयें करी, आपणे हाथे छोलीने सारी बनावशुं; पछी तेमां हिंग, हलदर, विगेरे मशालो, सर्व नाखीने रांधशुं, तो पछी खावानी वखतें तेनी मजा पामशो; त्यारें कहेशो के, शाबाशछे. वली आगल पण तमे निरंतर एज तरकारी खाशो, जे खावानी चीज छे, ते सारी रीतें बनावीने खाइयें, कारण के कोइ जुए तो पण कहेके, ए घणा चतुर पुरुषोछे. एवी रीतें कोइना पुछ्या विना कहे तथा माग्या विना अग्नि प्रमुख आपे, अधिकरण क्रियानी अक्कल शिखवाडे, ते पण अनर्थदंड.

तथा बीजा यंत्र. जेवा के घंटी, खारणीउ, सांबेलुं, गाडी, रथ, वाहाण, चरखो, चरखी, घाणी, सूडी, दाव, छूरी, चीपीया, कातर, पावडो, तरवार, खंती, कुहाडो, फरशी, बीजा पण सर्व हथीयार नाना मोहोटा जेटला होय. ते तरवार, बंदूक, कटारी, कबाण प्रमुख तथा वली बीजां अधिकरणमां सावरणी, पावडी, पंखो, घांसनी टट्टी, जीडवुं आदि दइने तथा बीजां मंत्र, साप वींछी उतारवानो तथा तीड वर्षादना दिवसमां क्षेत्र खायछे, तेमनी झाड मंत्रथी उतारे तथा खिलावणी करे, तथा झाकिनी,

व्यंतर, चूडेल, नूतडी प्रमुख. नूत, प्रेत, ऊोड, व्यंतर, अहीत एटले एउंथी पीडातार्डने बोडाववाना ऊाडा प्रमुख उपचारो कराववा, तथा धूणाववां, खेलाववां, शीशामां उतारवां तथा मारण, मोहन, मुखबंधन करवानां, तानां, तुनां, जाडु प्रमुखना करवां, तथा काष्ट कपावीने नवां उखल, मुशल, चक्की, मांची, खाट, चोकी, अने खडाउ प्रमुख जे थकी जीवहिंसा थाय, एवां अधिकरण बनावे. बीजा पण जे थकी हिंसा थाय, एवां सर्व उपाय एमां जाणी लेवां. तथा मूलगर्न एटले गर्नादि थवानी जडी, उंषधि, यंत्र, मंत्र प्रमुख करे, करावे तथा कोइ स्त्रीने कुकर्म थकी गर्न रह्यो होय, तो ते स्त्रीने ते गर्नपात थवाना उंषध प्रमुख करी खवरावे, अथवा कोइ शातन, पातनना इलाज योनि प्रमुखमां बत्ती अथवा गोली चढावीने गर्नपात करे, अथवा बीजानी पासें करावे तथा मोहन वशीकरणनी जडी, बुट्टी, तोडावे, होम करावे, त्यां बलि प्रमुख जीवनो आपे, अथवा अपावे, तथा बीजा पण उंषध करवानां पत्र, मूल, कंद, फूल, फल प्रमुखनो हुन्नर शीखवाने तेने जमीनमांथी तोडाववां, कोइ उपाय करीने खोदी कढाववां, कोइक चीजने पीलावीने तेनो रस कढाववो, ते पण अधिकरणक्रिया अनर्थदंड जाणवो.

तथा बीजी रसायननी क्रिया करवाने आठ प्रहर, शोल प्रहर सुधी अग्नि आपे, ए रीतें हरताल, पारो, सोमल, त्रांबुं, रूपुं, सोनुं, तथा लोहने मारवानो हुन्नर करे, करावे, बीजाने बतावे. ए रसायन करवानो विधि, ए पण सर्वअधिकरण पापोपदेशनो डे. तथा बीजी तेलक्रिया, ते अनेक जडियोना रस काढे, अथवा अजदयादिक कोइ चीज उकलता तेलमां नाखे, अग्नि निचें आपी डे, तेनी तो गणती पण न राखे. एवा आरंन करे. नारायणी तेल, लाद्यादिक तेल, विषगर्नतेल, तथा शतपात

सहस्त्रपातादिक तेल प्रमुख, तेनुं करावचुं तथा ... करावचुं अथवा
बुटीथी औषधक्रिया, जाडुक्रिया, वशीकरण ... यो, प्रमुख तथ
रोधकरण, उच्चाटन, आगीयो, कतरीयो, रगती... पत्र, तेवारें को
वीरोने चलावचुं. इत्यादिक क्रियामां पोतें कुशल ... हरकारडवानें अ
ने संबंध विना दाक्षिण्यताथी पोतानी सिद्धाइ देखा... घेरथी ...
अथवा पोतानी बाबु, बुजरगी वधारवाने अर्थें लौकिक ... जजो. च
वृद्धि थाय एवा कारणे तथा महोटाइनो फांको राखवानुं ... इ जात
री ते मूढ पुरुष, धर्मसंज्ञाथी मंत्रादिक प्रयुंजे, मंत्रादिक पोतें ... कहे
अथवा बीजो कोइ तेनी सेवना करे, तेने शिखवाडे अने हिंसा...
परंपरा वधारे, परंतु ए बधां, कृत्यो, परंपरायें पापबंधन करवाना ...
पायरूपछे. तथा बीजुं पण घणा आरंभ रूप विविध प्रकारनी जडी...
बुट्टी मंगावीने तेनुं तेल काढी, घरमां राखे. अने वली लोकोने कहे
के, अमारा घरमां एटली चीज हाजरछे, जेने जोइयें, ते सुखेंथी मं
गावी लेजो. अमें तो लोकोने आसन थवाने अर्थें बनावीछे. एवी
पोतानी प्रभुता वधारवी तथा वली बीजुं कहेके, फलाणा माणसजी
आज काल तमे फिकरवान् केम रहोछो ? अमारी पासें आवजो
जे कहेशो, ते तमारी फिकर, अमे मटाडी आपीशुं. तमारुं कार्य
करी आपशुं. अमे आ अमुक चीज, राखीछे ते बधी परोपकारने अ
र्थेंज राखीछे, एवी वातो करे, पण ते मूर्ख एवुं न विचारेके एथी
महोटो अनर्थ थाशे. पोतानी तुच्छ बुद्धिना प्रमाणथी सर्व पापयोग
करी आपे, त्यारें आगलाउना पुण्ययोगें करी धारेलुं कार्य थाय,
तेवारें ते वखाण करीने कहेके तमारी शुं तारीफ करियें ! तमे
तो महोटा परोपरकारी छो, लायक माणस छो. परलोक सुधारो
छो, तमारा जेवो बीजो कोइ पण आ शेहरने विषे अमारी न
... आवतो नथी. तमारा जेवो कोण थशे. तमें तो रत्नरूप
..., बधी वातोथी आप दयाना सागरछो. सर्वलोक, पछवाडेथी

तमोने धन्य धन्य कहेछे. ते वारें एवी रीतनी पोतानी तारीफ सां भलीने पोतें घणोज खुशवखत थाय. अने मनमां फूलायने जा णेके म्हारी बडाने चाहना रहेछे. फरी एवी पोतानी घणी ता रीफ सांभलीने आगल करतां वधारे अधिकरण मेलववानो उद्य म करे. वली बीजाने पण अधिकरण पोतें आगल थइने बनावी अपावे. दुनियांमां आरंभक्रियानी उस्तादी आपे, लोकोने कहेके कोइ शिष्यने म्हारी विद्या बधी शीखवाडुं, हवे हुं वृद्ध थयो छुं माटे आ क्रिया, सर्व शीखो, ए हुन्नर रूडोछे, एमां कमाइ पण छे, अने बहुज शोभा, यश, कीर्त्ति छे, जीवदया पण पलेछे. वली अमारुं, पण नाम कायम रहेशे. तमें लोकोमां कहेशो के, अमुक माणस पासेंथी अमे ए विद्या पाम्या छैयें. तेथी म्हारो पण लोको मां यश वधशे. वली ए क्रिया शिखीने कोइनी उपर उपकार करशो, तो तेने आराम थशे, तेथी तमारुं पण नाम थशे. एवी वातो करे, पण ए समग्रक्रिया पाप रूपछे, तेनी खबर अज्ञानना प्रबलथी तेने रहेती नथी. इत्यादिकने हिंसा प्रदान अनर्थदंड कहियें.

४ चोथो प्रमादअनर्थदंड कहेछे. ते एमके, छता सामर्थ्य अ ने छता योगें जयणा करे नहीं. चालतां चाले. तेटलामां खाली गडवड करे, कारण विना पाप लगाडे, ए केवल, पोतानी अज्ञान ताथी तथा धिठाइ पणाथी लागे. जेम घणी जातिनां तेलमर्द्दन करावीने उपर उवटणा, पीठी अने सुगंध द्रव्य निष्पन्नथी तेलनी चीकणाश मटाडे, ते पीठीमां कडवी, तींखी, घणी गरम चीज आ वे तेथी अंगुठणा करावीने, पछी जीवोयें करी परिपूर्ण एवी भूमि होय, ते जग्या उपर बेसीने स्नान प्रमुख करे, त्यहां ते पीठीना पाणीनो रेलो चाले, तेथी करी त्यां जे जीवो होय, तेउ कडवा रसना गंधथी विनाश पामे, तथा ज्यां थोडा पाणीनुं काम होय, त्यां घणुं पाणी रेडे. अहींयां तजवीज करी शुद्ध भूमि जोइ

करीने स्नान मज्जन करे, तो दया पले. प्रमाददोषथी धर्मनी कोइ क्रिया गडबडज्जरी करे तथा कौतुक, नाटक, पेषणा प्रमुख, पोते जोवाने जाय अने बीजाने सार्थे लेइ जइने देखाडे, त्यारें ते दोडा दोडीथी चालता आवे, तेणे करी घणा जीवनी विराधना थाय. त्यां जइ तमासो जुए; खुशी थाय, बीजाउंनी पासें तारीफ करे. पोतानो आलोक परलोकनां साधननो जे व्यापार, जप पूजादिकनो उगरेलो वखत पण थइ जाय, तेथी ते काम पण बगडे. फरी ते, घणा तमासा जोइ ने घेर आवीने परिजनोनी आगल वर्णन करे. तेणे करी पोतें चीकणां कर्म बांधे. बीजाना पण परिणाम बगाडे तथा कोइ सती, सत करवाने माटे काठ लेवा चाले, अथवा कोइ चोरने मारवा माटे लेइ जता होय, त्यहां जोवा माटे दोडे. जोवा उजो रहे, त्यां एना मनमां ए परिणाम रहेके हवे ए चोरने क्यारें मारशे ? अने सती एनी मढुलीमां क्यारें पेसशे? अग्निमां केम बेसशे? वली ते शिवाय बीजुं पण मिथ्यात्वीनी अनुमोदना, तारीफ करे. चोर मारे, त्यां चोरना पापनी निंदा करे. त्यहां चीकणां कर्म बांधे. फरी फरी ज्यारें ते वात काढे, त्यारें तारीफ करे, ते वखतें पण चीकणां कर्म बांधे. एम केटला एक वखत वारं वार कर्म बांधे. तथा काम शास्त्र जे कोकशास्त्रादिक तेनो घणो परिचय करे. चोराशी जोगासन शीखे तथा बीजाने शिखवाडे. पडवादिकथी मांडीने पूर्णिमा तिथि सुधी शुदि तथा वदिमां चढतो उतरतो कामदेवनो वास तेने पोतें धारे, अने बीजाने धरावे. नखशिखनां वर्णनादिवालां शास्त्रने जणे अने जणावे तथा जावभेद अंग उपांगने बतावे. वली नदीने तट, जलक्रीडा करवाने जाय. बीजाने बोलावे. ते नदीमां ज्यां सुधी पोतानो परसेवो मेल धोवाइने ते मेलनुं पाणी चाले, त्यां सुधी सर्व जल जीव जे सूक्ष्म होय, तेउंनो नाश थाय. वली होशें करीने पोतानी

कामसंज्ञा वधारवाना हेतुएं केफी वस्तु जे माजम, गोली, चूर्ण प्रमुखछे, ते खाय. वली पंचेंड्रियवधोत्पन्न एवी, मलमनी पट्टी लगाडे, वंधेजनुं औषध करे. बीजाउंने शिखवाडे, तथा जे वचने करी पोताने तथा पारकाने कामसंज्ञा वधे, अने चेतना बगडे, एवां वचन बोले, बीजा पासें बोलावे, तथा हाथना, मुखना, नेत्रना, अने त्रकुटीना चाला करे. जे चाला देखीने बीजाने हसवुं आवे. वली कोइनी मश्करी पोतें करें, बीजा कने करावे, तथा अत्यंत मर्मनां वचन बोले.

१ तथा राजकथा, ते राजानी दोलत वखाणे, राजानी लढाइ वखाणे के एवी रीतें फोज चढी अने एवी रीते लढाइ थइ. ते अमे पण उन्ना रहीने दीठीछे. एवी रीतें मनसुबो करीने डुश्मनने जेर कस्या. ए महोटो शमसेर बाहादूर कहेवाय छे. वली राजाना जाग्यने वखाणे. कहेके ए राजानी बराबरी कोण करे? आजे तो, ए बीजो इंद्रतुल्यछे. अने राजाना काम जोग, वखाणे ने कहे के, आटला शेर अत्तर तो नित्यजोगमां आवेछे, वली राजाना अंगबलनुं वखाण करे.

२ तथा काम काज विना देशकथा तत्रत जे इंड्रियसुख जे खान पानादिक, तेने वखाणे, अथवा वखोडे. ते सांजलीने बीजाउंनी पण चेतना तेवा विषयो उपर राचे. पोताने आरंजनी अनुमोदना थाय, तेथी ते क्षेत्रविपाकी कर्म बंधाय.

३ तथा स्त्रीकथा जे स्त्रीनुं रूप, रंग, चतुराइ, तेना बदफेलनी निपुणता, तथा शुकबहोत्तेरीनां दृष्टांत संजलावे, जारी विजारी करी जाणे. ते महोटो चतुर केहेवाय, ते वातो सांजलीने कइक पुरुषनुं परिणाम बगडे, स्त्री सांजलीने फेल शीखे, पोताने विषय कर्म जूदी जूदी जांतिनां बंधाय.

४ तथा जक्तकथा जे खावुं पीवुं अशनादिक चारे प्रकारना आ

हारनी कथा कहे, वखाणे, तथा वखोडे. कोइ रसवतीना संस्कारनी वात तरेह तरेहनी करीने तेने वखाणे, ते रसवती बीजाने शिखवा डे. अने कहेके फलाणी रसोइ, फलाणी तरकारी आ रीतें बना वीयें तो ते एवी स्वादिष्ट थायके देवता पण पोतें आवीने आरो गे, परमेश्वरने पण तेनो जोग चढे, एवी बनेछे. अहींयां निष्क लंकने पण कलंक लगाडे. वली एणे करी गाढ, मिथ्यात्वनुं पो षण थाय. केटला एक जीव, ते सांजलीने एवा आरंजमां प्रवर्त्ते. तथा एक दिवस बहु आरंज करीने खाधुं, ते फरी फरी याद करी ने वखाणे, त्यारें वारंवार चीकणां कर्म बांधे. ए चार विकथा क स्वाथी लाज, मर्यादा, नीति तथा धर्म अने गंजीरतानी हानि करे, एथी लबाड कहेवाय. वली ए चार विकथा न करे, तो तेथी कांइ पोतानुं काम बगडे नहीं, अने कांइ इंद्रियसुखमां पण हा नि न थाय, केवल नकामुं चीकणुं कर्मबंधन थाय. ए प्रमाद थी थायछे. ए कुचाल जो मटाडीदे तो मटे, ए रीतें कामकाज विना फोकट आत्मा दंमावे, ए प्रमादाचरित अनर्थदंड कहीयें.

हवे ए व्रतना पांच अतिचारछे, ते लखेछे.

१ प्रथम कंदर्प्प कुचेष्टा अतिचार. ते एमके मुखविकार, भ्रकु टीविकार, नेत्रविकार अने हाथनी संज्ञा बतावे, पगना विकारनी कुचेष्टा करे, अने ए चेष्टा करतां थकां बीजाने हसवुं आवे. कोइ ने कषाय उपजे, तेथी क्यांनी क्यां चाली जाए, ए कारणे पोता नी लघुता थाय, धर्मनी निंदा थाय, एवी कुचेष्टा करे, तेने प्र थम अतिचार जाणवो.

२ बीजो मौखर्य अतिचार. मुखथी अतिशय वाचाल पणुं करे, एटले असंबंध वचन बोले; जेणे करी बीजानी एब प्रगट थाय, अने ते कष्टमां पडे. वली पोतानी लघुता थाय, वैर वधे, धिट्टा

इ, लबाड, चुगलिउं, इत्यादिक नाम पडे. लोकमां लाज गमाडे. एवी रीतें घणुं वधीने बोलवुं, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो जोगाधिक आरंभ अतिचार. ते एमके जोग, उपजोगमां, स्नान, पान,आहार,धोवन,विलेपन, इत्यादिक शौचता प्रमुख आ रंभनी क्रियाउंछे, ते पोताना खप करतां वधारे करे. नकामो आरंभ करे, एणेकरी द्रव्यनो व्ययथाय. घणो इशकधरे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो काममर्मकथन अतिचार. ते एमके, कामनां मर्म बोले जेना बोलवाथी पोतानी तथा बीजानी चेतना काम क्रोध मय थइ जाय. एवुं वे तरेहनुं बोलवुं तथा विहरनी वात दुहा, साखी, रेखता, फुलणा, कवित्त, परजीया, श्लोकमां शृं गाररसनी कथा कहेवी. ते चोथो अतिचार.

५ पांचमो अधिकरणदोष अतिचार कहेछे. ते एमके पोताना काम काज करतां अधिक अधिकरण मेलवीने तैय्यार करी राखे. सर्व अंगोपांग मेलवीने सुधारीने राखे. ते अधिकरण कहीयें. जे णे करी हिंसादिक पापस्थाननी पुष्टता थाय एवा रथ, उखल, मुशल, घण, चक्की, छरी, तरवार, कटारी, बंदूक, कमान, तीर, त रकस, ढाल वरछी, सूडी, छिनी, फरशी, पावडो, कोदाल, केची, आरा, सांडसी, दांती, कोदाली प्रमुख हथीयार पोताने जरूर जोइयें तेथी सर्व वधारे बनावे. अने ते हथियार, विना संबंधें अने मा ग्या विना दाक्षिण्यताथी बीजाने चाहीने आपे. ए पांचमो अ धिकरण दोषनो अतिचार. ए आठमा व्रतना पांच अतिचार जा णवा. पण आदरवा नहीं. समजु श्रावकछे, तेतो त्याग करे. ए एमने महोटो लाजछे.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे अष्टमअनर्थदंडविरमणनामा तृती यगुणव्रते पंडित श्रीउद्योतसागरगणिनाकृतभाषा संपूर्णा ॥ ८ ॥

---

॥ अथ ॥

## ॥ नवम सामायकनामक प्रथमशिक्षा व्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अब चो शिक्षा व्रत कहुं, नवम सामायिक नाम;
दोष वतीसे छांमि करि, वैठे एकंत धाम ॥ १ ॥
द्वादश कायाके प्रथम, पुनि दश वचन प्रमान;
मनके दश दोष जु मिली, सब वत्तीस सुजान ॥ २ ॥

एवी रीतें छठुं, सातमुं, अने आठमुं ए त्रण गुण व्रतो कह्यां. हवे पूर्वोक्त आठे व्रतने अने आत्मगुणने पुष्टिकारक, अविरति विषय कषायमां तदात्मभावें मळ्यो, अनादि अशुद्धता जे विभाव परिणामनी टेव ते मटाडवाने, अने आत्मिक गुणानुभव करवाने, सहजस्वरूप रसास्वादनी मजा पामवाने, नवमुं सामायिक करण रूप पहेलुं शिक्षा व्रत लखेछे.

त्यहां सामायिक ते जघन्य वे घडी प्रमाण, ते आर्त्तरौद्र ध्याननी परिणति रूप क्रिया ते अशुभ सावद्य व्यापार कहीएं; तेनो त्याग करीने आत्माने समता परिणाममां राखे, ते सामायिक कहीयें. अथवा सम आय सामायिक एटले सम के० सम्यक् प्रकारें रत्नत्रयी जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप सहज रूप उदासीनवृत्ति मुक्तिनो मार्ग, ते सम कहीएं. तेनो जे आय के० लाभ थाय जेने विषे तेने सामायिक कहीयें. ए सामायिक व्रत, बे घडीनी मुनिना भावनी वानकी अथवा निशानीछे. अने अनादि कालना संसार परिभ्रमण थकी विश्राम करवानो रूडो उपायछे. हवे जे साधक होय, ते बे घडी स्वरूप सन्मुख चेतना करीने अने सहज स्वरूपनी चाहना धरीने अने सकलसावद्य त्रिकरणयोगें तजीने सामायिक करे. ते बत्रीश दोष टालीने करे त्यारें शुद्ध थाय. तेमां प्रथम कायाएं करी बार दोष थायछे, ते बतावेछे.

१ प्रथम दोष. सामायिक करती वखतें पग पर पग चढावीने उंचे आसने पलांठी वालीने बेसे, ते माहात्म्य पर्यायथकी विनय गुणनी वृद्धिनी हानि करे, अथवा वस्त्रवडे जानु एटले गोठण बांधी करी बेसे, ते प्रथम दोषछे, माटे जेणे करी विनयगुण रहे, उद्धता न जणाय, अजयणा न होय, एवा आसनें बेसे.

२ बीजो चलासनदोष. ते आसनने स्थिर न राखे, वारंवार आगल पाछल चलायमान करे, पोतें चपलता घणी करे, मूलमार्गे तो एवोछे के, श्रावक एकज आसनें बेसीने सामायिक पूरुं करे. अडगपणे रहे, कदापि रोग निर्बलतादिक कारणे एकासनें टक्युं न जाय ने फेरववुं पडे, तो उपयोगसंयुक्त जयणापूर्वक उठी उठीने चरवलाथी पुंजन प्रमार्जन करीने आसन फेरावे. पण एम कीधा विना चपलता राखे, तो बीजो चलासनदोष लागे.

३ त्रीजो चलदृष्टिदोष. ते सामायिक लेइने पछी दृष्टिने नासिका उपर राखे, अने मनमां शुद्ध श्रुतोपयोग राखे, मौन पणे ध्यान करे. तथा जे सामायिकवंतने शास्त्राभ्यास करवो होय, तो जयणायुक्त थइ मुहपत्ति मुखें बांधीने पुस्तक उपर दृष्टि राखीने जणे तथा सांभले. तथा सामायिकमां काउसग्ग करवो होय, तो चार अंगुल आगल अने साडा त्रण अंगुल पछवाडे एटली बन्ने पगनी वचमां मोकलाश रहे, एवी योगमुद्रायें उभो रहे, बन्ने बाहुउ प्रलंबित राखे अने दृष्टिने नासिका उपर राखे, अथवा जमणा पगना अंगुठा उपर राखे, ए शुद्ध सामायिकनी शैलीछे. ते शैलीने छोडी करीने चपलपणे चारे दिशाउयें चकित मृगनी परें नेत्रो फेरवे, ते त्रीजो दोष.

४ चोथो सावद्यक्रियादोष. तेमां कायायें करी कांइक सावद्यक्रिया करे, अथवा सावद्यक्रियानी संज्ञा करे, ते चोथो दोष.

५ पांचमो आलंबनदोष. ते जे सामायिकमां दिवालप्रमुखनो आशरो छोडीने निरवष्टंभ एकासने बेसवुं, एवी रीतछे; ते रीत

त्यागीने दिवाल अथवा थांजलाने पीठ लगाडीने बेसे, अथवा बीजा कोइ पदार्थनो आशरो लइ बेसे, तो आलंबननामें पांचमो दोष लागे, कारण के, पुंज्या विनानी दिवाल उपर घणा जीवोनो विश्रामछे, त्यहां पीठ लगाडतां घणा जीवोनी विराधना थाय, तथा निद्रादि प्रमाद वधे, ए माटे आलंबन नामें ए पांचमो दोषछे.

६ छठो आकुंचनप्रसारणदोष. ते एमके सामायिक लेइने नकामो कारण विना हाथ पग संकोचे, अथवा लांबा करे, अने सामायिकमां तो पुष्ट कारण विना हालवुं चालवुं कांइ कल्पुं नथी. जरुरथी लाचार थये थके, चरवला प्रमुखथी पुंजन प्रमार्जन करी हाथ पग हलावे. मनमां आकुंचनस्थिति न सहवानो खेद धरे. एवी शैली विना नकामा हाथ, पग, हलावे, तो छठो दोष लागे.

७ सातमो आलस्यदोष. ते एमके, सामायिकने विषे अंगें आलस मोडे, टाचका फोडे, करडका करे, कम्मर वांकी करे. ए प्रमाणे प्रमादनी बहुलताथी व्रतमां खेद उत्पन्न थाय; त्यारें शरीरमां अरतिजाव जागे, ते वखत आलस मोडीने असुहामणो उठे, ए सातमो दोष.

८ आठमो मोटनदोष. ते सामायिकमां अंगुलि प्रमुखने वांकी करीने करडका काढे, ए पण प्रमादनी प्रबलताथी थाय. ए आठमो दोषछे. छठो, सातमो अने आठमो, ए त्रण दोष, निद्राप्रमादनी उपाधिथी थाय अने दर्शनावर्णी कर्मना उदयथी थायछे.

९ नवमो मलस्यदोष. ते सामायिक लेइने अंगमां खस थएली होय, तेने वलूरे, मूल जांगें तो सामायिक लीधा पछी खसप्रमुखनी उपाधि थइ तो समजवुं के, चेतना ठीक पणे रही नहीं, विकल्प थवा लाग्या. ए प्रमाणे शुज आलंबनमां चेतना स्थिर रहे नहीं, त्यारें लाचार थइने चरवला प्रमुखथी जयणा पूर्वक पुंजन प्रमार्जन करीने मनमां पोतानुं अखण मन न रह्युं, तेनो पश्चा

त्ताप करतां, महा पुरुषनी धीरजता मनमां जावतां, धीमे धीमे खसने वलूरे, एवी शैलीछे. तेम न करे, तो नवमो दोष लागे.

१० दशमो विमासणदोष. ते सामायिकमां अंग वीमासण करावे, एटले हाथनो टेको दे, गले हाथ देइने वेसे, ते दशमो दोष.

११ अगीयारमो निद्रादोष. ते सामायिक लेइने निद्रा करें. ते सर्व घनघाति कर्मनी प्रकृतिर्उछे; ते सामायिकने निष्फल करेछे.

१२ बारमो दोष एके, सामायिकमां टाढ प्रमुखना प्रबलथी पोताना समस्त अंगें सारी पेठें वस्त्र उंढे.

ए बारे दोष, सामायिकमां कायाथकी उत्पन्न थाय छे, ते तजवा. हवे वचनना दश दोष छे. ते कहेछे.

१ प्रथम कुत्सित बोलनो दोष. ते एम के, सामायिक लेइनें कुवचन बोले. जला उत्तम पुरुषने कुवाक्य बोलवां लायकज नथी. तेम छतां जे वचन सांजली कोइने लज्जा, जय, कषायादिक उपजे, तेवां वचन बोले, ते कुवचनदोष कहीयें. ए प्रथम दोष.

२ वीजो सहसात्कारदोष. ते सामायिक लीधा पछी जे वचन बोले, ते आगल पाछल उपयोग दीधा विना बोले तथा अविचार्खुं बोले, अने जेम मनमां आवे तेम कहे, ते वीजो दोष.

३ त्रीजो असदारोपणदोष. ते सामायिकमां कोइनी उपर खोटुं तोहमत आपे, नकर्यांने कर्युं कहे, ते त्रीजो दोष.

४ चोथो निरपेक्षवाक्यदोष. ते सामायिक लेइ शास्त्रनी अपेक्षा विना पोताना छंदें बोले. जैनमार्गीने तो निरंतर सापेक्ष वचनज बोलवुं जोइएं, निरपेक्ष वचन न बोलवुं; तेम छतां सामायिक लइने पोताने जावे तेम बोले. ते चोथो दोष.

५ पांचमो संक्षेपदोष. ते सामायिकमां सूत्रपाठें वचन संक्षेप करी बोले, अक्षर पाठादि हीन करीने कहे, यथार्थ कहे नहीं.

६ छठो कलहकर्मदोष. ते सामायिकमां साधर्मीसाथें क्लेश करे.

अने सामायिकमां तो कोइ मिथ्यामति गाल पण दे, अथवा उपसर्ग करे, कुवचन कहे, तो पण तेनी साथें कलह न करवो. शुद्ध जैनमार्गी तो विना सामायिकें पण कोइ तेना उपर कुवचननी प्रेरणा करे, तो पण तेनी साथें कलह न करे, जेम तेम करी क लहने समाववानी चिंता करे, तो ते साधक, सामायिकमां सा धर्मीनी साथें क्लेश केम करे ? अर्थात् नज करवो जोइयें, अने जो करे, तो बठो दोष लागे.

७ सातमो विकथादोष. ते सामायिक लेइने राज्यादिक विगेरे नी चारे विकथा करे, सामायिकमां तो सिज्झाय अने ध्याननी मु ख्यता कहीछे, कदापि ते न करे तो वेठो वेठो धर्मकथा करे अथ वा महापुरुषनां चरित्र अथवा तीर्थादिकनो महिमा कहे, पण जेवी तेवी कर्मबंधनी विकथा न करे, जो करे तो सातमो दोष लागे.

८ आठमो हास्यदोष कह्यो छे. ते एमके सामायिक लेइने वी जानी मश्करी करे नहीं. कारणके, हास्यरूप मोहनीना उदय थी हास्यरसवडे आ लोकमां कोइनी मश्करी करे, ते लघुताने पामे, वली लोकमां पण कहेवतछे के "अनर्थनुं मूल हांसी, अने रोगनुं मूल खांसी" वली परलोकमां तो, ते हास्यरसकर्मउदय आ वे त्यारें ते कर्म, रुदन करतां पण बूटे नहीं. ते कारण माटे साध के, सहेज मश्करी पण कोइनी करवी नहिं, त्यारें सामायिक लेइने कोइनी मश्करी करायज केम ? जो करे, तो ए दोष लागे. नीति शास्त्रमां पण उत्तम पुरुषने हास्य करवुं निषेध्युं छे, माटे ए हास्यदोष त्याग करवो.

९ नवमो अशुद्धपाठदोष. ते जे सामायिक लेइने सामायिकना सूत्रादिक उच्चार करे तेमां मुखथी संपदाहीन, अथवा ह्रस्व अक्ष रने ठेकाणे दीर्घ बोलावे, दीर्घने ठेकाणे ह्रस्व बोलावे, कोइ ठे

काणे मात्राहीन, अधिक उच्चरे. एम अशुद्ध पाठनो उच्चार करे, यद्वा तद्वा सूत्राक्षर कहे. ते नवमो अशुद्धपाठदोष.

१० दशमो दोष, मुणमुण बोले, एटले जे सामायिक लेइने उतावळें पाठनो उच्चार करे. स्पष्ट प्रकट अक्षर न उच्चारे. पदनुं गाथानुं, ठेकाणुं कांइ मालम पडे नहीं, मुख थकी अक्षर कांइ ठीक पडे नहीं. कोइ जाणे माखी वण बणाट करेछे ? एम गडबड करीने पाठ पूरो करें, ते दशमो दोष जाणवो.

ए दश दोष वचनना जाणवा. हवे मनना दश दोष कहेछे.

१ प्रथम अविवेकदोष. ते सामायिक लेइने, सर्वक्रिया करे पण मनमां विवेक नहीं, एटले सामायिक शुं चीजछे. विवेक सहित सामायिक करीने कोण तख्या छे ? एनाथी शुं फलछे ? ए कोनुं साधनछे ? एमां कोण परसाध्यछे ? व्यवहार सामायिक कयुं ? अने निश्चय सामायिक कयुं ? समायिकनी शुं शैलीछे ? एवा विवेक विना जे सामायिक करे, ते अविवेकनामा प्रथम दोष.

२ बीजो यशवांछादोष. ते सामायिक करीने यश एटले कीर्त्तिनी इछा करे. सामायिक तो निर्जरानुं हेतुछे, अने शिवपदनुं मुख्य साधन छे. ते सामायिक करीने यश इछे, ते बीजो दोष.

३ त्रीजो धनवांछा दोष. ते सामायिक करतां धनादिकनी इछा करे के आ सामायिक कख्याथी मने धन मलजो. अथवा सामायिक करतां मनमां विचारे के, कोइ एक भव्य प्राणी, धर्म जाणीने अथवा सामायिकना प्रसादें मने धन आपे. ए त्रीजो दोष.

४ चोथो गर्वदोष. ते सामायिक लेइने मनमां गर्व आणे के, हुं धर्मने जाणनारो छुं. वली जाणे के, अहो ! हुं केवुं सामायिक करुंछुं ? बीजा मूर्ख लोको सामायिक करवामां शुं समजे ? हुं तो संसारी कामकाजमां पड्योछुं, तोपण सामायिक करुंछुं, एटलें महारा जेवुं सामायिक बीजो कोण करी शके ? बीजा तो बछा बिचारा

पेट नरवावालाछे, बत्रीश दूषण टालीने शुद्ध सामायिक तो हुंज करुंबुं, एवो गर्व करे. ते चोथो दोष.

५ पांचमो नयदोष. एटले नय पामतो थको सामायिक करे, ते एमके, लोकमां हुं मुख्य श्रावक कहेवाउं बुं, माटे जो हुं सामायिक नहीं करुं, तो लोक कहेशेके श्रावककुलमां उपज्यानुं फल शुं ? एवी सहु कोइ मारी निंदा करशे. वली लोक कहेशे के जूर्ज ! फलाणो श्रावो वृद्ध थयो छे, तो पण कांइ धर्मनी निष्ठा तेना मनमां श्रावतीज नथी. वीजुं तो सर्व रह्युं, पण दररोज एक सामायिक करवुं, तो ते पण करी शकतो नथी. एवुं ते शुं छे ? नाम तो महोटुं धरावेछे, पोसह पडिकमणां करवानी तो हालज वखत छे, ते पण नथी करतो, एवो लोक ठबको देशे, माटे मनमां सामायिक करवानो नाव नहीं, पण अपवादनयथी सामायिक करे, ते पांचमो नयदोष.

६ छठो निदानदोष. ते सामायिक करीने, धनादिकनुं अथवा बीजी कोइ पोतानी इछित वस्तुनुं नियाणुं करे के, श्रा सामायिकनुं फल होय, तो श्रा लोकमां घणुं धन पामु, परलोकमां पण देवतानां सुख पामु, एवो श्राशय राखीने करे, ते कोडीने अर्थे क्रोडनी चीजने हारेछे, सामायिकनुं फल महोटुंछे, तेम छतां नियाणुं कस्याथी ते वेची नाख्युं, एवुं करे ते छठो दोष.

७ सातमो संशयदोष. ते एमके जे सामायिक करे, पण संशय मटे नहीं, संशय नर्युं ते सामायिक करे, पण तेने तत्वनी प्रतीति नहीं. मनतां एम विचारे के कोण जाणे सामायिकनुं शुं फल मलशे ? करीयें छैयें तो खरा, पण श्रागल उपर एनुं फल थशे के नहीं ? एवो संशय धरीने करे, ते सातमो दोष.

८ श्राठमो कषायदोष. ते एमके कषाय नर्युं सामायिक करे. अथवा कोइने सार्थे रोष वर्त्तेछे तेथी तेने जवाब देवो नथी, तो

तेटला वास्ते सामायिक करी बेसे. एवी रीतें कषाय जख्युं सामायिक करे, तेमां शुं फल मले ? सामायिकमां तो पूर्वें जे कषाय कस्यो होय, तेनो पण परित्याग करे; एवुं रहस्यछे तेम छतां जो ते कषाय सहित सामायिक करे, तो तेने आठमो दोष लागे.

ए नवमो अविनयदोष. ते एमके, विनय रहित थको सामायिक करे. विनय ते गुरुनो अथवा थापनाचार्य प्रमुखनो जाणवो. जैनशैलीमां तो सर्वधर्मनी करणी, विनय विना नथी. धर्मनुं मूल पण विनयछे, विनयें करीने बहुमाननी पुष्टताथी अगणित फल थायछे, थोडी घणी धर्मकरणी करे, त्यहां पण जो विनय, बहुमान अति घणुं होय, तो एथी करी ते महाव्रत जेवुं फल पामे. ए माटे सामायिकमां तो विनयसहाय सामायिक सफल छे. ते विनय जे न करे, ते नवमो दोष.

१० दशमो अबहुमानदोष. ते एमके, बहुमान रहित सामायिक करे, पण भक्तिभावथी न करे. सामायिक उपर तो घणुं बहुमान राखवुं जोइयें जेम कोइ दुःखी जीव,रोग,शोक,दुःख,दरिद्रतामां पची रह्यो थको महा दुःख भोगवे छे,एटलामा कोइ कृपावंत महोटो उपकारी सुजन होय, तेने जोतांवेत तेना उपर दया उपजे. त्यारें ते दरिद्रीने पोताना घरमां लावीने औषधादिक करी सर्वदुःख मटाडे, धनादिक आपी दरिद्रता मटाडे, बीजी पण सर्व रीतें सहायता करे. ए प्रमाणे पोतानी बराबर करी बेसाडे, त्यारें ते दरिद्रीने ते उपकारी पुरुष उपर केवुं बहुमान अने केवी भक्ति रहे ? मनमां विचारे के ए उपकारी उपर मारां प्राण पण कुरबान छे. हवे ए तो एक आ लोकना पुद्गलिक सुखनो उपकारी छे, तेनी उपर एटलुं बहुमान रहे छे, त्यारें सामायिक, तो आ लोक अने परलोकने विषे पुद्गलिक तथा मोक्ष, ए उभय सुखनुं दाता छे अने बाह्याभ्यंतर दुःखनुं मटाडवावालुं छे, ए माटे

ते सामायिक उपर तो एना करतां पण महोटुं बहुमान अने अधिक ज्नक्ति राखवी जोइयें. ते प्रमाणे न करे, तो दशमो दोष लागे.

एवी रीतें मनना दश दोष, तेम वचनना दश, अने कायाना बार, ए सर्वे मलीने बत्रीश दोष थाय. तेउने टालीने जे शुद्ध सामायिक करे, ते सुखनुं कारण कहीयें. बत्रीश दोष रहीत एक सामायिकनुं फल श्री जैनागममां व्यवहारथी तो आ प्रमाणे कह्युंछे, जे बाणुं करोड, उंगणशाठ लाख, पचीश हजार, नवशें पचीश, एटला पब्योपम अने वली एक पब्योपमना नव जाग करवा, तेमांना आठ जाग उपर एटला पब्योपम देवतानुं आयुष्य बांधे, अने नरकगति कापे, ए माटे श्रावकने प्रतिदिन सामायिक करवुं, जेणे करी जन्म सफल थाय. ए व्यवहारशुद्ध सामायिकनुं फलछे; अने निश्चय शुद्धोपयोगथी सामायिकनुं फल, अनंत गणुंछे, एटले ते यावत् सिद्धिस्थानकें पहोचाडे. ए माटे सामायिक छे, ते एकांत उपादेय छे. ते सामायिकना पांच अतिचार छे, ते कहेछे.

१ प्रथम कायदुःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, पोताना शरीरना अवयव जे हाथ पग प्रमुख, ते अणपुंजे, अण प्रमार्जे हलावे. जींतने पीठ लगाडीने बेसे, निद्रा प्रमुख करे, ते कायदुःप्रणिधाननामे प्रथम अतिचार.

२ बीजो मनदुःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, मनमां कुव्यापार चिंतन. ते क्रोध, लोज, द्रोह, अजिमान, ईर्षा,असूया प्रमुख दोषसहित कार्यव्यासंगासक्तसंभ्रमचित्तसहित सामायिक करे, ते मनदुःप्रणिधान नामे बीजो अतिचार.

३ त्रीजो वचनदुःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, सामायिकमां सावद्य वचन बोले, अथवा पद अक्षरादिक अशुद्ध बोले, ते उच्चारतां थकां सूत्रनी स्पष्टता मालम पडे नहीं अने अशुद्ध सूत्र उच्चारे, अर्थनी पण मालम पडे नहीं. अतिशय चपलपणा

यें गडवडथी कही जाये; ते वचनदुःप्रणिधान त्रीजो अतिचार.

४ चोथो अनवस्थादोषरूप अतिचार. ते एम के, सामायिक जे वखतें करवुं जोइयें, ते वखते करे नहीं; अने करे तो यद्वा तद्वा करे, अथवा हठथी पाले अथवा उतावलथी पाले, आदर विना करे, स्वेच्छायें क्रिया करे, ते अनवस्थादोषरूप चोथो अतिचार.

५ पांचमो स्मृतिविहीन अतिचार. ते एमके, सामायिक लेइ ने नूली जाय. क्रियादिकमां भ्रांति पडे. सामायिकदंमक सूत्र उच्चार्यां के नथी उच्चार्यां ? अथवा पाल्युं के, नथी पाल्युं ? एवी भ्रांति, प्रवल प्रमादना उदयथी थाय. सर्व साधननुं मूल तो स्पष्ट यादगिरिछे. जागृतनो उपयोगछे ते तो विसरी गयो, त्यारें सामायिकना फलमां वट्टो लागे. ए विस्मृतिरूप पांचमो अतिचारछे.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे नवम सामायिकनामा प्रथम शिक्षाव्रतकथने पंमित श्री उद्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा ॥ ९ ॥

---

॥ अथ ॥

॥ श्री दशम देशावगाशिकनामा द्वितीय ॥

॥ शिक्षाव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

श्रीपारस पदकमलयुग, वंदू वडे उमेद;
देशावगाशिक दशम व्रत, तिसका कहौं सुभेद ॥ १ ॥

हवे देशावगाशिक एटले देशावगाहीनो तो, छहा व्रतमां राख्युं जे दिशिपरिमाण, ते तो यावज्जीवनुं कह्युं छे. ते दिशिक्षेत्र घणां छे, ते उनुं कांइ नित्य काम पडतुं नथी, ए माटे दिनदिन प्रत्यें तेमां संक्षेप करे, के आजना दिवसमां दश कोश, वा पन्नर कोश, वा पांच कोश अथवा नगरना दरवाजा सुधी, अथवा कोश, अर्द्धकोश, बाग बगी

चा सुधीनी जग्यानी दिशि राखे. अथवा अमुक घरनी हद्द सुधी इ त्यादिक हद्दपर्यंत जवुं आववुं उपरांत जावानो नियम करे. एवुं करवुं, ते देशावगाशिक व्रतछे. ए छठा व्रतनुंज विशेषछे, तेतो याव जीव संबंधनो नियम कर्योछे अने एतो चोमासुं, वीश दिवस, दश दिवस, पांच दिवस, अहोरात्री, अथवा दिवस सुधी अथवा प्रहर अथवा मुहूर्त्त सुधीनुं पण. एटला व्रतमां पूर्वे बहु क्षेत्र रह्यां हतां तेउनो दोष अहीं संक्षेप कर्यो. क्रिया उतारी, एटले दिग् व्रतनुं देशावगाशिक नित्य प्रत्यें परिमित क्षेत्रगमननुं परिमाण राखे जे, हुं कायायें करी फलाणे गाम, फलाणी जग्यायें, देवलें, दरगाहें अथवा देवीना गामें, अथवा कोइ वीजी जग्यायें जइश. ते उपरांत जवानो मने निषेध छे. एमां जे दिग्व्रती प्राणीने देश परदेशनो व्यापारछे, ते व्रती एम कहेके, मारे कायायें करी अमु क क्षेत्रथी उपरांत जवानो निषेधछे. पण दूर संबंधनो कागल प्र मुख लखवो ने वांचवो ते अथवा कोइ माणसने मोकलुं ते मने माफ छे तथा ते देश संबंधी वात प्रमुख सांजलवी पण माफछे अने जेने दूरनो व्यापार नथी, ते तो परिमाण उपरांतनी हद्दनो आवे लो कागल पण वांचे नहीं, कोइने कागल लखीने मोकले पण नहीं. अने जो चित्तनी प्रकृति संकल्प विकल्पमां न होय तो ते दूर देशनी वातो पण सांजले नहीं अने वात करे पण नहीं. परंतु जो एवी रीतें न रही शकाय तो व्रतना जांगामां छूट राखे अने जा णतां थकां परिमाणमां दोष लगाडे नहीं. ए देशावगाशिक नि त्यव्रत करे, ते सदा सर्वदा सवारना पहोरमां चौद नियमनी याद गिरीमां सर्व संज्ञारीने राखे. वली पण एने संक्षेपीने रात्री संबंधी जूदां राखे, अने जे अहोरात्रनां करे, ते सवारना पहोरमांज याद करे. एवी रीतें गुरुपासेंथी विधिसहित व्रत धार्यां होय, तेम पा ले. ए देशावगाशिक व्रतना पांच अतिचार छे. तेनां नाम लखेछे.

१ पेहेलो आणवण प्रयोगातिचार. ते नियमनी भूमिका बाहेरनी कोइ चीज होय, तेनी गरज पडे, त्यारें विचारे के मारे तो नियम उपरांत भूमियें जावुं नथी अने जीवनी चाहना तो ते चीज मांज लागी रहीछे. त्यारें कांइ पोतानी बुद्धि उपार्जे अने ते भूमि भणी जनारा कोइने देखीने कहेके हे भाइजी! फलाणी जग्या सुधी जाशो तो अमारुं पण कांइ कामछे, ते पण तमे करता आवजो. ते सांभली ते माणस कहेके हाजी, हुं जइश. ते समयें ते व्रती कहेके, त्यारें तो अमुक चीज मारे माटे जरूर लेता आवजो त्यारें ते तरफ जनाराने ते जणश, तेनी महोवतें करी लाववी जोइयें. एवी रीतें ते चीज, नियमबाहेरनी भूमिथी मंगावी ले अने पोताना शाणपणाथी ते व्रती विचारे के, मे मारुं व्रत पण राख्युं, अने मारे कामें जे चीज जोइती हती, ते पण आवशे, अने एतो पोताने कामे जायछे तेनाथी हुं म्हारुं पण काम करावुं छुं, एनो बोजो मारा माथा पर नथी. एवी रीतें बुद्धिनुं अज्ञानपणुं करे, पण एम न विचारे के, एथी करी उलटो तोटो थाय छे. केम के, जे कारणे देशावगाशिक व्रत जे कर्युंछे, तेमां तो जातां आवतां हिंसाप्रमुख दोष बहुज लागे. ते दोषनी क्रिया मटाडवा माटे कर्युंछे. अने जेवारें बीजा माणस पासें नियम क्षेत्रथी बाहेरनी चीज मंगावे, ते वारें ते आजाण्यो पुरुष, अजयणा करतो जइने ते चीज लइ आवे, तेनाथी तो पोतेंज जइने लइ आवे तो सारुं? कारणके पोतें तो धर्मरुचियुक्तछे, तो तेथी जयणाथी जवाय, तेनाथी हिंसा केम थाय? अने ते अज्ञानी तो अनेक हिंसादि दोष लगावीने ते चीज लावे, फरी तेनी पापक्रियानी अनुमोदना करी जाय. जुओ! फलाणो अमुक क्षेत्रें गयो हतो तेथी सारुं थयुं अमारुं पण काम थयुं. ए माटे व्रतधारी थइने एवा कपटव्रतनो भांगो न करे. व्रतधारी तो गुरुनी आज्ञायें अने शास्त्रनी रीतें

जे कह्युं होय, तेज करे, ते माटे नियम लेइने बाहेरथी बीजानी पा सें कोइ चीज मंगावे, ते आणवणप्रयोग प्रथमातिचार जाणवो.

२ बीजो पेसवणप्रयोग अतिचार. ते एमके जे नियमभूमि काथी बाहेर कोइ चीज मोकलवी होय. त्यारें पहेलांथी मन सुबो करे के आ चीज तो मारे जरुर मोकलवी छे. पछी नियमभूमि कानी बाहेर कोइ आदमी जतो होय, तेनी साथें ते चीज मोकले ने मनमां खुशी थायके मारुं व्रत पण अखंड रह्युं, हुं पण नियम भूमिकानी बाहेर गयो नहीं, अने में मारुं कार्य पण साध्युं. एवी रीतें करे, तेने तेमां उलटो तोटो पडे. अने वली एम करवा थी तेने बीजो पेसवणप्रयोग अतिचारदोष लागे. ए माटे जे स मजु श्रावक होय, ते अतिचार न लगावे.

३ त्रीजो सद्दाणुंवाय अतिचारछे, ते कहेछे. शब्दानुपात अति चार. ते एके, पोताना नियमक्षेत्रनी बाहेर कोइ पुरुष जतो होय, तेनी साथें कोइ काम नियमक्षेत्रनी बाहेरनुं होय त्यारें व्रती श्रा वक विचारे के माराथी त्यां सुधी जवाय एमतो नथी; माटे तेने नाम देइने बोलावीश, तो मारा व्रतनें दाग लागशे. एवी शंका थी झरूखे अथवा अगाशीनी छत उपर जइने उन्नो रहे, के, जेम मार्गें जता आवता सर्व लोकोने ए जुए, अने मार्गें जता अवता सर्व लोको, एने पण देखे. ते वखत एवी रीतें उन्नो रहीने मार्गें जता आवतानें देखे, त्यारें ते व्रती खुंखारो करे, अथवा नाकमां दोरो घालीने अथवा तमाकु लेइ नाकमां सुंघीने उंचा सादें करी छींक करे, तेवारें मार्गें चालतो माणस, खांसी छींक प्रमुखनो शब्द सां नलीने उपरनी तरफ जूए, एटले ते बन्नेनो दृष्टिमेलाप थाय. त्यारें पछी ते त्यां चलावीने आवे. एवी रीतें मेलाप करे, तेवारें ते बन्ने जणा पोताना कामसंबंधी एकांत वातचित्त करीने व्रती श्रावक, मार्गें हालवावालाने विदाय करे; त्यार पछी ते व्रती

पोताना मनमां अज्ञानना विलास करे के, जूउं ! में कोइ उत्पातनी बुद्धि रची तो तेथी करी मारुं व्रत पण में निर्मलताथी राख्युं, अने बीजाने बोलावीने जे कार्य करवुं, हतुं ते कार्य संबंधी पण वातचित्त करी लीधी. एवी रीतें मूढ,अज्ञानी, क्रियानी भूलवणी करे, तेने त्रीजो शब्दानुपाति अतिचारदोष लागे. ए माटे समजु शुद्धव्रती थइने अने बुद्धिमान् थइ, ते अतिचार न लगावे.

४ चोथो रूपानुपाति अतिचार कहेछे. ते एमके कोइ व्रतीएं पोताना घरना आंगणा सुधी क्षेत्र मोकलुं राख्युं, अने बाकी बीजुं बधुं त्याग कर्युं. हवे एवामां कोइ पोताना कामनो माणस घरना आंगणानी पासेना रस्तायें चाल्यो जायछे, तेने व्रतीयें घर अंदरनी खडकीना रस्तायें अथवा जाली प्रमुखमांथी जोयो; त्यारें व्रती विचारे के, ए माणस साथें मारे जरूरनुं कामछे; ने ए माणसनुं घरतो अहींथी घणुं दूरछे; त्यहां सुधी तो माराथी जवाय नहीं. कारण के, जो जाउंतो व्रतभूमि परिमाण उल्लंघ्यानो दोष लागे. वली अहीं पण एने बोलावुं तो व्रतमां खोंच लागे ए माटे एवुं करुं के जेम ए उलटो मने बोलाववाने पोतें ज चाल्यो आवे. एवो अज्ञाननो मनसुबो धारीने पोतें पोताना घरमांथी नीकलीने दरवाजा उपर आवी उभो रहे. ते माणस पण चाल्यो चाल्यो त्यां आगल आवीने नीकले; एटले ते बन्नेनी नजर एक थइ तेवारें ते चाली जनारो माणस पोतेज, व्रतीने बोलावे अने परस्पर मली जूहार विगेरे करीने पछी ते व्रतीयें जे वात, पोताना मतलबनी चिंतवी हती, ते करी लीधी. त्यार पछी पेलो माणस, पोताने ठेकाणे गयो अने व्रती पण घरमां आव्यो; अने मनमां अज्ञानपणे विचार करवा लाग्योके, में म्हारा शाणपणे करीने मारा व्रतने पण खोट न लगाडी, अने मारुं कार्य पण साध्युं. एवी में बुद्धि करी, पण एवुं न विचारे

के एमां अज्ञानपणुंछे. जे जाणीबूजीने पोतानुं कार्य चतुरताथी करे, तो तेने चोथो रूपानुपाति अतिचार लागे.

५ पांचमो पुजलप्रक्षेप अतिचार कहेछे. पुजलप्रक्षेप अतिचार ते नियमना क्षेत्रनी बाहेर कोइ पुरुष, पोताना कामने माटे जतो होय, त्यारें तेने जोइ व्रती अज्ञान दोषथी खोटी माया केलववा ने तत्पर थयो, जे हुं ए जता माणसने साद करी बोलावी लउं, अथवा हुं तेनी सामो जइने उनो रहुं तो महारा व्रतने दूषण लागे. माटे साद कर्या विना अथवा एनी सामु जवा विना कोइ बीजी कलायें करी एने बोलावुं. के जेथकी ए पोतें आवी महारी आगल उनो रहे. एवो विचार करीने आवनार पुरुष उपर कांकरी फेंके समस्या करे; कपडानो छेडो बतावे. त्यारें ते कांकरी ते माणसना देहने लागे एटले ते पण पाछुं फरीने तेनी सामुं जुए. त्यारें व्रती माणसनी अने तेनी दृष्टि एक थाय तेथी ते पोतेंज चाल्यो आवे, पछी ते व्रती मोहोबतथी पोतानुं कार्य करी तेने विदाय करे, त्यारें विचार करे के, में केवी बुद्धि वापरी? जेम लौकिक मौनि बोलता नथी अने संज्ञा चेष्टा करीने कार्य करे छे, तेम में पण बुद्धिबलथी मारुं व्रत राख्युं अने कार्य पण कर्युं. एवी अज्ञानक्रिया ते पांचमो पुजलप्रक्षेप अतिचार जाणवो. माटे समजु व्रती होय, ते एवी अज्ञानपणानी वात जो न करे, तो ते महोटा लाजना हेतुने पामे. अहींयां पहेला बे अतिचार अज्ञानताथी थाय, अने पाछला त्रण अतिचार, कपटपणे थायछे; ते माटे ए अतिचार न आदरवा. ए बीजुं शिक्षाव्रत थयुं. अहीं छठा व्रतना भेदथी दशमुं व्रत संक्षेप छे. ए थकी कहेवामां एवुं जाणी लेवुं के जेम ए व्रतमां संक्षेप छे. तेम परिग्रहादिक सर्वव्रतमां संक्षेप थायछे. इति तत्वं.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे दशम देशावगाशिकनामा द्वितीयशिक्षाव्रतकथने पंडित श्री ज्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्ण॥१०॥

॥ अथ ॥

## ॥ श्री एकादश पौषधोपवासनामा तृतीय ॥
## ॥ शिक्षाव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अव अग्यारम व्रत लिखुं, नाम पोसह उपवास;
जो विधिसहित करे व्रती, तो पामे उल्लास ॥ १ ॥

तिहां पोसह व्रतना चार भेदछे, ते लखे छे. तेमां प्रथम आहार पोसह, वीजुं शरीरसत्कारपोसह, त्रीजुं अब्रह्मपोसह, अने चोथुं अव्यापारपोसह. ए चारें पोसहना प्रत्येकें वे वे भेदछे. एक देशथकी पोसह अने वीजुं सर्वथकी पोसह.

१ तेमां प्रथम आहारपोसह. ते देशथी जे त्रिविहार उपवास करीने पोसह करे, अथवा आयंबिल पोसह करे, अथवा त्रिविहार एकाशना करी पोसह करे. ए त्रणे प्रकारनां पोसह करे, ते देशथी पोसह कहेवाय तेनी शैली कहेछे. पोसह लीधा पहेलां पोताना घरमां कही राखे जे हुं पोसह करीश ने आयंबिल अथवा एकाशणुं करीश. ते माटे भोजन कालें हुं आहार करवाने आवीश; अथवा तमे पोसहशालामां आहार लेइ आवजो, एवुं कहीने पछी पोसह लीए, त्यां पोसह लीधा पछी जेवारें मध्यान्हना देववंदन करी रहे, तेवार पछी चरवलो, मुहपत्ति अने पोंछणुं, ए त्रणे उपकरण, साथें लेइ पछेडी ओढीने साधुनी रीतें उपयोगी रहेतो थको मार्गमां जयणा सहित चाल्यो जाय. अने भोजन स्थानकें जइने इरियावही पडिक्कमे, गमणागमण आलोवे, अने पछी पोंछणुं वीछावीने वेशीने आहारनुं पात्र पडिलेहे. पछी पोताने लेवा योग्य जे आहार, ते लीये अने ते लेइने साधुनी रीतें अगृद्ध थको आहार करे. मुखथी आहारनुं वखाण न करे, आहारने

वखोडे पण नहीं, आहारनी जूठ, गीरावे नहीं, आहार करी रह्या पछी गरम पाणीथी आहारनुं वाशण धोइने ते पाणी पी जाय. पछी पात्रने शुद्ध करीने नितारी पाणी प्रमुख सूकाइ जवा देइ, ते पात्र कोरुं करीने पाछुं आपे. त्यार पछी फरी उपयोगी थको पूर्व नी पेरें पौषधशालामां पूर्व स्थानके जइ बेसे. मार्गमां कोइ जता आवतानी साथें वात करे नहीं. ए प्रमाणे स्वस्थानकमां आवीने इरियावही पडिक्कमे, चैत्यवंदन करी धर्म क्रियामां प्रवर्त्ते. अथ वा जो कोइ संबंधी तथा सेवक सामो आहार, पोसहशालामां लावे, तो पण पूर्वोक्त रीतें आहार करीने पात्र कोरां करी तेने पाछां आपे, अने पछी धर्मक्रियामां प्रवर्त्ते. जो त्रिविहार उपवास होय तो एकलुं पाणीज मात्र पूर्वनी पेरें जइने लइ आवे, एवी रीतें आहारपोसह करे, तेने देशथी पोसह कहीएं अने चौविहार उपवास करी पोसह करे, तो तेने सर्वथी पोसह कहीयें.

२ बीजुं शरीरसत्कारपोसह. ते सर्वथा शरीरनो सत्कार एट ले धोवन, धावन, तैलमर्दन, वस्त्राभरणादि शृंगार प्रमुखथी को इ रीतें शरीरनी शुश्रूषा न करे. साधुनी पेरें अपरिकर्मित थको रहे, ते सर्वथी शरीरसत्कार पोसह कहीएं. तथा देशथी शरीर सत्कार पोसह ते पोसहमां हाथ पग प्रमुखनी शुश्रूषा करवानी छूट राखे, ते देशथी शरीर सत्कारपोसह कहीयें.

३ त्रीजुं अब्रह्मचर्य पोसह. ते जे त्रिकरण शुद्धें पोसहमां ब्र ह्मचर्य पाले, ते सर्वथी ब्रह्मचर्य पोसह जाणवुं अने जे मन, वचन अने दृष्टि प्रमुखनी छूट राखे अथवा परिमाण राखे, ते देशथी ब्रह्मचर्य पोसह जाणवुं.

४ चोथुं सर्वसावद्यव्यापार त्याग करे ते सर्वथी अव्यापार पोस ह कहीयें, अने जो एकादि अने जो एकादि वस्तुनी अथवा उघरा यवा आदेशादिकनी छूट राखे, ते देशथकी अव्यापारपोसहकहीयें.

ए प्रमाणे चार प्रकारनां पोसह छे. ते दरेकना बे बे भेदछे. ते प्रथम ज्यारें आगमविहारी गुरु विद्यमान हता, त्यारें ते भव्य जीव श्रावको पण शुद्ध उपयोगी घणा पापभीरु हता; अने तेउ पोतें जे जे प्रतिज्ञा करता हता, तेवीज शुद्ध पालता हता, तेवीज रीतें उपयोगमां राखीने चालता, पण विस्मृति करता न हता, तथा तेमां कमवेश करता न हता अने गुरु पण अतिशय ज्ञानना प्रभावथी योग्यता जाणी लेता हता के आ देश थकी पोसह करवा लायकजछे, अथवा सर्वथकी पोसह करवा लायकछे. वली छद्मस्थ भावथी कदापि कमवेश थइ जाय तो ते तरत जाणीने विचारता के मारी प्रतिज्ञामां आटली खोंच लागी आटलुं अविरति पणुं लाग्युं. एवुं जाणीने तेनी तरत आलोयणा लेता, अने पडिक्कमतां पण महोटी भूल न पडवा देता. अने हमणां तो एवा उपयोगी जीव नथी. काल दोषना प्रभावथी वक्र जडछे, ए माटे पूर्वाचार्यें उपकारने अर्थें लाभालाभनी तुल्यता विचारीने आ मुजब जीतव्यवहार बांध्योछे. तेमां प्रथम जे आहारपोसहछे, तेना बे भेद कीधाछे. ते आहारपोसह देशथी पण करे अने सर्वथी पण करे. एम जेवी पोतानी शक्ति होय ते प्रमाणे करे. अने बाकीनां जे त्रण पोसहछे, ते तो सर्वथीज करे. देशथकी तो थायज नहीं. ए व्यवहारशैली बांधीछे. एवी रीतें वर्त्तमान कालें पोसहनी प्रवृत्तिछे. हवे पोसहनो प्रभाव आगममां जे कह्योछे, ते लखेछे.

जे, पापना समूह तेणे करी भारयुक्त थयेला एवा बहु सावद्यव्यापारी गृहस्थने आरंभनो बोजो उतारवाने पोसह, ते विश्रामनुं स्थानकछे. विश्राम करतां अल्प बोजो थाय. जेम भार उपाडनारो पोताना मस्तक उपर मोहोटी गांसडी उपाडी बे, चार कोश चाले एवामां कोइ विश्रामनुं स्थानक आवे, त्यारें ते प्रसन्न थइने

बोजो उतारे. जे माटे शीतल छाया विश्रामनुं स्थानक होय तथा घडिवार जलाशय होय त्यां बेसें, त्यारें आनंद थाय, थाक मटे, शरीर हलवुं थाय, फरी बोजो उपाडीने चालतो थाय. ए प्रमाणे बे, चार विश्राम लेतो थको सुखें धारेले ठेकाणे पहोची जाय, तेम श्रावकें पण दररोज सावद्य व्यापारनो बोजो घणो उपाड्यो छे. अने तेवो महोटो भारे बोजो उपाडीने चालेछे, ते ज्यारें पांखी प्रमुख पर्वना दिवस आवे, त्यारें प्रसन्न थइने घरनो जे सावद्य कर्मरूप बोजो, तेने उतारी घरमांज राखीने विश्रामरूप क्षेत्र पौषध शालामां जइने बेसें, अने पोसह धारे त्यारें, सावद्यरूप बोजानो परिश्रम एटले थाक उतरी जाय. अने भावना उपदेशरूप शीतल पवन थकी विषयकषायरूप गरमी, विकल्प पशीनो मटी जाय, आत्मा शीतल थाय. अने जिनशासनरूप कल्पतरुनी छायामां बेसीने पोताना स्वरूपचिंतवनरूप जलें करीने घणा कालनुं पाप धोइ नाखे. आत्माने ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप भावभोजनथी पोषे. ए प्रमाणे वचमां वचमां पोसह करण रूप विश्राम लेतो थको आराधकभावना स्थानकें जइ पहोचे. अहींयां आठे दिवसें अथवा पंदरे दिवसें पोसह करे, तो पण फल एक पोसहनुं एटलुं कह्युंछे. शास्त्रमध्ये एक पोसहनुं फल कह्युंछे, ते जाणवुं, जे प्रभुनी आज्ञापूर्वक एक अहोरात्री पोसह करे, ते जीव बे हजारने सातशें कोडी तथा ते उपर सीत्तोतेर कोडी सीत्तोतेर लाख, सीत्तोतेर हजार, सातशें ने सीत्तोतेर. एटला पल्योपम तथा एक पल्योपमना नव भाग करीयें तेवा सात भाग उपर एटलुं देवतानुं आयुष्य बांधे; अने एटलीज नरकगतिथी छूटे. अहो ! एक पोसह कस्याथी जीव, एटलो लाभ उपार्जे ? तेना अंकसंख्यानी स्थापना. (२७७७७७७७७७७ अने $\frac{7}{9}$) एटलुं फल, एक शुद्ध व्यवहारपोसहनुंछे. अने वली जो व्यवहारपोसह क

रतां थकां चेतनाने निश्चयपोसहनी लीनता लागी, तो ते पोसह ना फलप्राप्तिनुं तो परिमाण पण न थाय, तेनो अगणित लाजछे. यावत् रत्नत्रयी क्षायकजावें थइ जाय. त्रणे लोकनां जव्य जीवने पूजनीय थाय. ए माटे पोसहछे, ते गृहस्थने अवश्य करवुंज. ए पो सहछे, ते कर्मरूपी जावरोगनुं औषधछे. माटे गृहस्थें पर्वदिवस आवे त्यारें जरुर पोसह करवुं. हवे ए व्रतना पांच अतिचार लखेछे.

१ प्रथम अप्पडिलेहिअ, डुप्पडिलेहिअ, सिज्जासंथारक अति चार. ते जे स्थानकने विषे पोसह संथारो करे, ते जूमिनी तथा सं थारानी पडिलेहणा करे नहीं. एटले संथारानी जग्या पोतानी आंखे थी सारी पेठें निगाह करीने जूए नहीं अने कदापि जूए तो प्रमाद थी कांइ दीठी कांइ न दीठी, एवी रीतें जूए, ते पहेलो अतिचार.

२ बीजो अप्पमज्जिय, डुप्पमज्जिय, सिज्जासंथारक अतिचार. ते एम के, ते संथारो, रजोहरण प्रमुखथी पुंजे नहीं. कदापि पुंजे, तो जेवो तेवो गडबडथी संथारो पुंजे, पण वस्त्रांचलें दंमाशणथी पुंजे नहीं, अने कोइ जीवनी रक्षा करे नहीं. ते बीजो अतिचार. जे प्रमाणे श्री जैनशासननी शैली एवी छे, ते प्रमाणे मार्गी जीव क्रिया करे, ते आवी रीतेंके प्रथम तो हरेक क्रियामां दृष्टिपडिलेहण करे. सारी रीतें सर्व स्थलें चीज ने निगाह करी जोइने पछी पुंज णा प्रमुखथी पुंजे, पछी ते वस्तु वापरे, एवो तो सहेज चाल छे. त्यारें पोसहादिक क्रियामां तो निपट उपयोग धरीने पडिलेहणा प्रमुख करवी जोइयें. अने एवी रीतें जयणाथी जो न करे, तो तेने बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अप्पडिलेहिअ, डुप्पडिलेहिअ, उच्चारपासवण जूमि अतिचार. ते एमके लघुनीति अथवा वडीनीति परठवानी जूमिने सारी रीतें दृष्टियें करी अवलोकन न करे, अने अवलोक

न करे, तो जेम तेम काम चलावी दे. जीवयत्न कीधा वीना लघु नीति प्रमुखनी परठवणा करे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो अप्पमज्जिय, डुप्पमज्जिय, उच्चार पासवण भूमि अतिचार. ते मात्रानी, तथा पोसहशालनी भूमि अप्रमार्जित देखीने न पुंजे. अने पुंजे तो यद्वा तद्वा करीने काम करे. एम वडीनीति, लघुनीति प्रमुख यत्नथी परठवे नहीं; ते चोथो अतिचार.

५ पांचमो पोसहविधि विपरीए अतिचार. ते आहार त्याग पोसह कीधे, क्षुधादि परिसह जागे, त्यारें पारणुं करवानी चिंता करे, के प्रभातें फलाणी रसोइ अथवा फलाणी चीजनो अहार करशुं तथा एम चिंतवे जे अमुक काम सवारें करवुं छे, ते त्यां जइश अने तेनी उपर तागादो करीश. तथा प्रभातमां पोसह पालीने पछी सारी रीतें तेलमर्दन करावीने खुब गरम पाणीथी स्नान करीश. तथा अमुक पोशाक पहेरीश, अने कुलस्त्रीनी साथें खूब तरेहथी आवी रीतनो भोगविलास करीश. एवुं सावद्य चिंतवे, तथा संध्यासमये स्थंडिलशोधन न करे पोसहमां विकथा करे, निद्रा करे अने नीचें लखेला अढार दोषोने टाले नहीं. ते अढार दोषोनां नाम लखीएं छैयें.

१ पोसहमां व्रती विनाना बीजा श्रावकलुं आणेलुं पाणी न पीवुं.
२ पोसह निमित्तें सरस आहार लेवो नहीं.
३ पोसह करवाना आगल दिवसें उत्तर पारणामां विविध प्रकार संयोग मेलवीने आहार करवो नहीं.
४ पोसह अथवा पोसह निमित्त आगले दिवसें देह विभूषण न करवुं.
५ पोसह निमित्तें वस्त्रादिक धोवरावयां नहीं.
६ पोसह निमित्तें आभूषण घडावीने पहेरवां नहीं, वस्त्र लेवां नहीं, अंगें घरेणां पहेरवां नहीं. स्त्रीने पण नथ तथा कंकण प्रमुख जे सौभाग्यना कुशल चिन्हछे, ते पहेरवां परंतु ते विना पोसहमां बीजां नवां घरेणां घडावीने स्त्रीयें पहेरवां नहीं.

७ पोसह निमित्त; वस्त्र रंगावीने पहेरवां नहीं.
८ पोसहमां शरीरथी मेल प्रमुख उतारवो नहीं.
९ पोसहमां शयन करवुं नहीं. निद्रा करवी नहीं.
१० पोसहमां सारी वा नठारी स्त्री सबंधी कथा करवी नहीं.
११ पोसहमां आहारने सारो नठारो कहेवो नहीं.
१२ पोसहमां सारी वा नठारी राजकथा तथा युद्ध कथा करवी नहीं.
१३ पोसहमां अमुक देश आवो रूडोछे अथवा अमुक देश भूंडो छे, एवां देशकथानां वचन, बोलवां नहीं.
१४ पोसहमां पुंज्या विना भूमिए लघुनीति अथवा वडीनीति परठवी नहीं, अने परठवे तो पोताथी वोसिरावे. इरियावही पडिक्कमे.
१५ पोसहमां बीजानी निंदा करवी नहीं.
१६ पोसहमां स्त्री, पिता, माता, पुत्र. भाइ विगेरे सर्व संबंधी साथें वार्तालाप करवो नहीं.
१७ पोसहमां चोरनी कथा न करवी.
१८ पोसहमां स्त्रीनां अंगोपांग दृष्टि लगावीने जोवां नहीं.

ए अढार दोष पोसहना छे. ते त्याग करीने पोसह करे, ते शुद्ध पोसह कहीयें. तेथी जो विपरीत करे, तो पांचमो अतिचार लागे. इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे एकादश पौषधोपवासरूप तृतीय शिक्षा व्रते पंडित श्रीज्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा ॥ ११ ॥

---

अथ

## ॥ श्री द्वादश अतिथिसंविभागनामा चतुर्थ ॥ शिक्षाव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अब बारम व्रत है "अतिथि, संविभाग" यह नाम;
कहुं दोष आहारके, पुनि अतिचार है ताम ॥ १ ॥

हवे अतिथि एटले जेने लौकिक पर्वोत्सवादिक दिवसोनुं प्रयोजन नथी, ते अतिथि कहीयें. एटले लोक व्यवहारमां जे संसार वृद्धिनी हेतु तिथि, तेहेवार, विवाहादि लग्नतिथि इत्यादिक सर्व जेणे छोडी दीधांछे. सर्वे दिवसोमां जेनी धर्माराधनकरवानी एक निष्ठाछे. तेने अतिथि कहीयें. अथवा जेम अतिथि एटले प्राहुणो, मिजमान माणस कोइने घेर आवे, ते कांइ तिथि तेहेवारनो दिवस जोइजे न आवे, गमे ते दिवसें पंथेंथी चाल्यो आवे. तेने कांइ तिथिके तेहेवारनुं प्रयोजन नहीं, अणचिंतव्यो आवीने उन्नो रहे; तेम साधु पण निमंत्रणादि कीधा विना न्नोजन कालें आवी हाजर थाय. प्रायें साधु असथो तो गुरु आज्ञा विना गृहस्थने घेर कदापि जाय नहीं, अने न्नोजन कालें मधुकर एटले भ्रमरनी वृत्ति करे. निमंत्रण विना गृहस्थने घेर विचरता जाय. ते पण गृहस्थने अकलामण न उपजावे. एवी रीतें आहार लिये, ते अतिथि जिनाज्ञाकारी शुद्ध साधु तेनो जे संविन्नाग करे. एटलें न्यायोपार्जित शुद्ध व्यवहारें कमाएलुं जे द्रव्यादिक ते मांथी पोताना उदर न्नरणने माटे उत्तम कुलाचार पूर्वक जे शुद्ध निर्दोष आहार नीपजाव्यो अने ते पण पूर्वकर्म पश्चात्कर्मादि दोष रहित होय, एवो शुद्ध अने निर्दोष आहार ते बहुमान सहित न्नाग्ययोगें गृहने विषे साधु आव्या थका अतिहर्षवंत थयो थको आहार आपे. अने ते पण दानना पांच गुणें करी युक्त दातारनी शुद्धता धरी आपे. ते दानना पांच गुणनां नाम लखेछे.

१ प्रथम जे जैनमार्गी दातार. ते शुद्ध पात्रनी प्राप्ति पामीनें प्रथम पोताता घरना आंगणाने विषे मुनिनां दर्शन मात्र थयां अने तेणे करी घणा दिवसनी अंतरंगनी चाहनाना उल्लासथी आनंदनां आंसु आवे, जेवी रीतें कोइ आपणो प्रिय अने परम हितकारी प्राणप्रिय एवो वल्लन्न सज्जन दूर देशांतरें गयो होय, तेने कदी

पण मनथी विसारतो नथी; मनमां एज वांछा लागी रहे के ते आपणने क्यारें मलशे ? एवी चाहना राखतां राखतां घणो काल वीत्या पछी लांवी मुदतें कोइ वखत ते सज्जन अणचिंतव्यो एका एक आवी उन्नो रहे, त्यारें ते परम वल्लभने जोइने अंतरंग रागनी धारा उल्लासथी आंखमांथी हर्षनां आंसु पडे. ते शीतल होय जे कारणे वियोगना आंसु गरम होयछे अने हर्षना आंसु शीतल होयछे. तेम श्रावक पण साधुने आवतो देखी करी प्रशस्त रागन्नक्तिना उल्लासें उठे; अने मनमां विचारे के अहो ! आज हुं महोटो न्नाग्यशाली के जे हुं अनादिनो न्नूख्यो, खद्रव्य संवलरहित, न्नाव दरिद्रें पीडित, ज्ञानलोचन रहित अंधन्नावें पीड्यो, अपारसंसारचक्रमां पड्यो न्नटकतो हतो, एवो जे हुं, ते वहु अकथनीय डुःख पामतो अने कशी गणतीमां नहीं हतो, एवो महाडुःखी मने जोइने आ महारा मोहोटा हितकारी मुनिराजे महोटो करूणान्नाव धारण करी मारा उपर महोटी मेहेरवानी कीधी. जे प्रथम तो मने ज्ञानांजनशलाका फेरवीने मारां सम्यक्ज्ञान लोचन खोली दीधां अने ए मुनियें त्रण तत्वसेवारूप आजीविकानो व्यापार शीखवाड्यो, तथा मुजने रत्नत्रयी धारणरूप नियमा करी दीधी. एवी रीतें महारो अनादिनो दरिद्रन्नाव मूकाव्यो, मने सारा आदमीनी गणतीमां आण्यो. एवा निष्कारण अने गरज विना महोटा उपकारी महामुनिराज ते मारा घर आंगणाने विषे आव्या, ए न्नावनानी पुष्टिथी, प्रशस्तरागना न्नाव उल्लासथी हर्षानंदनां आंसु आवे, ते दाननो पहेलो गुण.

२ बीजो जेम संसारी जीवने अत्यंत इष्ट वस्तुनो संयोग पामवाथी रोमावलि उन्नी थाय, तेम महोटी न्नक्तिना प्रन्नावथी मुनिने जोइने ते श्रावकनी सर्व रोमावलि उल्लसित थाय, अने हृदयमां हर्ष समाय नहीं, ते दाननो बीजो गुण.

३ त्रीजो मुनिने देखीने मुनिप्रत्यें बहुमान उत्पन्न थाय. जेम कोइ संसारी सामान्य गरीब गृहस्थने घेर राजा पोतें चाली आवे त्यारें ते गृहस्थ, ते राजाने केवुं मान आपे ? अर्थात् घणुंज मान आपे. मनमां घणोज आश्चर्यमय थइ उमेद जस्यो हर्ष जस्यो थाय. अने मनमां विचारेके अहो ! आज महारे घरे महाराज आव्या, माटे घरमां कोइ सारी अने नवाइ जेवी चीज होय ते हुं एमने जेट करुं, फरी फरी एवा महोटा लोको मारे घेर क्यां थी आवे ? आवो संयोग फरी क्यारें मलवानो छे ? आ डुर्लज योग तो मारा महोटा जाग्योदयथी मख्योछे. एवो विचार करी घरमां जे सर्व करतां सारी अने नवाइनी चीज होय, ते राजाने जेट करवा माटे काढे. वली विचारेके आ महारा घरनी चीजने महाराज कबूल करे, तो महारां महोटां जाग्य हुं मानुं, एवा उल्लासथी ते गृहस्थ, राजाने पोतानी वस्तु जेट करे, तेम श्रावक पण साधुने पोताने घेर आव्या देखीने तेउ प्रत्यें घणुं बहुमान करे. अने विचारे के एवा निस्पृहीमां शिरोमणि, जगद्बंधु, जगत् हितकारी, जगद्वत्सल, निष्कामी, आत्मानंदी, आत्मारामी, करुणानिधि, परमोपकारी, परमपात्र, करुणासागर, संसारजलधिउद्धरण, परमउपकार करवामां दक्ष, क्रोधादिकषायजक्षक. पोतें तरेला, परने तारनारा, एवा महामुनिराज चालीने महारे घेर आव्या, तो आज महारां महोटां जाग्य जाणवां. आज रूडो सुविहाण थयो, आज महारे आंगणे कामधेनु, कल्पवृक्ष, चित्रावेली अने चिंतामणि ए अणचिंति चाली आवी अने आज महारी जाग्रत दशा सफल थइ. एवो हर्षजस्यो ससंभ्रम होतो थको ते मुनिनी सन्मुख जाय अने त्रिकरण शुद्ध प्रणाम करीने कहे के हे स्वामि ! दीनदयालुजी ! पधारीयें. महारा घरनुं आंगणुं पावन करियें. एवुं बहु मान दइ करीने घरमां पधरावे, पछी मनमां विचारे के,

अहो! महारां अतुल नाग्यनो उदय थयो होय तो आज आ साधु महारां आहार पाणीनो अनुग्रह करे जे कारण माटे साधुजीने आ हार लेवामां महोटी तजवीजछे. आहारनी गवेषणा करे, शुद्धनिर्दो षनी प्रतीति आवे, त्यारे तो साधु आहार ले. ए कारण माटे रखे कोइ दोषमाराथी उपजे? एवो विचार करी त्रिकरण योगें बहुशुद्ध, मान नस्थो उपयोगी थको विधिपूर्वक आहार लावे, अने मीठां व चनोथी ते साधुनी विनति करे के हे स्वामिजी! हे गुरुजी! आ शु द्ध निर्दोषी आहारछे, ए माटे हे कृपानिधान! मुज सेवक उ पर परम शुन्न दृष्टिनो पसाय करी सपात्रकर पसारीयें. महारो निस्तार करीयें. एवां मीठां अने परम नक्तिवंत वचनोयें विनति करतो थको आहार आपे, त्यारें ते मुनिराज, ते योग्य आहार जाणीने ले, अने श्रावक पण जेटली दानलायक निर्दोष वस्तु होय, तेज सर्ववस्तुनी निमंत्रणा करे. एवा विधियें करी दान आपीने फरी ते मुनिप्रत्यें हाथ जोडी, नीचो नमी, पृथ्वीपर मस्त क लगावीने नमस्कार करे. पछी वली मीठां वचनोयें विनति क रे के हे स्वामि! कृपानिधान! मुज गरीबनी एक विनतिछे, ते सां नली लेश्यें. सेवक उपर मोहोटी कृपा करी मने महोटो कस्यो, मारी पर महोटो उपकार कस्यो, आज महारुं घर पावन थयुं. उत्कृ ष्ट नाग्योदय विना मुनिना चरणकमलनी रज घरमां क्यांथी पडे? (गुणिपदकजधूलरजकंचन सेवहुं मूल मेरा) आजनो दिवस सफल थयो. फरी पण हे स्वामिजी! अशन, पान, खादिम, स्वादि म, औषध, नेषज, वस्त्र, पात्र, सिज्झा, संथारकादि प्रयोजन उप जे, त्यारें सेवक उपर कृपा करी अवश्य अनुग्रह करवोजी. स्वामि जी! आप तो महोटा मुनिराजछो, गुणवान्छो, निस्पृहीछो. आपने कोइ चीजनी कमती नथी, कोइ वातनो प्रतिबंध नथी, वायुनी पेरें अप्रतिबंधछो. तो पण हे करुणानिधान! मुज सेवक उपर

कृपा करीने फरी अनुग्रह करवो. ए प्रमाणे कहेतो कहेतो पोता नी हद्दसुधी ते मुनिश्रेष्ठने पहोचाडवा जाय.

४ चोथो गुण एके, त्यांथी ते मुनिने वंदना करी, पाछो फरी घेर आवी, भोजन करे. पण तेने मनमां हर्ष समाय नहीं. महा रो मुनिना आगमनरूप भाग्योदय थयो, तेणे करी हर्षवंत थयो थको विचारे के आज कोइ माहारे भली वात थइ गइ, मने म होटो कोइ लाभ थयो. कारण, जे मुनिराज निस्पृही तथा तृष्णा रहित, गतप्रतिबंधी, सहजउदासी निरीह, एवाने में विनति की धी एटले तरत महारे घेर आव्या. वली में जे आहार आप्यो, ते पण सर्व लीधो. वचमां कोइ अंतरायरूप विघ्न न थयुं. एथी करी महारो कोइ सारो वखत प्रगट्यो जणायछे. फरी आवो योग क्यारें मले ? अने जो मले, तो जाणुं जे महारे अतुल्य पुण्यनो प्रसाद थयो. एवी अनुमोदना वारंवार करे.

५ पांचमो गुण. ए जे जेम कोइ मंदभाग्यवान् पुरुष, व्यापार क रतां करतां थोडुं कमाय, तेने कोइक दिवसें एकज शोदामां लक्ष द्रव्यनी प्राप्ति थाय, त्यारें ते फरी व्यापारनी अनुमोदना केवी चा ही चाहीने करे ? तेवी रीतें एना करतां पण अधिक दाननी चाह ना समकेती जीव राखे. ए पांचे गुणोयें युक्त दान आपवुं, ते शु द्ध दान कहेवाय, ए शुद्धदानथी अतिथिसंविभागव्रत थाय.

अहींयां श्रावकें साधुने दोष रहित आहार आपवो, अ ने साधुयें पण दोषरहित आहार लेवो. त्यां दोषनी विचा रणा करतां प्रथम शोल दोष श्रावकथी लागे. अने शोल दोष साधुथी लागे, तथा दश दोष साधु अने श्रावक बन्नेथकी उपजे, ए प्रकारे बधा मली बेंतालीश दोषनो त्याग करीने सा धु आहार लीये, ते बेतालीश दोषमांथी प्रथम श्रावकथी शो ल दोष लागे, ते लखे छे.

१ पहेलो आधाकर्मी दोष. ते साधुने वास्ते छकायनो आरंभ करी, आहार नीपजावे, ते आधाकर्मी दोष.

२ बीजो उद्देशिकदोष. ते जेवारें रसोइ करवा मांडे, तेवारें पोतें रसोइ करनारने कहेके, रसोइ घणी करजो. कारणके, साधु प्रमुख आवशे, तेमने सारी रीतें आपशुं. जो रसोइ घरमां पुष्कल होय, तो कोइने देवाय. कदापि रसोइ कमती होय, तो देवाय न ही. त्यारें साधुने शुं अपाय ? ए माटे रसोइ वधती करजो. एवी रीतें साधुनुं नाम लेइनी वधारे रसोइ करावे, ते उद्देशिकदोष.

३ त्रीजो पूतिकर्मदोष. ते आधाकर्मी प्रमुख हर कोइ दोषे दूषित एवो अशुद्धाहार होय, ते शुद्धाहारनी सार्थे भेलवे, ते पूतिकर्मदोष.

४ चोथो मिश्रजातिदोष. ते घरमां कह्या करे के, रसोइ उ तावलें बनावो. वखत थयोछे माटे जो वेलासर रसोइ बनावो, तो कांइ आपण जमीयें अने कांइ साधुने पण आपीयें. ए माटे ताकीदथी रांधो. एम कही कहीने जे आहार बनाव्यो, ते मिश्र जाति दोषें दूषित आहार जाणवो.

५ पांचमो थापनादोष. ते जे गृहस्थ, भोजन वखतें एम क हे जे आज आ रसोइमांथी आटलो आहार वाशणमां जूदो काढी राखो. ते जेवारें साधु आवशे, त्यारें देवो पडशे. एवी रीतें व्यवहार करीने आपवुं, ते पांचमो थापनादोष.

६ छठो पाहुडीदोष. ते साधुने आव्या जाणी चीज वस्तु आ गल पाछल खडभड करे, धका धकीमां सावद्यक्रिया करीने सा धु आगल लावीने आहार आपे, ते पाहुडीदोष.

७ सातमो प्रादुःकृतदोष. ते साधुने आव्यो जाणीने जो घरमां अंधारुं होय, तो तेने मटाडवानो प्रयत्न करे, खडकी, जाली, बारी, बारणां, ए सर्वने तरत उघाडी नाखीने अजवालुं करे. मनमां

जाणे जे अंधारुं हशे तो साधु आहार लेशे नहीं. एम करी आहार आपे. ते प्राडुःकृतदोष.

८ आठमो क्रीतदोष. जे साधुने आव्यो जाणी करी बजार मांथी मूल्य आपी करी आहार वेचातो लावी साधुने आपे, ते क्रीतदोष.

९ नवमो प्रामित्यदोष. ते कोइनुं उधार उछीनुं लेइने आपे, करज करीने आपे. ते प्रामित्यदोष.

१० दशमो परावर्त्तितदोष ते साधु आव्या जाणी मनमां विचारे जे, म्हारा घरमां तो नीरस आहारछे; ते साधुने केम दीधो जाय ? वास्ते पडोशी अथवा संबंधीने घेर, ते नीरस आहार आपीने तेने बदले साधुने सारु सारो सरस आहार थोडो लावे, ते साधुने आपे. ए दोष, भक्तिथी अथवा अभिमानथी अथवा लोकलाजथी थाय. एटले लोकोमां वात चर्चा थाय, जे आवो मातबर गृहस्थ थइने एवो आहार साधुने आपेछे, अथवा कोइ नीरस आहार देतां थकां पाडोशी जोशे, तो आपणी निंदा करशे, ने कहेशे के ए एवो आहार साधुने आपेछे ! एमाटे लोकलाजथी सारो आहार लावीने आपे, ते दशमो परावर्त्तित दोष.

११ अगीयारमो अभ्याहृतदोष. ते पोताना घरमां जे आहार बनेलो होय, ते भडकपणाथी आहारने सामो लइ साधुने स्थानकें जइने आपे, ते अभ्याहृतदोष.

१२ बारमो उद्भिन्नदोष. ते कोठीमां तथा संजीरा प्रमुखमां चीज राखेली होय,ते चीजनो आहार, ते कोठी संजीरा प्रमुखनुं तालुं उघाडीने तेमांथी आपे, ते उद्भिन्नदोष.

१३ तेरमो मालाहृत दोष. ते आहारने मेडी माल उपर, अथवा छीका उपर, अथवा छत उपर, अथवा बीजा कोइ स्थानक उपर उंचो राखेलो होय, ते निसरणी प्रमुख मांडीने त्यां पहोंची

ने पछी उतारी लावे. अथवा भोंयरामां नीचें उतरी तेमांथी आहार लावे, ते आहार, साधुने आपे, ते मालाहृतदोष.

१४ चौदमो आछिद्यदोष. ते ए के पारकाना हाथमां जे चीज होय,ते तेनी कनेथी छीनवी लेइने साधुने आपे, ते आछिद्य दोष.

१५ पंदरमो अनिसृष्ठ दोष. ते एके घणा माणसोनी कोइ साधारण चीज, वेंची लीधा विनानी होय, तेमांथी उपाडीने साधुने आपे, ते अनिसृष्टदोष.

१६ शोलमो अध्यवपूरकदोष. ते कलकलता पाणीमां बीजुं पाणी पूरे. अथवा भात प्रमुख चूला उपर चडेलांछे, तेमां बीजा चोखा नाखे, एम तैय्यार थता आहारमां बीजी पूरणी करे, अने मनमां विचारे के आज गाममां साधु घणा आव्याछे, तेउ मांथी हरकोइ पण आहार लेवा माटे आपणे घेर आवी चडशे, ए माटे रसोइमां घणी पूरणी करी रसोइ वधारे कराविये. एवुं करीने पछी ते आहार साधुने आपे, ते अध्यवपूरकदोष. ए शोल दोष, श्रावकथी साधुने लागे छे. एमां केटलाएक दोष अजाणपणे लागे, केटलाएक भक्तिथी लागे, केटलाएक दृष्टिरागथी लागे अने केटलाएक अभिमानथी लागे. ए शोल दोष टाली तजवीज करीने श्रावक, शुद्ध आहार साधुने आपे अने साधु पण त्यारें निर्दूषित आहार जाणीने ले.

हवे साधुथी शोल दोष उपजे, ते कहेछे.

१ प्रथम धात्रीदोष. जेम धात्री उदरपूर्णार्थे गृहस्थना बालकने रमाडे, तेम साधु पण गृहस्थना बालकने रमाडे, तरेह तरेहनां वचनोयें करी बोलावे, चपटी वगाडी रीझवे, तरेह तरेहनां चाटुक वचन बोली करीने बालकने, हसावे, घणो प्यारा देखाडे. तेवुं जोइने ते बालकनां माता पितादिक जाणे के साधुजी अमारा छोकरा उपर बहु हेत करेछे. तेणे करी ते बालकना नि

मित्रें ते साधु उपर दृष्टिरागनो उल्लासी थाय, तेवारें साधुने आहार आपे. ते आहार साधु ले, त्यारें धात्रीदोष लागे.

२ बीजो दूतीदोष. ते जे साधु विचरवा गया थका श्रावक श्राविकाने कासीदनी पेठें परगामना समाचार अथवा कागल आणीने आपे पीयरनी हकीकत लावीने वहूने कहे. वली वहूप्र मुखने बीजी मुखचातुरी बनावीने कहे के, तमारी माताजी सुख चेनमांछे, अने तमारा जाइजी पण साजा ताजाछे. बीजा पण सर्व कुटुंबीयो कुशल क्षेम छे. वली कहेके फलाणानुं सगपण थयुं, फलाणाने छोकरो थयो, ते तमोने अमुक चीज मोकलशे, तेमणे अमुक चीज तमारी पासेंथी मंगावीछे. इत्यादिक संदेशा कही करी गृहस्थने राग उपजावी आहार ले. अहींयां कोइ गृहस्थें धर्मसंबंधी संवरवृद्धि कारणरूप संदेशो कह्यो होय, तेपण जिक्षा अवसरें न कहे, बीजे अवसरें कहे पण संसार संबंधी संदेशो तो कदापि कालें कहेज नहीं, एवी रीतें गोचरी जायने संदेशा कहीने जिक्षा लियें, ते बीजो दूतिकर्मदोष.

३ त्रीजो निमित्तदोष. ते गोचरी गये थके गृहस्थने, निमित बतावे, गृहगोचर, शुजदशा, अशुजदशा बतावे, तमोने आटला दिवसनी पीडाछे, तमोने बारमो वा आठमो शनिछे, एवुं कहे; तथा आटला वर्षनी तमोने पनोतीछे, माटे अमुक दान आपजो, जाप करावजो, एथी करी सुख थशे. आगल घणा सारा ग्रह आ वशे; त्यारें घणुं सुखचेन पामशो. तमारा दिलमां अमुक वातनी चिंताछे. एवी मनमानी वातो कहे, तेथी ते गृहस्थ खुशी थाय. चमत्कार पामे अने सारो आहार आपे, ते साधु लीए, तेवारें तेने निमित्तदोष लागे.

४ चोथो आजीविकादोष. ते वहोरवा गये थके त्यां गृहस्थ नी पासें पोतानी जाति ज्ञाति जाहेर करे ने कहेके, शेठजी! तमे

अमने नथी उंलखता? अमे फलाणा शाहना छोकरा, फलाणा ना भत्रीजा, फलाणो अमारो भाइ थायछे, तमारी साथें पण अ मारे संसारनो नातोछे. तमे अमने उंलखता हशो के नहीं उंलखता हो? पण अमे तो सर्व जाणीयें छैयें. एक अहारार्थें एटला संबंध प्रगट करे, ते वारें ते गृहस्थने संबंध संबंधी राग उपजे. तेणेकरी ते खुशीथी आहार आपे, ते आहार साधु लीये, ते आजीविकादोष.

५ पांचमो वणीमगदोष. ते जे आहारने अर्थें साधु दीन पणुं बोले के, आज संसारमां सर्व स्वार्थीछे, परमार्थी कोइ नथी. तो अमारी खबर कोण लेछे? तमारा जेवो कोइ धर्मरुचि, धर्मिष्ट, उपकारी अने उदारचित्तवान् होय, ते जाणे, बीजो कोण जा णे? अमे तो निराधार, निरालंबनवृत्तिवाला छैयें. अमारो कोइ वालो सगो नथी. आ नगरमां तो एक तमारुंज घर धर्मात्माछे, जे आटली पण खर खबर तमे लीयो छो. तमे अमारी तजवीज राखवावालाछो. तमे तो साधुना मा बापछो तमेछो, तो अमारो आटलो पण निर्वाह थायछे. इत्यादि दीनतानां वचन निर्वाहने अर्थें कहे, त्यारें ते गृहस्थने कांइ अनुकंपा अने कांइ अभिमान तथा कांइ राग उपजे, तेवारें आहार घणो आपे, ते साधु लीए, तो पांचमो वणीमगदोष लागे.

६ छठ्ठो तिगंछादोष. ते आहारने अर्थें गृहस्थने घेर गये थ के गृहस्थनी नाडी जूए, रोगना आदान, निदान प्रमुख कहे, औ षध, गोली, चूर्ण, क्वाथ प्रमुख बतावे, रोगनुं मूल कारण कहे के फलाणी चीज खावाथी व्याधि उत्पन्न थयोछे; ते माटे जो गोली खाउंतो आ, रसनी गोलीछे ते खांउं, नहीं तो चार पांच दि वस औषधिनो क्वाथ कूटावीने खूब तरेहथी उकालो करावी पीउं. एवुं गृहस्थ सांभले, त्यारें खुशी थाय; अने मनमां जाणे जे ए साधु सर्वरीतें खबरदार छे. एने बीजुं कांइ आपशुं तो

ए लेशे नहीं. माटे खूब तरेहथी आहार तो आप्या करो? एवुं वि
चारी घरमां स्त्रीयादिकने पण ते साधुने सारी रीतें आहार आ
पवानुं कही राखे. एवी रीतें गृहस्थने रागवान् करीने आहार
लेवो, तेथी बठो तिगंबादोष साधुने लागे.

७ सातमो क्रोधपिंमदोष. ते जे आहारने अर्थे साधुजन कोइ
गृहस्थने घेर जाय अने ते गृहस्थ तो महाकृपणबे, एवुं साधु
यें जाण्युं. बती जोगवाइयें पण ते गृहस्थने कृपणतायें करी साधु
ने आहार आपवानी सामर्थाइ नथी; तेथी ते मुखथी नाकारो के
रे. ते समयें साधु क्रोध करीने एवी शापनी नाषा बोलेके बती श
क्तियें पण साधुने आहार आपवानी ना कहोबो तो तमारे घेर
लक्ष्मी नहींज रहेशे. जे बे ते पण नष्ट थइ जशे. आ नवविध
परिग्रहनी जे जे वस्तु बे, तेनी सत्ता रहेशे नहीं. एवा आ
शयथी बोले, त्यारे ते गृहस्थ शापना नयथी एम जाणे क,
ए साधुबे, तपस्वीबे, माटे तपश्चर्याना बलथी आवुं कहेतो हशे.
शुं जाणीयें एना कह्या प्रमाणे थइ जाय तो? माटे थोडाने
माटे शुं करवा एवुं करीएं? एम विचारीने साधुने आहार
देवानी समर्थाइ करीने आहार आपे, एवो क्रोध करी साधु
आहार ले, ते क्रोधपिंमदोष. अथवा साधुने आहार आपवा
माटे घरमां कोइ तरेहनो कषाय करवो कराववो पडे, ते पण
दोष एमांज लेवो.

८ आठमो मानपिंमदोष. ते जे साधु, गृहस्थने घेर आहार
लेवाने माटे जाय, त्यारें गृहस्थने जोइने तेनुं महोटुं मान तथा
सत्कार करे. तेनी ऋद्धिने जोइने कहेके तमे महोटा धर्मात्मा
अने ऋद्धिमान् गृहस्थबो. अथवा पोतानुं अनिमान देखाडवा सा
रु एवी रीतें कहेके, अमे पण कोइ दिवस आवा हता, अमारा घ
रमां आटलुं द्रव्य हतुं, हुं आटला गामनो खावंद हतो, अमुक बद्धा

सिरदार अमारी सेवा करता हता, आवी लक्ष्मीनो लहावो लेता थका, खाता पीता हता, सर्वे जग्यायें हुकम चलावता हता अथवा अमारो व्यापार हजारो कोश सुधी चालतो हतो. प्रत्येक गाममां अमारी डुकान हती, लक्ष्मीनी संख्या न हती, हजारो रुपैय्यानी तो कांइ गणती पण नहीं राखता हता. जग्या जग्यानी डुकाननां गुमास्ता तथा जलामणीया हता. डुकानोना जवाब, खत पत्र विगेरे आवता हता. देश परदेशमां कोण अमने नहीं जाणता हता? अर्थात् सर्व उंलखता हता. हवे तो अमे साधु थया, बीजाने घेर आहार लेवाने अर्थें नीकळ्या छीयें, त्यारें हवे पाछलनी वात शुं याद करीयें? एवुं ते साधुनुं कहेवुं सांजले, त्यारें ते गृहस्थलोक पण जाणे के "आ साधुपण असल महोटा घरनो छे, एवडी बद्धी संपत्ति छोडीने जावथी साधु थयो देखायछे; ए माटे एने जली रीतें विवेक पूर्वक आहार आपो, एमां महोटो नफोछे." एवो बुद्धिनो प्रपंच करी आगली गृहस्थावस्थानी संपत्तिनां वखाण करीने आहार लेवो, ते मानपिंडदोष. तथा साधुनी पासेंथी गृहस्थ मान पामे. ते एवि रीतें के ते गृहस्थ, साधुनी पासें आव्ये थके महोटी पर्षदाने विषे तेने साधु उंचे सादें हाथनी संज्ञा करी बतावे के अहींयां आवी बेसो. एवुं मान आपे, त्यारें गृहस्थ जाणे के आटला लोकोनी वचमां अमोने आदर सन्मान आप्युं; माटे ए साधु सर्वे तजवीज वालाछे. महोटी उंलादनाछे. एवुं जाणी ते गृहस्थ, ज्यारें ते साधु घेर वहोरवा आवे त्यारें आहार आपे, अने ते साधु ले, त्यारें तेने मानपिंडदोष लागे.

ए नवमो मायापिंडदोष. ते जे आहारने अर्थें साधु, गृहस्थने घेर गये थके कोइ कूड कपट करी रूपपरावर्त्तनादिक कला करीने आषाढभूति साधुनी पेरें माया प्रपंच करे अथवा बाजीगरनी पेरें तंत्रख्याल देखाडीने चमत्कार उपजावे. तेणी करी

लोको आग्रह करें के, आ साधु तो करामतनुं घरजछे; ए सर्वेवि द्या जाणे छे. एवुं जाणीने ते साधुने घणा सन्मानथी आहारादिक आपे. तथा वली कहे के हे स्वामीजी! तमोने जे जोइयें, ते तमे बीजुं पण कांइ ल्यो. एवी रीतें मायाप्रपंच विद्याने फोरवीने साधु आहार ले, ते मायापिंडदोष कहियें.

१० दशमो लोभपिंडदोष. ते जे साधु आहारार्थें गृहस्थने घेर जाय अने त्यां कोइ उदार अने प्रबल दाननो दातार जोइ ने ते साधु तेना पासेंथी पोताना खप करतां वधारे आहार लीए; तेथी ते लोभपिंडदोष साधुने लागे.

११ अगीयारमो पुव्वपच्छासंस्तवदोष. ते आहारने अर्थें साधु गृहस्थने घेर जाय अने त्यां अहार ले, ते पहेलांज गृहस्थनी स्तवना करे के अहो! आगल पण अमोयें घणा वखत आ घर मांथी घणो सारो अने स्वादिष्ट अशनादि चारे प्रकारनो आहार वहोरयोछे. एवुं कोइ न हशे के जे आ गाममां आवीने आ घर मां न आव्युं हशे. आ घर, सदाथी एवुंज धर्मात्माछे. आ घर कांइ आज कालनुं छे शुं? वली एनां माता पिता पण एवांज सुधर्मात्मा हतां. जे कोइ अभ्यागत साधु आवे, तेउने खुशी थइने आहार देतां हतां. एमनी भक्तिनी तारिफ केटली करीयें? सर्वे जग्यायें आ घरनी यश प्रतिष्ठा प्रसिद्धछे. एमना पूर्वजोनी एवी, भक्ति सहित करणी हती तो आ पण एमनाज पुत्रछे. एमनी पण ते करतां सवाइ भक्तिछे, एमना वंशमां महोटा कुलदीपक थइ गया, तेमनां नाम हजी सुधी चाल्यां आवेछे. एवी एवी स्तुति करीने संभलावे, अथवा आहार लीधा पछी ते गृहस्थाना महोढा उपर स्तुति करे के शेठजी! तमे घणा लायक गृहस्थछो, साधुजन विषे भक्तिमान् छो, तमारा जेवो बीजो कोइ दाता नथी. आ गाममां हमेशां तमारुं घर साधुने आहार आपवामां धोरी छे. तमे श्री जि

नशासनमां गजेंद्रछो. स्थंभछो, दीपक छो, अमारां माता पिता छो, तमे अवसरना जाणछो, परीक्षावंत छो, अने भला भूंडाने स वेंने ओलखो छो. जे गाम जाइयें छैयें, ते गाममां तमारुं यश व्यास थइ रह्युंछे. इत्यादिक रीतियें करीने साधु आहार ले, त्यारें पुव्वपछासंस्तवदोष लागे.

१२ बारमो विद्यापिंडदोष. ते आहारने अर्थें साधु गोचरी जतां पहेलां अन्नपूर्णा देवीनुं आराधन करे. जेनी प्रसन्नताथी ज्यां जाय, त्यां घणो अने सारो आहार मले. एवी रीतें देवतानी प्रसन्नताथी सदा गृहस्थना घरथी आहार लावे, ते विद्यापिंडदोष.

१३ तेरमो मंत्रपिंडदोष. ते आहारना निमित्तें गृहस्थने कामण, मोहन, वशीकरण अने उच्चाटन प्रमुख प्रयोग करे; तथा मुखबंधनादि कोइ यंत्र प्रयोग करी आपे, अथवा गृहस्थने शीखावे, हस्तकला करे, अथवा कोइ तंत्रविधिथी जूठुं देखावा मात्र कांइ करे. एम मंत्रादि फोरवी चमत्कार देखाडीने आहा र लावे, ते मंत्रपिंडदोष.

१४ चौदमो चूर्णपिंडदोष. ते आहारने अर्थें साधु, गृहस्थने घेर जाय, त्यां ते गृहस्थने अनेक जातिनां औषध, चूर्ण, मेलावी आपे, अथवा ते चूर्णनां विधि, रीति, क्रिया, कर्तव्यता, सहु करी आपे, त्यारें ते गृहस्थ, ते साधु उपर रागी थइने जाणे जे अमारी सार्थें गुरुजी कोइ वातनो अंतर राखता नथी, माटे ए रूडा साधुछे. ए प्रमाणे रागी थइने आहार आपे, ते साधु ले. ए वात पूर्वे तिगंछदोषमां कहीछे; पण अहिंयां एटलुं विशेष छे जे साधु पो ताने हाथे औषध, चूर्णादिक सिद्ध करी आपे. ते चूर्णपिंडदोष.

१५ पंदरमो योगपिंडदोष. ते जे साधु आहारार्थें पादले पादिक करी, कोइ महोटो चमत्कार देखाडी लोकोने स्वानुकूल करी आहार ले, ते योगपिंडदोष. अहींयां पूर्वें मंत्रादि योग

दोष कह्या, ते तो सर्व क्षुद्रमंत्र, पण आमां तो महोटो चम त्कार करे, माटे जूदो भेद थयो.

१६ शोलमो मूलकर्मदोष. ते साधु आहारने अर्थें गृहस्थने अपुत्रीयो जोइने, गर्भ रहेवानुं औषध बतावे, अथवा पोतें ते औषध बनावी आपे. अथवा कोइ अनाचरणी स्त्री होय, तेणे परपुरुष साथें कुकर्म कीधुं होय ने तेथी ते गर्भवती थइ होय, पछी ते गर्भपात करवा माटे, साधुने आव्यो जाणीने तेनी पासें आवीने पोतानुं शल्य मटाडवा माटे गरीब थइने ते साधु आगल दीन भाषण करे; अने कहे के हे स्वामिजी ! मुज हत्यारीनो उपकार करो. आवुं पाप माराथी थयुंछे, ते उपकार करीने टालशो तो जीवीश, नहीं तो मारे मरवुं पडशे. एवां वारंवार दीनवचन सांभलीने साधुने करुणा उपजे. त्यारें गर्भना शातन पातन प्रयोग प्रमुखनां औषध बत्ती प्रमुख होय, ते बतावी आपे, तेणे करी ते स्त्री खुशी थइने सारो आहार आणीने आपे. अथवा मूलबंधन जे गर्भ स्थिरीकरणप्रयोग करे अथवा शांतिकर्म करे. एवी क्रिया करीने आहार ले, ते मूलकर्मदोष. ए कर्म, साधुयें अवश्य नज करवुं. ए कर्मने महादुःखदायि जाणीने जरुर त्यागवुं. ए शोल उत्पादन दोष साधुथी थाय; अने पूर्वें जे शोल दोष कह्या ते श्रावकथी थाय. तेने उद्गमदोष कहीयें. ए प्रमाणे ए बत्रीशे दोष टालीने आहार ले, ते एषणाशुद्ध कहीयें. अन्यथा अनेषणा कहियें.

हवे दश ग्रहणदोष कहेछे.

१ प्रथम शंकितदोष ते आहारमां कोइ उद्गमादि दोषनी शंका आवे तो आत्मार्थी साधु, ते आहार न लीए. जो लीये, तो शंकितदोष लागे.

२ बीजो म्रक्षितदोष. ते जे अभक्ष्यादिक अयोग्य वस्तु ते सचित्त अथवा अचित्त होय तेनाथी हाथ खरड्या होय तेवे हाथे

अथवा अयोग्य द्रव्यथी भाजन खरड्युं होय, एवा भाजनथी आहारादिक आपे, साधु ले, त्यारें म्रक्षितदोष लागे,

३ त्रीजो निक्षिप्तदोष. ते जे माटी, पाणी प्रमुख हरेक सचित्त वस्तुनो स्पर्श करीने अथवा परस्पर संघट्ट थवाथी अचित्त थाय, एवो आहार ले, ते त्रीजो निक्षिप्तदोष.

४ चोथो पिहितदोषः ते एके, १ सचित्त वस्तु अचित्त वस्तुयें ढांकी होय, २ सचित्त वस्तु सचित्त वस्तुयें ढांकी होय, ३ अचित्तवस्तु सचित्त वस्तुयें ढांकी होय, ४ अने अचित्त वस्तु, अचित्तवस्तुयें ढांकी होय. ए चार भांगामां चोथो भांगो शुद्धछे; अने बाकीना त्रण भांगा अशुद्धछे. एमाटे ए त्रण भांगे आहार ले, त्यारें पिहितदोप लागे.

५ पांचमो संहृदोष. ते जे आहार आपवाना वाशणमां अयोग्य वस्तु भरी होय, ते वस्तु बीजा वाशणमां नाखीने पछी तेज वाशणथी आहार आपे, ते पांचमो संहृदोष.

६ छठ्ठो दायकदोष. ते जे नपुंसक, बालक, अतिवृद्ध, आंधलो, पांगलो, कंपवायुथी जेनो देह कंपतो होय ते, जेना पगमां शृंखला, बेडी प्रमुख जडी होय ते, धान्यने खांडतो होय ते, धान्यने दलतो होय ते, धान्यने भुसतो होय ते, चरखा चरखी फेरवतो होय ते, कपास लोढतो होय ते, कपासने कालामांथी बूटो पाडतो होय, वलोणुं वलोवतो होय, जमतो होय, छकायना आरंभनुं कार्य करतो होय, सात मास उपरांत गर्भवती स्त्री होय, बालकने धवरावती स्त्री होय, अने जे स्त्रीनुं बालक रडतुं होय, तेने पडतुं मूकीने. ए उपर कहेली क्रियाउमांनी हरकोइ क्रिया करतां जे दातार आहार आपे, तेवा योगनो आहार साधु न लीयें; अने जो ले, तो दायकदोष लागे.

७ सातमो उन्मिश्रदोष. ते योग्य आहारने अयोग्य आहा

रसाथें मिश्र करीने आपे,अने ते साधु ले, त्यारें उन्मिश्रदोष लागे.

८ आठमो अपरिणतदोष. ते आहारना वर्ण, गंध अने रस, ते कांइ परिणामांतर थइ गयां होय; कांइ न थइ गयां होय, वली पूर्ण संस्कार थयो नथी, अने कांइ काचो कांइ पाको, एवो आहार थयो होय, ते वखत साधु ते गृहस्थने घेर आहार लेवा आवे,त्यारें तेने ते आपे अथवा ते गृहस्थ दाताना घरमांनां माणसो माहेला कोइकने आहार आपवानी रुचि थइछे अने कोइकने आपवानो भाव नथी, त्यारें जेने आपवानी रुचि थइ होय, ते दान आपे, तेवारें बीजाना दिलमां खेद उपजे. एवा बेउ गृहस्थने अपरिणत कहीयें. एवो आहार साधु ले, त्यारें अपरिणतदोषलागे.

९ नवमो लिप्तदोष. ते जे घरथी साधु आहार ले, ते आहार आपनार दातारना हाथ ते वखतें खरड्या होय, ते दान देवा माटे ते वखतें ते दातार, पोताना हाथ सचित्त पाणी प्रमुखथी धोइने पछी आहार वहोरावे अथवा वहोराव्या पछी हाथ धोइ नाखे त्यारें तेने, साधुनिमित्त पश्चात् कर्मनो आरंभ लाग्यो. एवो आहार साधु ले, त्यारें लिप्तपिंडदोष लागे.

१० दशमो छर्दितदोष. ते जे साधुने आहार आपनारो माणस छे ते अन्न, भात, घृत, रस, दहीं, मठो, तथा रसवती शाक,भाजी, मांडा प्रमुख भूमि उपर वेरतो तथा ढोलतो थको आहार आपे, एटले थोडो भूमि उपर वेराय, थोडो वाशणमां रहे, तेवो आहार आपे अने ते साधु ले, त्यारें छर्दितदोष लागे. ए दश दोष जे ग्रहणना कह्या, ते साधु अने श्रावक बेहुना मलवाथी थायछे, अने पूर्वना बत्रीश.एकंदर बेंतालीश दोष लागे.ए बेंतालीश दोष रहित आहार साधु लेइ आव्या पछी गुरुसमीपें आवीने गोचरी आलोवे. आवतां, जतां तथा आहार लेतां जे जे क्रिया थइ होय ते,तथा जे जे उत्तर प्रत्युत्तर थया होय ते,सर्व याद करीने गुरुने कहे, त्यारें

ते गुरु आहारने निर्दोष जाणी आज्ञा आपे. पढी गुरुजी तथा स्थविर, तथा वीजा जे साधु होय, तेमने निमंत्रणा करे, अने सर्वने कहे के हे साधुजी ! तमे पण आहार वावरो. त्यारें ते साधु आहार करवाने वेसे, त्यां आहार करती वखत पांच दोष लागेढे. ते पांच दोषनां नाम लखे ढे.

१ प्रथम संयोजनादोष. ते आहार करतां साधु स्वादार्थें द्रव्य द्रव्यांतरथी मेलावी करीने खाय. जेम तरकारीमां लूण, मरीच, खटाइ प्रमुख मेलावे, सारी चीजमां मीठुं मेलावे. एवी रीतें स्वादिष्ट बनावीने खाय, तेने संयोजनादोष लागे. साधुने तो पात्रमां जेवो आहार पड्यो होय, तेवो खावो, पण ते आहारने आगल पाढल करे नहीं तथा आहारनी प्रत्येक चीज जूदी जूदी खाधि जाय नहिं तो सर्व चीज एकठी मेलवीने घोलीने खाइ जाय पण जे आहारथी रसगृद्धि वधे, ते न करे. कढी प्रमुख खातां थकां पण सबडका घणा थाय, ते न करे तथा पापड प्रमुख खातां थकां घणा बरडका थाय, ते न करे. घणा करडका न करे तथा घणो बचबचाट शब्द थाय, ते न करे. एवी रीतें साधु भोजन करे, तेम ढतां जे साधु द्रव्यांतर मेलवीने रससहित सरडका प्रमुख भरीने खाय, त्यारें तेने संयोजनादोष लागे.

२ वीजो प्रमाणातिक्रमदोष. ते पुरुषनो आहार बत्रीश कोलीया प्रमाणनो ढे, अने स्त्रीनो आहार अठावीश कोलीयानोढे. ए करतां एक बे प्रमुख कवल वधारे जमे, तो प्रमाणातिक्रमदोष.

३ त्रीजो अंगारदोष. ते साधु आहार करती वखतें आहारना देनारनी अथवा आहारनी तारीफ करतो खाय, ते एम के अमुक आहारनो आपनार पण चतुरढे. आहो शी एनी चतुराइढे? भोजन पण सर्व सरस अने सुस्वादढे. वली ए आहार आपनार गृहस्थ हाथनो पण उदारढे. जेने आपेढे तेनुं पात्र भरपुर करी

आपेछे. आहारवहोरवा फरी बीजाने घेर जवानी इच्छा रहेती न थी. तथा जे वस्तु वहोरावेछे, ते पण घणी स्वादिष्ट अने भावें करी वहोरावे छे. तेमां पण आजनो आहार तो घणो स्वादिष्टछे. एवी आहारना आपनारनी तारीफ करीने खाय, ते अंगारदोष.

४ चोथो धूम्रदोष. ते आहारना आपनारनी तथा आहारनी निंदा करतो थको खाय. ते एमके फलाणो दातार तो कोइ सारो न थी, हाथनो महा कृपणछे, वली एनामां कांइ चातुर्य पण नथी, सारी वस्तुने बगाडी नाखीने खायछे. एनो सदा सर्वदा एज ढंगछे. जूर्ठ! आ चीज बरोबर जो बनावी होय, तो केवी स्वादिष्ट थाय ? तेने केवी बेस्वाद करीनाखीछे ? एतो कमोदने कुशका करीने खाय छे. चतुर होय ते तो कुशकाने कमोद करीने खाय. आ आहार केवी रीतें खाधो जाय ? एमां कांइ स्वाद नथी. एतो गले पण उतरतो नथी. एवां दूषणो देतो थको खाय, ते धूम्रदोष.

५ पांचमो अकारणदोष. ते जे साधु, विनय, वैयावच्च, संय मनिर्वाह, प्रबलक्षुधा शुभध्यानस्थिरता. इत्यादिक कारण विना केवलशरीरनीपुष्टता निमित्तें सरस अने सुस्वाद आहारनुं भोजन करे, ते अकारणदोष. ए पांच मंडलिकदोष कह्या. ते आगला बेंतालीश साथें मेलवतां सडतालीश दोष थया. ए सडतालीश दोष रहित आहारना लेनारा जे साधु तेमने अतिथि कहीयें. तेवा साधुने श्रावक, दोष टालीने आहार निमंत्रणा करे अने जे जे आहार साधुयें लीधो होय, तेमांनोज आहार पोतें पण ज मे. कदाचित् एवा साधुनो योग न मले, त्यारें शुद्ध श्रद्धावान् अने व्रत नियमादिकधारक, एवा सुश्रावकने अति घणा मान थी बोलावीने महोटा भक्तिभाव पूर्वक जमाडे अने जे आहार ते जमे, तेमांनोज पोतें पण खाय; परंतु पंक्तिविछेद आहार न करे. प्रायें ए व्रतनी, पोसहनुं पारणुं करवामां मुख्यताछे. प्रवाह

थकी बीजा दिवसोमां पण व्रत प्रमुख करेजछे. तेना पांच अतिचारछे, ते कहेछे.

१ प्रथम सचित्तनिक्षेप अतिचार. ते सचित्त चीज माटी, पाणीनो घडो, बलतो चूलो अथवा अनाजनो ढगलो, अथवा सचित्त पान, तथा फल, एवी चीजना उपर, दान देवा लायक जे आहार होय, ते मूकी राखे एटले मनमां साधुने आहार नहीं देवानी तुछ बुद्धियें विचार करे जे, में तो अतिथिसंविभागव्रत लीधुंछे, तेथी मारे तो साधुने सर्व चीजनी निमंत्रणा अवश्य करवी पडशे; अने साधु पण लेवा लायक आहार जोइने लेशे. माटे हमणांथीज आ युक्ति करुं ने पछी जो हुं निमंत्रणा करीने आग्रह करीश, तो पण ते आहार साधु लेशे नहीं. एवो तुछ बुद्धियें विचार करी आहारने सचित्त चीज उपर धरी राखे. पछी साधुने आग्रह करी बोलावे, जूठी भावना भावे; पण साधु, सदोष आहार देखीने ते आहार लीधा विना पाछो फरे; त्यारें ते कुटिल बुद्धिवालो जाणे जे में साधुने निमंत्रणा सर्व चीजनी करी, माटे महारुं व्रत तो अखंड थयुं, अने आहारनो खरच पण न थयो! एवो फेल करे, ते प्रथम अतिचार. एवुं ते कुबुद्धि कुटिलताथी करे, कां तो अज्ञानभद्रकभावथी करे.

२ बीजो सचित्तपिहिण अतिचार. ते दान देवानी चीज सचित्त फल पत्रादिकें करी ढांकी राखे. ए पण न देवानी बुद्धिथी ढांकी राखे, अथवा अज्ञानताथी ढांकी राखे, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो अन्यव्यपदेश अतिचार. ते आहार नहीं देवाना निमित्तें ज्यारें साधु आवे, त्यारें महोटो भाव देखाडीने आहारनी चीज, पोताना हाथमां लेइने साधुना मुख आगल धरे. त्यारें साधुना आचार प्रमाणे साधु पूछे के ए चीज कोण संबंधी छे? एटले ए चीज कोनी छे? ते सांभली ते दाता कहे के हे स्वामिजी!

ए चीज तमे लीयो. ए अमारी नथी पण अमारा भाइनीछे अ थवा संबंधीनी छे एटले ते अमारीज छे. ते अमारो भाइ पण वहु ज भाविकछे तथा धर्मरुचिछे. तमने आ चीज आपी सांभलीने वहुज खुशी थशे. ए माटे आप लेइयें; कशो खतरो नथी. एवी रीतें वहु मान अने आग्रह करे, पण मनमां जाणे छे के आ पारकी चीजछे ते साधु लेशे नहीं. माटे वहुज भाव देखाडे पण ते साधु, लीधा विनाज पाछो फरी जाय. त्यारें ते दाता विचारे के में तो मारुं व्रत पण साचव्युं अने कांइ खरच पण न थयुं! एवी कुबुद्धिनो फेलाव करे. तथा कोइ दृष्टिरागी दातार, दृष्टिरागथी देवानी बुद्धियें वीजानी चीजने पोतानी कहीने आपे, ते पण एमांज आवे. श्रावकें तो शुद्धाहारार्थी साधु आगल याथातथ्य कहेवुं जोइयें, पण कपट न करवुं. ए प्रमाणे त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथो समत्सरदान अतिचार. ते गृहस्थने घेर कोइ साधु गोचरी आवे थके कोइ छति चीज जूए, ने ते चीजनो साधुने खप होय तेथी ते चीजनी याचना करे, त्यारें दातार होय ते तो छती चीजनी ना कही शके नहीं; पण मनमां खीजाइने आपे, ते समत्सरदान कहीयें. अथवा कोइ सामान्य गृहस्थ सारी रीतेंथी परिगल दान आपेछे, तेनी तारीफ सांभलीने सहन करी न शके, तेवारें मनमां ईर्ष्या आणीने कहे के, ए सामान्य गरीब छतां दान सारी रीतें आपीने शुं माराथी पण महोटो थवानी चाह राखे छे? तो हवे हुं एवुं दान आपुं, के तेवुं दान एनाथी दीधुं जाय नहीं. ए पोतानी मेलें थाकीने वेसी जशे. एवी रीतें पारका गुणनी ईर्ष्या धरीने जे दान आपे, ते पण समत्सरदान कहेवाय. ए चोथो अतिचार.

५ पांचमो कालातिक्रम अतिचार. ते साधुने गोचरीनो वखत थयो जाणीने साधुनी गवेषणा न करे, अने जाणे के हवे ए साधुने

आहार लेइने पाछा पोताने स्थानकें जवानो वखत थयो, साधु पण पोतानो खप जेटलो आहार लइ आव्या होय, बीजा अहारनो खप न होय, त्यारें ते गृहस्थ कुटिलपणायें विचारे के आहार तो साधु लइ आव्याछे. अने हवे आहारनो खप हशे तो थोडो ह शे! एम विचारी गोचरीथी फरती वखतें साधुने जोवो नीकले. ए वामां कोइ साधु पोताना प्रयोजन मात्र आहार लेइने पोताना स्थानक प्रत्यें जता होय तेमनी कने जइने ते श्रावक महोटी मनु हार करे के हे स्वामिजी! मारे घेर पधारीयें, मारा मनोरथ सफल करीयें, महारी विनति दीलमां धरीयें, कृपा करीने मने निस्तारियें, कांइक शुद्ध आहार लेइयें, जेम हुं पण पच्चखाण पालुं. एम वारंवार कहे. एवी तेनी विनति सांजली साधु कहे के हे महानुजाव! अमा रे तो हवे आहारनो खप नथी. खप माफक तो अमे लाव्या छैयें, वधारे आहार अमारे शा कामनो? एवुं कहीने ते साधु आगल चालता थाय, त्यारें फरी ते कुटिल दाता कहे के, हे स्वामिजी! मा रे साधुने आहार वहोराव्या विना खावानो नियमछे. तमे कांइक पण वहोरशो तो हुं खाइश, नहीं वहोरशो तो नहीं खाउं. ते सां जली साधु अंतरायना जयथी एवुं विचारे के एने घेर जइने थोडुं लेइ आवुं, बहु नहीं लउं. एवुं विचारी तेने घेर जइने किंचित् मात्र आहार लइने जाय, त्यारें ते गृहस्थ, मनमां विचा रे के मारुं व्रत पण पल्युं अने खरच पण घणो न थयो! अ थवा साधुने स्थंडिल जूमि प्रये जतां देखीने कुटिलताथी ते श्रा वक, आडो फरीने जाव देखाडीने कहे के हे स्वामीजी! घेर पधारो, अने शुद्धमान आहारनो अनुग्रह करो. ते सांजली साधु कहे के हे महानुजाव! हमणां तो अमे आहार पाणी करी चूक्या; हवे निहारजूमि प्रत्ये जइएं छैयें. त्यारें ते मर्कट वैराग्य वतावे के हुं जाग्यहीन, मने घणा अंतरायनो उदयछे. जुउ घणो वखत थ

इ गयो !! तो पण म्हारो मनोरथ सफल थयो नहीं. साधुने गोचरीनो वखत पण जतो रह्यो, आमारे घेर असूर थइ गइ. हवे शुं करुं? एवो देखाडवामात्र पश्चात्ताप करतो घेर जाय. ते पण पांचमो अतिचार. अथवा अणदेवाना निमित्तथी पहेलो पोतें जमे अने पछी साधुने बोलावे, तो कालातिक्रम थाय एटले साधु केम आवे? कदापि आवे तो बाकी वधेलो आहार साधुने आपे. साधुने तो एवा आहारनो पण कशो हर्ष शोक नथी. शरीरने भाडुं आपवामाटे ए आहार पण सारोजछे परंतु दातारनी ए शुद्ध चाल नथी, दान आपीनेज जमवुं, ए चालछे. एम करी पछी पेलो गृहस्थ मनमां विचारे के में दान पण आप्युं अने बहु खरच पण न थयुं! ए पांचमो अतिचार. ए पांच अतिचार मांहेला पहेला त्रण अने पांचमो, ए मलीने चार अतिचार दंभथी थायछे. अथवा अज्ञानपणायें भोलाभावथी थायछे. अने चोथो अतिचार, द्वेषदोषथी थायछे. ए चोथा शिक्षाव्रतनी शैली कही.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे पंडित श्री उद्योतसागरगणिनाकृता द्वादश अतिथिसंविभागनामक चतुर्थ शिक्षाव्रतकथने भाषा संपूर्णा १२

एटले अहीं श्रीसम्यक्त्वमूल बारे व्रतनी विगत संपूर्ण थइ.

---

हवे समकितमूल बार व्रतधारी श्रावकने एकशो चोवीश अतिचारनी खबर राखवी, ए सर्व अतिचार जाणपणामां राखवा, पण आदरवा नहीं. एटला माटे एकशो चोवीश अतिचारनो विचार लखीयें छैयें ॥

तेमां प्रथम समकितना पांच अतिचार, बार व्रतना प्रत्येकना पांच पांच अतिचार करतां शाठ अतिचार थया, अने कर्मादानना पंदर अतिचार. ए प्रमाणे बधा मलीने एंशी अतिचारनां

स्वरूप तो व्रतनी विगतमां लखी गया छेयें. वाकी संलेपणाना पांच तथा ज्ञानाचारना आठ, दर्शनाचारना आठ, चारित्राचारना आठ, तपाचारना वार. अने वीर्याचारना त्रण. ए वधा मली चुम्मालीश अतिचारछे, तेनुं स्वरूप कहीएं छेएं.

---

॥ अथ ॥

## ॥ श्रीसंलेपणाव्रतातिचारस्वरूप प्रारंभः ॥

त्यां संलेपणानाा वे भेदछे. एक द्रव्यसंलेपणा, वीजी भावसंलेपणा. तेमां प्रथम द्रव्यसंलेपणा. ते जे साधु तथा श्रावक अनशननो मनोरथ करे, त्यारें प्रथम संलेपणातप करे. ते तप, आगमोक्त विधियें करे. ते संलेपणातप त्रण प्रकारनुं छे. उत्कृष्ट, मध्यम, अने जघन्य. तेमां उत्कृष्ट वार वर्षनुं, मध्यम वार मासनुं, अने जघन्य वार पक्षनुं. तेमां उत्कृष्ट संलेषणातपवालो प्रथम चार वर्ष विचित्र तप करे, पछी फरी चार वर्ष षट् विगय रहित विचित्र तप करे, पछी वली वे वर्ष एकांतरें उपवास करे; अने पारणे आंविल करे. पछी छ मास नानाविध विकृष्ट तप करे, छठथी उंचुं तप करे नहीं अने पारणे आंविल करे. वली छ महीना अतिविकृष्ट तप करे परंतु आठमथी उंचुं तप करे नहीं, पारणे आंवील करे. तेवार पछी वली एक वर्ष निरंतर आंविल करे. ए रीतें वार वर्षे उत्कृष्ट तप पूर्ण थाय.

१ एज रीतें मध्यम तथा जघन्य तप पणछे. जेवी वर्षनी संख्या छे तेवीज मासनी तथा पक्षनी गणतरीछे. आ संलेषणातप करतां शरीर गतरस, अने धातु सर्व शोषाय, अस्थिचर्मावशेष. अणशण करवा योग्य शरीर करे, त्यारें तेने द्रव्यसंलेषणा कहीयें.

२ वीजुं भावसंलेपणा. ते अंतरमांथी विषय, कषाय, नोकषाय, गारव, संज्ञा. इत्यादि अंतरदोषने अति क्षीण करे. एटले प्रब

ल कारणे पण विषय कषायादि उद्दीपन न थाय, विकार पामे न हीं, एटले मंदोदय करे. आपणी चेतना समतामग्न रहे. ते जा व संलेषणा कहियें.

पढी गुरुपासें आवे त्यारें ते गुरु, तेनी परीक्षा करे अने जुए जे, एने बाह्य अने अभ्यंतर ए बन्नेनी संलेषणा थइ के एकली बाह्यनी ज संलेषणा थइ! एवी परीक्षा करवा सारु ते समयें गुरु कोइक रीतनुं वचन बोले, जे वचन सांजलीने अज्ञानथी तरत कषायोदय थाय. तेवारें जे साधुने अंतरनी अने बाह्यनी बन्ने संलेषणा थइ होय, ते साधु तो गुरुनां वचन सांजलीने नम्र थइने बोले के, श्रीगुरुस्वा मीजीनी करुणायें करी शुं न थाय ? आपनी कृपायें करी व्यवहार रीतियें तो संलेषणा करी, परंतु तत्वार्थनी वातनुं रहस्य तो आप जाणो. एवी रीतें मार्दव कोमल वचन सांजलीने गुरु जाणे. जे ए साधुने तो बन्ने संलेषणा थइढे. त्यारें अणशण करवानी आज्ञा आपे. आगलथी अणशणनी क्रिया करावे.

तथा कोइ अयोग्य साधुयें पण संलेषणातप कर्युंढे, त्यारें ते साधु संलेषणातप पूरुं करीने गुरुपासें आवीने अणशण कर वानी आज्ञा मागे, त्यारें ते गुरु, पूर्वोक्त रीतें विषम वचन कहे. त्यारें ते केवल द्रव्य संलेषणावंतढे, माटें ते गुरुनुं वचन सां जलीने तेने कषाय उद्दीपन थाय. त्यारें ते विकल्प करे ने कहे के जूर्ज ! आवुं शुष्क लुष्क शरीर थयुंढे ते तो जोता नथी, ने वली एवी वक्रोक्तिथी फरी फरी पूढो ढो ? ए प्रमाणे दीलमां क्रोध उद्दी पन जाव करीने पोतानी एक आंगली तोडीने गुरुना मुख आग ल नाखे ने कहेके, जूर्ज ! आवी तो संलेषणा थइढे, फरी केवी चा हो ढो ? एवां शिष्यनां वचन, विनय. सहु सांजलीने तथा जोइने गुरु माथुं धूणावी कहेवा लाग्या जे हे साधो ! तमारे तो एनो प हेलोज दिवसढे. तमे अमारे लेखे तो हजी कांइ कर्युं नथी. जे

दोष टालवाने माटे तमे तप कर्युं हतुं, ते दोष तो जेमनो तेम ज रह्योछे. अज्ञान कष्टथी आ शरीर डुर्बल तो अनंतवार कर्युं हशे, पण कांइ तेथी अर्थ सर्यो नहीं; आ शरीरने क्षीण पाडवा थी अमे तो नहीं वखाणीयें.अंतरंग शीलता प्रगट थइ नहीं;अने कषायादिक अग्नि तो उपशांत न थयो. माटे भाव संलेषणा विना कोइ आराधक थइने मुक्ति पामे नहीं, ते माटे तमने अणशण नी योग्यता नथी. जो मुक्तिने इछो, तो कषाय, नोकषाय, पांच इंद्रियोना त्रेवीश विषयो, गारव, इत्यादि महा दोषोने मटाडो तो तमारो मोक्षनो मनोरथ सिद्ध थाय, एवी शुद्धि करो, एवी परीक्षा करे. ए संलेषणातप ते मुख्यवृत्तियें पंडितमरणने निमित्तछे. ए माटे वेउ संलेषणा करे, ते पांच अतिचारने वर्जे, तो आराधक थाय, तेने समाधिसहित पंडितमरण कहीयें. ते पांच अतिचारनां नाम लखेछे.

१ प्रथम आलोगासंसप्पउगे अतिचार. ते संलेषणादि धर्म प्रभावें फरी आर्यदेश, आर्यकुलें उत्तम मनुष्यपणुं पामवानी चाहना राखे, ते पहेलो अतिचार.

२ बीजो परलोगासंसप्पउगे अतिचार. ते अणशणी पुरुष, परलोकें परभवें देवेंद्रादिक पदवीने इछे, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो जीवियासंसप्पउगे अतिचार. ते अणशण लीधे बहुविध सत्कार, सन्मान, स्तवनादिक सांभलीने घणा लोकोना आगमन वंदनानो महोटो उछव देखीने मनमां जाणे जे बे दिवस वधारे जीवीयें तो सारुं. एवो विकल्प उठे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो मरणासंसप्पउगे अतिचार. ते अणशण कीधे थके क्षुधादि परीसहनी पीडायें पीड्यो थको मनमां विचारे जे, हवे मरण वेहेलुं थाय तो सारुं, कारण आ पीडा सहन करी ज

ती नथी. माटे पीडाथी वहेला पार उतरीयें! एवो विकल्प उठे, ते चोथो अतिचार.

५ पांचमो विसयासंसप्पउंगे अतिचार. ते अणशण करीने अणशणनुं फल, काम जोगनी प्राप्ति इछे; ते पांचमो अतिचार.

ए संलेषणाना पांचे अतिचार व्यवहार प्रसिद्धथी तो अण शण निष्ठाएं कहेवायछे. परंतु वस्तुगतें तो सर्वव्रतमां लागेछे.

१ जेम सर्वव्रत, सर्वनियम, दान, पूजा, विनय, वैयावच्च, अने प्रत्याख्यानादि क्रिया करीने आ लोकना सुखनी इछा न राखवी. तेम छतां जो राखे, तो पहेलो अतिचार लागे.

२ तथा परलोकें देवगत्यादिकनी इछा न राखवी, तेम छतां जो राखे, तो बीजो अतिचार लागे.

३ तथा आवो मनुष्यावतार पाम्या छैयें, धर्मनियमकरणी, जीवदया, जिनपूजा महोत्सव प्रमुख करीयें छैएं; शास्त्र सांजलीएं छैयें,ए सारुंछे; ए माटे घणुं जीवीएं तो सारुं. रखे आयुष्यस्थिति पासें आवी जाय? एहवो विकल्प न करे,अने करे, तो त्रीजो अतिचार.

४ वली धर्म करतां कोइ पूर्वसंचित पापकर्मना उदय थवाथी घणी अशाता पामवा लाग्यो. त्यारें मरणने इछे जे मरण पामीएं तो आ दुःखथी छूटीएं. पण ते एवुं न विचारे जे मरण पामवा थी कांइ कर्म छूटे नहीं. मुवाथकी पण बीजा जन्ममां अजुक्त कर्म आगलने आगल तैय्यारछे. "कृतकर्मक्षयोनास्ति" एम जाणवुं,उलटी मरणनी इछा राखवाथकी अशुजकर्मरसपोषण थायछे. कारण के नवा अशुज विकल्पें अशुजबंध थाय; ए माटे साधक, मरणनी इछा न राखे जो राखे, तो चोथो अतिचार लागे.

५ तथा धर्मफल तो निर्जराछे. ते निर्जरा साध्य धरीने जे जे धर्म करे, ते मार्गी जीव आराधक कहेवाय. त्यहां कामजोगनुं फल साध्य राखीने कर्म करे, त्यारें पांचमो अतिचार लागे. एम सर्व व्रतमां

संलेषणाना पांचे अतिचार लागे. ए माटे उपयोग संज्ञालीने पांचे अतिचार त्यागवाथी साधकता समरे. इति संलेषणा पंच व्रतातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

---

॥ अथ ॥

## ॥ श्री ज्ञानाचारस्य अष्टातिचारस्वरूप प्रारंज ॥

१ प्रथम आकालाध्ययन अतिचार. ते कालविना सूत्रसिद्धांत ज्ञणे गणे. त्यां अतिचार लागे, ते कालवेला कहेले. प्रथम सवारमां एक घडी रात्रीनी अने एक घडी प्रातःकाल अरुणोदय थया पठीनी. ए वे घडी प्रजातनी कालवेला कहीयें. तथा ए वीज रीतें वे घडी मध्यान्ह कालनी, तथा एज रीतें वे घडी संध्यानी, तथा वे घडी मध्यरात्रीनी. ए चारेने कालवेला कहीएं. ए कालवेलामां नवुं ज्ञणवुं, गणवुं, सांज्ञलवुं, ए कांइ पण करवुं नहीं. ए कालवखतें ए कालनी क्रिया जे पडिक्कमणादिकले ते सुखें करे; पण वीजुं नवुं ज्ञणे गणे नहीं. ए कालनी वखतें मनोगत जप, ध्यान सुखें करे, पण वचनोच्चार करीने ज्ञणे नहीं. ए अतिचार, साधु अने श्रावक बन्नेने साचववो. जो ज्ञणे, तो साधु अने श्रावक बन्नेने अतिचार लागे. तथा साधुने कालिक सिद्धांत पहेले पहोर अथवा चोथा पहोर शिवाय शेष कालमां सिद्धांतसूत्र ज्ञणाय नहीं. रात्रियें पण एमज जाणवुं, वली बीजा, त्रीजा पोहोरमां अर्थचिंतवन करे तथा अकालें मेघवृष्टि थाय तथा त्रण चोमासाना महा पडवाना अढी दिवस असज्झाइ, ते आवी रीतें के अर्द्धी चउदश, पूर्णिमा अने पडवो ए अढी दिवस तथा आशो अने चैत्र शुद पांचमथी ते वदि पडवा सुधी असज्झाइ. तथा वर गाउमां महासंग्राम थतो होय, त्यहां सुधी

असज्झाइ. तथा राजा, छत्रपति, महोटो देशाधिपति मरण पाम्यो होय तेना तखत उपर ज्यां,सुधी नवो राजा न बेसे,त्यां सुधी ते देश मां असज्झाइ. इत्यादिक अनेक सिद्धांतमां असज्झाइकाल कह्योछे. तथा म्लेछना तहेवारकालें एटले बकरीइदें महाहिंसा थायछे. माटे ते दिवसें केटलोएक कालरात्री प्रमुख, महा हिंसाना दिवस मां पण सिद्धांत जणवुं नहीं. तथा सो हाथमां पंचेंद्रिय जीवनुं कलेवर ज्यां सुधी पड्युं होय, त्यां सुधी सिद्धांत जे जिनप्रणीत सूत्र ते कांइ जणाय गणाय नहीं. ए क्षेत्रथी असज्झाइ कहीएं. इत्यादि असज्झाइना प्रकार आगममां घणा कह्याछे; तेमां सिद्धांत जणवुं तथा सांजलवुं पण नहीं. अने जो जणे तथा सांजले, तो ज्ञाननो कालातिचार लागे.

२ बीजो विनयहीनातिचार. ते गुरु, पुस्तक, तथा ज्ञाननां उपकरण जे पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, सांपडा, सांपडी, दसतरी, वही, नोकरवाली तथा अढार जातिनी लीपिना अक्षर सहित कागल प्रमुख उपकरणने पग लगाडे, पगथी दाबे, थूंक लगाडे, थूंकथी अक्षर जूंसे, एठे हाथे स्पर्श करे, अक्षर उपर रेती नाखे, उपर बेसे, सूवे तथा फाडी नाखे, एठा मुखें एनो उच्चार करे, कोइ द्रव्यना उपर अक्षर होय, तेने पासें राख्या थका त्यां वडीनीति, लघुनीति करे, लघुनीति, वडीनीति करतां उच्चार करे, अने स्नान, मैथुन, पूजा करतां बोले, पुस्तकने बाले, जलमां बूडाडे, वेचे. इत्यादिक आशातना करे, अने गुरुनी तेत्रीश आशातना न टाले, ते विनयहीनातिचार.

३ त्रीजो अबहुमानातिचार. ते गुरु तथा पुस्तकादिकनुं घणुं मान न करे, तेमनी अदब राखे नहीं. बहु मान ते जेम दरिद्री पुरुषने धनप्राप्ति थयाथी जेवो अति आनंद थाय अथवा कोइ सामान्य पुरुषने घेर राजा पोतें चालीने आवे त्यारें ते पुरुष केवो

आनंद पामे ? अने आश्चर्य पामे ? तेम गुरु पुस्तकादिकनी भेट करवा वखतें तेथी पण विशेष आनंद पामे. ते न करे तथा ज्ञानद्रव्य इंद्रिय सुखमां वापरे. अथवा कोइ द्रव्य खातो होय तेने जाणीने देखीने छति शक्तियें उवेखे नहीं तथा छति शक्तियें शिक्षा न आपे, कोइ उपर उग्रता करें नहीं; मनमां एवुं जाणे के आपणने शुं छे ? जे जेवुं करशे, ते तेवुं पामशे. एवी रीतें गइ गुजरी करी जाय. तथा ज्ञानी पुरुष उपर द्वेष राखे, ज्ञानीनो अवर्णवाद बोले, ज्ञान भणनारने अंतराय करे, छति शक्तिएं ज्ञानने भणवा, गणवा, तथा सांभळवावाळानी सहायता करे नहीं. ज्ञानना गंभीरभावमां असद्दहणा करे, शास्त्रोना अटपटा अक्षरनी मजाक करे, हसे, कुयुक्ति लगाडे, गुरु तथा सिद्धांतनी प्रत्यनीकता करे, अने मतिज्ञानादि पांच ज्ञाननी असद्दहणा करे. इत्यादि अतिचार लगावे, ते त्रीजो अबहुमानातिचार.

४ चोथो उपधानहीनातिचार. ते श्रावक, उपधान वह्या विना षडावश्यकादि क्रिया करे, तथा साधु, योगनी तपक्रिया कीधा विना सिद्धांत भणे, भणावे, तथा संभळावे, त्यारें तेने चोथो उपधानहीनातिचार लागे.

५ पांचमो गुरुनिन्हवण अतिचार. ते कोइ अल्पश्रुत, अल्पविख्यात एवा साधु अथवा श्रावकनी पासें भण्यो होय, मूळ उपकार तो तेनो होय, पछी भणवावाळो पोताना सारा क्षयोपशम उद्यमथी शास्त्रमां घणो हुशीआर, शाणो अने चतुर थयो; त्यारें कोइ भद्रक लोको, तेनी निपुणता, अने चमत्कारिक ज्ञान जोइने ते चमत्कार पामी बहुमान करी पूछे के, अहो स्वामिजी ! तमे श्रुतमां सावधान छो, एवी श्रुतज्ञाननी चतुराइ, संपूर्णविद्या, कया गुरुनी पासें भण्या छो ? जो ते गुरु हाल अहीं विद्यमान होय, तो तेना अमे पण दर्शन करियें. हवे ते गुरु तो सुधो

गरीब, पण ज्ञानगुणसंयुक्त होय अने पोतें तो महोटो ठेगालो होय अथवा श्रावक होय तो महोटो तालेवर होय, पोषाक प्रमुख सारो होय, चाकर प्रमुख घणा होय, तेवारें ते जब्रूता दोषथी मनमां विचारे के महारो विद्यागुरु तो घणो प्रख्यात नथी, माटे एनुं नाम लइश, तो महारी महोटाइ थशे नहीं माटे ते वर्त्तमान कालमां कोइ महोटो पंमित वृद्ध होय, जेनुं यश प्रख्यात होय, तेनुं नाम लीये. एम करी पोताना मूल गुरुने लुपावे. ते गुरुलोपी, महापापीने पांचमो गुरुनिन्हवण अतिचार लागे.

६ बठो कूटसूत्रातिचार. ते सूत्रना अक्षर खोटा उच्चारे. ह्रस्व दीर्घनी खबर न राखे, अक्षर, मात्राहीन अथवा अधिक करीने जणे, बंदोजंग करी जणे, पद, संपदासहित न बोले, ते सूत्रकूटातिचार.

७ सातमो अर्थकूटातिचार. ते पोताना अज्ञानदोषथी अथवा कोइ कुमति कदाग्रहना उदयथी अशुद्ध अर्थ करे, विपरीत प्ररूपे, ते सातमो अर्थकूटातिचार.

८ आठमो उजयकूटातिचार. ते सूत्र अने अर्थ ए बन्ने अशुद्ध जणे, प्ररूपे, ते आठमो उजयकूटातिचार. इति ज्ञानाचारस्य अष्टातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

---

॥ अथ ॥

## ॥ श्री दर्शनाचारस्य अष्टातिचारस्वरूप प्रारंजः ॥

१ प्रथम शंकातिचार. ते जे जिनागमना सूक्ष्म अतींद्रिय गंजीरजाव सांजलीने पोताना मंदक्षयोपशमना योगथी तथा मिथ्यात्वना प्रदेशोदयथी शंका धरे, जे ए वात केम ठरशे? ए केम हशे? कांइ मनमां वेसती नथी. शुं जाणीयें जे केवी रीतेंडे? ए ते साचुं डे के जूतुंडे? एवो विकल्प उठे, ते प्रथम अतिचार.

अथवा जेने मंदक्षयोपशमछे, पण मिथ्यात्वना बहुप्रदेशोदय नथी. समकितनुं स्थान ऊंचुं छे, ते पण गंभिरभाव सांभलतां बुद्धिमांतो एका एक आवे नहीं. पण ते समकेती एम विचारे जे ए वात, मारी बुद्धिमां नथी आवती; ते मारा आत्मदोषथी मने आवरणोदय घणांछे; पण ए वात साचीछे; कारण के जे माटे ए सर्वजिन भाषित छे. अने श्री जिनेश्वरजी तो असत्यभाषी नथी. असत्य भाषणमां त्रणे दोष जे राग, द्वेष, अने अज्ञान, ते तो जेमना नाश पाम्याछे अने ते दोषना सहचारी जे हास्य भयादिक ते पण जेमना नाश पाम्याछे, तो तेवा वीतराग परमेश्वर कोण कारणे जूठुं बोले ? विना उद्देश कोइ कार्य प्रवर्त्ति छेज नहीं अने वीतराग कृतकृत्यने तो कोइ कार्यनो उद्देश रह्यो नथी, ए माटे जे केवलि भाषित छे, ते सर्व सत्यजछे. एमां कांइ संदेह नथी. एवी निश्चल बुद्धि थइ, तेने समकितनी निर्मलता वधती जाय. अने जेने एवी निश्चल बुद्धि न होय, तेने अतिचारना सबबथी समकित, मलीन थइ जाय. ते प्रथमातिचार.

२ बीजो आकांक्षातिचार. ते जे दान, शील, तप प्रमुख धर्मकरणी करीने पुण्यरूपी फलनी इछा राखे, अति आतुरता करे, अथवा आकांक्षा ते परमताभिलाष अन्यदर्शनीना धर्मनो उन्नतिभाव देखी, ते धर्मनी इछा राखे जे, आ पण धर्म सारोछे, आचरवा लायकछे, जूर्ज जूर्ज !! एमां पण केवा केवा प्राणी छे ? औदार्य, धैर्य, गांभीर्य, पूर्णभक्ति, परोपकार, अने निस्पृहता केवी धारण करे छे ? एवा धर्मने केम निंदीएं ? एवो विकल्प, ते बीजो आकांक्षातिचार.

३ त्रीजो वितिगिछातिचार. ते धर्म करणीना फलनो संदेह धरे. अहींयां पोतानां पूर्वकृत पापना उदयथी कोइ उदयिक दुःख पामे, त्यारें शिथिल परिणामना योगथी अशुद्ध विकल्प उठे,

जे अमे विधिपूर्वक धर्मकरणी करीयें बैयें, पण कांइ फल नजरमां आवतुं नथी. कोण जाणे केवुं फल पामशुं ? पण एम न विचारे जे, धर्म तो आजन्ममां पाम्या बैयें, अने हमणां करीयें बैयें तेनुं फल तो निश्चे आगल पामशुं. पण एतो पूर्वजन्मने विषे मिथ्यात्वादि चारनी प्रबलताथी जे चीकणां कर्म बांध्यांछे; तेनो अहीं उदय थयो छे, ते पोताना विपाक मात्र जोइने जेने धर्ममां निश्चल बुद्धिछे, तेनां कर्म तरत नाश पामशे, जे कारण माटे धर्मकरणी करतां पाप उदय थाय. ते प्रायें निकांचितरसियां कर्म उदय आवे, अने बंध, स्पष्ट, निधत्त रसीयां कर्म ते धर्मना परिणामथी विफलोदय थइ जाय, एवुं न विचारे. एम दुःखनी आतुरतामां भूले, ते पण अतिचार छे. तथा साधु साधवीनां मलमलीन वस्त्र तथा शरिरादिक जोइने मनमां दुगंछा करे, सूग आणे, जे ए सर्वकरणी तो सारीछे पण ए गलीच रहेछे, ते बूरुं करे छे. जो ते अचित्त फासु परिमित जलथी स्नानादिक करीने शुद्ध रहेतो घणुं सारुं; एवो विकल्प करे, पण एम न विचारे के ए पुद्गल, सर्व एक सरखांजछे. सारुं नठारुं कोइ नथी. जे कारण माटे शुचि ते अशुचि थाय,अने जे अशुचि होय ते शुचि थाय. समय समय अशुचि पुद्गलमां शुचि पुद्गल आवेछे, अने शुचि पुद्गलमां अशुचि जायछे. जे शरीरने पवित्र करवाने विविध प्रकार करेंछे, ते शरीर तो केवल अशुचिथी जन्म्युंछे; तो तुं क्यहां सुधी एने पवित्र करीश ? वली आ शरीर, पवित्र करवाथी कांइ जीव पवित्र नहीं थशे, जीव तो सर्व पुद्गलनी वांछना मटवाथी पवित्र थशे. जो अहीयां फांसु अचित जलथी पवित्रता करे, तो पण ते पुद्गलरंगी थयो; अने ज्यारें जीव पुद्गलरंगी थयो, त्यारें आ जीवनी अनादिनी भूल मटी नहीं. एने तो पहेलोज दिवसछे. सर्व धर्मनुं मूल तो एछे. के जेम जेम पुद्गल वासना उतरे, तेम तेम धर्म

निश्चलता होय. पवित्र अपवित्रपणानी वासना तो राग द्वेषनुं मूलछे. अने ज्यां राग द्वेषनी पुष्टिछे, त्यां धर्म क्यांछे ? इत्यादिक शुद्धयुक्ति चित्तमां न आवे, त्यारें कुविकल्प करे. अथवा विति गिछा ते घणो पुण्योदय थये थके माचे, मनमां फुले, अभि मान धरे; अने अतिपापोदय थये थके दुःख धरे, बहु अरति वेदे, उदासी रहे, दीनता करे, दिलगिरी रहे, ए सर्व दुगंछा छे. तथा एक सारो, अने एक भूंडो ए लक्षणें करीने ए त्रण प्रकारना विकल्प, ते त्रीजा अतिचारमां आवे.

४ चोथो मूढदृष्टि अतिचार. ते जे अन्यदर्शनी मिथ्यात्वीनां कष्ट, मंत्र, चमत्कार, अथवा कोइ मिथ्यात्वीना देवनो परतो जे मनःकामनापूर्ण, ते जोइने दिलमां मुरझाय जे आ देवधर्म तो प्रत्यक्षछे; तो गुरु केम ना कहेछे ? कांइ खबर पडती नथी. एम मुरझाय, पण एम न विचारे जे सुख दुःखतो कर्मना उदयने आ धीनछे. देवता तो निमित्तमात्रछे. आपणां पुण्य पापना उदय विना देवताथी कांइ थनार नथी. तेउ तो केवल आपणां पुण्य पापना उदयनिमित्त थइने यश ग्रहेछे; पण उदयिक पाप पुण्य ना उदय विना सुख दुःख आपी शकता नथी. अन्यदर्शनना जे जे प्रभावक देवता छे, तेमनी सेवनाना करवावाला तो कोइ सर्व सुखी नथी, तेमां पण घणा दुःखीछे, ए माटे कर्मना उदय विना सुख दुःखनी प्राप्ति, ते मिथ्याछे. अथवा श्री जिनागमना अति सूक्ष्मविचार, निगोदना, अथवा षट्द्रव्यना, नय, गम, भंग, प्र स्तारा दिक गहनविचार सांभलीने पोताना आवरणना दोषथी बुद्धिमां न आवे,त्यारें मुझाय, ते एम के कोण जाणे ए शुं कहे छे ? कांइ खबर पडती नथी. कोण जाणे शी रीतें हशे ? ए प्र कारें विकल्प करे, ते चोथो मूढदृष्टि अतिचार.

५ पांचमो अणुवबुह अतिचार. ते जे पोतानी सत्ताना गुणप

र्थाय प्रकाश करीने कहे नहीं. अथवा गुणवंतना गुण जाणे तो पण तारीफ करीने प्रकाशे नहीं. पांच लोकमां गुणीना गुण प्रस्तावती वखतें तेना गुण प्रगट नांखे नहीं. प्रकाशे नहीं, मोढेथी कहे नहीं तथा रागद्वेषादिक, कर्मउपाधि संयोगिक नाव, सर्व डुःखनुं मूलछे. एम वीशदरीतें प्रकाश करीने कहे नहीं, ते पांचमो अतिचार छे.

६ छठो अस्थिरीकरण अतिचार. ते जे आपणने कोइ पाप कर्मनो उदय थयो, त्यारें आपदा, रोग, शोक, आजीविका, डुर्लनता, कूडां आल, तेवी दिनपर दिन डुःखनी चढती जोइने कोइ मिथ्यात्वना प्रदेश उदयबलें करी जैनमार्गथी परिणाम खसता जाय. आचारमां शिथिल थाय, ते पोतेंज पोताना शास्त्रपरिचयथी जाणे जे मारां परिणाम धर्ममार्गथी शिथिल थयाछे, पूर्वथी मारी श्रद्धा पण मलीन रहेछे. एवुं जाणे तो पण तेनी दृढतानां कारण जे सद्गुरुसेवन, शास्त्रश्रवण, दृढवृत्ति, महापुरुषचरित्रस्मरण, देवदर्शन, उत्सवादिगमन, कर्मग्रंथादिक अथवा अध्यात्म शास्त्रपठन, इत्यादि दृढतानां कारणछे, ते न सेवे, अने जाणतां छतां पण गुरुसंसर्ग, शास्त्रपठनादि उद्यम करे नहीं. अथवा कोइ अधर्मरुचि प्राणीथी परचो करे, अथवा कोइ बीजो धर्मरुचि जीव होय, तेने धर्मथी पडतो देखे, त्यारें कहे फलाणो पुरुष, आगल धर्ममार्गमां घणोज दृढ थयो हतो, हवे तो दिवसें दिवसें एना शिथिलतानां परिणाम नजरें वधारे आवेछे. एवुं पोतें जाणे अने पोतामां एवी शक्ति पण छे, के ते धर्मे शिथिलने बहुविध हेतुयुक्ति देखाडीने धर्ममार्गमां स्थिर करे अने पडवा न दीए. एवी शक्ति छतां पण तेने उपकार बुद्धिएं करी शुद्धोपदेशें डुर्गतिपतनादि विपाकदर्शन. इत्यादि स्थिरीकरण न करे, अने मनमां जाणे जे आपणुं शुं बगडेछे ? चेतना तो एनी बगडे

माटे जे करशे, ते पामशे. एवी उदासी करीने छति शक्तियें धर्मथी रुगतो होय, तेने धर्ममार्गमां स्थिर न करे, तो तेने अस्थिरीकरण छठो अतिचार लागे.

७ सातमो अवात्सल्यातिचार. ते जे जे साधर्मी प्राणी, जेनी एक श्रद्धाछे, अने शास्त्रश्रवण, देवदर्शन, सामायक, पोसह प्रमुख करवुं, इत्यादिक धर्मकरणी. साथेंज करता होय, जेनी साथें धर्मनो महोटो संबंधछे अने जे एक गुरुना उपदेशित प्रमुख छे, तेने साधर्मी कहीयें. ते साधर्मीनी छति शक्तियें नक्ति न करे तेने कोइ रीतनुं संकट आवी पड्युं होय अने पोतानामां ते संकट टालवानी शक्ति छे, तो पण तेनो उद्धार न करे, ते संकटने मटाडे नहीं, ते साधर्मी उपर घणुं हेत न धरे, तेने जोइने खुशी न थाय. संघमध्यें कोइ गुणवान् पुरुषनी शोना यश, प्रतिष्ठा सांनलीने अप्रीति उपजे तथा साधर्मीकनो समुदाय मले, त्यां कषाय करीने मांहो मांहे विरोध पेदा करावे. साधर्मी साथें शत्रुतानी रीति राखे, तेनी उपर अशुन परिणाम चिंतवे, अथवा सर्वजीव सत्तामां सरखाछे, एकज जाति, समानगुणपर्यायी, अने तेउनुं वस्तुगतें एकज स्वरूपछे, ए माटे समानसाधर्मी थया, एवुं शास्त्रना उपकारथी जाण्युं, तो पण तेउनी रक्षा न करे, ते अवात्सल्यदोषछे अथवा स्वनिष्ठामां अंतर्गतमां पोताना ज्ञान दर्शनादि गुणपर्याय छे, ते निश्चें साधर्मी छे, एवुं गुरुकृपाथी जाणेछे तो पण तेने ज्ञान, ध्यान, संवर अने समता रमणें करी पोषे नहीं, अथवा जेम वार तहेवारें पोताना पाप कुटुंबने आदरथी अने नक्तिथी बोलावी विविध उपचारो करी हर्षें करी पोषेछे; तेम कोइ वार्षिक पर्वादि धर्मगत पर्व आवे थके, स्वामीवात्सल्यादिक नक्ति, छति शक्तियें करे नहीं; ते पण अवात्सल्यदोषरूप अतिचार छे अथवा देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, गुरुद्रव्य, अने

साधारणद्रव्य वावरे. कोइ देवद्रव्य नक्षण करतो होय, तेने छति शक्तियें शिक्षा न आपे. मनमां विचारे के आपणने शुंछे? जे खाशे, ते डुर्गतिनो देखवावालो थशे, संघमां शुं आपणे एक लाज छैयें !! बीजो तो कोइ बोलतो नथी, त्यारें हुं एकलो शा माटे कोइ नाइ कुटुंबीने मातुं मनावुं ? एवुं विचारे तथा छति शक्तियें देहेरा प्रमुख धर्मस्थानकना द्रव्यनी खबर राखे नहीं, अथवा खंमित, फंमित, मेली, अशुद्ध, अपवित्र धोतीथी पूजा करे अथवा पूजा करतां बीजाने एवीज रीतें, एवे वेषें जोइने तेने कांइ कहे नहीं, अथवा पूजा करतां मुखकोश बांधे नहीं, तेत्रीश आशातना टालीने पूजा करे नहीं, अथवा पूजा करतां बिंबने हाथमांथी पाडी नाखे, बिंबने कलश प्रमुखनो धक्को लगाडे, देहेरानी दश आशातना न साचवे, सामायक तथा पोसहमां थापनाचार्यनी पडिलेहणा करतां हाथमांथी नूमि उपर गिरावे अने शुद्ध मानन्नक्ति न राखे. ए सर्व सातमो अवात्सल्यातिचार जाणवो.

८ आठमो अप्रनावनातिचार. ते जे, छति शक्तियें धर्मनी उन्नतिनां जे जे कारणोछे, जेवां के स्नात्रपूजा, सत्तरप्रकारीपूजा, एकशो अष्टोत्तरीपूजा अने एकवीशप्रकारीपूजा ते महोटा हर्षथी करावबी, तथा थोडी शक्ति होय तो व्यवहारें अष्टप्रकारनी पूजा, प्रनावना, संघनक्ति, रथयात्रा, तीर्थयात्रा, संघसहित जवुं, महोत्सव, बिंबप्रतिष्ठा करावबी, तीर्थोद्धार करावबा, जीर्णोद्धार पोताथी करावबां, अथवा अन्यने उपदेशप्ररूपक थइने नवां प्रासाद बीजाकने करावबां, अने सद्गुरु, आचार्य, नट्टारक प्रमुख आवे थके तेमने संपत्तियुक्त अवारित दान आपे. छति शक्तियें जेवुं न करे. सोनाना तथा रत्नना लुंछनां करतो थको तेने नगरप्रवेश करावे ते समयें उदारचित्तवालो थइ जेवुं पोतानुं सामर्थ्य होय, ते प्रमाणे चौटा प्रमुखमां शोन्ना करावे. प्रतोली प्रमुख विविध प्रकारें विनूषा बना

वे उदारताथी दीनने दान आपे. ए सर्व शासननी उन्नतिनां कारण छे. जेकारण माटे एवा उत्सव, महोत्सव, बहुमान अने अवारित दाननी उदारता विगेरेने देखवाथी सर्व कोइ मिथ्यात्वी जीव, धर्मनी अनुमोदना करीने पुण्योपार्जन करे. सुलन्नबोधी पण थइ जाय, अने आपणा पण एवे कारणे करी परिणाम निर्मल थाय. कोइ लेश्या एवी आवी जाय के, तेवी लेश्या बऊी उमरमां पण आवे नहीं. एवो परिणाम समरी जाय. शासननी प्रन्नावनाथी घणा जीवोने उपकार थाय; एवुं जाणतां छतां अने छति शक्तियें पण प्रन्नावना न करे, अथवा निश्चें प्रन्नावना अंतरंगतमां ज्यां ज्यां पुष्टनिमित्त जे देवगुरुदर्शन, शास्त्रश्रवण, साधुसेवन, जेनाथी आत्माना गुणनी वृद्धि थाय, घणी निर्जरा थाय, आत्मामां ज्ञानप्रकाश थाय. एवुं सर्व पोतें जाणेछे, पण ते प्रमाणे करे नहीं, ते अप्रन्नावनादोषातिचार आठमो जाणवो॥ इति दर्शनाचारस्य अष्टातिचारस्वरूपं संपूर्णम्॥

---

॥ अथ ॥

## ॥ श्री चारित्राचारस्य अष्टातिचारस्वरूप प्रारंन्नः ॥

१ प्रथम अनुपयुक्तगमनातिचार. ते मार्गें चालतां मन, वचन, काया, एकत्र उपयोगीरूप प्रणिधानयुक्त गमन थाय, त्यां साधु फूसर प्रमाण न्नूमियें दृष्टि पडिलेहणा करतो जाय. एटले ईर्यासमितियुक्त गमन थाय. त्यां साधुने सदा काल होय अने श्रावकने सामायक पोसह कीधे होय.अने ज्यारें ते अनुपयोगी योग चपलतासहित वर्त्ते, तोते प्रथम अनुपयुक्तगमनातिचार जाणवो.

२ बीजो अनुपयुक्तन्नाषी अतिचार. ते जे साधु सदा सर्वकाल, अने श्रावक सामायक पोसहमां बेठो थको वे न्नाषा बोले.

त्यां ज्ञाषाना चार जेदछे. प्रथम सत्यज्ञाषा. ते जेवुं होय, तेवुंज कहे, पण कम वेश न कहे, बीजी असत्यज्ञाषा, ते कांइ कहे वानुं होय तेने बदले कांइ कहे. त्रीजी मिश्रज्ञाषा. ते कांइक जूतुं अने कांइक साचुं, जेम के आजे नगरमां दशनो जन्म थयो.एवुं कहे, ते मिश्रज्ञाषा. चोथी अनुज्ञयज्ञाषा. ते साचुं पण नहीं अने जूतुं पण नहीं, पण जे लोकव्यवहारें बोलवुं. ते जेम गाम आव्युं रात्री पडी, वली कोइनुं नाम कहेवुं. जेम के जगत्पाल, लक्ष्मीधर, देवदत्त, अमर इत्यादि व्यवहारज्ञाषा चोथी. त्यां साधु सदाकाल, अने श्रावक सामायक पोसहमां पहेली अने चोथी ए बन्ने ज्ञाषा बोले; ते पण प्रणिधानयुक्त उपयोगी अने जयणायुक्त बोले. ते अहींयां विना उपयोगें अशुद्ध बोले, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो अनुपयुक्तएषणातिचार. ते जे पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त बेंतालीश दोष टालीने जिक्षा ले. पांच दोष टालीने आहार करे, ते चारित्राचारछे; पण उपयोग विना एथकी विपरीतपणे आहार ले, ते त्रीजो अतिचार. अहींयां एषणाशुद्धिमां बीजुं पण वस्त्र, पात्र, शय्या, संथारक, वसती प्रमुख जे जे चीज चारित्रने उपकारी होय, ते चीज जो निर्दोष ले, तो आचार जाणवो अने जो सदोष ले, तो अतिचार लागे. ए पण अतिचार साधुने सर्वदा, अने गृहस्थने पोसह सामायक लीधे लागे. एम पोतानी दशा माफक पाले, तेमां जो अनुपयुक्त प्रवर्त्ते, तो ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो अनुपयुक्तआदानमोचनातिचार. ते जे साधु सदा काल, अने श्रावक सामायक पोसहमां जे जे चीज ले, तथा मूके, ते चीज पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त उपयोगी थको दृष्टि पडिलेहणा पूर्वक ले, फरी एवी रीतेंज मूके, एवो आचारछे. अने जे अनुपयुक्त अवधिथी आदान मोचन करे, ते चोथो अतिचार कहीयें.

५ पांचमो अनुपयुक्तपरिष्ठापन अतिचार. ते जे साधु सर्वे

काल, अने श्रावक सामायक पोसहमां लघुनीति, वडीनीति, मेल, श्लेष्मादि जे परठवणा लायक वस्तु, ते शुद्ध निर्जीव भूमिना स्थानकमां दृष्टिपडिलेहणापूर्वक, पुजन प्रमार्जन करीने परठवे, एवो आचारछे. तेथी विपरीत, प्रणिधान रहित अनुपयोगी थको परठवे, तो पांचमो अतिचार लागे. अहींयां पहेली बे समिति, पोसह सामायकमां तो अवश्य साचववी. कदापि न सचवाय, तो पण ए बेनो जैनधर्मीने उपयोग राखवो, कारण ए धर्मनो मूलमार्गछे.

६ छट्ठो अनुपयुक्तमनप्रवर्त्तनातिचार. ते जे साधु सर्व कालें अने श्रावक सामायकादिक धर्मकरणीना अवसरें पूर्वोक्त प्रणिधानपूर्वक सर्व कुविकल्प छोडीने सूत्रार्थ चिंतवन प्रमुख आलंबनयुक्त उपयोगी थको मनने स्थिर राखे, ते मनगुप्ति आचार, अने एनाथी विपरीत आर्त्तध्यानादिकें करी कुविकल्पमां मन दोडावे, ते छट्ठो अतिचार.

७ सातमो अनुपयुक्तअकारणवचनातिचार. ते जे साधु सर्व काल अने श्रानक सामायक पोसहमां प्रायें मौनज रहे. अने बोले, तो पण उपयोगी, पूर्वोक्तप्रणिधानयुक्त अवश्य कारण योगें जिनाज्ञायुक्त सर्व जीवने हितकारक, एवुं शुद्ध भांगे सांभलवामां मधुर एवुं वचन कहे, ते वचनगुप्ति आचारछे. अने एनाथी विपरीत निष्कारणे जेवुं तेवुं बोले, ते सातमो अतिचार.

८ आठमो अनुपयुक्तनिष्कारणकाययोगचपलतातिचार. ते जे साधु सर्वकाल अने श्रावक पोसह सामायकमां इंद्रिउने गुप्त करी राखे अने अवश्य कारण योगें उपयोगी थको प्रणिधान युक्त आज्ञापूर्वक जयणाथी हस्त पादादिक आकुंचन प्रसारण करे, अथवा उठे, बेसे, ते कायगुप्ति आचार. पण निष्कारण, अनुपयुक्त, अने अविधिपूर्वक जे हस्त पादादिक योगचपल

ता करे, ते आठमो अतिचार जाणवो. ए अतिचार जाणवामां राखे, पण आदरे नहीं. अहिंयां गुप्तिधर्म ते उत्सर्गधर्म छे अने समिति ईर्यादिक जे पांचेछे, ते अपवादधर्मछे. ए आठे धर्मनी माता कहेवाय, जे जे धर्म करणीछे, ते ए आठें करी युक्तछे, ते आचारछे. अने ए विना जे करे, ते अतिचार जाणवो ॥ इति चारित्राचारस्य आष्टातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

## ॥ श्री तपाचारस्य द्वादशातिचार स्वरूप प्रारंभः ॥

त्यां तपनुं मूल लक्षण एछे जे, श्री जिनेश्वरें बार प्रकारना तपनी प्ररूपणा कीधी, ते तप, परम निर्जरानुं कारणछे. पण इछा निरोध करीने मनमां ग्लानपणुं नहीं, मन हारे नहीं, अग्लान नी आतुरता रहित, विषयानुष्ठान, गरलानुष्ठान रहित, अन्योन्या नुष्ठानरहित एटले आ लोकने विषे आजीविका हेतुयें अथवा मानने अर्थें, तथा पूजाने अर्थें, अने परलोकें देवादिक पदवीना हेतुयें ए त्रण अनुष्ठान छे; इत्यादिक आशयरहित, क्रोधमा नादि कषायरहित, उमंगसहित, समतासहित, अने चित्तनी प्र सन्नतायें करी, केवल कर्मक्षयना निमित्तें करे, तेने शुद्धतप क हीयें. ते तपना बार भेद छे, माटे बार अतिचार लागे, ते लखेछे.

१ प्रथम अणशणतप. ते जे जे उपवासादिक वीविध प्रकार नाछे, ते करीने पछी पूर्वें भोगवेला आहारने याद करे, भक्तकथा करे, आगला दिवसें पारणानी चिंता करे के आवी रीतें रसोइ व नावीने खाइश. एवो मनमां विकल्प करे. आ संसारमां आहार संज्ञादि दोषछे, ते मोहोटुं लांछनछे, अने सर्व आरंभनुं मूल छे. "छए कायनो थाय ज्यारें छुंटो, त्यारें बने एक रोटो" एवो अ नादि दोष जिनवचन सांभलवाथी जाण्यो पण ते दोष सर्व प्रका

रें परित्यागवाने तो लाचार छे, त्यारें मोक्षार्थी जीव, पोतानी शक्ति मुजब योग्य परिमित काल कवलाहार त्रिविध योगें त्यागरूप पच्चखाण करे; एटले धारणापरिमाणकाल सुधी छकायने अन्नयदान थयुं. अने रसनेंद्रियादिक मार्गी थया. त्यारें सकल लब्धि प्रमुख आत्मिक संपत्तिनुं बीज रोप्युं. एम सकल मनःकामना पूर्ण करवाने समर्थ एवुं तप करीने आगला पाछला दिवसनी चिंता, अनुमोदना करे, ते तपफल व्यर्थ करे. अथवा मनग्लान करे जे, उपवास महोटो कठिन थयो? आ शुं कर्युं? एवो पश्चात्ताप करे. ए सर्व, तपना अतिचार छे ॥ इति अणशण तपातिचार.

२ बीजो ऊणोदरीतप अतिचार. ते जे पुरुषनो पूर्ण आहार बत्रीश कवलप्रमाण, अने स्त्रीनो अठावीश कवल प्रमाण आहार. ए नीरोगी शुद्धकायानुं लक्षणछे. एमां जो कमी जास्ती आहार थाय, ते प्रायें रोग औषधादिकना प्रभावथी थइ जाय तो लाचारीछे, पण प्रमाण तो बत्रीश कवलनुं छे. अने एक कवलनुं प्रमाण मुरगीनुं इंडुं अथवा जेवडुं आंबलुं तेवडुं, अथवा आपणा मोढानी फाडमां जेवडो कवल सुखें आवे एटलो ग्रास लेवो तेने पण कवलप्रमाण कहीयें. अथवा आपणो जेटलो आहार होय, तेना बत्रीश भाग करीएं तेमांना एक भागने पण कवल कहीयें. एवा बत्रीश कवलनो जे आहार करे, ते पूर्णाहारी कहेवाय. ते पूर्ण आहारमांथी इच्छारोध करीने क्षुधा छते संतोष धरीने बे अथवा चार अथवा आठ कोलीया उंछा खाय; तेने ऊणोदरी तप कहीयें. त्यां ऊणोदरीतप करीने कवल परिमाणमां महोटा महोटा कोलीया गणतरीमां राखीने खाय अथवा सरस आहार जे मोदक प्रमुख चीज घणी चीकणीछे, तेना कोलीया खावामां पण उंछा आवे. कारण तेना थोडा कोलीयामांज तृप्ति थाय. ते थोडा कोलीया गणतरीमां राखे, अथवा विशेष स्वादथी घणुं खाय. एवुं

करीने विचारे जे आहार प्रमाण तो बत्रीश कोलीयानुंछे; अने में तो चोवीश कोलीया खाधा; माटे मारे पण ऊणोदरी तप थयुं. पण एम न विचारे जे, बत्रीश कोलीयामां मोदक प्रमुख चीकणी वस्तुनी गणतरी नहीं जाणवी. तेम छतां अाज्ञानदोषथी समजीने ते एवो मनमां विकल्प करे, ते ऊणोदरी तप अतिचार.

॥ त्रीजुं वृत्तिसंक्षेपतप. ते विविध प्रकारना अभिग्रह धरे, अने श्रावक चौद नियम धरे. अथवा आहारनी चीज होय तेनी द्रव्य द्वारायें संख्या राखे, ते वृत्तिसंक्षेपतप कहीयें. ते तप करी ने साधु वार्तामां अथवा उपदेश देतां थकां पोताना अभिग्रहनी वात पण गृहस्थना आगल कही दे, त्यारें ते सांभलीने गृहस्थ जाणे जे अहो !! साधुयें केवा केवा अभिग्रह लीधाछे. तेथी वि वेकी अने चतुर श्रावक होय, ते पोतानी बुद्धिथकी अवसर थये थके अभिग्रह पूरे. तथा गृहस्थ द्रव्यपरिमाणादि नियम धरतो होय, ते पोताना घरमां संकेत शिक्षारूप करे. जे तमे तो स्नेह ग्रथिल छो तेथी हरेक चीज लावीने भोजन करती वखतें भोज नमां नाखशो; अने अमें तो वृत्तिसंक्षेप छैयें, तेथी द्रव्य अधिक थइ जाय त्यारें व्रत खंडन थाय. माटे अमने जूदी जूदी चीज आपवी नहीं. अमाराथी एकठी करेली चीज लीधी जाय, जेनुं एक द्रव्य गणुं जाय माटे हलफल करीने विना खबरथी कोइ चीज जूदी आपशो नहीं. एवी शिक्षा कहे त्यारें ते रसोइदार तुरत रहस्य पामी जाय अने पछी पोतानी निपुणताथी लूण, म रचुं, जीरुं, हिंग संयुक्त व्यंजनादिक मीठी चीज प्रमुख आगल थी एकठी मेलवीने राखे अने ते सौ चीज सुस्वाद होय ते पी रसे अने ते चीज आरोगे. मनमां जाणे के, मारुं द्रव्यापरिमाण हुं शुद्ध राखुंछुं. पण पूर्वें एवी संज्ञा करी, तेथी व्रत तो मलिन थयुं. एवो कुविकल्प, ते वृत्तिसंक्षेपतपअतिचार.

४ चोथो रसत्यागतप अतिचार. ते रस जे ठ विगय, ते विकारना हेतुछे.अने रसगृद्धिना बहु कटु विपाक छे; एवुं जाणीने त्याग कस्यो.पछी कोइ कारण विना,अने गुरुआज्ञा विना निविआता करी खाय अथवा अन्य द्रव्यांतरसंयोग मेलावी घणी रीतें अग्निसंस्कार करीने तेनी मजा आवे; एवी गुणवान् चीज करी खाय. एटले जिव्हानी रसगृद्धि मटाडवा सारु ए तप कीधुं हतुं ते तो थयुं नहीं, ते चोथो अतिचार.

५ पांचमो कायक्लेशतप अतिचार. ते जे साधु, मुनीश्वर लोच करावे. तडकामां ताप सहन करे, शीत सहन करे, डांस, मछर,कुतरा प्रमुखना परिसह सहन करे,विकटासनें स्थिर थइने ध्यान करे,विकटासनें सज्झाय करे,ए तप साधुने तो हररोजछे अने श्रावकने तो सामायक, पोसह अथवा जाप, नवकरवाली, पंचपरमेष्टिना ध्यानना अवसरमां कायक्लेश सहन करवानोछे त्यां छति शक्तियें आगलथी वस्त्रादिक लपेटी सर्व शरीर,आवृत करीने क्रिया करे,अथवा कोमल आसनें बेशीने जपादिक करे, ते कायक्लेशतप अतिचार.

६ छठो संलीनतातप अतिचार.ते जे साधुने तो सदा संलीनता तपछे तेथी सदा पोताना अंगोपांग संवरी राखे. विना कारणें हलावे नहीं अने श्रावक पण सामायक पोसहमां,अथवा पूजा जपादिक अवसरें पोतानुं अंग संवरी विनयगुणयुक्त राखे एटले गप लांबा करवा, अवष्टंभ लेवो, गले हाथ देवो अने अंगोपांग मोडवादिक न करे.एक शुद्ध उपयोगी अंगोपांग संवरी जयणापूर्वक विनयगुणयुक्त प्रवर्त्तन करे,ते संलीनतातप कहीयें.त्यां एवुं तप करीने पूर्वोक्त दूषण लगाडे,तेने संलीनतातप अतिचार छठो लागे. ए छ प्रकारनां बाह्य तपना छ अतिचार कह्या.

हवे ब प्रकारनां अभ्यंतर तपनां ब अतिचार कहेबे.

१ त्यां प्रथम प्रायश्चित्ततप अतिचार. ते जे साधु अथवा श्रावक, पोतपोताना व्रतमां दूषण लाग्युं जाणे, त्यारें ज्ञानी गुरुपासें आलोयणा ले. त्यां आलोयणा बे प्रकारनीबे. एक स्वल्पविषयी स्वल्पकालीन. ते कोइएक नियमनो तथा व्रतादिकनो अतिचार लाग्यो जाणे, त्यारें तरत गुरुने पूबीने तेनुं प्रायश्चित्त लीये. बीजी बहुविषयी, बहुकालीन, उमरगत दूषणनी आलोयणा. तेमां जे एकाद नियमना दूषणनी आलोयणा तो, जे, वर्त्तमानें शाणो होय, तेने पूबी ले; पण ज्यारें आखी उमरनी मह्रोटी आलोयणा लेवाने चहाय, त्यारें शुद्धगुरु जे ज्ञान अने क्रिया ए बन्ने गुणोयें युक्त होय, तेनी पासें आलोयणा ले. कदापि ए बन्ने गुणोयें युक्त एवो शुद्धगुरु न मले, तो बहुश्रुत, ज्ञानवान्, शुद्ध नाषी, एवो पासबो प्रमुख होय, तेनी पासेंथी आलोयणा ले; पण जे उत्कृष्ट क्रियावंतज होय परंतु सिद्धांतना रहस्यने न जाणे तो तेनी पासेंथी न ले. कदापि ज्ञानवंत पासबो पण न मले तो बे गुणें युक्त अथवा एक गुणें युक्त शुद्धप्ररूपक ज्यां होय, त्यां तेनो शोध करीने तेने माटे बीजे गाम बीजे देश जाय. एवी रीतें खोज करतां पोताना निवासक्षेत्रथी सातशें योजन सुधी गुरुनी गवेषणा करे, तथा कालथी बार वर्ष पर्यंत गवेषणा करे. एम शोधतां शोधतां कदापि तेनुं आयुष्य पूर्ण थाय; तो पण तेने आराधक कहीयें. तथा गवेषणा करतामां ज्यां गुणवंत गुरु मले, त्यां ते गुरुनी पासें आलोयणा ले. एम करतां बे गुणयुक्त अथवा एक गुणयुक्त पण गुरु साधु पासबो अथवा ज्ञानवान् होय तेनी खबर, बार वर्ष सुधी खोज करतां न मली, त्यारें पबी कोइएक ठेकाणेथी एवी खबर मली के एक साधु, बहुश्रुत अने क्रियावंत हतो, ते साधु कोइ पापकर्मना उदयथी प्रतिपाति थइने अहींयांथी कोइ दूर देशांतर

जइने त्यां ते वेष छोडीने गृहस्थ थयोछे, तेनुं नाम पछाकडो श्रा वक कहीयें ते फलाणा गाममां छे. एवुं सांजलीने प्रायश्चित्ती त्यां जाय अने ते पछाकडाने एवो प्रतिबोध आपे के हे महानुजाव ! तमे तो रत्नत्रयिनी महोटी पदवी पामी करीने छोडी दीधी,ते सारुं नहीं कर्युं. पण तेमां तमे शुं करो ? उदय छे ते महाबलवान् छे. तेना जोरथी तमारा परिणाम शिथिल थइ गया. ते तो जे थवानुं हतुं ते थइ गयुं, ते माटे हवे कांइ चेतो अने फरी पराक्र मने फोरवो. हमणां अशुन्न कर्मना उदयनी अशाता पाछी हठ वानो समय थयो जणायछे तेथी करी अमारो पण तमारी साथें मेलाप थयोछे. वली तमोने तो महाज्ञाननो आधारछे. तो तमे देखी पेखीने केम जूलमां पडोछो ? ए माटे फरीथी खबरदार थइ चारित्ररत्नने अंगीकार करो अने आत्माने तारो. आगल पण घणा पतित थइने फरी जाग्रत थयाछे, सर्व कर्मनो क्षय करीने मुक्तिसुखने पाम्याछे ए माटे तमे पण चारित्र ल्यो, ढील करो नहीं. एवो सारो उपदेश सांजलीने ते पछाकडा श्रावकना परिणाम सुधरे, तो तेने चारित्र लेवरावी, पछी तेनी पासेंथी प्रा यश्चित्त ले. एम करतां पण ते जारे कर्मीछे, तेथी एम कहे के जाइ साहेब ! गजपाखर ते रासन्नथी केम उठावी शकाशे ? तेम माराथी आ निष्कलंक चारित्ररत्न न पले तो तेने जूठुं लीधा थी शो गुण थाय ? जो ते विधि माफक निर्वहे नहीं तो हुं उलटो महापापी अने अघोरी थाउं. एकवार तो थयो छउं अने ए काघ लागी चूक्योछे. हवे एवी हकीकत कही अने ते जाइयें सांजली ते समयें ते, ते पछाकडाने जिनमंदिरमां लेइ जाय अने त्यां तेने सामायक लेवरावे. पछी तेने वंदन करीने तेनी पासेंथी आलोय णा ले; पण अज्ञानी पासेंथी आलोयणा ले नहीं. एवी रीतें गुरुनी गवेषणा करीने पण आलोयणा ले, ते एवी रीतें के जेम पोतानी

माता कने बालक पोताना मननी वात कहे; तेमांनी कांइ पण छुपावे नहीं, कोइ वात कहेतां लाजे पण नहीं, तेम साधक पण गुरुनी आगल जेवी वीती होय तेवी, निष्कपटी थइ करीने त्रणे योग जे मन,वचन,अने काया तेणे करी जे जूल थइ होय ते कही आपे. कोइ जाणीती वातमां छुपावे नहीं, तेने आलोयणा कही यें. पण जो कांइ छानुं राखीने कहे, तो ते तत्वदंशी थयो, तेथी तेनी शुद्धि थाय नहीं. एवा विधिपूर्वक साधकें गुरु आगल, सर्व पाप प्रगट करी दीधां; गुरुयें पण सर्व जाणी लीधुं. त्यार पछी गुरु, आगमना ज्ञाताछे ते विचारे के पापकर्म, चार रीतें लागेछे १ आकुट्टी, २ दर्प्प, ३ कल्प, अने ४ प्रमाद. एवा चार प्रकारना पापमां आ आलोयणा लेनार कया पापना प्रायश्चित्तने लायक छे ? एवो विवेक करीने यथायोग्य प्रायश्चित्ततप, गुरु आपे, ते शिष्य प्रसन्न थइने ले अने एवुं जाणे के गुरुजीयें मारा उपर महोटी कृपा करीने संकष्टमांथी छोडाव्यो अने मने घणो सुखी कर्यो. मने घणो शुद्ध उपाय बताव्यो. ए गुणना उपकारने कोण वि सरे ? एवी रीतें हर्षित चित्तथी गुरुदत्त प्रायश्चित्ततप ले. पछी गुरुयें उपदिष्टकालने विषे जे तप आप्युं छे, ते तप लेखा शुद्ध पूरुं करी पहोचाके. ते प्रायश्चित्ततपाचार कहीयें. अने जे गुरुयें आपेला मार्गने छोडीने पोतानी मतिकल्पनापूर्वक करे, अथवा प्रतिज्ञात कालथी वधारे काल, विना कारणे लगाडे, अथवा कमवेश करे अथवा प्रतिज्ञा, राजवेठ समान करे, पांच लोकमां अण छूटतुं करे अथवा शून्यचित्तथी करे अथवा फरी तेवुंज आश्रवसेवन करे, ते प्रायश्चित्ततप अतिचार कहीयें.

२ बीजो विनयतप अतिचार. ते जे साधु तथा श्रावक सहु पो त पोतानी दशा माफक विनयपूर्वक आगममां "आयरियउवज्झाए" इत्यादिक गुणवंत प्रत्यें विनय जे वंदन, नमन, अभ्युत्थानादि

उचितभक्तिक्रियारूप, ते आगमशैली प्रमाणे करे, ते विनयत पाचार कहीयें; अने जे आगमोक्तिथी कमवेश करे अथवा विपरीत करे अथवा अण बूटतो करे अथवा दंजथी करे, ते विनयतप अतिचार कहीयें.

३ त्रीजो वैयावच्चतप अतिचार. ते जे साधु तथा श्रावकने, कुल, गण, चैत्य, संघ इत्यादिकनुं जेनुं जेनुं जेवुं जेवुं वैयावच्च करवुं आगममां कह्युं छे, ते प्रमाणे तेनुं वैयावच्च करे. त्यहां वै यावच्च ते रोगादिक विघ्न उपजे थके तेनो प्रतिकार जे उपाय विविध औषध, अंगमर्दन, पथ्य, जक्तादि योगमां तत्पर थइ ज क्तिपूर्वक करे, ते वैयावच्चतपाचार कहीये अने जे ते वैयावच्चनी वखतें काइ बानुं काढी टली जाय अथवा वैयावच्च खोटुं करे अने जे जक्ति विना अणबूटते करे अथवा दंजथी करे अथवा आचार्यादिकना जयथी करे अथवा पोताने करवानुं, ते बीजा पासें करावे, तेने वैयावच्चतप अतिचार कहीयें.

४ चोथो सज्झायतप अतिचार. ते जे साधु तथा श्रावक पोत पोतानी योग्यता प्रमाणे श्रुतज्ञाननो अज्यास करे, ते सज्झायत पाचार कहीयें. ते सज्झायतप, पांच प्रकारनुंछे. १ वांचवुं, २ पू छवुं, ३ परावर्त्तवुं, ४ अनुप्रेक्षा, ५ धर्मकथा.

१ त्यां प्रथम वांचनसज्झाय. ते जे श्रुतनुं जणवुं जणाववुं, ते वांचनसज्झाय कहीयें.

२ बीजी प्रछणासज्झाय. ते जे जणवामां संदेह थयो, तेनुं शि ष्यें पूछवुं अथवा गुरुयें शिष्यने कहेवुं. ते प्रछणानामें बीजी सज्झाय.

३ त्रीजी परावर्त्तनासज्झाय. ते जे पूर्वें जणेला श्रुतनुं गणवुं अथवा गुरुयें शिष्यनी परावर्त्तना सांजलवी अथवा परावर्त्तना करवानी प्रेरणा करवी, ते परावर्त्तनासज्झाय कहीयें.

४ चोथी अनुप्रेक्षासज्झाय. ते जे पठितश्रुतना अर्थनुं चिंतव

न करवुं, अथवा परस्पर साधु श्रावकें मलीने चर्चा करवी अथवा गुरु, स्याद्वादशैलीपूर्वक उक्ति युक्तियें करी शिष्यनो संशय टाले, ते अनुप्रेक्षासज्झाय.

५ पांचमी धर्मकथासज्झाय. ते जे रुचिवंत जीवने भाव करुणापूर्वक धर्मोपदेश कहे; धर्म प्रत्यें पमाडे, तेने धर्मकथासज्झाय कहीयें. ए पांचे प्रकारनी सज्झाय, शिष्य अथवा गुरु पोतानी दशा माफक यथागम करे, ते सज्झायतप कहीएं.

१ अथवा शिष्य विनयसहित हर्षित थको, गुरु आशय अटकल करतो, अनुकूलपणे आसनस्थ प्रशांत इत्यादि विधिपूर्वक वांचना ले तथा गुरु पण प्रसन्नचित्तथी तेनी योग्यता माफक प्रमाद तजीने अग्लानपणे वाचना आपे, ते बेउने वांचनासज्झाय तप.

२ तथा प्रछणासज्झाय. ते आसनस्थ गुरु जोइने शिष्य विनयादि गुणयुक्त आशय अनुकूल थइने पूछे. गुरु पण भाव दया धरीने धर्मरागथी घणी बुद्धिनो खरच करीने स्याद्वादशैली अनुसरतो, एवो जवाब आपे के, तेणे करी शिष्यना चित्तनो संशय तरत मटी जाय, ते बेउने प्रछणासज्झायतप कहीयें.

३ तथा परावर्त्तनासज्झाय. ते जे शिष्य, तीव्र उपयोगी थको पूर्व पठितशास्त्रने गुणे, तथा गुरु पण तीव्र उपयोगी थका सांभले, भूल चूक कही दीए, ते बन्नेने परावर्त्तनासज्झायतप कहीयें.

अनुप्रेक्षासज्झाय. ते जे अर्थनी चर्चा, शिष्य सहाध्यायी अने बीजा पण निपुण साधु मलीने विविधयुक्ति जैनशैलीपूर्वक करे, त्यां क्यारेंक चर्चा करतां उक्ति युक्तिपूर्वक निर्णय थाय अने क्यारेंक निर्णय न थाय, त्यारें गुरु पण आगमानुकूल उपयोगी थइने विशद रीतें चर्चानो निर्णय करी आपे, ते बन्नेने पूर्वोक्त अनुप्रेक्षासज्झाय तप कहीयें.

५ तथा धर्मोपदेशसज्झाय. ते बन्नेने पूर्वोक्तविधिपूर्वक उपकार बुद्धिथी धर्मोपदेश आपे. त्यां जो पोताने उपदेश आप

वानी योग्यता होय, तो आगमशैलीपूर्वक उपदेश आपे, अने जो आगमशैलीना नय, निक्षेप, प्रमाण, सप्तभंगी प्रमुखमां तथा विध क्षयोपशम न होय, त्यारें जे बहुश्रुत उपदेश आपे, ते कचित् हर्षित अने विस्मय स्मेरमुख थको सांजले, ते धर्मकथासज्झाय तप कहीयें. ए पांचे सज्झाय, कहेली रीतिथी विपरीत करे अथवा दंजथी करे, अथवा शिरवोजनिर्वाहन्यायें करे, अथवा अजिमान धरीने करे, बीजानी ईर्ष्याथी करे, अथवा उतावलो उतावलो गड वड करीने पूरी करे, अथवा पोतानी मरजी माफक करे, अथवा यश अर्थे करे, ते सज्झायतप अतिचार कहियें.

५ पांचमो ध्यानतप अतिचार. ते जे धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बन्ने मुक्तिदायकछे. त्यां प्रथम साधुने धर्मध्यानना चारे पाद ध्याववानाछे. ते धर्मध्यानने ध्यावतां ध्यावतां, ज्यारें परिपूर्ण अप्रमत्त नामे उत्कृष्ट स्थानें पहोंचे, त्यार पछी आठमा गुणस्थानकने पामे. त्यां शुक्लध्यानना प्रथम पादनुं ध्यान करे, ते ध्यावतां थकां आगल बारमुं गुणस्थानक पामे, तेवारें शुक्लध्यानना बीजा पादनुं ध्यान करे, ते ध्यावतां थकां बारमुं गुणस्थानक ज्यारें पुरुं थइ रहे, त्यारें चारे घनघातीकर्म क्षय थइ जाय, एटले केवलज्ञान पामे, तेरमुं गुणस्थानक पामे अने त्यार पछी पोताना आयुष्यनी स्थिति माफक तेरमे गुणस्थानकें रहे. पछी जेवारें तेरमा गुणस्थानकनो शेष अंतरमुहूर्त्त काल रहे, ते वारें शुक्लध्यानना शेष बे पाद ध्यावे, त्यां चउदमा गुणस्थानकें पहोंचे, ते स्थलें सर्वकर्मनो क्षय करीने मुक्ति सुख पामे, ए साधुना ध्याननी पद्धति छे तथा श्रावकने तो धर्म ध्यान अने शुक्लध्यानने ध्याववानी योग्यता नथी जे कारणे मूल घाती चार कषाय उदयवंत सरु छे, ए माटे ते श्रावक, अनित्य अशरणादि बारे भावनाने एक चित्तें शुभ आर्त्तरूपें ध्यावे. ते भावना करतां, कोइ उत्तम जीवने उपयोगनी निर्मलताथी लयली

नता थाय, तेनाथी धर्मध्याननी समाप्ति थाय. समाप्ति ते एम के, जेम सूर्योदय पहेलां आरुणोदय आनास मात्र होय, ते सूर्य नथी पण एथी सूर्योदयजन्य कार्य, घट पटादि सर्वनो अनुनव थइ जाय. तेम श्रावकने पण नावनाजन्य शुद्धोपयोगथी धर्मध्याननी समाप्ति ऊलकरूप धर्मध्यानसरखो अनुनव थाय. मुनिनावनो आस्वादमात्र पामे, पण ध्यानपदनी पूर्णता पामे नहीं, ए जे ध्यानयोग, ते ध्यानतप कहीयें. अने जे ए जे ए ध्यानमां बीजो विकल्प, योगचपलतादिक करे, ते ध्यानतपअतिचार कहीयें.

६ बठो त्यागतप अतिचार. त्यां त्यागतपना बे नेदछे. एक डव्यत्याग, अने बीजो नावत्याग. त्यां डव्यत्याग, ते साधु तथा श्रावकने पोतपोतानी दशा माफक आहार उपधि तथा नवविध परिग्रहरूप इंडियसुखनो तथा अवस्थाविशेषें देहनो पण त्याग करे, वोसरावे, ते डव्यथी त्यागतप कहीयें.. अने जे विषयतृष्णा तथा कषाय जे क्रोधमानादिक, तेनो जे त्याग करे,तेने नावत्यागतप कहियें. ए रीतें जिनागममां नावत्याग तप कह्युंछे. तेनो उति शक्तियें त्याग न करे, अथवा विधिरहित करे, अथवा तत्वप्रतीति धरी करे नहीं, अथवा पांच माणसमां अणबूटते करे, अथवा निदान धरी करे, ते त्यागतप अतिचार कहीयें ॥ इति तपाचारस्य द्वादशातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

---

॥ अथ ॥

## ॥ श्री वीर्याचारातिचारत्रय प्रारंनः ॥

१ त्यहां वीर्याचार. ते जीवने मन, वचन अने काया, ए त्रणे योगनुं सामर्थ्य जे शक्तिविशेष, ते वीर्य कहीयें. त्यां साधु तथा श्रावक, पोत पोताना गुण स्थानक माफक तथा पोत पोतानी द

शा माफक जे जे धर्मकरणी करे, ते मनादि त्रणे योगनुं वीर्य फोरवीने करे, सर्व धर्मकरणीमां जेवो जेवो वीर्योल्लास होय, ते वुं तेवुं ते फल पामे. जे माटे गुणस्थान, योगस्थान अने संयम स्थानना भेद पडे. ते वीर्यनी प्रबलता अने मंदताथी चढवुं अने पडवुं थायछे. त्यां प्रथम काययोगथी सर्वधर्मकरणीमां पोताना अंगनुं बल, वीर्य, फोरववामां भूल न करे तथा मनोयोगथी उत्साह, भक्ति, उमंग तथा प्यार, बहु धरतो करे अने वचनयोगथी धर्मकरणीनी प्रशंसा घणा मानथी करे; धर्मनी उन्नति, उपमा आपी आपीने करे अने घणा जीवने धर्मसन्मुख करे, पोताना आत्माने धर्मप्राप्ति सराहे, एटले वखाणे के, धन्य मारुं भाग्य, के मने श्री जिनेश्वरजीना मार्गनी धर्मप्रवृत्ति मली! हवे मने भवदुःखनो भय नथी. इत्यादि त्रिकरण योगशक्ति धर्मकरणीमां वीर्योल्लास फोरवे, ते वीर्याचारनो आराधक थोडा कालमां अक्षय लीला पामे. जो थोडी पण दानादि करणीमां वीर्योल्लास घणो होय तो, महोटी करणीथी पण वधारे फल पामे.

अने धर्मकरणीमां जे छति शक्तियें काययोगें आलस्य करे, कायबल फोरवे नहीं अथवा राजवेठ समान करे, कांइ पण भक्ति विना भयादि कारणे करे अथवा अभिमानथी करे अथवा देखा देखीयें करे अथवा ते लालची, अनुष्ठानादिक वांछाथी करे, ते काययोगवीर्याचारातिचार प्रथम जाणवो.

२ तथा वचनयोगें उत्साहथी सज्झाय स्तवनादि करे नहीं, मंद मंद भाषाथी गडबड करीने भणणानी रीतें कहे, तथा बीजो कोइ धर्मकार्य करतो होय, तेने दुष्करता कही देखाडे, जे ए धर्म काम छे, ते घणुं मुश्केल छे, तमाराथी पूरुं पडशे नहीं माटे प्रथमथीज जोइ विचारीने करजो. ए प्रमाणे कहीने समर्थने पण उत्साहभंग करे तथा धर्मकार्य करतां अथवा करीने पछी खेदनां

वचन कहे जे, ए धर्मकार्य कर्खुं, पण ए धर्मकार्य करतां महोटी तस्दी पाम्या, ए काम घणुंज कठिन छे. करशे, तेज जाणशे. मने वीती ते मारुं मन जाणेछे, कोइ सहाय पण न थयुं, एने कोइयें उपाड्युं नहीं. त्यारें शुं करीयें? अमे कोने कहीयें. अधिकारी थ था त्यारें सर्वे अमोने करवुं पड्युं, बीजुं शुं कहीयें? आ धर्मकार्य करतामां आ शरीर, दुर्बल थइ गयुंछे, ते हजी सुधी ठेकाणे आव्युं नथी. एवां वचन कहीने घणानां चित्त, भंग करे. इत्यादि हीन तानां वचन कहे, ते वचनयोगवीर्याचारातिचार बीजो जाणवो.

३ तथा मनोयोगें सीदातो थको करे अथवा उत्साह विना करे, जे आ कामनी वेठ क्यारें उतरशे? ए काम हाथमां नहीं लेत तो सारुं थात. नाहक आ काम में उठाव्युं तो खरुं, पण हवे कोइ बीजो माथे ले, तो हुं मूकी आपुं. कोइ रीतें छूटे तो सारुं थइ जाय अथवा ए काममां महेनत घणी थशे, पैशो घणो खरचा शे, शुं करीयें? वगर विचारे कर्युं तो आवी फसाया; हवे फरी एवी वातमां पडशुं नहीं अथवा आ तप, क्रियादिक, कठिन थ यां. हवे फरी जोइने आदर करशुं! इत्यादिक कुविकल्प मन मां करे, ते मनोयोगवीर्याचारातिचार त्रीजो जाणवो ॥ इति वीर्याचारातिचारत्रयस्वरूपं संपूर्णम् ॥

---

ए प्रमाणे सर्वे साधु अने श्रावकना धर्मना सर्वे मली एक शो चोवीश अतिचारनुं विवरण कर्युं. इति श्री सम्यक्त्वमूल द्वादशव्रतविवरणं समाप्तम् ॥ एवी विगतथी दोष मटाडीने जे व्रत पाले; ते परमकल्याणमाला वरे ॥

॥ दोहा ॥

शत अढारे उपरे, वीते वर्ष छवीश;
मगशिर शुदि पंचमि गुरु, पूरण जई जगीश ॥ १ ॥

सुरसरिताके तट वसे, पाडलिपुर शुभथान;
जिहां सुदर्शन साधुवर, पाया केवलज्ञान ॥ २ ॥
ब्रह्मचारि शिर सेहरो, थूलिभद्र गुणधाम;
जिण कोश्या प्रतिबूझवी, जिणपुर राख्युं नाम ॥ ३ ॥
तिण पुर साह शिरोमणि, सोमचंद अभिधान;
दाता भुक्ता शुभमति, चातुरजन परधान ॥ ४ ॥
तसु सुत भद्रक व्रतरुचि, धर्म दृढमतिमान्;
हेमचंद नामें निपुण, हाटक सम गुणवान् ॥ ५ ॥
धर्मकथा सुणिने भइ, व्रतरुचि तव कहे साह;
लिख दीजें व्रतकी विगत, विस्तरसें हम चाह ॥ ६ ॥
समकित युं व्रत बारकी, विगत पुनी अतिचार;
वृद्धपरंपर शास्त्र बहु, लिखि कीनो विस्तार ॥ ७ ॥
आगमजलधि अपार है, मुज मति नौका तुछ;
कौ निवहे भादों नदी, पकरे भेडी पुछ ॥ ८ ॥
आगे बहुश्रुतने लिखे, विरती वात विशेष;
वाकूं दिख भाषा लिखूं, उनमें कौन विशेष ॥ ए
तौभी तसु आसय अगम, जो बिन पाय अशुद्ध;
लिखिउं मिछा डुक्कडं, साखी गुरुजन बुद्ध ॥ १० ॥
अल्पमती आज्ञान हूं, जाणुं न बहुत रहस्य;
कृपा करी मोपरि कृती, करजो शुद्ध अवश्य ॥ ११ ॥
विगत एह व्रत बारकी, लिखी यथामति योग;
व्रतरुचि विविध अभ्यास करि, करजो तसु परिभोग ॥ १२ ॥
काल अनंत अनंतमय, जो पुग्गल परिअट्ट;
सोभी अनँतानंत गये, जनम मरण संघट्ट ॥ १३ ॥
परमरिपू परमाद है, तसु जय करण उपाय;
विधियुत मानव भव लह्यो, तौभि न चेतो कांय ॥ १४ ॥

भूले नव जो एह तुम, बहुरि न आवै हब;
तौ चेतो चित्तमें चतुर! निसुणी श्रुत परमड ॥ १५ ॥
सुविहित सूरि सिरोमणि, नागरवंदित पाय;
( श्री ) पुण्य सागर सूरिंद ते, तपगढपति सुखदाय ॥ १६ ॥
तसु आणा सिर धारतां, वारतां विपय कपाय;
श्रुतधारी उपगारि बहु, ( श्री ) ज्ञान सागर उवद्याय ॥ १७ ॥
तासु शिष्य पूरव तणा, तीरथ भेटण काज;
किय प्रयाण शुभ दिन घडी, शुभ शकुनें शु साज ॥ १० ॥
तीरथ फरसत आविया, पटणा नयर सुठाय;
परमानँद नयो वंदतां, शेठ मुनीसर पाय ॥ १ए ॥
दिन केताइक तिहां रहि, लिख्यो सुव्रतविस्तार,
वज्रोत्कीर्णमणिसूत परि, बहु श्रुतके उपगार ॥ २० ॥
इह विधि जो व्रत धारशे, वारशे विषयकषाय;
विलषे ज्ञान उद्योतमय, आनँदघन सुखदाय ॥ २१ ॥

इति श्रीसम्यक्त्वमूल द्वादशव्रतविचार
पद्धतिः विस्तारसहिता संपूर्णा ॥ ग्रं
थाग्रंथः किंचिन्न्यूनोचतुःसहस्रः ॥